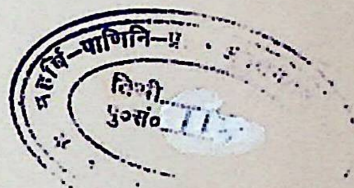
मूल लेखक
बर्नर्ड ब्लॉक ★ जॉर्ज एल॰ ट्रेगर

# भाषाविज्ञान की रूपरेखा

सम्पादक
डॉ॰ देवदत्त कौशिक

अनुवादक
गोपालदत्त जोशी॰ डॉ॰ देवदत्त कौशिक

215



# भाषाविज्ञान की रूपरेखा

# भाषाविज्ञान की रूपरेखा

**Outline of Linguistic Analysis**

का अविकल हिन्दी अनुवाद

मूल लेखक

**बर्नर्ड ब्लॉक**

तथा

**जॉर्ज एल० ट्रेगर**

संपादक हिन्दी अनुवाद

**डॉ० देवदत्त कौशिक**

अनुवादक

**श्री गोपालदत्त जोशी**

एम० ए०—भाषाविज्ञान, हिन्दी, संस्कृत। पूर्वप्राध्यापक—रामजस कॉलिज, दिल्ली।

**डॉ० देवदत्त कौशिक**

एम० ए०, एम० लिट०, पीएच०डी०, मोतीलाल नेहरू कॉलिज, नई दिल्ली।

**भारतीय विद्या प्रकाशन**

दिल्ली वाराणसी

भारतीय विद्या प्रकाशन
१-यू० बी०, बंगलो रोड, जवाहर नगर
दिल्ली-११०००७
तथा
पोस्ट बॉक्स नं० ११०८, कचौड़ी गली
वाराणसी-२२१००१



ISBN 81-217-0061-2

मूल्य
अस्सी रुपये

आर० आर० प्रिन्टर्स, X/३ए, गली नं० २, ब्रह्मपुरी, शाहदरा,
दिल्ली-११० ०५३ द्वारा मुद्रित

# सम्पादकीय

मेरे अनुरोध पर आज से कोई बारह वर्ष पूर्व मेरे गुरुदेव परम श्रद्धेय शास्त्राचरण श्री गोपालदत्त जी जोशी ने इस पुस्तक के हिन्दी अनुवाद का कार्य अपने हाथों में लिया था। इससे भी कुछ पूर्व भानुदत्त के संस्कृत काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ 'रसतरङ्गिणी' का हिन्दी अनुवाद करके भी उन्होंने मेरे आग्रह को पूर्ण किया था। किन्तु दुर्दैव से अस्वस्थता के कारण इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद वे पूरा नहीं कर सके। और फिर ३० अगस्त, १९८१ को उनके आकस्मिक निधन का दुःखद समाचार हमें सुनना पड़ा।

श्री गोपालदत्त जी जोशी संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य के कृतधी व्याख्याता तथा संस्कृत एवं आधुनिक भाषाविज्ञान के लब्धख्यात मर्मज्ञ विद्वान् थे। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामजस कॉलेज में उन्हीं के चरणों में बैठकर मुझे हिन्दी और संस्कृत भाषाओं तथा उनके साहित्य व भाषाविज्ञान के अध्ययन में प्रवृत्ति हुई थी। उनके पश्चात् इस पुस्तक के अनुवाद की योजना को फिर से गति प्राप्त करने में कोई दो-तीन वर्षों का समय लग गया। इस पुस्तक में उनके द्वारा किया गया अनुवाद-कार्य प्रारंभ से पृष्ठ ५४ की पच्चीसवीं पंक्ति तक है और आगे का कार्य मुझे करना पड़ा है यद्यपि मैं इस कार्य के लिए स्वयं अपने को किञ्चित् भी योग्य नहीं समझ पा रहा था। फिर इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए इधर-उधर प्रयास करते रहने और विविध व्यावहारिक कठिनाइयों के सामने आने और उनसे जूझने की एक लम्बी कथा है। और जब पुस्तक के प्रकाशन का कुछ हल निकला तो ज्ञात हुआ कि मूल पुस्तक में उदाहरणों के प्रसंग में अनेक शब्दों और संकेत-चिह्नों के लिए प्रयुक्त टाइप उपलब्ध नहीं है। फिर दो-तीन वर्ष ऐसे ही बीत गए और अंततः बहुत ही बेमन से इस बात के लिए समझौता करना पड़ा कि जहाँ भी वाक्यों के बीच में अथवा अन्य कहीं भी ऐसा कोई शब्द अथवा संकेत-चिह्न

उदाहरण रूप में आए तो कोष्ठक में उससे संबद्ध संदर्भ-संख्या का उल्लेख मात्र कर दिया जाए और हाथ से अंकित किए हुए ऐसे सभी शब्द अथवा संकेत-चिह्न उसी क्रम के अनुसार पुस्तक के अंत में दे दिए जाएँ। इस संबंध में पृष्ठ १२३ पर 'एक आवश्यक टिप्पणी' भी दी गई है जिसे पुस्तक का पठन प्रारंभ करने से पूर्व अवश्य ही देख लेना चाहिए। ऐसे सभी संकेत-चिह्नों तथा विभिन्न सारणियों का अंकन मुझे स्वयं ही करना पड़ा है। इस बात में कोई भी संदेह नहीं कि ऐसा करने से कई स्थलों पर वाक्यों का स्वाभाविक प्रवाह अवरुद्ध हुआ है और भाषा के साथ एक प्रकार का यांत्रिक और औपचारिक व्यवहार हुआ है। किन्तु उपाय भी कुछ नहीं था। आशा है कि प्रस्तुत अनुवाद की इन व्यावहारिक कठिनाइयों को समझते हुए उदाराशय विद्वद्वर्ग अपना स्नेहभाव बनाए रखेगा।

मूल पुस्तक और इस अनुवाद के संबंध में भाषाविज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त विद्वान् प्रोफेसर सी० जे० दासवाणी ने अपना जो वक्तव्य 'शुभाशंसा' के अन्तर्गत दिया है वह भी विशेषतः अध्येतव्य है और इसके लिए उनके प्रति हमारा ऋण-स्वीकार।

—देवदत्त कौशिक

वसन्त नवरात्रारम्भ
चैत्र शुक्ला प्रतिपदा
विक्रम संवत् २०४८

# शुभाशंसा

कोई पचास वर्ष पूर्व प्रकाशित किसी सैद्धान्तिक ग्रन्थ का आज की तिथि में भी अनुवाद असामान्य नहीं कहा जा सकता। इसलिए यह आश्चर्य का विषय नहीं है कि सन् १९४२ में प्रकाशित और बर्नर्ड ब्लॉक एवं जॉर्ज एल० ट्रेगर द्वारा मूल रूप से अंगरेजी में लिखित पुस्तक 'आउटलाइन ऑफ लिंग्विस्टिक एनेलिसिस' का हिन्दी अनुवाद आज लगभग एक अर्द्धशती के पश्चात् प्रकाशित हो रहा है। मूल अंगरेजी पाठ का भारतीय संस्करण भी इसके अमेरिकी प्रकाशन के ठीक ३० वर्षों के पश्चात् सामने आया था।

मूल ग्रन्थ के प्राक्कथन में लेखकद्वय ने कुछ इस प्रकार का अभिमत व्यक्त किया था कि किसी विदेशी भाषा को सीखने में एक सहायक के रूप में इस पुस्तक का कुछ सीमित-सा व्यापार है। यह अभिमत निश्चय ही उस समय प्रकट किया गया था जबकि इसके लेखकों को यह अनुमान भी नहीं था कि यह पुस्तक संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में आधुनिक भाषाविज्ञान और विश्वस्तर पर संरचनात्मक भाषाविज्ञान पर व्यावहारिक रूप से पर्याप्त व्यापक प्रभाव डालेगी। सन् १९३३ में लिओनर्ड ब्लूमफील्ड की पुस्तक 'लैंग्वेज' के प्रकाशन के दस वर्ष के भीतर ही प्रकाशित यह पुस्तक स्वयं ब्लूमफील्ड द्वारा प्रस्तुत और अमेरिकी संरचनात्मक भाषाविज्ञान में व्यवहृत विश्लेषण की प्रविधियों पर प्रथम सुसंगत वक्तव्य थी। भाषाविज्ञान की परिवृद्धि में इस पुस्तक का जो प्रभाव पड़ा वह सन् १९४२ में इसके लेखकों द्वारा की गई अपेक्षाओं से कहीं अधिक था।

भाषिक विश्लेषण की परिधि में अर्थ की सैद्धान्तिक विचारवस्तु को कोई स्थान दिए बिना ही इस पुस्तक ने संरचनात्मक भाषाविज्ञानियों द्वारा प्रस्तुत शोध क्रियाविधियों के विशुद्ध वितरणात्मक मानदण्ड के क्षेत्र में भाषाविज्ञानियों में एक सुदीर्घ विचारपरंपरा को प्रारंभ किया। युवा भाषाविदों को भाषिक विश्लेषण की प्रविधियों में दक्षता प्रदान करने के लिए इस पुस्तक का उपयोग

पन्द्रह से भी अधिक वर्षों तक अत्यधिक सघन रूप में इसलिए किया जाता रहा क्योंकि तब तक इसी प्रतिदर्श पर लिखी गई अन्य पुस्तकें प्रकाशित नहीं हुई थीं। इस रूप में यह पुस्तक लिओनर्ड ब्लूमफील्ड द्वारा प्रस्तुत तथा बाद में उनके अनुयायियों द्वारा विवर्द्धित भाषिक विश्लेषण की रूपरेखाएँ स्पष्ट करने वाली समस्त पुस्तकों में सबसे पहले गिनी जाती है।

इस पुस्तक का प्रभाव इतने व्यापक रूप में पड़ा कि इसमें प्रस्तुत की गई प्रविधियों के आधार पर विश्व की अनेकानेक भाषाओं का विश्लेषण और व्याख्यान किया गया। एक विशेष समय में तो यह सामान्य-सा ही हो गया कि इस पुस्तक में अंगरेजी भाषा के लिए वर्णित कोटियों के समनुरूप ही अन्य सभी प्रकार की भाषाओं का विवरण प्रस्तुत किया जाता रहा—और वे भाषाएँ चाहे भारोपीय परिवार की रही हों या अन्य किसी भी परिवार की। पिछली पीढ़ी के अनेक भारतीय भाषाविदों ने इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई प्रविधियों में दक्षता भी प्राप्त की।

इस हिन्दी अनुवाद का प्रकाशन बहुत-कुछ विलम्ब से ही हो रहा है क्योंकि आज के भाषाविज्ञान में प्रयुक्त भाषिक विश्लेषण की प्रविधियाँ प्रभूत मात्रा में अन्य ही प्रकार की हैं। इतने पर भी इस पुस्तक का ऐतिहासिक महत्व प्रस्तुत अनुवाद की महती सार्थकता सिद्ध करता है। अनुवाद विशद भी है और विशुद्ध भी। मूल पाठ का अनुगमन यथार्थतः निष्ठापूर्वक और सुसंगत रूप से किया गया है।

इस विशिष्ट प्रकार की कृति के अनुवाद-कार्य में मूल पाठ के प्रति यथार्थ निष्ठा एक ऐसा मुख्य उपादान है जिसे बनाए रखने के प्रयत्न में समग्र बोधगम्यता पर भी कभी-कभी प्रतिकूल प्रभाव पड़ जाता है। अनुवादकों को विवश ही रहकर मूल पाठ में दिए गए अंगरेजी तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं के उदाहरणों को यथावत् स्वीकार करना पड़ा है। किन्तु यदि वे इनका प्रतिस्थापन किसी भारतीय भाषा के उदाहरणों से करते तो परिणाम यह होता कि अनुवाद की आवश्यकता ही न रह जाती और एक नए पाठ का निर्माण करना पड़ता।

अनुवादकों ने पर्याप्त रूप में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया है जिनमें अनेक शब्द पहले से ही बनी हुई और जानी-बूझी भाषावैज्ञानिक/व्याकरणिक शब्दावली से लिए गए हैं। इसके अतिरिक्त अन्य जिन पारिभाषिक शब्दों का उपयोग इस अनुवाद में किया गया है उन्हें हिन्दी में यथावत् स्वीकार कर लिया जाना चाहिए क्योंकि इनके माध्यम से अनुवादकों ने अत्यन्त प्रभावी रूप में मूल पाठ के तात्त्विक मंतव्य को अधिकृत रूप से प्रस्तुत किया है। इस प्रकार यह

अनुवाद पठनीय बन गया है। यद्यपि अनुवाद की शैली औपचारिक है किन्तु इसका पर्याप्त कारण है मूल पाठ तथा उतने ही हिन्दी लेखन-शैली के अपने प्रतिबंध।

परिणामत: कहा जा सकता है कि जिस प्रकार यह पुस्तक अपने अंगरेजी मूल पाठ में अधिकांशत: अभ्यासी भाषाविदों के लिए एक सहायक उपकरण बनी उसी प्रकार इसका यह अनुवाद भी सामान्य पाठक से कहीं अधिक प्रशिक्षित भाषाविद् के लिए लाभकर होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी भाषा के माध्यम से अध्ययन करने वाली या हिन्दी के भाषिक विवरण के क्षेत्र में कार्य करने वाली भाषाविदों की आगामी पीढ़ियाँ इस अनुवाद के अपरिमित महत्त्व को पहचानेंगी। और इसी में इस अनुवाद का महत्तम औचित्य निहित है।

३ मार्च, १९९१ —सी० जे० दासवाणी

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
अनौपचारिक शिक्षण विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरविन्द मार्ग; नई दिल्ली-११००१६

# विषयानुक्रम

पृष्ठ

# प्राक्कथन

इस पुस्तिका का उद्देश्य संक्षिप्त रूप में भाषा-विश्लेषण की उन पद्धतियों को प्रस्तुत करना है जो किसी विदेशी भाषा को उसी भाषा-भाषी जन-समुदाय के साथ कार्य करते हुए सीखने के लिए और उस भाषा के व्याकरणिक रूप को आगमनात्मक रूप से समझने के लिए आवश्यक है । सामग्री का अध्ययन किसी प्रशिक्षित भाषाशास्त्री के निर्देशन में किसी वर्ग अथवा समूह के द्वारा या स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाले किसी विद्यार्थी के द्वारा किया जा सकता है। हमें विश्वास है कि यह पुस्तिका हाई स्कूल तथा कॉलेजों में भाषा-शिक्षण का कार्य करने वाले अध्यापकों को तो लाभदायी होगी ही, साथ ही इस विषय से अपरिचित शिक्षकों को भी भाषाशास्त्रीय पद्धति और भाषा-अध्ययन के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिचित कराने में उपयोगी होगी।

आज अधिकाधिक अमरीकियों के लिए विदेशी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक हो गया है और जिन भाषाओं का वे अध्ययन करते हैं उनमें से अनेक भाषाओं के लिए इस देश में संतोषजनक पुस्तकें अथवा शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं। यह स्थिति बहुत समय से अनुभव की जाने वाली इस आवश्यकता को और भी अधिक तीव्र कर देती है कि अध्यापक और अध्येता—दोनों के लिए समान रूप से ऐसी सहायक पुस्तक होनी चाहिए जिससे वे भाषा के अध्ययन में भाषावैज्ञानिक नियमों का अनुगमन कर सकें। हमने इस पुस्तिका को प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए स्पष्टतः उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है जो इस समय किसी विदेशी भाषा के अध्ययन में रत है, चाहे उसे इस क्षेत्र का कोई पूर्व अनुभव भी न हो। वह व्यक्ति यदि प्रारंभ में प्रोफेसर लिओनर्ड ब्लूमफील्ड की पुस्तक **'आउटलाइन गाइड फॉर द प्रैक्टिकल स्टडी ऑफ फॉरेन् लेंग्वेजिज'** (जिसका प्रकाशन-काल तथा वर्गानुबन्ध वही है जो इस पुस्तिका का है) का अध्ययन करे और फिर इस

पुस्तिका में निर्दिष्ट पद्धतियों का अध्ययन एवं अभ्यास करे तो किसी संबद्ध भाषा-भाषी की सहायता से वह अपेक्षाकृत कम समय में ही किसी विदेशी भाषा की बोलचाल के अच्छे ज्ञान को अधिगत करने में समर्थ हो सकता है।

यहाँ प्रस्तुत की गई सामग्री की मौलिकता के विषय में हमारा कोई दावा नहीं है। बहुत से तथ्यों एवं विश्लेषणों से भाषाविद् पूर्णतः परिचित होंगे क्योंकि हमने अपने सहयोगियों से आवश्यक सामग्री का ग्रहण बेरोकटोक किया है। यह पुस्तिका क्योंकि विशेष रूप से उनके लिए लिखी गई है जो इस क्षेत्र के मर्मज्ञ नहीं हैं, इसलिए हमने यह उपयुक्त समझा है कि लगभग प्रत्येक पृष्ठ पर पाद-टिप्पणियों के द्वारा विशिष्ट रूप में आभार व्यक्त करके जटिलता उत्पन्न करने की अपेक्षा यहीं पर इस क्षेत्र में कार्य करने वाले अन्य सभी लेखकों के प्रति एक बार में ही आभार एवं कृतज्ञता प्रकट कर दें।

इसके साथ ही, द्वितीय अध्याय से चतुर्थ अध्याय तक का विश्लेषण—जैसाकि उनके विषय-विवेचन से ही स्पष्ट है—हमारा ही होने के कारण मौलिक है और वर्गीकरण के वे सिद्धान्त जिन पर यह विश्लेषण आधारित है अनेक वर्षों के विचार-विमर्श, पत्र-व्यवहार एवं प्रयोगात्मक परीक्षणों के परिणाम हैं यद्यपि कुछ सीमा तक उन पर अन्य भाषाशास्त्रियों का भी प्रभाव है।

इस पुस्तिका का रचना-कार्य 'कमिटी आफ़ दें अमेरिकन काउन्सिल ऑफ़ लर्नेड् सोसाइटीज़ ऑन दें नेशनल स्कूल ऑफ़ मॉडर्न ओरिएंटल लैंग्वेजिज़ ऐण्ड सिविलाइजेशन्स' के सुझाव पर उसी के तत्त्वावधान में प्रारम्भ किया गया था और इसे उक्त संस्था की ओर से 'लिंग्विस्टिक सोसाइटी ऑफ़ अमेरिका' ने प्रकाशित किया।

परप्रत्यय *-ous* पर दो दीर्घ अनुच्छेद—४.८ तथा प्रारंभिक भाग को छोड़कर सम्पूर्ण पाँचवें अध्याय के प्रथम प्रारूप प्रोफ़ेसर लिओनर्ड ब्लूमफ़ील्ड द्वारा लिखे गए थे। इस पूरी पुस्तक में जितनी देन प्रोफ़ेसर ब्लूमफ़ील्ड, फ्रैंकलिन एडगर्टन तथा एडगर एच० स्टुर्टवेन्ट के शोधपूर्ण विवेचन की है, उसकी पूर्ण अभिव्यक्ति कर पाना हमारे लिए संभव नहीं है। इन तीनों ही महोदयों ने पाण्डुलिपि को उसके अनेक प्रारूपों में पढ़ा और उनके सुझावों का परिणाम सदैव स्पष्ट अभिव्यक्ति, अधिक उपयुक्त उदाहरणों तथा अशुद्धियों को पूर्णतः समाप्त करने के रूप में प्रकट हुआ।

बर्नर्ड ब्लॉक
जॉर्ज एल० ट्रैगर

## प्रथम अध्याय

# भाषा और भाषाशास्त्र

**१.१. भाषा का महत्त्व :**—भाषा यादृच्छिक वाक्-प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से कोई सामाजिक समूह परस्पर सहयोग करता है।

प्रत्येक सामान्य मनुष्य किसी-न-किसी सामाजिक समूह का, तथा कभी किसी एक से अधिक का भी, सदस्य होता है और प्रत्येक मनुष्य अपनी सम्पूर्ण सामाजिक गतिविधियों के लिए भाषा के प्रयोग पर निर्भर करता है। भाषाविहीन मानव-समाज अकल्पनीय है। भाषा अन्य प्रकार से असंबद्ध स्नायु संस्थानों की एक योजक कड़ी है और इस प्रकार एक मनुष्य में होने वाली उद्दीप्त क्रियाशीलता की दूसरे मनुष्य अथवा समूह के सभी सदस्यों में प्रभावशाली अनुक्रिया उत्पन्न करने का एक साधन है। विचारों के आदान-प्रदान के अन्य साधन—भाव-भंगिमा, चित्र, झंडियों के संकेत और सबसे प्रमुख लेखन—ये सभी एक सुगठित समाज की आवश्यकताओं के संदर्भ में या तो अपर्याप्त हैं अथवा उनका आधार बोली जाने वाली भाषा ही है; इसलिए ये सब तभी तक प्रभावकारी हैं जब तक भाषा का संकेत देते हैं।

किसी समाज के सदस्यों के कार्यकलाप उसकी संस्कृति का निर्माण करते हैं। मानव-प्रकृति के विशेषज्ञ भौतिक एवं अभौतिक—संस्कृति के इन दो प्रकारों का उल्लेख करते हैं। प्रथम के अन्तर्गत वे भौतिक वस्तुएँ हैं जिनसे समाज के सदस्य संबद्ध होते हैं, जैसे—घर, वस्त्र, साजसज्जा, यंत्र आदि तथा द्वितीय के अंतर्गत सामाजिक समूह का संगठन, उसका धर्म, विधान तथा भाषा-सहित सभी परंपरागत व्यवहार। भौतिक संस्कृति का अध्ययन, कम-से-कम, संबद्ध वस्तु के ऊपरी रूप को देखकर किया जा सकता है परंतु अभौतिक संस्कृति का अध्ययन तो यह जानने पर ही किया जा सकता है कि किसी समुदाय के सदस्य क्या कहते हैं और

बोलते समय किस प्रकार का व्यवहार करते हैं। भौतिक संस्कृति से संबद्ध वस्तुएँ भी तभी पूरी तरह समझी जा सकती हैं जब हमें यह ज्ञान हो जाए कि उन्हें किस संज्ञा से अभिहित किया जाता है और उनके उद्देश्य का आधार क्या है।

इस प्रकार भाषा स्वयं एक सांस्कृतिक तत्त्व मात्र नहीं है; यह सभी सांस्कृतिक व्यापारों का आधार है और इसलिए किसी समकालीन समुदाय की प्रमुख विशेषताओं को जानने के लिए अत्यन्त सुगम एवं सफल कुंजी है। संस्कृति का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी के लिए भाषा के महत्त्व को लियोनर्द ब्लूमफ़ील्ड ने सार-रूप में प्रस्तुत अनुच्छेद में इस प्रकार कहा है—

"भाषा की क्रियात्मकता से ही प्रत्येक समुदाय का गठन होता है। वाणी से उच्चरित ध्वनियाँ ही हमें प्रत्यक्ष रूप से इसके कार्यों का आन्तरिक ज्ञान कराती हैं और जो-कुछ भी किया जाता है उस सब में उनका योग होता है। किसी मानव-समुदाय को जानने के लिए उसकी बोली को समझना हमारे लिए आवश्यक है। यदि हम एक समुदाय के तौर-तरीकों और उनके ऐतिहासिक स्रोत के विषय में और गहराई से जानना चाहते हैं तो हमें सबसे पहले उसकी भाषा के व्यवस्थित विवेचन से अवगत होना ही चाहिए। मानव-जाति के विषय में कुछ भी जानने के लिए हमें इस दिशा में विभिन्न समुदायों के वर्गों का अध्ययन करना चाहिए। मनुष्य के विषय में जो थोड़ा-बहुत हम जानते हैं वह इसी प्रकार के अध्ययन का परिणाम है। इस प्रकार की जानकारी के बिना इस विषय में हम बौद्धिकता, पूर्वग्रह और अंधविश्वास के दास होंगे।" (फ़िलॉसॉफ़िकल एस्पैक्ट्स ऑफ़ लैंग्वेज, 'स्टडीज़ इन दॅ हिस्ट्री ऑफ़ कल्चर')।

**१.२. भाषा की प्रकृति** :—'भाषा' एक व्यापक शब्द है जिससे हम सभी समुदायों द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली विशिष्ट भाषाओं का संकेत करते हैं। जब हम भाषा को 'यादृच्छिक वाक्-प्रतीकों की व्यवस्था' कहते हैं तो हमारा अभिप्राय उसकी प्रकृति की चार महत्त्वपूर्ण विशेषताओं से होता है—

(१) भाषा एक 'व्यवस्था' है। इस दृष्टि से यह अभौतिक संस्कृति के अन्य भागों, जैसे धर्म, नियमों के संग्रह या विनम्रता के सिद्धान्तों से भिन्न नहीं है। किसी व्यवस्था को प्रत्यक्ष रूप से नहीं जाना जा सकता, यह तो व्यवहार के विवेच्य तत्त्वों के व्यवस्थित विश्लेषण का अंतिम परिणाम है। इस प्रकार हम किसी समुदाय की विधि-सम्बन्धी व्यवस्था का निर्धारण तभी कर सकते हैं जब हम उक्त समुदाय के सदस्यों द्वारा किए गए कुछ कार्यों का निरीक्षण करें, एक कार्य का दूसरे कार्य से सम्बन्ध देखें तथा इसके साथ ही इस पर भी ध्यान दें कि लोग इन कार्यों के विषय में क्या कहते हैं; उदाहरण के लिए—यह देखते हुए कि नर-हत्या के पश्चात् सदैव ही इसका प्रतिशोध किया जाता है तथा लोग नरहत्या को

एक अपराध और उसके प्रतिशोध की दृष्टि से किए गए कार्य को वैधानिक दण्ड कहते हैं। समुदाय के कानून, चाहे उनका निर्धारण स्वयं समुदाय ने ही किया हो अथवा किसी अभ्यागत मानव-प्रकृति-विशेषज्ञ ने, सामान्य रूप से इन कार्यों और इनके परस्पर सम्वन्धों के व्यवस्थित विश्लेषण ही हैं। इसी प्रकार किसी भाषा का व्याकरण भी साधारणत: इस बात का व्यवस्थित विश्लेषण है कि किसी समुदाय के व्यक्ति किस प्रकार बातचीत करते हैं, विभिन्न स्थितियों में वे किन ध्वनियों का उच्चारण करते हैं और उन ध्वनियों के उच्चारण के समय अथवा उसके पश्चात् कौन से कार्य करते हैं।

(२) भाषा 'प्रतीकों' की एक व्यवस्था है। बोलने वालों के उच्चारण व्यावहारिक जगत् की वस्तुओं और घटनाओं के साथ प्रतीकात्मक रूप में परस्पर संबद्ध होते हैं; अर्थात् वे उच्चारण अनुभव के विभिन्न स्वरूपों के लिए प्रयुक्त होते हैं, अथवा, जैसाकि हम कह सकते हैं—उनका कुछ अर्थ होता है। सभ्य समाजों में भी अन्धविश्वासपूर्वक शब्द मात्र को प्राय: विशेष सम्मान दिए जाने पर भी यह विशेष रूप से स्मरणीय है कि शब्द केवल प्रतीक मात्र हैं तथा किसी भी प्रकार से उन वस्तुओं तथा घटनाओं से दैवी रूप में एकरूप नहीं हैं जिन्हें वे संकेतित करते हैं।

भाषाई रूप (शब्द, शब्दांश अथवा शब्दों के योग) में 'अर्थ' से अभिप्राय उस लक्षण से है जो उन सभी स्थितियों के लिए सामान्य हो जिनमें वह प्रयुक्त होता है। इस प्रकार अर्थ हमारे चारों ओर फैले हुए व्यावहारिक जगत् का एक तत्त्व है जिसका सम्बन्ध विशुद्ध वस्तुपरक 'यथार्थ' के समान ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्धों से भी है। हमारी परिभाषा से यह स्पष्ट है कि एक वक्ता सामान्यत: किसी शब्द के पूर्ण और शुद्ध अर्थ को केवल विभिन्न स्थितियों में किए गए उसके प्रयोग को सुनकर ही जान पाता है और यह भी कि किसी प्रयुक्त शब्द का अर्थ एक छोटे समुदाय के अन्तर्गत भी विभिन्न वक्ताओं के लिए अल्पाधिक रूप में पृथक् हो सकता है। शब्द की सामान्य विशेषताओं को बिलकुल अलग करने और उसके अर्थ को स्पष्ट करने के लिए यह आवश्यक होगा कि उन समस्त स्थितियों का विश्लेषण किया जाए जिनमें उसने उसे सुना और प्रयोग किया हो, जो स्पष्टत: एक असम्भव कार्य है। व्यवहार में हम लगभग मिलती-जुलती परिभाषाओं से संतुष्ट हो जाते हैं जिन्हें हम विभिन्न विशिष्ट स्थितियों में, जिनमें शब्द का प्रयोग हुआ हो तथा ऐसी ही कुछ अन्य स्थितियों में जिनमें शब्द का प्रयोग न हुआ हो, प्रतिरोध उत्पन्न करके प्राप्त करते हैं। इस प्रकार की परिभाषाएँ भी वैसे उस भाषाशास्त्रीय पद्धति (१.४) के क्षेत्र के बाहर ही मानी जाती हैं जिसका सम्बन्ध पूर्णत: स्वयं भाषाई प्रतीकों से है।

(३) जिन प्रतीकों से भाषा का निर्माण होता है वे 'वाक्-प्रतीक' होते हैं।

अन्य प्रकार के भी प्रतीक सम्भव हैं जो मनुष्य की गतिविधियों में अनेक तरह से महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं। चेष्टाएँ, अल्पाधिक रूप में परम्परागत मान्यताओं वाले चित्र, संकेतक झंडियाँ और यातायात-नियंत्रक प्रकाश-संकेत सामान्य दृश्य-प्रतीक हैं। ढोल की ध्वनि, तुरही का नाद, घंटियों का बजना, भोंपू और सीटियों की आवाजें भी वाक्-प्रतीक न होकर श्रौत-प्रतीक हैं। किसी जटिल स्थिति को पूर्णतः सुलझाने पर भी इनमें से कोई भी भाषा नहीं है। 'भाषा' शब्द को हम एकान्त रूप से उस व्यवस्था के लिए सुरक्षित रखते हैं जिसके अनुसार प्रतीक वाणी से उच्चरित वे ध्वनियाँ होती हैं जिनका उद्‌भव मनुष्यों द्वारा उच्चारणावयवों के विविध प्रकार के संचालन से होता है (देखिए २.५)। 'लेखन' वाणी का एक गौण दृश्य-प्रतीक है। लेखन के दृश्य-प्रतीक कभी तो श्रौत-प्रतीकों के द्वारा, जैसे कि मॉर्स पद्धति के सम्प्रेषण में, और कभी स्पृश्य-प्रतीकों के द्वारा, जैसे कि ब्रेल लिपि में, द्योतित किए जा सकते हैं।

मनुष्य के उच्चारणावयवों से उत्पन्न सभी ध्वनियाँ भाषाई प्रतीक नहीं होतीं। छींक, खाँसी, गुर्राहट और चिल्लाने का प्रायः कोई प्रतीकात्मक महत्त्व नहीं है। इनकी सीमा केवल अपने स्वरूप तक ही सीमित है, इससे अधिक नहीं। जब इस प्रकार की कोई ध्वनि किसी समाज-विशेष में किसी निश्चित परंपरागत अभिप्राय को प्रकट करती है—उदाहरणार्थ, जब हलकी खाँसी को मतभेद अथवा व्यग्रता के प्रकाशन के अर्थ में समझा जाता है—तभी इसे उस समुदाय की भाषा में कुछ सीमा तक स्थान प्राप्त हो सकता है।

(४) अन्त में, भाषाई प्रतीक 'यादृच्छिक' होते हैं। उच्चरित ध्वनि और उसके अर्थ में आवश्यक अथवा तात्त्विक दृष्टि से कोई तर्कसंगत सम्बन्ध नहीं होता। एक से अधिक भाषाएँ जानने वाला प्रत्येक व्यक्ति इसे भली-भाँति जानता है। *Equus Caballus* जाति के एक पशु को अंगरेजी बोलने वाला *Horse*, फ्रेंच बोलने वाला *Cheval*, जर्मन बोलने वाला *Pferd* कहता है तथा अन्य भाषाभाषी अन्य-अन्य शब्दों का प्रयोग करते हैं। यहाँ तक कि अनुकरणात्मक अथवा अनुरणनात्मक शब्द भी भिन्न-भिन्न भाषाओं में पृथक्-पृथक् होते हैं। हम कुत्ते के भौंकने के शब्द का अनुकरण *bowwow* शब्द से करते हैं, फ्रेंच बोलने वाला *gnaf-gnaf* तथा जापानी बोलने वाला *wan-wan* शब्दों से करता है। ये सभी शब्द समान रूप से उपयुक्त हैं क्योंकि ये सभी यादृच्छिक हैं। समाज के सदस्यों में परस्पर मौन सहमति के रूप में चली आ रही परम्परा मात्र ही किसी शब्द के अर्थ का निर्धारण करती है।

फिर भी इस आधारभूत सत्य को, जिसे कुछ विचार के पश्चात् कोई भी असिद्ध नहीं कर सकता, विदेशी भाषा के छात्र प्रायः विस्मृत कर जाते हैं। अपनी

भाषा के यादृच्छिक प्रतीकों के अभ्यस्त होने के कारण वे उन्हें युक्तियुक्त अथवा आवश्यक स्वीकार करते हैं तथा उस विदेशी व्यक्ति के दुराग्रह पर आश्चर्य प्रकट करते हैं जो स्पष्ट रूप से घोड़े (*horse*) को *Pferd* जैसी अपरिचित संज्ञा से अभिहित करता है। इस प्रकार के अज्ञानजन्य आश्चर्य को किसी विदेशी भाषा के शब्दसमूह की अपेक्षा उसका व्याकरणिक गठन अधिक प्रोत्साहित करता है। कुछ व्यक्ति किसी विशेष भाषा—सामान्यतः लैटिन—के व्याकरण को ऊँचा सिद्ध करने के लिए और उसकी अभिरचना से अन्य भाषाओं के व्यतिक्रमों को तर्कविरुद्ध विकृतियाँ कहने के लिए अव्यावहारिक तर्कणा के स्तर तक भी पहुँच जाते हैं। जिस विद्यार्थी को सभी भाषाई प्रतीकों की यादृच्छिक प्रकृति का एक बार पूर्णतया प्रत्यय हो जाएगा वह इस प्रकार की अशुद्धियाँ नहीं करेगा। वह प्रत्येक भाषा को उसके अपने स्वरूप में ही ग्रहण करेगा और उस अनमनीय व्यक्ति के, जिसे सभी अनजानी वस्तुएँ अयुक्त प्रतीत होती हैं, कुंठित करने वाले पूर्वग्रह से रहित होकर उसके शब्दसमूह एवं व्याकरण के अध्ययन में प्रवृत्त हो जाएगा।

**१.३. अध्ययन की प्रणाली :**—प्रत्येक सामान्य मनुष्य बचपन में कम-से-कम एक भाषा अवश्य सीखता है जिसका प्रयोग वह अपने समाज के व्यवहारों में होने वाले परिवर्तनों में भाग लेता हुआ तथा नवीन सामग्री का निरन्तर रूप से ज्ञान प्राप्त करता हुआ आजीवन करता है। किसी भाषा को सीखने की प्रणाली, चाहे वह बचपन में हो या परवर्ती जीवन में, तत्त्वतः सदैव एक-सी ही होती है। सबसे पहले जानकारी प्राप्त करने का स्रोत होना चाहिए, फिर उस स्रोत से प्राप्त उच्चारणों को पहचानना तथा पुनः प्रस्तुत कर सकना सीखना चाहिए और फिर सीखे हुए उच्चारणों का विश्लेषण और वर्गीकरण करना चाहिए। जानकारी का सबसे अच्छा स्रोत उसी भाषा का बोलने वाला सूचक होता है। (सूचक के साथ कार्य करने की प्रविधि लियोनर्द ब्लूमफ़ील्ड की पुस्तक 'आउटलाइन गाइड फ़ार दें प्रैक्टिकल स्टडी ऑफ़ फ़ॉरेन् लैंग्वेजिज़' में वर्णित की गई है, जिसका प्रकाशन इस पुस्तिका के वर्गानुबन्ध में ही हुआ है। उस प्रविधि को यहाँ दुहराने की आवश्यकता नहीं है)।

सूचक से किसी भाषा को सीखने के लिए केवल उतनी ही सामान्य बुद्धि की आवश्यकता है जितनी एक छोटे बच्चे में होती है। 'भाषाओं की प्रतिभा' के रूप में ऐसी कोई विशेषता नहीं होती जो कुछ के पास हो और कुछ के पास नहीं। प्रत्येक व्यक्ति, यदि वह बधिर अथवा जड़मति नहीं है तो, अपनी मातृभाषा को पाँच वर्ष के अन्त तक सीख लेता है, भले ही वह भाषा विदेशियों को कितनी ही कठिन या जटिल प्रतीत होती हो। और जिसने भी इस कार्य में सफलता प्राप्त कर ली है वह परवर्ती किसी भी आयु में एक या अधिक विदेशी भाषाओं में दक्षता

प्राप्त करने के लिए आगे कार्य कर सकता है यदि उसके पास सूचना का कोई विश्वसनीय स्रोत हो, कार्य को करने के लिए पर्याप्त समय हो और वह पूर्वग्रह तथा भ्रान्त धारणाओं से अबाधित रहकर सही दिशा में अग्रसर हो।

किसी भाषा को सीखने के लिए अनेक उपायों में से एक उपाय यह है कि अध्येता अपने सूचक के उच्चारणों को उसी रूप में दुहराए (देखिए २.१)। बच्चे की कोई निश्चित आदत बोलने के विषय में नहीं होती इसीलिए वह बिना किसी पूर्वग्रह के अपने मातापिता तथा अन्य बोलने वालों का अनुकरण करता है। प्रयोग एवं त्रुटियों की लम्बी प्रक्रिया से, जिसमें वह अनेक प्रकार के परीक्षण करता है तथा सुस्पष्ट रूप से शुद्ध बोलना सीखता है, अंततः वह धाराप्रवाह बोलने की स्थिति में पहुँच जाता है। दूसरी ओर, एक वयस्क में पहले से ही बोलने की सुनिश्चित आदतें बन चुकी होती हैं। अपनी मातृभाषा को बोलने में वह जिस सुविधा से अपने उच्चारणावयवों का संचालन करता है, अन्य संचालनों का निष्पादन करने में वह तदनुरूप कौशल की आवश्यकता की मांग करता है। और जब वह किसी विदेशी भाषा का अध्ययन करता है तो मुक्त रूप से अपने सूचक का अनुकरण करने में उसे प्रायः कठिनाई अनुभव होती है; कभी-कभी तो इस सीमा तक कि वह यह समझने लगता है कि विदेशी ध्वनियों का उच्चारण उसी भाषाभाषी के अतिरिक्त अन्य सभी के लिए असम्भव है। इस प्रकार का निष्कर्ष निकाल लेना सर्वथा एक भूल है। किसी भी भाषा में कोई ऐसी ध्वनि नहीं है जिसका ठीक-ठीक उच्चारण करना कोई विदेशी न सीख सके। संसार की किसी भाषा में उच्चरित न हो सकने योग्य ध्वनि जैसी कोई वस्तु नहीं है; इसके लिए केवल ध्वनिविज्ञान सम्बन्धी कुछ आधारभूत प्रशिक्षण, पर्याप्त अभ्यास तथा संतोषजनक जानकारी की आवश्यकता है। एक छात्र को, किसी ऐसी भाषा के उच्चारण में दक्षता प्राप्त करने में, जिसे वह सीखना चाहता है, सहायता के लिए सामान्य ध्वनिविज्ञान की रूपरेखा दूसरे अध्याय में दी गई है।

सूचक से प्राप्त सामग्री का विश्लेषण और वर्गीकरण करने के लिए छात्र को या तो इतना पर्याप्त समय चाहिए कि वह बच्चे की तरह त्रुटियों और परीक्षणों से कुछ सीखता रहे अथवा भाषा-विश्लेषण की प्रविधियों का कुछ प्रशिक्षण चाहिए जो तीसरे, चौथे और पाँचवें अध्यायों में विवेचित की गई हैं। इन प्रविधियों का प्रयोग करने के परिणामस्वरूप छात्र विदेशी भाषा का अध्ययन सुव्यवस्थित रूप में करता है, केवल अपरिचित अभिव्यक्तियों की अव्यवस्थित तालिका के रूप में नहीं और इसके साथ ही यदि वह विदेशी शब्दसमूह के आधारभूत तत्त्वों का भी ज्ञान प्राप्त कर लेता है तो उस भाषा को उसी भाषाभाषी के समान निपुणता से बोल सकता है।

**१.४. भाषाविज्ञान :**—यह आवश्यक नहीं है कि एक भाषाविद् बहुभाषाविद् भी हो और उसे अनेक भाषाओं पर पूर्ण व्यावहारिक अधिकार प्राप्त हो। वह एक वैज्ञानिक है जिसकी विषय-वस्तु भाषा है और उसका कार्य बोली के तथ्यों का उस रूप में विश्लेषण और वर्गीकरण करना है जिन्हें वह मूल भाषाभाषियों से उच्चरित रूप में सुनता है अथवा लिपिबद्ध रूप में प्राप्त करता है। जैसाकि पहले ही कहा जा चुका है (१.२), उसका सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से अर्थ से उतना नहीं है जितना कि भाषा के गठन एव भाषाई प्रतीकों के परस्पर सम्बन्ध से है परन्तु उसकी विषय-वस्तु की प्रकृति उसे अर्थ की ओर ध्यान देने को भी विवश करती है (देखिए ४.१)। जब वह बोली के तथ्यों का इस प्रकार वर्णन करता है कि उससे किसी समाज के सदस्यों द्वारा प्रयुक्त समस्त उच्चारणों का परिकलन हो सके तो हम उसके इस वर्णन को भाषा की व्यवस्था अथवा उसका व्याकरण कहते हैं।

एकत्रित तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए भाषाविद् भाषा के अतीत काल में प्रयुक्त रूपों का अनुसधान करता है और उनकी तुलना सम्बद्ध भाषा के समान रूपों से करता है। क्यों ? भाषावैज्ञानिक शब्दावली में इस प्रश्न का उत्तर केवल ऐतिहासिक विवरण के रूप में ही हो सकता है। *Equus Caballus* जाति के एक पशु को हम *horse* (घोड़ा) क्यों कहते हैं ? क्योंकि हमारे मातापिता और उनसे पहले उनके अंगरेजी-भाषी पूर्वज सहस्र वर्षों से अधिक तक ऐसा कहते थे। हम *Stone* (पत्थर) क्यों कहते हैं जबकि उसे एक फ्रांसीसी *pierre* कहता है ? क्योंकि सम्राट् अल्फ्रेड के समय की अंगरेजी में लोग *Stān* कहते थे और फिर, अन्य कई शब्दों की भाँति, उस शब्द की स्वरध्वनि *father* के 'आ' (*a*) से *go* शब्द के 'ओ' (*o*) स्वर में परिवर्तित हो गई। *Goose* (कलहंस) शब्द का बहुवचन *gooses* क्यों नहीं होता ? क्योंकि उस प्राचीन भाषा में, जिसकी दो शाखाएँ आधुनिक अंगरेजी और जर्मन के रूप में विकसित हुईं, संज्ञा के बहुवचन भिन्न प्रकार से बनते थे तथा *goose* शब्द के मूल रूप का सम्बन्ध *stone* वर्ग के शब्दों से भिन्न था। यह विशेष रूप से ध्यान देने योग्य बात है कि एक भाषाविद् भाषा के तथ्यों को केवल इसी तरह स्पष्ट कर सकता है कि उसकी प्रारम्भिक अवस्था में कौन से सदृश तथ्य विद्यमान थे तथा बाद में उनमें क्या-क्या परिवर्तन हुए। क्यों ? इस प्रश्न का उत्तर भले ही मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक अथवा भावपरक तर्क द्वारा दिया जाना सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टि से अधिक सन्तोषजनक प्रतीत होता हो परन्तु उसका महत्त्व अनुमान के स्तर से अधिक नहीं हो सकता; उसे सिद्ध भी नहीं किया जा सकता तथा, इसीलिए, व्यर्थ भी होगा।

जब भाषाविद् एक या अधिक मूल भाषाभाषी लोगों की अथवा एक समुदाय की लिखित रूपों से स्पष्ट होने वाली भाषण-प्रणाली का विश्लेषण तथा वर्गीकरण

कर लेता है तो वह इस स्थिति में होता है कि वह इस अध्ययन से प्राप्त परिणामों को संक्षिप्त एवं व्यवस्थित रूप में दूसरों की जानकारी के लिए प्रस्तुत कर सके। वह (यह बताते हुए कि बोलने वाले जब बातें करते हैं तो क्या कहते हैं, न कि जैसा वह सोचता है कि उन्हें क्या कहना चाहिए) भाषा का व्याकरण लिख सकता है, कोष का संकलन-कार्य कर सकता है तथा मूल पाठों का संचयन कर सकता है। वह नए अध्येताओं के लाभ के लिए श्रेणीकृत अध्यायों में भाषा-सम्बन्धी सामग्री देते हुए प्रवेशिका भी लिख सकता है।

जब इस प्रकार की प्रारम्भिक पुस्तकें उपलब्ध हो जाएंगी तो प्रायः छात्र का समय बचेगा और वह प्रारम्भ में होने वाली गलतियों से बच सकेगा; किन्तु सूचक की आवश्यकता अब भी अनिवार्य ही रहेगी, क्योंकि अच्छी-से-अच्छी पुस्तक भी ध्वनियों का उच्चारण नहीं कर सकती तथा फ़ोनोग्राफ़ रेकार्ड भी समय-समय पर उठने वाले विशिष्ट प्रश्नों का समाधान नहीं कर सकते। नए अध्येता के लिए वैज्ञानिक रूप से तैयार की गई पुस्तक का सबसे बड़ा महत्त्व इस दृष्टि से है कि वह पहले से ही विश्लेषित तथा वर्गीकृत भाषा का विवरण प्रस्तुत करती है और छात्र का ध्यान एकदम उन महत्त्वपूर्ण तत्त्वों की ओर ले जाती है जिन पर उसे अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। जब किसी भाषा की इस प्रकार की प्रवेशिका उपलब्ध न हो तो उसका व्यवस्थित व्याकरण छात्र के लिए विशेष सहायक होगा परन्तु उसका उपयोग करते समय उसे चाहिए कि अपनी सुविधा के लिए वह सामग्री को क्रमबद्ध कर ले और अपना अधिकाधिक समय सूचक के साथ व्यतीत करे।

दुर्भाग्य से किसी प्रशिक्षित भाषाविद् द्वारा प्रस्तुत किया गया किसी भी भाषा का कोई प्रारंभिक विवेचन लगभग प्राप्य नहीं है। अधिक प्रसिद्ध भाषाओं के लिए अच्छे और घटिया अनेक आंशिक अध्ययन हुए हैं जिनमें से अच्छे अध्ययन विद्यार्थी के लिए उपयोगी हो सकते हैं यदि वह उनका प्रयोग संपूरक के रूप में करे व अपने कार्य को मूलभाषाभाषी के साथ प्रतिस्थापित न करे। बहुत-सी भाषाओं में कुछ भी छपी हुई सामग्री नहीं प्राप्त होती; इसके लिए विद्यार्थी को संग्रह से आरम्भ करके स्वयं ही अपने लिए मार्ग निकालना चाहिए। यदि सौभाग्य से उसे किसी ऐसे प्रशिक्षित भाषाविद् का निर्देशन उपलब्ध हो, जो या तो विदेशी भाषा का ज्ञाता हो अथवा स्वयं अध्येता के साथ उसे सीखे, तो वह छात्र स्वयं अकेले कार्य करने अथवा भाषाशास्त्र में अप्रशिक्षित किसी शिक्षक के निर्देशन में कार्य करने की अपेक्षा शीघ्रता से प्रगति कर सकेगा। जो भी हो, उसे इस पुस्तिका में दी गई विश्लेषण एवं वर्गीकरण की प्रविधियों से स्वयं को सुपरिचित कर लेना चाहिए।

## द्वितीय अध्याय

# ध्वनिविज्ञान

**२.१. ध्वनिविज्ञान की उपयोगिता :**—किसी आधुनिक विदेशी भाषा को बोलने की योग्यता प्राप्त करने के प्रयास में छात्र के सामने जो पहली समस्या उपस्थित होती है वह है उस भाषा का उच्चारण। इससे पूर्व कि वह व्याकरण के किसी अंश का अध्ययन प्रारंभ कर सके अथवा नितान्त प्रारम्भिक शब्दावली का संग्रह कर सके, उसे मूल भाषाभाषियों द्वारा उच्चरित भाषा-ध्वनियों की पहचान कर पाने तथा उन्हें इस रूप में प्रस्तुत कर सकने के योग्य होना चाहिए कि मूल भाषाभाषी उसके मंतव्य को समझ सकें। यह ध्यान रहे कि हमारा सम्बन्ध यहाँ ऐकान्तिक रूप से 'भाषण-ध्वनियों' से ही है, वर्णमाला के अक्षरों तथा भाषा के लेखन में प्रयुक्त होने वाले अन्य किन्हीं प्रतीकों से नहीं है। जब छात्र उच्चारण में प्रवीणता प्राप्त कर लेगा, उसे लेखन की विदेशी पद्धति का अध्ययन भी सुविधाजनक अथवा आवश्यक प्रतीत हो सकता है (यदि, जिस भाषा का अध्ययन वह कर रहा है उसकी, कोई पद्धति है तो) किन्तु जब तक उसे उच्चारण का सम्यक् व्यावहारिक ज्ञान नहीं हो जाता तब तक भाषा के लिखित रूप को जानने में व्यस्त होना भ्रान्तिकारक एवं अप्रभावी हो सकता है।

यह सम्भव है कि विदेशी समुदाय के बीच में रहने अथवा विदेशी भाषा बोलने वाले मूल निवासियों के साथ लम्बे सम्पर्क से सुव्यवस्थित अध्ययन के अभाव में उच्चारण पर अच्छा अधिकार हो जाए परन्तु अधिकांश छात्रों के लिए यह मार्ग अपना सकना सम्भव नहीं है तथा प्रत्येक अवस्था में इसमें समय का अभाव होता है। वही अथवा उससे भी अधिक अच्छा परिणाम कहीं कम समय—प्रायः दो सप्ताह अथवा कम—में ध्वनिशास्त्रीय दृष्टि से विदेशी भाषा के अध्ययन अर्थात् विदेशी ध्वनियों का ध्वनिविज्ञान को संघटित करने वाली विश्लेषण,

विवरण और वर्गीकरण की प्रविधियों के आधार पर अध्ययन करने से प्राप्त हो सकता है।

बिना किसी नियम के विदेशी भाषा के उच्चारण को सीखने वाले छात्र की अपेक्षा ध्वनिविज्ञान में प्रशिक्षित छात्र को तीन प्रमुख लाभ हैं। (१) उच्चारणावयवों की संरचना और कार्य को जानने के कारण वह विदेशी ध्वनियों के संघटन के विश्लेषण और संक्षिप्त रूप से उनके विवरण में—और वह भी इतने सरल रूप में—समर्थ होता है कि वह स्वयं, अथवा कोई अन्य भी ऐसे ही प्रशिक्षण से, अपने सूत्रित विवरण के अनुसार उच्चारणावयवों का संचालन करता हुआ ध्वनियों का शुद्ध रूप में उच्चारण कर सकता है। (२) वह विदेशी ध्वनियों के सम्भ्रमकारी वैविध्य को इस रूप में वर्गीकृत करने में समर्थ होता है जिससे उनका पारस्परिक क्रियाशील सम्बन्ध उद्घाटित हो सके और इस प्रकार प्रत्यक्ष अव्यवस्था को कुछ दर्जन एककों की एक व्यवस्थित पद्धति में घटित कर सके। (३) इस पद्धति के आधार पर वह विदेशी भाषा के लिए लिखने और पढ़ने में सुकर एक ऐसी व्यावहारिक कार्यशील वर्तनी की अभिकल्पना कर सकता है जिसे वह अध्ययन करते समय शब्दों और व्याकरणिक तत्त्वों को लिखने तथा संबद्ध वाक्यों व मूल पाठों को अंकित करने के लिए प्रयुक्त कर सके।

प्रस्तुत अध्याय के शेषांश में तथा आगे भी उन प्रविधियों की रूपरेखा प्रस्तुत की जाएगी जिन पर—सामान्य ध्वनिविज्ञान और ध्वनिमविज्ञान—ये निष्पत्तियाँ निर्भर करती हैं। यह स्मरणीय है कि ये प्रविधियाँ, जो अनेक व्यक्तियों को रुचिकर प्रतीत होंगी—स्वयं में साध्य नहीं हैं बल्कि सीधे-सादे रूप में उच्चारण-विषयक तथ्यों के विशुद्ध एवं प्रयोज्य विवरण के द्वारा भाषा पर यथाशीघ्र आधिपत्य करने के लिए साधन हैं।

**२.२. सामान्य ध्वनिविज्ञान :**—किसी भाषा के उच्चारण का विवरण देने तथा उस पर आधिपत्य प्राप्त करने के लिए असंख्य ध्वनिभेदों में से कुछ उन ध्वनियों को जानना आवश्यक है जिन्हें मनुष्य के उच्चारणावयव उच्चरित कर सकते हैं। यदि आपका लक्ष्य फ्रांसीसी भाषा सीखना हो तो जर्मन शब्द *Buch* (book) की अन्तिम ध्वनि की जानकारी व्यर्थ व अप्रासंगिक होगी और यदि आप जर्मन सीखना चाहते हैं तो फ्रेंच शब्द *agneau* (lamb) में विन्यस्त *gn* वर्णों की ध्वनि को जानने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि इन दोनों ही बातों की जानकारी से एक अंगरेजी बोलने वाले व्यक्ति के रूप में आपको *thick* शब्द में विन्यस्त *th* वर्णों की ध्वनि के उच्चारण में कोई सहायता प्राप्त नहीं होगी। कोई भी एक भाषा पूर्ण सम्भावनाओं के केवल अत्यल्प खण्ड का ही प्रयोग करती है तथा कोई भी दो भाषाएँ ध्वनियों की ठीक एक ही श्रेणी का प्रयोग नहीं करती हैं।

किसी भी अद्यतन अविश्लेषित भाषा में कौन-सी ध्वनियाँ होंगी, यह भविष्य-कथन करने की असंभाव्यता से युक्त एक भाषा से दूसरी भाषा में ध्वनियों का ठीक वैविध्य ही भाषण-ध्वनियों के संपूर्ण क्षेत्र के सामान्य सर्वेक्षण को आधुनिक विदेशी भाषाओं के छात्र के लिए एकमात्र विश्वसनीय भूमिका के रूप में प्रस्तुत करता है। यह सत्य है कि इस प्रकार के सर्वेक्षण से उसे बहुत-सी ऐसी जानकारी भी मिल सकती है जिसका उपयोग करने का उसे कभी भी अवसर प्राप्त नहीं होगा किन्तु इसके साथ ही यह भी ठीक है कि यदि सर्वेक्षण व्यापक दृष्टि से और गंभीरतम रूप में किया गया है तो उसे लगभग किसी भी विदेशी भाषा के उच्चारण में कोई भी ऐसा तत्त्व नहीं मिलेगा जो उसे पूर्णतः अपरिचित प्रतीत हो। अतः सामान्य ध्वन्यात्मक प्रशिक्षण का तात्कालिक लाभ यह है कि वह छात्र को इस योग्य बना देता है कि वह स्वतंत्र रूप से उन सभी विशिष्ट समस्याओं का समाधान खोज सके जो किसी भाषा-विशेष पर कार्य करते हुए उसके सामने आ सकती हैं।

इससे एक लाभ और भी है। छात्र को किसी भाषा-विशेष की ध्वनियों का कितना ही अच्छा ज्ञान हो, सामान्य ध्वनिविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में उसका ज्ञान विशद और तीक्ष्ण हो जाता है। उदाहरण के लिए अंगरेजी के शब्द *tin* में *t* ध्वनि की उसकी समझ में और भी अधिक गहराई आ जाएगी जबकि वह केवल यही नहीं जानता हो कि यह ध्वनि *din* के *d* और *sin* के *s* से किस प्रकार पृथक् है बल्कि यह भी जानता हो कि फ्रांसीसी के शब्द *tard* (late) के *t*, हंगेरियन के (*táj*) (region) के *t* अथवा चीनी *ta* (great) के *t* से भी यह किस प्रकार पृथक् है। यह परिप्रेक्ष्य ही उसे कभी सुनी हुई दो ध्वनियों की तुलना करने और इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययनों के आधार पर वर्गीकरण की ऐसी सुनम्य पद्धति की रचना के योग्य बनाता है जिसमें समस्त ध्वनियाँ समाहित हो सकें।

**२.३. पारिभाषिक शब्दावली :**—ध्वनियों के विषय में कुछ कहने से पहले हमारे पास ऐसे शब्दों का समूह होना चाहिए जिनके अर्थ सुनिश्चित रूप से स्पष्ट हों। शब्द निश्चय ही स्वयं में महत्त्वपूर्ण नहीं है; इस विषय में सुविधा की दृष्टि से व्यावहारिक दृष्टिकोण और परम्परा ही हमारी रुचि का मार्गदर्शन कर सकती है।

भाषण-ध्वनि एक भौतिक परिणाम है जिसके तीन मुख्य पक्ष हैं—(१) 'शरीर-क्रियात्मक' :—इसमें वक्ता अपने ओष्ठों, जिह्वा तथा अन्य उच्चारणावयवों द्वारा निश्चित क्रियाएँ करता है। (२) 'ध्वनिक' :—ये क्रियाएँ उसके मुख एवं नासिका के भीतर वायु के अणुओं में कम्पन उत्पन्न करती हैं जो, जब तक कि वे श्रोता के कान के पर्दे से नहीं टकराते, उसके चारों ओर की वायु में 'ध्वनि-तरंगों' के समान

फैल जाते हैं। (३) 'श्रवण सम्बन्धी' :—इसके अनुरूप कम्पन कान के पर्दे पर उत्पन्न होते हैं जिनकी प्रतिक्रिया कान के अंतरंग यन्त्रविन्यास पर और इसके माध्यम से श्रवण-तंत्रिकाओं पर इस रूप में होती है जिससे कि वक्ता 'ध्वनि का अनुभव करता है'। सैद्धान्तिक रूप से ध्वनि के इन तीन पक्षों में से किसी भी एक को वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली का आधार बनाया जा सकता है।

सामान्य बोलचाल में, भाषण-ध्वनियों के विवरणात्मक शब्द लगभग अनन्य रूप से श्रवणात्मक होते हैं व अनिश्चित रूप से श्रोता पर होने वाले प्रभाव की ओर संकेत करते हैं। इस प्रकार *cash* शब्द में स्वर 'सम', *calm* में 'विस्तृत'; *get* का *g* 'कठोर' व *gem* का *g* 'कोमल' तथा *see* और *rose* की *s* वाली दो ध्वनियों को भी 'कठोर' एवं 'कोमल' विशेषणों से अभिहित किया जाता है यद्यपि लोगों का इसमें प्राय: मतभेद है कि कौन-सी ध्वनि क्या है। अन्य ध्वनियाँ 'दीप्त', 'मन्द', 'सूक्ष्म' तथा 'रुक्ष' कही जाती हैं, यहाँ तक कि गले से उच्चरित होने वाली ध्वनियों को द्योतित करने वाला 'कण्ठ्य' शब्द भी (इसका जो कुछ भी अभिप्राय हो) 'विचित्र' या 'अरुचिकर' के लिए अनिश्चित पर्याय मात्र के रूप में व्यवहृत होता है। यह स्पष्ट है कि इस प्रकार के शब्द अपने प्रयोगों में हमारे उद्देश्य की सिद्धि के लिए न तो पूर्णत: अभ्यावर्तक होते हैं और न ही पूर्णरूपेण उपयुक्त। निश्चय ही, भाषण-ध्वनियों के श्रवण-सम्बन्धी प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए अभी तक व्यवहार्य कोई भी पारिभाषिक शब्दावली नहीं बन सकी है।

ध्वानिकी में, जो भौतिकी की एक शाखा है, वायु के अणुओं के कम्पनों का परिमाण की दृष्टि से अध्ययन होता है जिन्हें हम ध्वनि की तरंगें कहते हैं। क्योंकि ये परिमाण गणितीय शब्दावली में अभिव्यक्त किए जाते हैं इसलिए भाषाशास्त्रियों द्वारा भी उसे सरलता से अपनाया जा सकता है किन्तु इसमें दुहरी आपत्ति है। सुनिश्चित ध्वनिक पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग में भौतिकी और गणित के सुविस्तृत प्रशिक्षण की अपेक्षा होती है जिसके लिए कुछ ही भाषाविद् समय निकाल पाते हैं तथा यह प्रयोगशाला के विशिष्ट-सम्बद्ध यंत्रों के प्रयोग पर निर्भर करता है जिनका प्रयोग करने की योग्यता भी कुछ ही भाषाशास्त्रियों में होती है। संक्षेप में, ध्वनिक पारिभाषिक शब्दावली अपने स्थान पर पूर्णत: सार्थक होने पर भी लगभग प्रत्येक भाषाविद् के लिए निरर्थक होती है।

दूसरी ओर, उच्चारणावयवों की चेष्टाओं और स्थितियों का अध्ययन (और सुविधाजनक स्थितियों में प्रत्यक्ष निरीक्षण) बिना किसी विशेष पूर्वपरीक्षण के किया जा सकता है। किसी भी ध्वनि का विवरण सुस्पष्ट एवं सरल रूप से उन चेष्टाओं की शब्दावली में किया जा सकता है जो उसे उत्पन्न करती हैं और प्रयोगशाला का यन्त्र, जिस पर पारिभाषिक शब्दावली—अधर, दाँत, जिह्वा, तालु आदि—

आधृत है, सभी भाषावैज्ञानिकों के लिए प्रामाणिक उपकरण है। इसके अतिरिक्त, थोड़े अभ्यास के पश्चात् किसी ध्वनि के शारीरिक आधार पर किए गए विवरण को मात्र उच्चारणावयवों की चेष्टाओं को विशेष रूप से उल्लिखित करते हुए स्वयं ध्वनि के रूप में परिवर्तित कर देना सहज होता है। अतएव इस प्रकार की शब्दावली से पूर्ण सुविधा रहती है और क्योंकि लगभग सभी ध्वनिशास्त्री इसका प्रयोग करने के आदी हैं (यद्यपि कभी-कभी वे इसमें श्रौत पारिभाषिक शब्दावली का भी मिश्रण कर देते हैं) इसलिए परम्परा का निर्वाह भी हो जाता है। प्रस्तुत अध्याय के शेषांश में, इसलिए, सम्पूर्ण ध्वनि-सम्बन्धी शब्दावली ध्वनियों के शारीरिक अवयवों से उत्पादन -एक शब्द में, उनके 'उच्चारण'—पर आधृत होगी।

(छात्र को यह ध्यान रहना चाहिए कि इस पुस्तिका में ध्वनियों के विभिन्न वर्गों को निर्दिष्ट करने के लिए व्यवहृत शब्दावली मात्र ही प्रचलन में नहीं है किन्तु अधिकांश स्थलों पर हमने यह अधिक उपयुक्त समझा है कि छात्र को पर्यायों की सूची से भ्रान्त करने की अपेक्षा प्रत्येक वर्ग के लिए केवल एक ही नाम दे दिया जाए। यह ध्यान रखने से ध्वनिविज्ञान की विभिन्न पुस्तकों में अन्य शब्दावली तथा वर्गीकरण की अन्य पद्धतियों को पाने से वह विस्मित अथवा निरुत्साहित नहीं होगा। यदि वह यहाँ दी गई पारिभाषिक शब्दावली का अध्ययन कर लेता है और इसके द्वारा स्पष्ट होने वाले वर्गीकरण को समझ लेता है तो उसे साधारणतया अन्य नामों के अनुवादों में कोई कठिनाई नहीं होगी।)

**२.४. वाक्-ध्वनियों का संघटन :**—सुगमता की दृष्टि से मनुष्य के वाक्-यन्त्र की तुलना एक वायु-यन्त्र, जैसे शहनाई अथवा बाँसुरी, से की जा सकती है। दोनों में ही ध्वनियों की उत्पत्ति एक सँकरे मार्ग से निकलने वाले स्वतंत्र वायुप्रवाह को रोकने, बाधित करने अथवा अन्य प्रकार से अवरोध करने से होती है। मानव-शरीर-रचना में फेफड़ों के द्वारा वायु पहुँचाई जाती है जहाँ से मध्यपट की नियंत्रित क्रिया के द्वारा उसे निर्गत कर दिया जाता है। स्वरयंत्र और ग्रसनी के मार्ग से जैसे-जैसे यह वायु ऊपर की ओर चलती है और आगे बढ़ती हुई मुख से अथवा नासिका से अथवा दोनों से बाहर निकलती है, तब मार्ग में विभिन्न स्थलों पर इसका प्रवाह अवरुद्ध अथवा बाधित हो सकता है और गुहिकाओं की आकृति, जिसमें से होकर यह गुजरती है, अनेक प्रकार से परिवर्तित हो सकती है। जैसाकि वायु फेफड़ों से नासारंध्रों अथवा ओष्ठों की ओर प्रवाहित होती है (और कभी-कभी जैसाकि यह पुनः फेफड़ों तक वापिस भी चली जाती है), अतः वायुप्रवाह की इस प्रकार की 'क्रीड़ा' के द्वारा ही हम मानुषी वाणी की सभी ध्वनियों का उच्चारण करते हैं।

उच्चारण के पाँच मुख्य प्रकार हैं—

(१) उस मार्ग को, जिससे वायु प्रवाहित होती है, संकीर्ण करके वायुप्रवाह को किसी स्थल पर नितान्त रूप से अवरुद्ध किया जा सकता है। इससे निर्मित ध्वनियाँ स्पर्श कहलाती हैं। (उदाहरण के लिए *pop, tot, kick, bib, dead* और *gag* में क्रमशः *p, t, k, b, d* और *g* ध्वनियाँ।)

(२) किसी स्थल पर वायुमार्ग को एक दरार अथवा नाली की आकृति में केवल एक संकीर्ण छिद्र के योग्य स्थान छोड़ते हुए इतना संकुचित किया जा सकता है कि उसमें से निकलते हुए वायुप्रवाह पर दवाव पड़े। इस प्रकार से निर्मित ध्वनियाँ संघर्षी कहलाती हैं। (उदाहरण के लिए *fat, vat, thin, then, see, zeal* और *show* में क्रमशः *f, v, th, s, z* और *sh* ध्वनियाँ।)

(३) मुख के मध्य मार्ग को अवरुद्ध किया जा सकता है किन्तु पार्श्व के एक या दोनों भागों से वायुप्रवाह निःसृत हो सके। इस प्रकार की ध्वनियाँ पार्श्विक कहलाती हैं। (उदाहरणार्थ *let, feel* और *milk* में *l* ध्वनि।)

(४) वायुप्रवाह का निष्क्रमण लचीले अवयव को द्रुत गति से दोलायमान कर सकता है। इस प्रकार की ध्वनियाँ कम्पनयुक्त कहलाती हैं। (उदाहरणस्वरूप जर्मन शब्द *rot*, प्रान्तीय फ्रेंच शब्द *rogue* और स्पेनिश शब्द *rojo* में *r* ध्वनि।) स्पर्श, संघर्षी, पार्श्विक और कम्पनयुक्त सभी ध्वनियाँ 'व्यञ्जन' होती हैं।

(५) अन्तिम प्रकार—वायुमार्ग को अपेक्षाकृत अनवरुद्ध छोड़ा जा सकता है किन्तु मुखविवर जिह्वा और अधरों के विभिन्न प्रकार के संचालनों के अनुरूप आकृति ग्रहण कर ले। इस प्रकार निर्मित ध्वनियाँ 'स्वर' कहलाती हैं।

छात्र को अब उन अवयवों से स्वयं को परिचित कर लेना चाहिए जो इन उच्चारणों को निष्पादित करते हैं।

२.५. **उच्चारणावयव :**—हम जिन्हें उच्चारणावयव कहते हैं वे निश्चय ही प्रधान एवं अनन्य रूप से ध्वनियों के उत्पादन से सम्बद्ध नहीं हैं। ओष्ठ, दाँत एवं जिह्वा खाना खाने के तथा स्वरयंत्र एवं फेफड़े श्वसनक्रिया के अवयव कहे जा सकते हैं। किन्तु हम यहाँ इन अवयवों के प्राथमिक कार्यों को छोड़कर ध्वनियों के उत्पादन अर्थात् उच्चारण के उनके अनुषंगी कार्य का विश्लेषण करेंगे।

उच्चारणावयवों के आगे दिए हुए अपर्याप्त शाब्दिक विवरण को ध्वनिविज्ञान की अनेक पुस्तकों में दिए हुए उदाहरणों से पुनः समझ लेना चाहिए। सभी अवयवों के विस्तृत विवरण से युक्त उत्तम चित्र जी० ऑस्कर रसेल की (न्यूयॉर्क से सन् १९३१ में प्रकाशित) पुस्तक 'स्पीच ऐण्ड वॉइस' में मिलेंगे। अंत में दी गई पुस्तकों की सूची में से अनेक पुस्तकों में सरल आरेख दिए हुए हैं जो समान रूप से उपयोगी हैं। किन्तु चित्र एवं आरेख ही पर्याप्त नहीं हैं। इस विषय के सम्यक् बोध के लिए यह आवश्यक है कि छात्र स्वयं उच्चारणावयवों का निरन्तर ध्यान-

पूर्वक निरीक्षण करता हुआ अपने उच्चारणावयवों के सैद्धान्तिक विवरण को समृद्ध करे। प्रत्येक व्यावहारिक ध्वनिवेत्ता के उपकरणों में एक छोटा शीशा अनिवार्य रूप से होना चाहिए जिसे वह सर्वत्र अपने पास रखे और सदैव उसका उपयोग करे। मुख के अंदर के पृष्ठभाग को देखने के लिए एक जेवी टॉर्च भी उपयोगी है किन्तु शीशा तो अनिवार्य है।

सुविधा की दृष्टि से उच्चारणावयवों को दो प्रकारों में विभाजित किया गया है : 'करण'—वे अवयव जिन्हें अधिक अथवा कम स्वच्छंदता से संचालित किया जा सकता है और जिससे वे विभिन्न स्थितियाँ धारण कर सकते हैं। 'उच्चारण-स्थान'—करणों के ऊपर स्थित वे निश्चित स्थान अथवा क्षेत्र जिन्हें वे छू सकते हैं अथवा उनके निकट तक पहुँच सकते हैं। जिह्वानोक करण है क्योंकि इसे ऊपर-नीचे, आगे-पीछे संचालित किया जा सकता है और इसकी यह गतिशीलता अनेक ध्वनियों के उत्पादन के लिए अनिवार्य है। सामने के ऊपरी दाँत उच्चारण-स्थान हैं क्योंकि जिह्वानोक उन्हें छू अथवा उनके निकट तक पहुँच सकती है। इस अनुभाग में हम विशिष्ट चेष्टाओं एवं स्थितियों का वर्णन करते हुए प्रत्येक करण एवं विशिष्ट उच्चारण-स्थानों का संक्षेप में वर्णन करेंगे।

(१) ऊपर के ओष्ठ से दृढ़ता अथवा शिथिलता से दबा होने पर 'निचला ओष्ठ' मुखद्वार को पूर्णतः अवरुद्ध कर सकता है; जैसेकि *pit* के *p*, *bit* के *b* अथवा *mitt* के *m* में होता है। निचला ओष्ठ ऊपर के ओष्ठ तक इस रूप में पहुँच सकता है कि एक सँकरी दरार की आकृति का छिद्र बन सकता है; जैसेकि स्पेनिश शब्द *haber* (have) व *Habana* के *b* में होता है। दोनों ओष्ठ सिकोड़े और बाहर की ओर निकाले जा सकते हैं जिससे वे विभिन्न आयामों का लगभग वर्तुल द्वार बना सकते हैं; जैसेकि *well* के *w*, *wheel* के *wh*, फ्रेंच शब्द *loup* (wolf) अथवा जर्मन शब्द *gut* (good) के स्वरों में अथवा *law* शब्द के स्वर में होता है। निचला ओष्ठ दरार की आकृति के छिद्र को बनाता हुआ सामने के ऊपरी दाँतों की कोर का भी स्पर्श कर सकता है; जैसेकि *fat* के *f* और *vat* के *v* के उच्चारण के समय होता है।

निचले ओष्ठ से उच्चरित ध्वनियाँ 'ओष्ठ्य' कहलाती हैं। ये (ऊपर के ओष्ठ से स्पर्श होने पर) 'द्वयोष्ठ्य' अथवा (ऊपर के दाँतों का स्पर्श होने पर) 'दंतोष्ठ्य' हो सकती हैं। इन पारिभाषिक शब्दों को २.४. में दिए गए शब्दों से संयुक्त करते हुए हम *p* और *b* को द्वयोष्ठ्य स्पर्श, *f* और *v* को दंतोष्ठ्य संघर्षी तथा जर्मन शब्द *gut* के *u* को ओष्ठों के आपरिवर्तन से नियत होने वाला स्वर कहते हैं (देखिए २.८)।

(दोनों ओष्ठों को इकट्ठे मध्यवर्ती भाग में एक ओर अथवा दोनों ओर कुछ

खुला भाग छोड़ते हुए) पार्श्विक ओष्ठ्य तथा कम्पनयुक्त ओष्ठ्य ध्वनियों का उच्चारण भी सम्भव है जिनमें से परवर्ती ध्वनि कभी-कभी विस्मयादिबोधक अव्यय *brrr* में सुनी जाती है। वैसे इन वर्गों की ध्वनियाँ अब तक वर्णित भाषाओं के सामान्य उच्चारण में प्रयुक्त होती नहीं दिखाई देती हैं।

(२) जिह्वा इतनी गतिशील होती है कि इसके विभिन्न भाग लगभग स्वेच्छापूर्वक संचालित किए जा सकते हैं; उदाहरण के लिए, जब जिह्वा का पश्चभाग उठा हुआ एवं पीछे की ओर आकुंचित होता है तब जिह्वानोक को उलटा अथवा आगे की ओर धकेला जा सकता है। इस कारण जिह्वा के तीन भागों को तीन पृथक् करणों के रूप में विवेचित करना उपयोगी होगा।

करणों में 'जिह्वानोक' अथवा 'जिह्वाग्र' सर्वाधिक सुनम्य है; इसकी असाधारण गतिशीलता से वह प्रत्येक व्यक्ति सुपरिचित होगा जिसने कभी भी इसका उपयोग दुखते हुए दाँत पर रखने के लिए अथवा दाँतों में फँसे हुए कण को निकालने के लिए किया हो। जिह्वानोक को ऊपर के दाँतों की कोर तक; जैसेकि *width* के सामान्य उच्चारण में *d* के लिए, ऊपर के दाँतों के आन्तर पृष्ठ तक; जैसे फ्रेंच *tout* (all), *doux* (sweet) तथा *nous* (we) के *t*, *d* तथा *n* के लिए, (ऊपर के दाँतों की जड़ों के पीछे की ओर कठोर मसूड़े की मेंड़ वाली) वर्त्स्य श्रेणी तक; जैसे अंगरेजी *toe*, *dough* तथा *no* के *t*, *d* और *n* के लिए अथवा उससे भी पीछे कठोर तालु तक; जैसेकि *harder* के कुछ मध्य-पश्चिमी उच्चारणों में *d* के उच्चारण के लिए, वायुमार्ग को पूर्णतः अवरुद्ध करते हुए ऊपर की ओर उठाया जा सकता है। उच्चारण के इन्हीं अंशों पर जिह्वाग्र दरार की आकृति का एक सँकरा रंध्र बना सकता है जैसेकि ऊपर के दाँतों की कोर पर अथवा पीछे *thin* और *then* के *th* के उच्चारण में होता है अथवा नाली की आकृति का एक छोटा रंध्र बना सकता है जैसेकि वर्त्स्य श्रेणी पर *see* के *s* तथा *zeal* के *z* के उच्चारण में होता है। मुख के मध्य भाग में अवरोधन करते हुए यह (एक ओर अथवा दोनों ओर) पार्श्विक मार्ग खुला छोड़ सकता है जैसेकि फ्रेंच शब्द *lire*, जर्मन शब्द *lesen* (read), अंगरेजी शब्द *let* तथा *girl* की विभिन्न *l* ध्वनियों के उच्चारण में। जब जिह्वाग्र कुछ ऊपर उठा हुआ होता है तब ऊपर के दाँतों अथवा वर्त्स्य श्रेणी पर वायुप्रवाह इसे द्रुत रूप में कंपित कर सकता है जैसेकि दक्षिण जर्मन के *rot* अथवा स्पेनिश *rojo* शब्दों के *r* के उच्चारण में।

जिह्वाग्र से उच्चरित ध्वनियाँ 'जिह्वान्तीय' कहलाती हैं। इस संदर्भ में उच्चारण के विभिन्न स्थानों को निर्दिष्ट करते हुए अधिक यथातथ्य विश्लेषण किया जा सकता है: 'अन्तर्दन्त्य'—ये ध्वनियाँ जिह्वाग्र के सामने के ऊपरी दाँतों की कोर अथवा उसके ऊपर एवं नीचे के दाँतों के बीच में होने पर उच्चरित होती हैं;

'पश्चदन्त्य'—इनका उच्चारण ऊपर के दाँतों के अन्तर्वर्ती पृष्ठ से होता है; 'दन्त्य'—उपर्युक्त दोनों भेदों के लिए सम्मिलित रूप से इसका प्रयोग होता है; 'वर्त्स्य'—वर्त्स्य श्रेणी के सामने होने पर तथा 'मूर्धन्य'—वर्त्स्य श्रेणी के पीछे कठोर तालु के सामने होने पर (और इस प्रकार मेहराबी तालु, जिसे लेटिन में *cacūmen* कहा गया है, के शीर्ष भाग अथवा शिखर की ओर संकेत करते हुए)।

यह प्रायः उपयोगी रहता है कि 'जिह्वाग्र की चरम नोक' अर्थात् 'शिखर' का उसके एकदम पीछे और चारों ओर के जिह्वा के कोर अर्थात् 'फलक' से भेद समझ लिया जाए। पूर्ववर्णित *see* शब्द के *s* का उच्चारण फलक से होता है तथा अमरीकी अंगरेजी के *rye, cry, try, dry* आदि शब्दों की *r* ध्वनि के विभिन्न प्रभेद केवल शिखर द्वारा उच्चरित होते हैं। ये दोनों ही प्रकार की ध्वनियाँ वर्त्स्य श्रेणी के सामने नाली की आकृति के रन्ध्र की अपेक्षा करती हैं।

(३) जिह्वा की विस्तृत सतह दो भागों में विभाजित है। इनमें से वह भाग जो जिह्वाग्र के एकदम पश्चात् और फलक से लगभग 1½ इंच की लम्बाई में पीछे की ओर है 'जिह्वोपाग्र' कहलाता है। जिह्वोपाग्र प्रायः उस 'कठोर तालु' के सामने रहकर उच्चारण करता है जो मुख की छत का वह अंश है जो मुख के वन्द होने पर और जिह्वा के निष्क्रिय होने की स्थिति में ठीक उसके ऊपर होता है। यह वायुमार्ग को पूर्णरूपेण अवरुद्ध कर सकता है, जैसे इटालियन शब्द *ogni* (all) और फ्रेंच शब्द *agneau* (lamb) के *gn* के उच्चारण में। जिह्वोपाग्र तथा कठोर तालु के मध्य में नाली की आकृति का संकीर्णन संघर्षी ध्वनियों के सर्वाधिक सामान्य प्रकार को उच्चरित करता है, जैसे *show* में *sh* तथा *azure* में *z*; दरार की आकृति का संकीर्णन भी संभव है किन्तु सुपरिचित भाषाओं से इसके उच्चारण-विषयक उदाहरण नहीं दिए जा सकते। पार्श्विक मार्ग खुला छोड़ते हुए जिह्वाग्र मध्य भाग में अवरोध स्थापित करता है, जैसे इटालियन शब्द *egli* (he) और *doglia* (grief) के *gli* अथवा कैस्टिलियन स्पेनिश शब्द *llamar* (call) के *ll* के उच्चारण में। इस अवस्था में कंपित ध्वनियाँ संभव नहीं हैं।

जिह्वोपाग्र से उच्चरित व्यंजन 'अग्र' अथवा अधिक सामान्य रूप से (कठोर तालु के संदर्भ में) 'तालव्य' कहलाते हैं। उच्चारण के विभिन्न स्थान 'अग्रतालव्य', 'मध्यतालव्य', और 'पश्चतालव्य' संज्ञाओं से अभिहित होते हैं जिनसे यह संकेतित होता है कि जिह्वोपाग्र कठोर तालु के क्रमशः अग्रवर्ती, मध्यवर्ती तथा परवर्ती भाग को छूता अथवा उसके निकट तक पहुँचता है।

जिह्वोपाग्र के महत्त्वपूर्ण कार्यों में से एक कार्य स्वरों के उच्चारण में मुख-गुहिका के आकार में परिवर्तन लाना है। अपनी जिह्वा की स्थिति पर *ham, hay* और *he* शब्दों के स्वरों के उच्चारण के समय ध्यान दीजिए; आप पाएंगे कि

जिह्वोपाग्र क्रमशः कठोर तालु की ओर उठता जाता है। जिह्वोपाग्र से उच्चरित स्वरों को अग्र अथवा तालव्य कहा जा सकता है किन्तु सामान्यतया उन्हें 'अग्रस्वर' ही कहते हैं।

(४) 'पश्चजिह्वा' का विस्तार जिह्वाग्र से लगभग 1½ इंच दूर के स्थान से प्रारम्भ होकर मुख के अन्तिम पिछले स्थान तक है। मुख की छत का वह भाग जो मुख के बन्द होने की स्थिति में पश्चजिह्वा के ठीक ऊपर पड़ता है 'कोमल तालु' अथवा 'छदन' है; यह स्वतंत्र रूप से ऊपर-नीचे होने की गतिशीलता में समर्थ अस्थिविहीन मांसपेशीय मेहराब है। 'काकलक' एक छोटा-सा मांसपुच्छ है जो छदन के पिछले भाग के कोर से लटका हुआ होता है। अपने शीशे में इन अवयवों की संरचना और क्रिया को देखने के लिए अपनी जिह्वा को *ah* के उच्चारण की स्थिति में लाइए, यदि आप इसे मुख में समतल रूप से स्थिर नहीं कर सकते तो धीरे से लकड़ी के पतले और चपटे टुकड़े से दबाइए। धीरे-धीरे मुख से साँस लीजिए और फिर नाक से उसे धीरे-धीरे बाहर छोड़िए। आप देखेंगे कि छदन, जिससे काकलक झूल रहा होगा, आपके साँस लेने पर ऊपर को होगा और साँस लेने पर गिरेगा किन्तु यदि आप नाक से साँस लेते हैं और मुख से छोड़ते हैं तो उसके उठने-गिरने की क्रिया इसके विपरीत होगी। छदन नासा-विवर की ओर जाने वाली विवृति के लिए (जो तालु के पीछे और ऊपर होती है) उत्क्षेप अथवा आवरण का कार्य करता है। जब छदन उत्थित होता है तो यह विवृति बन्द हो जाती है और वायुप्रवाह पूर्णरूपेण मुखमार्ग से प्रवाहित होने के लिए बाध्य हो जाता है तथा जब छदन अवर स्थिति में होता है तो वायुप्रवाह को नासिका से मार्ग मिल जाता है। इसकी इतनी गतिशीलता के होने पर भी हम इसे करण के रूप में स्वीकार नहीं करते। ध्वनियों के वर्गीकरण में इसकी क्रियाओं की अर्थवत्ता के लिए देखिए २.१० (१)।

जिह्वा का पश्च भाग छदन के किसी अंश के विपरीत रहकर अवरोध स्थापित कर सकता है, जैसे *keep* के *k*, *coop* के *c*, *geese* और *goose* के *g* तथा *sing* के *ng* के उच्चारण में। छदन के विभिन्न अंशों के विपरीत रहकर यह दरार की आकृति के रंध्र का निर्माण करता है, जैसे जर्मन *ich* (I) और *Bach* (brook) के *ch* तथा पेरिसी फ्रेंच शब्द *rouge* के अकंपित *r* के उच्चारण में। *Milk* और *vulgar* शब्दों के *l* के सामान्य किन्तु प्रायः अलक्षित उच्चारण में पार्श्विक विवृति को छोड़ता हुआ यह अवरोध स्थापित करता है। अन्त में, जिह्वा के पश्च भाग को इस प्रकार उठाया और नलककरण के रूप में बनाया जा सकता है कि काकलक उसमें सहारा लेकर आगे को झुका रहता है; तब वायुप्रवाह काकलक में स्पष्ट रूप से कम्पन उत्पन्न करता है जैसे उत्तरी जर्मन के शब्द *rot* अथवा प्रान्तीय फ्रेंच

*rouge* के *r* के उच्चारण में। यह भी संभव है कि जिह्वापश्च के निम्नतम भाग को (जिसे कभी-कभी 'जिह्वामूल' कहते हैं) प्रत्याकर्षित करते हुए अथवा सामान्य रूप से स्वयं 'ग्रसनी' के पेशी-विन्यास को संकुचित करते हुए 'ग्रसनी' में (मुख के एकदम पिछले भाग की गुहिका जो स्वरयंत्र एवं नासामार्ग के द्वार के बीच में होती है) संकीर्णन कर दिया जाए।

जिह्वापश्च से उच्चरित व्यंजन 'पश्चजिह्वीय' अथवा अधिक सामान्य रूप में 'कंठ्य' कहलाते हैं। उच्चारण के विभिन्न स्थानों के नाम 'पूर्वकंठ्य,' 'मध्यकंठ्य' और 'पश्चमृदुतालव्य' (अथवा 'अलिजिह्व') कहलाते हैं। ग्रसनी से उच्चरित ध्वनियाँ 'ग्रसन्य' कहलाती हैं।

जिह्वोपाग्र के समान जिह्वापश्च भी स्वरों के उच्चारण में महत्त्वपूर्ण है। अपनी जिह्वा की स्थिति पर *haw*, *hoe* व *who* शब्दों के स्वरों का उच्चारण करते समय ध्यान रखिए, आप पाएंगे कि जिह्वा का पश्चभाग क्रमशः कोमल तालु की ओर उठता जाता है। जिह्वा के पश्च भाग से उच्चरित स्वर सामान्यतया 'पश्चस्वर' ही कहलाते हैं।

(५) फेफड़ों से निष्कासित अथवा उनमें खींची गई समस्त वायु को 'स्वरयंत्र' से होकर ही गुजरना पड़ता है जो उपास्थि, मांसपेशियों और झिल्लियों की, श्वासनली अथवा श्वासप्रणाल के ऊपरी भाग पर स्थित, एक जटिल संरचना है। स्वरयंत्र के आगे के सिरे पर कंठमणि है। हमारे प्रयोजन के लिए स्वरयंत्र के सर्वाधिक रोचक भाग दो समानान्तर आनुप्रस्थ कूल अथवा आगे से पीछे तक विस्तृत स्नायुवंध हैं जिन्हें 'घोषतंत्रियाँ' भी कहा जाता है। (वैसे यह नाम विशेष उपयुक्त नहीं है क्योंकि इस स्नायुवन्ध में तंत्री जैसी कोई वस्तु नहीं है। इससे अच्छा नाम 'स्वर-ओष्ठ' सुझाया गया है किन्तु पहला नाम प्रयोग में आने से स्वीकृति पा चुका है।) सामान्य श्वसन में घोषतंत्रियाँ पृथक्-पृथक् हो जाती हैं जिससे कि वायुप्रवाह अनवरुद्ध रूप में उनके बीच से अन्दर-बाहर आ-जा सके। घोषतंत्रियों के बीच के स्थान को 'श्वासद्वार' कहते हैं; इसलिए सामान्य श्वसन के समय हम कहते हैं कि श्वासद्वार खुला है।

घोषतंत्रियों में अत्यधिक मृदु एवं सूक्ष्म समायोजन की क्षमता होती है; इनसे श्वासद्वार को संकीर्ण, दरार की आकृति में चपटा अथवा पूर्णरूपेण वन्द किया जा सकता है। जब यह केवल किञ्चित् संकीर्ण होता है तब वायुप्रवाह मुश्किल से ही अवरुद्ध होता है। यह वह अवस्था है जो *hair* और *hall* शब्दों के *h* के उच्चारण के लिए प्रायः स्वीकार की गई है। जब यह बन्द होता है तब वायुप्रवाह पूर्णतः अवरुद्ध हो जाता है और कुछ भी वायु उस समय तक न तो फेफड़ों में जा ही सकती है और न उनसे बाहर ही आ सकती है जब तक कि संवृति को शिथिल न कर

दिया जाए। यह 'श्वासद्वारीय स्पर्श' अनेक भाषाओं में एक महत्त्वपूर्ण वाक्-ध्वनि है; इसकी भाषेतर उपयोगिता सबसे अधिक उस समय देखी जा सकती है जब हमें उदरीय मांसपेशियों के दबाव का प्रतिरोध करने के लिए अपने फेफड़ों में वायु को रोक लेना पड़ता है, जैसेकि मलत्याग के समय अथवा फर्श पर से कोई भारी वस्तु उठाते समय।

जब श्वासद्वार पूर्णत: तो नहीं बल्कि लगभग बन्द होता है तो गुज़रता हुआ वायुप्रवाह घोषतंत्रियों के लचकदार किनारों को द्रुतगति से कम्पित करता है जिससे संगीतात्मक सुर अथवा गुंजन उत्पन्न होता है जिसे प्राविधिक रूप से 'घोष' कहते हैं। श्वासद्वारीय स्पर्श के अतिरिक्त कोई भी कैसी ध्वनि घोष से अथवा इसके विना भी—अर्थात् घोषतंत्रियों के सहगामी कम्पन से अथवा इसके विना भी—उच्चरित की जा सकती है एवं तदनुसार सभी ध्वनियाँ 'सघोष' तथा 'अघोष' रूप से वर्गीकृत की जा सकती हैं। (सघोष एवं अघोष *h* के विषय में आगे देखिए।) *Zeal* का *z* सघोष है, अनुरूप अघोष ध्वनि *see* शब्द का *s* है। यदि आप इन दोनों ध्वनियों को स्पष्ट रूप से एवं देर तक खींचते हुए उच्चरित करें और साथ ही अपने हाथों को अपने कानों पर कसकर रखें तो *z* ध्वनि के उच्चारण के समय आप अपने सिर के अन्दर एक प्रबल गूँज सुनेंगे (यह वह सुर है जो घोषतंत्रियों के कम्पन का परिणाम है); जिसका *s* के उच्चारण में नितान्त अभाव होता है। सघोष एवं अघोष ध्वनियों के अन्य युग्म हैं—*veal* का *v* और *feel* का *f*, *either* का *th* और *ether* का *th* एवं *rubber* का *b* और *upper* का *p*। इस सूची में अन्य ऐसे युग्मों को जोड़ना स्वयं आपको सुगम एवं शिक्षाप्रद प्रतीत होगा।

घोष के स्वराघात (के उतार-चढ़ाव) की भिन्नताएँ केवल गायन की दृष्टि से ही नहीं बल्कि प्रत्येक समाज की सामान्य बोलचाल की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। *Yes!* और *yes?* अथवा इसी प्रकार के किसी स्वराघात के अन्तर की तुलना कीजिए। ये भिन्नताएँ घोषतंत्रियों के तनाव पर नियंत्रण करने से उत्पन्न होती हैं जिससे कि वे द्रुत तथा मंथर गति से कंपन कर सकें। घोष के स्वराघात में परिवर्तन स्वयं अन्य अवयवों के उच्चारण से स्वतंत्र है। *z* (जैसेकि *zeal* में) और *a* (जैसेकि *calm* में)—दोनों वक्ता के घोष की परिधि में किसी भी स्वराघात पर बोले जा सकते हैं; किन्तु *s* के समान अघोष ध्वनि के स्वराघात में उसी रीति से परिवर्तन नहीं किया जा सकता। (यद्यपि घोषतंत्रियों के स्पन्दन को कंपन कहा जा सकता है [देखिए २.४] किन्तु हम इस शब्द को अधिश्वासद्वारीय अवयवों—अर्थात् उन अवयवों के लिए सुरक्षित रखते हैं जो श्वासद्वार के ऊपर स्थित हैं।)

यदि श्वासद्वार घोष के लिए अपेक्षित दरार से कुछ अधिक प्रशस्त हो तो घोषतंत्रियाँ क्षीण रूप में कंपित हो सकती हैं किन्तु साथ ही वे अधिकांश वायु को

अवरुद्ध किए विना बाहर जाने देती हैं। इस प्रकार का अर्द्ध-घोष 'मर्मर' कहलाता है; मर्मर ध्वनियाँ प्रायः उन सभी सघोष ध्वनियों की स्थानापन्न हो जाती हैं जब हम धीरे-धीरे बात करते हैं और *perhaps, behind, unhappy* जैसे शब्दों में पूर्णतः अघोष के स्थान पर कभी-कभी मर्मरित *h*—(ऊपर वर्णित सघोष *h*) का प्रयोग होता है। स्वाभाविक विश्राम की स्थिति में अपने कानों को बन्द करते हुए इन शब्दों का उच्चारण कीजिए, यदि *h* के पूर्व और पश्चात् की ध्वनियों के साथ होने वाली गूँज क्षणिक नीरवता से बाधित हो जाती है तो अघोष *h* का उच्चारण आप कर रहे हैं और यदि गूँज की मात्रा में केवल क्षण भर के लिए कमी आती है तो आपकी *h* ध्वनि मर्मर है।

श्वासद्वार को लगभग घोष करने की स्थिति में संकीर्ण करने और फिर घोषतंत्रियों को कंपन का निवारण करने के लिए कड़ा बनाने से 'फुसफुसाहट' की ध्वनि उत्पन्न होती है। फुसफुसाहट की बोली में सामान्य सघोष ध्वनियाँ फुसफुसाहट की ध्वनियों से प्रतिस्थापित हो जाती हैं, सामान्य अघोष ध्वनियाँ अपरिवर्तित रहती हैं। घोषतंत्रियों के अन्य विभिन्न समायोजन संभव हैं किन्तु ध्वनिनिःसारण में इनका योग विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं होता।

वे ध्वनियाँ जिनका प्रमुख उच्चारण घोषतंत्रियों से निष्पादित होता है 'श्वासद्वारीय' कहलाती हैं। श्वासद्वारीय स्पर्श ध्वनियाँ हैं *h* और सघोष अथवा मर्मर *h*। घोष सुर को अधिश्वासद्वारीय अवयवों से उच्चरित ध्वनियों का सर्वोत्तम पूरक लक्षण स्वीकार किया जाता है; इस प्रकार सघोष *z* और अघोष *s*—दोनों जिह्वान्तीय (फलक) संघर्षी तथा सघोष *b* और अघोष *p*—दोनों उभयोष्ठ्य स्पर्शध्वनियाँ हैं।

घोषतंत्रियों की क्रियाओं से पृथक्, स्वरयंत्र को समग्र रूप में दो प्रकार से संचालित किया जा सकता है। इसे कंठ में ऊपर-नीचे किया जा सकता है (कोई वस्तु निगलते समय अपनी कंठमणि के स्थानान्तरण पर ध्यान दीजिए) और इसके सम्पूर्ण पेशीविन्यास के कसाव के द्वारा इसे निकुंचित किया जा सकता है। इन क्रियाओं की अर्थवत्ता को २.१३ में विवेचित किया जाएगा।

**२.६. वाक्-ध्वनियों का वर्गीकरण :**—वाक्-ध्वनियों के उच्चारणात्मक वर्गीकरण की दिशा में हम पहले ही कार्य प्रारम्भ कर चुके हैं। २.४ में वर्णित उच्चारण के प्रकार सभी ध्वनियों को स्वर एवं व्यंजन—इन दो प्रमुख वर्गों में विभाजित करने का निकष प्रस्तुत करते हैं। 'स्वर' वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में मुखमार्ग अनवरुद्ध रहता है जिससे कि वायुप्रवाह बिना रुके, सँकरे मार्ग से बिना दबाव के, अपने मार्ग की मध्यवर्ती रेखा से विचलित हुए बिना और अधिश्वासद्वारीय अवयवों में से किसी भी अवयव को कंपित किए बिना फेफड़ों से ओष्ठों

तक तथा आगे प्रवाहित हो सके। यह ध्वनि विशिष्ट प्रकार से सघोष होती है किन्तु अनिवार्य रूप में नहीं। 'व्यंजन', विलोमतः, वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में स्वरयंत्र अथवा मुखमार्ग के स्पर्शन से वायुप्रवाह पूर्णतः अवरुद्ध अथवा सँकरे मार्ग से दवाव के लिए वाध्य अथवा पार्श्विक विवृति के द्वारा अपने मार्ग की मध्यवर्ती रेखा से विचलित हो जाता है या किसी एक अधिश्वासद्वारीय अवयव में कंपन उत्पन्न करता है।

स्वरों एवं व्यंजनों की विभाजक रेखा सुनिश्चित रूप से अस्पष्ट है। जैसाकि हम देख चुके हैं, कुछ स्वर (उदाहरणार्थ *he* और *who* शब्दों के स्वर) जिह्वोपाग्र अथवा जिह्वापश्च के यथेष्ट उत्थापन से उच्चरित होते हैं। यदि करण को और भी अधिक उत्थित किया जाए तो यह शीघ्र ही मुख की छत के इतना निकट पहुँच जाता है कि संकीर्णन की स्थिति आने लगती है। तथापि, अनवरुद्ध ध्वनियों के रूप में स्वरों की परिभाषा करने से सभी व्यावहारिक प्रयोजन पूर्ण हो जाते हैं।

२.८ से २.१३ तक पहले से ही सिद्ध दो प्रमुख वर्गों के अन्य उपवर्गों पर विचार किया जाएगा।

**२.७. ध्वन्यात्मक प्रतीक :**—इससे पूर्व कि हम वाक्-ध्वनियो का विवेचन अधिक विस्तार में करें, हमारे पास उन्हें लिखकर अभिव्यक्त कर सकने की कोई पद्धति होनी चाहिए। अंगरेजी एवं अन्य यूरोपीय भाषाओं की सामान्य वर्तनी स्पष्ट ही इस विषय में उपयोगी नहीं होगी। यह देखने की वजाय कि *a* वर्ण *cat*, *came*, *calm*, *call* और *sofa* में पाँच भिन्न स्वर-ध्वनियों के रूप में उच्चरित होता है अथवा आठ भिन्न-भिन्न वर्ण तथा वर्णों के समुच्चय *pete*, *feet*, *meat*, *seize*, *niece*, *key*, *quay* और *police* में एक ही स्वर-ध्वनि के उच्चारण के लिए प्रयुक्त होते हैं, यह समझना आवश्यक है कि रूढ़िगत वर्तनी हमें ध्वनि-सम्बन्धी किसी भी विचार-विमर्श में अनिश्चय की स्थिति में डाल देगी।

इसलिए, जहाँ कहीं भी आवश्यक होगा, हम उन ध्वनियों को, जिनके विषय में हम चर्चा करते हैं, विशेष रूप से परिभाषित 'ध्वन्यात्मक मानों' से युक्त वर्णों के द्वारा प्रतीकात्मक रूप देंगे। ध्वन्यात्मक प्रतीकों को रूढ़ वर्तनी के वर्णों से भिन्न दिखाने की दृष्टि से उन्हें वर्ग कोष्ठकों में रखने की प्रथा है। इस प्रकार [a] एक विशिष्ट मान के रूप में परिभाषित एक ध्वन्यात्मक प्रतीक है तथा *a* सामान्य अंगरेजी (अथवा फ्रेंच व लैटिन) का एक वर्ण है जो भिन्न-भिन्न भाषाओं की विविध ध्वनियों को स्पष्ट करने के लिए अशुद्ध रूप से परिभाषित एव विरोधात्मक अनेक रूपों में प्रयुक्त होता है।

किसी भी ध्वन्यात्मक प्रतीक की परिभाषा का विशेष महत्त्व है और उसकी रचना सदैव सावधानी से होनी चाहिए किन्तु, जो भी हो, प्रतीक का स्वयं में

अथवा एक प्रतीक के स्थान पर दूसरे प्रतीक के चुनाव का विशेष महत्त्व नहीं है। आगामी अनुभाग में हम वर्ण [a] का प्रयोग उतनी ही सुस्पष्टता से परिभाषित स्वरों के एक विशेष संवर्ग को निर्दिष्ट करने के लिए करेंगे जितना कि प्रतीक के हमारे अभीष्ट प्रयोग के लिए आवश्यक होगा और जब-जब हम [a] लिखेंगे तो हमारा अभिप्राय उसी संवर्ग की एक ध्वनि को निरूपित करना होगा जिसे हम परिभाषित कर चुके हैं। किन्तु यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि हम स्वयं [a] वर्ण को किसी भी प्रकार का महत्त्व नहीं देते। इसे चुनने का हमारा कारण केवल यह है कि भाषाशास्त्र की पुस्तकों में प्रस्तुत मान के रूप में यह पहले से ही व्यवहृत हो रहा है। यदि इसी मान के रूप में कोई अन्य प्रतीक सामान्यतया प्रचलित होता अथवा यदि ध्वनि को प्रतीकात्मक रूप देने की कोई स्थिर विधि नहीं होती तो हम 'क्यों नहीं' जैसा अकाट्य प्रश्न पूछने के अतिरिक्त [a] के अपने चुनाव की सफ़ाई देने में असमर्थ होते। इस सिद्धान्त पर बहुत अधिक आग्रहपूर्वक बल नहीं दिया जा सकता। यदि *palm* में प्रयुक्त स्वर की ध्वनि [s] वर्ण से अथवा (४) की संख्या से या ताड़वृक्ष के एक छोटे से चित्र से प्रस्तुत करना सुविधाजनक अथवा सामान्य या किसी व्यावहारिक कारण से वांछनीय हो तो एक बार हमारे प्रतिलेखन में उसके मान को स्पष्ट रूप से परिभाषित कर दिए जाने पर वह वर्ण अथवा संख्या या चित्र पूर्णतः स्वीकार्य ध्वन्यात्मक प्रतीक होगा। हमारे लिए महत्त्व केवल ध्वनियों का है, कागज पर बने चिह्नों का नहीं।

इसका अभिप्राय यह नहीं है कि प्रतीकों के अपने चुनाव में हम अपने विवेक का प्रयोग ही न करें। पर्याप्त रूप में व्यवहृत अनेक ध्वन्यात्मक वर्णमालाएँ पहले से ही अस्तित्व में हैं और वे सैकड़ों व्यक्ति जो इन वर्णमालाओं से परिचित हैं अकारण ही असंतुष्ट न होंगे यदि हम उन प्रतीकों की, जिनके व्यवहार के वे अभ्यस्त हैं, अवहेलना करने वाले अथवा उन्हें खण्डित करने वाले पूर्णरूपेण नवीन प्रतीकों को प्रस्तुत करने का प्रयास करें। इसलिए यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि प्रमुख निर्देशक तत्त्व सुविधा और परंपरा ही हैं। इसलिए हम अमरीकी ध्वनिविज्ञानियों के मान्य प्रयोगों से यथासंभव कम-से-कम हट कर चलेंगे किन्तु जहाँ हमें वे प्रयोग असंगत अथवा असुविधाजनक प्रतीत होंगे हम अपने ही नए प्रतीकों को प्रस्तावित करने में संकोच नहीं करेंगे। जो छात्र यहाँ दिए गए प्रतीकों का प्रयोग करना सीखता है उसे चाहिए कि वह ध्वनि-लेखन की उन अन्य पद्धतियों का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त करे जिनसे उसका सम्पर्क विभिन्न पुस्तकों के माध्यम से होना है। उसे केवल इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसी ध्वन्यात्मक वर्णमाला का प्रमुख लक्षण वे प्रतीक नहीं हैं जिनसे इसका निर्माण होता है किन्तु वर्गीकरण की वह पद्धति है जिस पर यह आधृत है।

अन्त में एक चेतावनी और। जब हम किसी ध्वन्यात्मक प्रतीक का निरूपण यह कहते हुए करते हैं कि वह अमुक शब्द की सुनी गई ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता है तो हमारा तात्पर्य यह नहीं होता कि उस शब्द के सभी उच्चारण समान होते हैं, यहाँ तक कि एक ही बोली अथवा एक ही वक्ता के प्रयोग में भी ऐसा नहीं होता। सामान्यतः एक ध्वन्यात्मक प्रतीक का मान ध्वनियों का समूह या वर्ग होता है जो न्यूनाधिक रूप से विशिष्टता वाले विभिन्न सदस्यों की अनिश्चित संख्या से युक्त होता है। दूसरे शब्दों में, प्रतीकों से हमारा अभिप्राय अकेली ध्वनियों की अपेक्षा ध्वनि-संवर्गों का प्रतिनिधित्व करने से है।

**२.८. स्वरों का वर्गीकरण :**—स्वरों का आधारभूत वर्गीकरण एक सीधा-सा विषय है। इसके लिए तीन विभाजक आधार हैं :—जिह्वा का वह भाग जो एक करण के रूप में कार्य करता है, वह ऊँचाई जहाँ तक जिह्वा उत्थापित की जाती है और ओष्ठों की स्थिति।

जैसाकि पहले २.५ (३) में संकेतित कर चुके हैं, 'अग्रस्वरों' का उच्चारण कठोर तालु की ओर जिह्वोपाग्र को विभिन्न स्थितियों में उठाने से होता है। फ्रांसीसी भाषा के *patte* (paw), *par* (by) और बोस्टन अंगरेजी के *calm*, *car* का स्वर जिह्वा को हलके से आगे की ओर धकेलते हुए तथा जिह्वा के पूरे शरीर को मुख में अधिक-से-अधिक नीचे रखते हुए उच्चरित होता है जिसे हम 'निम्न अग्रस्वर' कहते हैं तथा [a] के रूप में लिखते हैं। फ्रांसीसी *bete* ['प्रथम e के ऊपर वाणमुख-चिह्न'][1] (beast) तथा *faire* (do) के स्वर और लन्दन की अंगरेजी में *fair* तथा *there* के स्वरात्मक तत्त्व के प्रथम भाग के लिए जिह्वोपाग्र को आगे बढ़ाकर कठोर तालु की ओर लगभग एक-तिहाई ऊपर उठाया जाता है। यह 'निम्न-मध्य अग्रस्वर' है और ['अंगरेजी के E की गोलाकृति'][2] के रूप में लिखा जाता है। फ्रांसीसी *ete*[3] (summer) तथा जर्मन *see* (sea) के स्वर के लिए भी जिह्वोपाग्र को आगे बढ़ाया जाता है और कठोर तालु की ओर दो-तिहाई ऊपर उठाया जाता है। यह 'उच्चतर-मध्य अग्रस्वर' है और इसे [e] के रूप में लिखा जाता है। अंत में, फ्रांसीसी *ici* (here), *rive* (shore) और जर्मन *sieht* (sees), *nie* (never) के स्वर के लिए जिह्वोपाग्र को आगे बढ़ाकर कठोर तालु के अग्रवर्ती भाग की ओर अधिकतम सम्भव ऊँचाई तक उठाया जाता है। संघर्षी ध्वनियों के लिए अपेक्षित संकुचन से कुछ कम संकुचन की स्थिति रहती है। यह 'उच्च अग्रस्वर' है तथा [i] के रूप में लिखा जाता है।

यहाँ हमने अग्रस्वरों में जिह्वा की ऊँचाई की चार कोटियाँ निर्दिष्ट की हैं—उच्च, उच्च-मध्य, निम्न-मध्य और निम्न। किन्तु यह स्पष्ट है कि ये चारों कोटियाँ एक अविच्छिन्न स्थिति का ही अंश हैं और इस अविच्छिन्नता में किसी

भी प्रकार का विच्छेद यादृच्छिक एवं कृत्रिम ही होगा। जिह्वा की ऊँचाई के लिए तीन अथवा पाँच कोटियों की अपेक्षा चार कोटियों के निर्धारण का कारण यह है कि इस संख्या से हमें उपयोगी वर्गीकरण के लिए कार्य करने का उत्तम आधार प्राप्त होता है। मध्यवर्ती कोटियों की चर्चा हम बाद में करेंगे। इस समय तो अपेक्षित सिद्धान्तों को स्पष्ट करने के लिए चार कोटियाँ ही पर्याप्त हैं।

यह ध्यातव्य है कि [i, e, E ('गोलाकृति'), a][४] ये चार स्वर उदासीन अथवा फैले हुए ओष्ठों की स्थिति से उच्चरित होते हैं तथा 'अवर्तुलित स्वर' कहलाते हैं।

जिह्वापश्च जिस मात्रा में कोमल तालु की ओर बढ़ता है, उस रूप में 'पश्च-स्वरों' का वर्गीकरण सादृश्यता के आधार पर किया जाता है। क्योंकि अधिक परिचित भाषाओं में अधिकांश पश्चस्वर 'ओष्ठ-वर्तुलन' अथवा 'ओष्ठचरंजन' (अर्थात् ओष्ठों के संकुचन अथवा फैलाव) से उच्चरित होते हैं इसलिए अपने इस सर्वेक्षण का प्रारम्भ 'वर्तुलित स्वरों' से करना अधिक सुगम होगा। इस प्रकार हम लन्दन की अंगरेजी के *Tom, not* में प्रयुक्त 'निम्न पश्च वर्तुलित' स्वर [ɒ], लन्दन की अंगरेजी के ही *bought, law* में (तथा इन शब्दों के अमरीकी उच्चारणों में भी) प्रयुक्त 'निम्नतर-मध्य पश्च वर्तुलित' स्वर [ɔ], फ्रेंच *beau* (beautiful) और जर्मन *rot* में प्रयुक्त 'उच्चतर-मध्य पश्च वर्तुलित' स्वर [o] एवं फ्रेंच *tout* तथा जर्मन *gut* में प्रयुक्त 'उच्च पश्च वर्तुलित' स्वर [u] में भेद करते हैं।

अग्रस्वरों का उच्चारण ओष्ठ-वर्तुलन तथा पश्चस्वरों का उच्चारण इसके बिना भी सम्भव है; वास्तव में सामान्य ध्वनिविज्ञान की दृष्टि से इस लक्षण को एक श्रेणी की अपेक्षा किसी दूसरी श्रेणी से स्वाभाविक रूप से संबद्ध मान लेने का कोई आधार नहीं है। फ्रेंच *lune* (moon) और जर्मन *kuhl* ['u की दोनों रेखाओं के ऊपर एक-एक बिन्दु'][५] (cool) में 'अग्र वर्तुलित' स्वर उच्च ['u और उस पर दो बिन्दु'][६], फ्रेंच *peu* (few) और जर्मन *bose* ['o पर दो बिन्दु'][७] (bad) में उच्चतर-मध्य ['o पर दो बिन्दु'][८] और फ्रेंच *peur* (fear) व *peuple* (people) में निम्नतर-मध्य ['ɔ पर दो बिन्दु'][९] होते हैं। (निम्न अग्र [a] का वर्तुलित प्रतिरूप यद्यपि सुगमता से उच्चरित हो सकता है किन्तु व्यवहार में कहीं भी उसका प्रयोग नहीं मिलता है।) अधिक परिचित 'पश्च अवर्तुलित' स्वर *cut* एवं *run* में निम्नतर-मध्य [ʌ] और *calm* एवं *father* के कुछ (विशेषकर अंगरेजी) उच्चारणों में निम्न ['a पर दो बिन्दु'][१०] हैं। उच्च ['ɪ पर दो बिन्दु'][११] (अवर्तुलित [u]) तथा निम्नतर-मध्य ['e पर दो बिन्दु'][१२] (अवर्तुलित [o]) भी सामान्य रूप से व्यवहृत होते हैं यद्यपि सुपरिचित भाषाओं के परिनिष्ठित उच्चारण में इनका व्यवहार नहीं होता।

सभी स्वर कठोर तालु के सामने स्थित जिह्वोपाग्र से अथवा छदन के सामने

स्थित पश्चजिह्वा से उच्चरित नहीं होते हैं। एक ऐसी मध्यवर्ती श्रेणी होती है जिसके लिए जिह्वा का मध्यभाग (जिह्वोपाग्र व पश्चजिह्वा का अतिव्यापन करते हुए) मुख की छत के ऊपरी मध्यवर्ती भाग की ओर (कठोर तालु एवं छदन का अतिव्यापन करते हुए) बढ़ता है। इन्हें 'केन्द्रीय स्वर' कहते हैं। [i] एवं ['I पर दो बिन्दु'][13] के बीचोंबीच उच्च केन्द्रीय स्वर रूसी *byl* (he was) में, ['u पर दो बिन्दु'][14] और [u] का मध्यवर्ती उच्च केन्द्रीय वर्तुलित स्वर स्वीडिश *hus* (house) और *moon* तथा *shoes* के कुछ दक्षिणी अमेरिकी उच्चारणों में, ['गोलाकृति E'][15] और [ʌ] के बीच में निम्नतर-मध्य केन्द्रीय स्वर लन्दन और बोस्टन की अंगरेज़ी के *bird* और *worm* में तथा [a] और ['a पर दो बिन्दु'][16] के बीच का निम्न केन्द्रीय स्वर *calm* एवं *father* के सामान्य रूप में प्रचलित अमेरिकी उच्चारण में उपलब्ध होता है।

अब हमें वर्गीकरण की एक ऐसी पद्धति की जानकारी हो गई है जो स्वरों के चौबीस संवर्गों की भिन्नता को स्पष्ट करती है : करण के आधार पर तीन श्रेणियाँ (अग्र, मध्य और पश्च), जिह्वा की ऊँचाई के आधार पर चार श्रेणियाँ (उच्च, उच्चतर-मध्य, निम्नतर-मध्य और निम्न) तथा ओष्ठ-वर्तुलन के आधार पर दो श्रेणियाँ (अवर्तुलित एवं वर्तुलित)। ये चौबीस संवर्ग मुख्य स्वरात्मक प्ररूपों को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं किन्तु अनेक ध्वन्यात्मक प्रयोजनों की दृष्टि से और अधिक स्पष्ट विभाजक रेखाएँ खींचना आवश्यक है। इसलिए जिह्वा की ऊँचाई के आधार पर हम तीन मध्यवर्ती श्रेणियाँ, ऊपर कही गई चार श्रेणियों में प्रत्येक दो के मध्य में एक अर्थात् उच्च एवं उच्चतर-मध्य के बीच में 'निम्नतर-उच्च' श्रेणी, उच्चतर-मध्य एवं निम्नतर-मध्य के बीच में 'औसत-मध्य' श्रेणी तथा निम्नतर-मध्य एवं निम्न के बीच में 'उच्चतर-निम्न' श्रेणी निर्धारित करते हैं। (आवश्यकतानुसार उच्च एवं निम्न श्रेणियों को क्रमश: उच्चतर-उच्च एवं निम्नतर-निम्न श्रेणियों के रूप में निकटस्थ श्रेणियों से स्पष्टतया पृथक् किया जा सकता है।) वर्गीकरण की इस सूक्ष्मता से स्वर-संवर्गों की संख्या बयालीस हो जाती है। इसी पद्धति से और अधिक उपवर्गीकरण की आवश्यकता प्राय: नहीं होती।

अब प्रश्न यह है कि इन सब ध्वनियों को लेखन में किस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है? इस समय सामान्य रूप से प्रचलित किसी भी ध्वन्यात्मक वर्णमाला में लगभग तीस से अधिक स्वर प्रतीक नहीं हैं तथा इनमें भी अनेक अनावश्यक रूप से जटिल एवं कृत्रिम हैं। अनेक व्यावहारिक प्रयोजनों की दृष्टि से कौशल-पूर्वक निर्धारित संवर्गों के लिए कुछ वर्णों का होना ही पर्याप्त है। इन्हीं वर्णों के साथ कुछ स्पष्ट एवं सरलता से अंकित विशेषकों के योग से अन्य संवर्गों के लिए प्रतीक प्राप्त किए जा सकते हैं। सारणी-संख्या १ में हमारे सुझाए हुए प्रतीक दिए

हुए हैं। उसमें चौदह आधारभूत वर्ण हैं, सात अग्र (अवर्तुलित) स्वरों के लिए तथा सात पश्च वर्तुलित स्वरों के लिए। अग्र वर्तुलित स्वरों को स्पष्ट करने के लिए हम पश्च वर्तुलित स्तम्भ के वर्णों को उनके ऊपर दो बिन्दु रखकर प्रस्तुत करते हैं। इसके विपरीत, पश्च अवर्तुलित स्वरों को स्पष्ट करने के लिए हम अग्र अवर्तुलित स्तम्भ के वर्णों को उन्हीं विशेषकों के साथ प्रस्तुत करते हैं किन्तु इन दोनों श्रेणियों के कुछ स्वरों के लिए हम सामान्य व्यवहार में आने वाले कुछ वैकल्पिक प्रतीत देते हैं। इस रूप में ['u पर दो बिन्दु'][१७] अथवा [y]=वर्तुलित [i] तथा ['I पर दो बिन्दु'][१८] अथवा [ɯ]=अवर्तुलित [u] हैं। केन्द्रीय स्वरों के लिए हम आधारभूत वर्णों का, उनके ऊपर एक बिन्दु रखकर, प्रयोग करते हैं: अग्र अवर्तुलित स्तम्भ के वर्णों का केन्द्रीय अवर्तुलित स्वरों तथा पश्च वर्तुलित स्तम्भ का केन्द्रीय वर्तुलित स्वरों के रूप में व्यवहार होता है। इस प्रकार [e] एवं ['e पर दो बिन्दु'][१९] का मध्यवर्ती ['e पर एक बिन्दु'][२०] अवर्तुलित तथा ['o पर दो बिन्दु'][२१] एवं [o] का मध्यवर्ती ['o पर एक बिन्दु'][२२] वर्तुलित स्वर है। क्योंकि i के ऊपर पहले से स्वयं उसका ही अपना एक बिन्दु है इसलिए हम उच्च एवं निम्नतर-उच्च केन्द्रीय अवर्तुलित स्वरों को, अग्रस्वरों के अनुरूप स्वरों को मध्य में काटती हुई एक सूक्ष्म अनुप्रस्थ रेखा-सहित स्पष्ट करते हैं। (देखिए संदर्भ-संख्या)।[२३]

इन प्रतीकों के लिए उपयोगिता तथा कुछ सीमा तक बौद्धिक संगति के अतिरिक्त हमारा विशेष गुणों के सम्बन्ध में कोई दावा नहीं है। यहाँ अन्तर्विष्ट किए गए कुछ संवर्गों के लिए सामान्य रूप से स्वीकृत कोई भी प्रतीक नहीं हैं, कुछ अन्यों के लिए सुप्रसिद्ध प्रतीक हैं जो सारणी में प्रस्तुत नहीं किए गए हैं। तुल्यमान प्रतीकों के अनेक युग्मों को उदाहरणों के रूप में निविष्ट किया गया है जिन्हें प्राप्त करने की छात्र आशा कर सकता है; अन्य परिवर्तों को वह ध्वनि-सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन करते हुए खोज लेगा।

जहाँ हमारे दिए हुए बयालीस संवर्गों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रभेदों की अपेक्षा और अधिक सूक्ष्म प्रभेदों को निर्दिष्ट करने की आवश्यकता हो तो स्वर-प्रतीक के पश्चात् एक छोटे से 'बाणमुख की आकृति का परिवृत्ति संकेत' दिया जा सकता है जिसका बाईं ओर निर्देश स्वर के और अधिक अग्रवर्ती प्रकार के लिए, दाईं ओर और अधिक प्रत्याकर्षित प्रकार के लिए, ऊपर की ओर उच्चतर प्रकार के लिए और नीचे की ओर निम्नतर प्रकार के लिए होता है। इस प्रकार ['I के दाईं ओर ऊपर को उठा हुआ बाणमुख'][२४] [I] की अपेक्षा किञ्चित् उच्चतर स्वर को निर्दिष्ट करता है किन्तु [i] जितने ऊँचे नहीं।

| | अग्र | | केन्द्रीय | | पश्च | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | अवर्तुलित | वर्तुलित | अवर्तुलित | वर्तुलित | अवर्तुलित | वर्तुलित |
| उच्च | i | ü=y | i̇ | u̇ | ï=ɯ | u |
| निम्नतर- उच्च | I | Ü | İ | U̇ | Ï | U |
| उच्चतर- मध्य | e | ö=ø | ė | ȯ | ë=ɤ | o |
| औसत- मध्य | E | Ω̈ | Ė=ə | Ω̇ | Ë | Ω |
| निम्नतर-मध्य | ɛ | ɔ̈=œ | ɛ̇ | ɔ̇ | ɛ̈=ʌ | ɔ |
| उच्चतर- निम्न | æ | ω̈ | æ̇ | ω̇ | æ̈ | ω |
| निम्न | a | ɒ̈ | ȧ | ɒ̇ | ä=ɑ | ɒ |

KAUSHIK

सारणी=१

२.६. अर्द्धस्वर :—ध्वनियों में केवल गुणों के आधार पर ही नहीं अपितु "श्रुतिगम्यता' के आधार पर भी अंतर होता है। किसी ध्वनि की श्रुतिगम्यता मुख्यत: 'अनुनाद-विवर' के आकार से निश्चित की जाती है जिससे वायु-प्रवाह प्रवाहित होता है। इस प्रकार एक निम्न स्वर उसी शक्ति के साथ उच्चरित किए गए उच्चतर स्वर की अपेक्षा अधिक स्पष्ट रूप में श्रव्य होता है तथा किसी भी स्वर में किसी भी व्यंजन की अपेक्षा अधिक श्रुतिगम्यता होती है। इसलिए एक सामान्य उच्चारण में ध्वनियों का क्रम श्रुतिगम्यता को आनुक्रमिक उतार और चढ़ाव से लक्षित किया जाता है। वे ध्वनियाँ जो श्रुतिगम्यता के चढ़ाव को संघटित करती हैं 'आक्षरिक' कहलाती हैं और एक उच्चार में उतने 'अक्षर' होते हैं जितनी कि उसमें आक्षरिक ध्वनियाँ होती हैं।

जब कोई स्वर अकेले अथवा एक या अधिक व्यंजनों के साथ संसक्त होता है तो वह सदैव आक्षरिक होता है। जब दो स्वर बिना किसी विसन्धि (उनके मध्य में विराम अथवा अवकाश) के उच्चरित होते हैं तो उनमें प्रत्येक एक पृथक् अक्षर का शीर्ष हो सकता है अथवा दोनों स्वर एक ही अक्षर से संयुक्त हो सकते हैं। प्रायः बलाघात का वितरण निर्णायक तत्त्व का कार्य करता है (देखिए २.१४)—

चाहे प्रत्येक स्वर बलाघात के एक पृथक् आवेग से उच्चरित हो अथवा एक ही आवेग दोनों को प्रभावित करे। बाद वाली स्थिति में या तो पहला या दूसरा स्वर अधिक श्रुतिगम्य हो सकता है और अक्षर के शीर्ष के रूप में कार्य कर सकता है; दूसरा स्वर 'अनाक्षरिक' कहलाता है। फ्रेंच *pays* [pei] 'country' में दोनों स्वर दो भिन्न-भिन्न अक्षरों के शीर्ष हैं; अंगरेजी *pay* [PEI] में भी स्वरों का ऐसा ही अनुक्रम है किन्तु केवल प्रथम स्वर ही आक्षरिक है। फ्रेंच *Raoul* [Raul] 'Ralph' (दो अक्षर) और अंगरेजी *fowl* [faUl] (एक अक्षर) तथा फ्रेंच *aerer* ('प्रथम *e* पर बलाघात चिह्न')[२५] [aeRe] 'ventilate' (तीन अक्षर) और अंगरेजी *irate* [aeᴊEIt] (दो अक्षर) की भी तुलना कीजिए। एक आक्षरिक और एक अनाक्षरिक स्वर का संयोग 'द्विस्वरसंध्यक्षर' कहलाता है। इस रूप में अंगरेजी शब्दों में प्रयुक्त योग [EI, aU, ae], जिन्हें अभी उद्धृत किया गया है, द्विस्वरसंध्यक्षर हैं किन्तु फ्रेंच शब्दों में द्व्याक्षरिक योग [ei, au ae] नहीं होते। जब यह बताना उपयोगी हो कि कोई एक प्रतीक किसी अनाक्षरिक स्वर को निर्दिष्ट करता है तो उस वर्ण के नीचे विशेषक के रूप में एक वक्र रेखा खींची जा सकती है, जैसेकि [EI, aU, ae] ('युग्मों में प्रत्येक द्वितीय वर्ण के ठीक नीचे एक विशेपक वक्र रेखा')[२६] किन्तु इस सम्बन्ध में आगे भी अध्ययन किया गया है।

यदि हम द्विस्वरसंध्यक्षरों की एक बड़ी संख्या का परीक्षण करें तो हमें ज्ञात होगा कि अनेक विशिष्ट प्रकार के—*high, how, hay, go, boy* जैसे उदाहरणों में अनाक्षरिक स्वर में आक्षरिक की अपेक्षा जिह्वा की स्थिति उच्चतर होती है। श्रुतिगम्यता के सम्बन्ध में अपने उपर्युक्त कथन को दृष्टि में रखते हुए यह आश्चर्यकर प्रतीत नहीं होता। संसक्त आक्षरिक के साथ इस प्रकार का सम्बन्ध रखने वाले अनाक्षरिक स्वर को कोई विशेष अभिधान देना उपयोगी रहता है। हम इसे 'अर्द्धस्वर' कहते हैं। संसक्त आक्षरिक (किन्तु बलाघात की मात्रा न्यून होने से कम श्रव्य) स्वरों की अपेक्षा जिह्वा की निम्नतर स्थिति वाले अनाक्षरिक स्वर प्रायः इस नाम से अभिहित नहीं होते। लंदन अंगरेजी के *here* [hIə] में अनाक्षरिक [ə] और बेवेरियन जर्मन के *guat* (=*gut*) ['देखिए संदर्भ-संख्या'[२७]] में अनाक्षरिक ['a और e आपस में सम्पृक्त और उनके ठीक ऊपर बीच में एक बिन्दु'][२८] इसके उदाहरण हैं।

अर्द्धस्वर किसी स्वर के पहले या बाद में रह सकता है। *yes, you* तथा *well, wall* की आद्य ध्वनियाँ सामान्यतया व्यंजन मानी जाती हैं एवं, वास्तव में, अंगरेजी के गठन में इनका योग पूर्णतया [m] तथा [z] जैसे असंदिग्ध व्यंजनों के तुल्यरूप ही है (देखिए अध्याय ३) किन्तु २.६ में दी गई परिभाषाओं के अनुसार हमने जो कोटि निर्धारित की है, उससे वे स्वर ठहरते हैं। क्योंकि वे अनाक्षरिक

हैं और प्रत्येक स्थिति में अव्यवहित आक्षरिक स्वर की अपेक्षा उनमें जिह्वा की उच्चतर स्थिति रहती है इसलिए पूर्ण सन्तोष के साथ उन्हें अर्द्धस्वर कहा गया है।

अर्द्धस्वर में जिह्वा की स्थिति अव्यवहित स्वर की अपेक्षा उच्चतर तो रहती ही है, साथ ही लगभग सदैव अधिक आगे की ओर अथवा अधिक प्रत्याकर्षित भी रहती है। अर्द्धस्वर में ओष्ठों की स्थिति स्वर के समान (जैसेकि *yes, woo* में) अथवा भिन्न भी रह सकती है (जैसेकि *you, well* में)। इन विभिन्न सम्भावनाओं के आधार पर हम सभी अर्द्धस्वरों को चार संवर्गों में विभाजित करते हैं और प्रत्येक के लिए एक आधार प्रतीक प्रस्तुत करते हैं: [j], अव्यवहित स्वर की अपेक्षा उच्चतर और अधिक आगे बढ़ी हुई जिह्वा, ओष्ठ अवर्तुलित; [अंगरेजी के विपर्यस्त एच प जैसा चिह्न];[२९] स्थिति उपर्युक्त ही, किन्तु ओष्ठ वर्तुलित; [J], अव्यवहित स्वर की अपेक्षा उच्चतर और अधिक प्रत्याकर्षित जिह्वा, ओष्ठ अवर्तुलित; [w], स्थिति उपर्युक्त ही, किन्तु ओष्ठ वर्तुलित।

इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि [j] प्रतीक जिह्वा की सदैव एक-सी निरपेक्ष ऊँचाई वाले अर्द्धस्वर का संकेत नहीं देता। *Year* में [j], जहाँ यह उच्च अथवा निम्नतर-उच्च अग्रस्वर से आगे रहता है, जिह्वोपाग्र को पर्याप्त मात्रा में उठाकर और आगे बढ़ाकर उच्चरित किया जाना चाहिए। *Yawn* में [j], जहाँ यह निम्न अथवा निम्नतर-मध्य पश्चस्वर के आगे रहता है, जिह्वोपाग्र को अपेक्षाकृत नीचा रखकर और कुछ आगे बढ़ाकर उच्चरित किया जा सकता है। इसी प्रकार *woo* में [w] पर्याप्त रूप से उत्थापित, प्रत्याकर्षित और वर्तुलित होना चाहिए जबकि *well* में [w] को इतना अधिक ऊँचा, इतना पीछे की ओर हटा हुआ अथवा इतने अधिक दृढ़ रूप में ओष्ठचरंजित होने की आवश्यकता नहीं है।

[j] केवल *yes, yawn* [jES, jɔn] अथवा फ्रांसीसी *yeux* (eyes), *fier* (confide), [jo, (o पर दो बिन्दु), fje][३०] जैसे शब्दों में ही नहीं रहता बल्कि *hay, high, boy* [hEj, haj, bɔj] जैसे शब्दों में स्वरों के बाद भी रहता है क्योंकि, जैसाकि पहले कहा जा चुका है, इन द्विस्वरसंध्यक्षरों के अनाक्षरिक तत्व अर्द्धस्वर हैं। [अंगरेजी के विपर्यस्त प जैसा चिह्न][३१] फ्रांसीसी के *huit* (eight), *lui* (him), *tuer* (kill) [देखिए शब्दों का लिखित मूल रूप][३२] तथा जर्मन *Eule*, (owl), *Beutel* (bag) [देखिए मूल रूप][३३] के नाटकीय उच्चारण में भी आता है। [w] *wet, wool* [wEt, wUl] और फ्रांसीसी *oui* (yes), *Louis* [wi, lwi] में; *how, go* [haw, gow] में तथा जर्मन *aus* (out) [aws] में भी होता है। पश्च अवर्तुलित अर्द्धस्वर दुर्लभ ही है।

अर्द्धस्वर सघोष एवं अघोष दोनों प्रकार के होते हैं। तुलना करें २.५(५) एवं २.१०(४)। अघोष [j] (जिसे j में एक रेखा खींचकर अथवा किसी अन्य सुविधा-

जनक आपरिवर्तन द्वारा संकेतित किया जा सकता है) प्रायः *hue*, *huge* में तथा अघोष व्यंजन के पश्चात्, जैसेकि *pew*, *cute* [pjUw, kjUwt] में प्रायः सुनाई देता है। अघोष [w] (जिसके लिए विशिष्ट प्रतीक [पर्याप्त मुड़ी हुई घुण्डी वाला अंगरेजी h का-सा अक्षर[३४]] सामान्य रूप से प्रयुक्त होता है) *why*, *whale* [देखिए मूल रूप][३५] के कुछ उच्चारणों में तथा अघोष व्यंजन के पश्चात्, जैसे *twice*, *quick* [देखिए मूल रूप][३६] में मिलता है।

जहाँ किसी कारण से अर्द्धस्वरों में विशेष सूक्ष्मता के साथ जिह्वा की ऊँचाई निर्दिष्ट करना वांछनीय हो उसके अतिरिक्त सभी स्थितियों में [i, u के नीचे वक्र रेखाचिह्न][३७] के लेखन तथा ऐसे ही अन्य लेखनों में आधार प्रतीकों को महत्त्व दिया जाता है।

**२.१०. स्वरों का अतिरिक्त विश्लेषण** :—२.८ के अन्तर्गत हमने जिह्वा एवं ओष्ठों की स्थिति के आधार पर स्वरों का वर्गीकरण किया था जिसके परिणाम-स्वरूप हमने बयालोस संवर्ग निर्धारित किए थे। किसी भी स्वर को इनमें से किसी एक में रखा जा सकता है और सारणी-संख्या १ में दिए गए किसी एक प्रतीक के द्वारा अथवा किसी अनुरूप आलेख द्वारा उसे अभिव्यक्त किया जा सकता है किन्तु यह नहीं मान लेना चाहिए कि हमारे वर्गीकरण से स्वरों को आपरिवर्तित करने के सभी प्रकार समाप्त हो गए हैं। कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण आपरिवर्तनों का निर्देश करना और उन्हें लेखन में अभिव्यक्त करने के साधनों का सुझाव देना इस अनुभाग का लक्ष्य होगा।

(१) नासिक्यरंजन :—२.५(४) के अन्तर्गत किए गए छदन के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि जिह्वा अथवा ओष्ठों के किसी भाग से उच्चरित कोई ध्वनि—अतः कोई भी स्वर—दो रूपों में उच्चरित हो सकता है : 'मौखिक', जब छदन नासिका-मार्ग के द्वार तक उसे अवरुद्ध करने के लिए ऊपर उठ जाए, और 'नासिक्य', जब छदन इतना नीचे हो जाए कि वायुप्रवाह नासिका-मार्ग से निकल सके। यदि मुखमार्ग में किसी प्रकार का अवरोध नहीं है, जैसाकि स्वरों के उच्चारण में होता है, तो पहली (मौखिक) स्थिति में वायु पूर्णरूपेण मुख से निःसृत होती है; दूसरी (नासिक्य) स्थिति में वायु अंशतः मुख से तथा अंशतः नासिका से निःसृत होती है।

नासिक्य स्वर अनेक भाषाओं में सामान्य हैं। नासिक्यरंजन का क्षेत्र हलके 'नासिक्य प्रभाव' से लेकर (जैसाकि *man* के स्वर में है जो *bad* के स्वर से तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है) फ्रांसीसी के *vin* (wine), *cent* (hundred), *pont* (bridge), *un* (one) के स्वरों की तीव्र नासिक्य गूंज तक हो सकता है। स्वरों का नासिक्यरंजन वर्ण के नीचे एक वक्रचिह्न के द्वारा संकेतित किया जाता है, जैसे

[a के नीचे वक्र रेखाचिह्न][३८]।

(२) प्रतिवेष्टन :—अग्रस्वरों का निर्माण जिह्वोपाग्र से, पश्चस्वरों का जिह्वापश्च से तथा केन्द्रीय स्वरों का इन दोनों के मध्यवर्ती जिह्वांश से इन दोनों ही का अतिव्यापन करते हुए होता है। जब ये करण कार्यकारी होते हैं तो जिह्वाग्र प्राय: सामने के निचले दाँतों के पीछे मुख के तल के निकट निश्चेष्ट रहता है। किन्तु जैसाकि २.५(२) के अन्तर्गत कहा जा चुका है कि जिह्वाग्र स्वतंत्र रूप से गतिमय रहने में समर्थ होता है अत: सभी स्वरों का उच्चारण जिह्वाग्र को ऊपर के दाँतों की ओर उठाकर अथवा ऊपर की ओर घुमाकर तथा पीछे की ओर वर्त्स्य श्रेणी अथवा कठोर तालु की ओर ले जाकर भी संभव है। इस रूप में उच्चरित होने वाले स्वर प्रतिवेष्टित कहलाते हैं और उन्हें वर्ण के नीचे एक बिन्दु लगाकर प्रकट किया जाता है, जैसे a का वर्ण और उसके ठीक नीचे एक विन्दु।

(पूर्वी न्यू इंगलैंड एवं ओल्ड साउथ के भागों को छोड़कर) अमेरिकी अंगरेजी के अनेक रूपों में प्रतिवेष्टित स्वर मिलते हैं, जैसे *hard*, *board*, *poor* जैसे शब्दों में। इनमें मध्य केन्द्रीय प्रतिवेष्टित स्वर अधिक प्रचलित है, जैसे *bird*, *worm* आदि में, तथा इसके लिए अनेक ध्वनिशास्त्री एक विशेष प्रतीक [अंगरेजी का विपर्यस्त ई ə और उसके दाईं ओर ऊपर एक विन्दु][३९] का व्यवहार करते हैं।

(३) तनन :—अंगरेजी *see* तथा फ्रांसीसी *si* (if) के दोनों ही स्वर उच्च अग्र हैं इसलिए दोनों ही [i] के रूप में लिखे जा सकते हैं। इसी प्रकार अंगरेजी *do* और फ्रांसीसी *doux* के दोनों स्वर [u] के रूप में लिखे जा सकते हैं। तथापि अंगरेजी और फ्रांसीसी के स्वरों में अनेक अन्तर हैं; सबसे प्रमुख तो यह है कि फ्रांसीसी स्वर उच्चारणावयवों की पेशियों के सुस्पष्ट रूप से अधिक तनन के परिणामस्वरूप उच्चरित होते हैं। अंगरेजी की निकटतम अनुरूप ध्वनियों से तुलना करने पर अधिकांश फ्रांसीसी स्वरों की यह विशेषता स्पष्ट हो जाती है। अंगरेजी में जबकि ओष्ठ, जिह्वा तथा अन्य उच्चारणावयव न्यूनाधिक रूप में शिथिलित रहते हैं, फ्रांसीसी में उनमें तनाव रहता है। अंगरेजी में भी कुछ स्वर अन्यों की अपेक्षा अधिक दृढ़ होते हैं, जैसे *feel* और *fool* के स्वर *fill* और *full* की अपेक्षा न केवल उच्चतर, दीर्घतर तथा किंचित् अधिक संधियुक्त हैं बल्कि अधिक स्नायविक तनन के परिणामस्वरूप उच्चरित होते हैं।

जहाँ आवश्यक हो, 'दृढ़' एवं 'शिथिल' स्वरों में वर्ण के नीचे वैषम्यात्मक विशेषक चिह्नों—जैसेकि एकभुजविहीन छोटे चतुर्भुज—द्वारा भेदन किया जा सकता है। दृढ़ स्वरों के लिए इसका खुला भाग नीचे तथा शिथिल स्वरों के लिए शीर्ष पर होगा।

(४) घोष :—२.५(५) के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है कि घोषतंत्री

से लगभग सभी ध्वनियाँ विभिन्न स्थितियों में उच्चरित हो सकती हैं और इस रूप में उन्हें घोष, अघोष, मर्मर अथवा फुसफुसाहट के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। स्वर विशेष रूप में सघोष होते हैं (तुलना करें २.६); किन्तु अघोष स्वर, कुछ असाधारण परिस्थितियों में मर्मर और फुसफुसाहट के अतिरिक्त भी, अनेक भाषाओं में प्रयुक्त होते हैं। सामान्य घोष से भिन्न स्वरों के सभी प्रकार के श्वासद्वारीय आपरिवर्तनों को वर्ण के नीचे अथवा उसके बाद में विशेषक चिह्नों द्वारा निर्दिष्ट किया जा सकता है। अघोषत्व प्रकट करने के लिए हम लघु आकार के विपर्यस्त v के प्रयोग का सुझाव देते हैं; जैसे कि [aʌ]।

व्यंजन [h] को, जिसका विवेचन हमने २.५(५) में श्वासद्वारीय संघर्षी के रूप में किया है और जिसे हम इसी रूप में २.११ के अन्तर्गत वर्गीकृत करेंगे, विकल्पतः अघोष स्वर के रूप में अथवा किसी अंश में सभी अघोष स्वरों के लिए एक आधार-शब्द के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। (यह ध्यान रखें कि *he*, *ham*, *hoe*, *who* जैसे शब्दों में [h] के लिए जिह्वा एवं ओष्ठ की स्थिति लगभग या ठीक वैसी ही रहती है जैसी कि प्रत्येक आगे वाले स्वर के उच्चारण के लिए होती है।) फिर भी इसको व्यंजन मानने का निर्णय व्यावहारिक उपयोगिता के आधार पर किया गया है।

**२.११. व्यंजनों का वर्गीकरण :**—२.४ के अन्तर्गत हमने व्यंजनों के चार मूल प्रकार बताए थे—स्पर्श, संघर्षी, पार्श्विक एवं कम्पनयुक्त। २.५ में हम देख चुके हैं कि ये चारों प्रकार के व्यंजन पाँच उच्चारणावयवों से विभिन्न स्थितियों में उच्चरित हो सकते हैं। वर्गीकरण के दो सिद्धांतों का योग कर देने से हमें प्रमुख व्यंजन-संवर्गों में भेद करने के लिए एक स्पष्ट एवं सरल मार्ग प्राप्त हो जाता है।

श्वासद्वारीय स्पर्श व्यंजनों को छोड़कर अन्य सभी व्यंजन सघोष अथवा अघोष व मौखिक अथवा अनुनासिक रूप में उच्चरित किए जा सकते हैं। अनुनासिक व्यंजनों में अनुनासिक स्पर्श व्यंजन अपने बहुल प्रयोग तथा अपने सदृश मौखिक रूपों से असाधारण रूप में अत्यधिक ध्वनिक पार्थक्य के कारण एक विशेष महत्त्व-पूर्ण स्थान रखते हैं। अधिकांश अनुनासिक ध्वनियों में वायुप्रवाह अंशतः नासिका-द्वार से तथा अंशतः मुखमार्ग से निःसृत होता है किन्तु जब मुखमार्ग पूर्णरूपेण अवरुद्ध होता है तथा छदन नीचे की ओर होकर नासिका-विवर के मार्ग को उन्मुक्त कर देता है तो समस्त वायुप्रवाह नासिकामार्ग से ही बाहर निकलता है। इसलिए स्पर्श, संघर्षी, पार्श्विक एवं कम्पनयुक्त व्यंजन ध्वनियों के समानान्तर अनुनासिक स्पर्श व्यंजनों का 'नासिक्य' नामक एक पृथक् संवर्ग मानना उपयोगी होगा।

सारणी २ में व्यंजनों के आधारभूत वर्गीकरण को संक्षेप में स्पष्ट किया गया

है। पाँच पंक्तियों में उपर्युक्त पाँच उच्चारणात्मक प्रकार समाहित हैं तथा पाँच स्तम्भों में इन प्रकारों को सम्बद्ध उच्चारणावयव के अनुसार विभाजित किया गया है—अधरोष्ठ, जिह्वाग्र, जिह्वोपाग्र, जिह्वापश्च एवं घोषतंत्री। इन पंक्तियों एवं स्तम्भों के प्रतिच्छेदन के परिणामस्वरूप निर्मित होने वाले पच्चीस कक्षों में से व्यावहारिक महत्त्व केवल इक्कीस कक्षों का ही है क्योंकि कोई भी कम्पनयुक्त ध्वनि जिह्वोपाग्र से तथा कोई भी नासिक्य, पार्श्विक अथवा अधिश्वासद्वारीय कम्पित ध्वनि घोषतन्त्री से उच्चरित नहीं हो सकती है। इसके दूसरी ओर कुछ कक्ष ध्वनियों के एक से अधिक संवर्गों को अपनी सीमा में समाहित कर लेते हैं।

| | ओष्ठ्य | जिह्वान्तीय | जिह्वोपाग्रीय | पश्च-जिह्वीय | श्वास-द्वारीय |
|---|---|---|---|---|---|
| स्पर्श.... | pb | td | c ɟ | kg | ʔ |
| संघर्षी.... | ɸβ, fv | θð, sz, ɹ̥ ɹ | š ž | x ɣ | h ɦ |
| नासिक्य... | m | n | ɲ | ŋ | कोई नहीं |
| पार्श्विक... | ɺ | l | ʎ | ʟ | |
| कम्पनयुक्त.. | ʀ | r | कोई नहीं | R | |

KAUSHIK

सारणी = 2

सारणी में ध्वन्यात्मक प्रतीकों का भी एक समुच्चय है जिससे विभिन्न संवर्गों को प्रकट किया जा सकता है। प्रथम दो पंक्तियों में प्रत्येक प्रतीक-युग्म एक ही वर्ग की अघोष एवं सघोष ध्वनियों को सूचित करता है। (क्योंकि श्वासद्वारीय स्पर्श परिभाषा के अनुसार कभी भी सघोष नहीं होता अतः इसके प्रतीक का साथी दूसरा कोई प्रतीक नहीं होता)। अन्य पंक्तियों में प्रतीक केवल सघोष ध्वनियों को ही निर्दिष्ट करते हैं; अघोष ध्वनियाँ २.१०(४) के अनुसार अघोषत्व के लिए नियत विशेषक-चिह्न को जोड़कर अथवा वर्ण के बीच में एक छोटी शलाका खींच कर लिखी जा सकती हैं, जैसेकि अघोष [l] के लिए [मध्य में सूक्ष्म और टेढ़ी रेखा से कटा हुआ अंगरेजी एल l]—(देखिए मूल रूप)।[४८] ओष्ठ्य-पार्श्विक एवं ओष्ठ्य-कंपनयुक्त ध्वनियों के कक्षों के प्रतीक केवल सैद्धान्तिक पूर्णता के लिए ही जुटाए गए हैं क्योंकि इन संवर्गों की ध्वनियाँ किसी भी ज्ञात भाषा में प्राप्य नहीं हैं।

ओष्ठ्य-संघर्षी ध्वनियों के कक्ष में प्रतीकों के दो युग्म हैं—[देखिए][41] द्वयोष्ठ्य-संघर्षी ध्वनियों के लिए तथा [fv] दंत्योष्ठ्य-ध्वनियों के लिए। जिह्वान्तीय संघर्षी ध्वनियों के कक्ष में तीन प्रतीक-युग्म हैं—[देखिए][42] (प्रायः दन्त्य) ईषद् विवृत संघर्षी ध्वनियों के लिए, [s, z] फलक से निर्मित नलकसंघर्षी ध्वनियों के लिए तथा [देखिए][43] शिखर से बनने वाली नलकसंघर्षी ध्वनियों के लिए। तुलना करें २.५(२)।

इस सारणी में दिए गए संवर्गों में व्यंजनों के सभी संभावित उच्चारण आ जाते हैं किन्तु इनमें मुख्य प्रकारों से अधिक भेदोपभेद नहीं दिखाए गए हैं। इस प्रकार, जिह्वान्तीय स्पर्श ध्वनियों के संवर्ग में अंगरेजी के *too* का सशक्त महाप्राण वर्त्स्य [t], फ्रान्सीसी *tout* का दन्त्य [t] तथा *tsk tsk* के रूप में लिखी जाने वाली क्लिक ध्वनि भी, जिसे हम मृदुल अथवा विनोदात्मक संवेदना के विस्मय-बोधक अव्यय के रूप में प्रयुक्त करते हैं, सम्मिलित हैं। यह समझ लेना चाहिए कि जो संवर्ग हमने निर्धारित किए हैं वे सदैव सुस्पष्ट प्रभेदों की अनिश्चित संख्या को सम्मिलित करेंगे तथा चाहे हम प्रत्येक संवर्ग को कितने ही भेदोपभेदों में विभाजित क्यों न करें, छोटे-से-छोटे भेद में भी आगे और भेद ग्राह्य हो सकते हैं। यही सद्धान्त यहाँ दिए गए अथवा किन्हीं अन्य ध्वन्यात्मक प्रतीकों के प्रयोग का नियामक है। प्रत्येक पृथक् ध्वनि के लिए पृथक् प्रतीक निर्धारित करके कोई भी ध्वन्यात्मक वर्णमाला अभिकल्पित नहीं की जा सकती और ऐसी वर्णमाला का कोई सन्तोषजनक सन्निकटन भी असम्भाव्य होने से दुर्वह होगा। इसलिए मुख्य आवश्यकता है पर्याप्त प्रतीकों की जिनसे प्रमुख व्यंजन-रूपों को स्पष्ट दिखाया जा सके। जहाँ एक ही रूप के दो या अधिक भेदों को पृथक्-पृथक् स्पष्ट करना आवश्यक हो वहाँ आधारिक प्रतीक में थोड़ा परिवर्तन करके या विशेषक-चिह्नों को जोड़कर यह कार्य सरलता से किया जा सकता है।

सारणी २ में प्रत्येक स्तम्भ किसी एक उच्चारणावयव के अनुरूप है। जैसाकि पहले कहा जा चुका है, इन अवयवों में प्रथम चार अवयव उच्चारण के अनेक विभिन्न बिन्दुओं को स्पर्श कर सकते हैं अथवा उनके निकट पहुँच सकते हैं। इस प्रकार जिह्वाग्र को ऊपर के दाँतों की कोर अथवा पीछे की ओर, वर्त्स्य श्रेणी अथवा कठोर तालु की ओर उठाया जा सकता है। एक ही करण द्वारा विभिन्न स्थितियों में निर्मित एक ही प्रकार की ध्वनियों में भेद करने के लिए किसी उपाय का होना उपयोगी है। इस कार्य के लिए हम वर्ण के तल में दो विशेषक-चिह्न योजित करने की अनुशंसा करते हैं (यदि अधिक सुविधाजनक हो तो ऊपर भी ये चिह्न लगाए जा सकते हैं); करण के अग्रतम स्थिति में रहने से निर्मित ध्वनियों के लिए वक्र-चिह्न [देखिए][44] और अधिकतम प्रत्याकर्षित स्थिति में निर्मित

ध्वनियों के लिए एक बिन्दु [.] लगाया जा सकता है। मध्यवर्ती स्थिति में निर्मित ध्वनियों के लिए किसी भी विशेष चिह्न की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार [अंगरेजी का t और उसके नीचे वक्र-चिह्न][४५] अघोष 'दन्त्य' (अन्तर्दन्त्य अथवा दन्त्यपृष्ठीय) स्पर्श का, [t] 'वर्त्स्य' स्पर्श का और [ṭ] 'मूर्धन्य' स्पर्श का संकेत करता है। इसी प्रकार जिह्वोपाग्रीय नामक स्तम्भ में दिए हुए प्रतीकों से 'अग्र-तालव्य', 'मध्यतालव्य' एवं 'पश्चतालव्य' भेदों को तथा पश्चजिह्वीय नामक स्तम्भ में दिए हुए प्रतीकों से 'पूर्वकण्ठ्य', 'मध्यकण्ठ्य' एवं 'पश्चमृदुतालव्य' भेदों को स्पष्ट किया जा सकता है। ओष्ठ्य नामक स्तम्भ के विशेषक-चिह्न से रहित प्रतीक 'द्वयोष्ठ्य' ध्वनियों, एक बिन्दु सहित होने पर 'दन्त्योष्ठ्य' ध्वनियों तथा एक वक्र चिह्न के साथ सिकुड़े हुए अथवा बहिःसृत ओष्ठों द्वारा उच्चरित व्यंजन ध्वनियों—जैसे *pire* (worse) से तुलना करने पर फ्रांसीसी के *pure* (pure) के [P], को निर्दिष्ट करते हैं। (दन्त्योष्ठ्य संघर्षी ध्वनियों के लिए [देखिए वर्णयुग्म][४६] को एक बिन्दु के साथ प्रयुक्त करने के स्थान पर [fv] जैसे सामान्य वर्णों का प्रयोग करना अधिक सरल है)। यद्यपि घोषतंत्री अधिक आगे बढ़ी हुई अथवा प्रत्याकर्षित स्थिति में उच्चारण नहीं कर सकती किन्तु उसी प्रकार के विशेषक-चिह्नों को [बिन्दुरहित प्रश्नचिह्न][४७] और [देखिए वर्णयुग्म][४८] के साथ क्रमशः 'ग्रसन्य' ध्वनियों (क्योंकि ये ध्वनियाँ, भले ही किसी भिन्न अवयव से, कण्ठ के उच्चतर भाग से निर्मित होती हैं) तथा (सम्पूर्ण स्वरयन्त्र के संकीर्णन से निर्मित) 'काकलीय' ध्वनियों को निर्दिष्ट करने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है।

इन विशेषक-चिह्नों के प्रयोग से सारणी २ में दिए व्यंजनात्मक संवर्गों की संख्या तिगुनी हो जाती है। एक अनुप्रस्थ पंक्ति को और जोड़कर हम इस संख्या को और भी अधिक बढ़ाएंगे।

जब गुज़रता हुआ वायुप्रवाह किसी एक अधिश्वासद्वारीय अवयव को प्रकम्पित करता है (तुलना करें २.४), तो वह प्रकम्पन इतना कम हो सकता है कि ताड़नों के एक अनुक्रम, जिसे हमने कम्पन के उत्पादक के रूप में व्याख्यायित किया है, के स्थान पर केवल एक ही ताड़न हो। इस प्रकार की ध्वनि 'उत्क्षिप्त' कहलाती है। वर्त्स्य-उत्क्षिप्त ध्वनि लंदन की अंगरेजी *very, marry* आदि तथा अमेरिकन अंग-रेजी के *Betty, matter* जैसे शब्दों में [t] के स्थान पर प्रायः सुनाई देती है। विश्व की भाषाओं में उत्क्षिप्त ध्वनियों की बहुलता होने से उन्हें हमारी विस्तृत सारणी में पृथक् संवर्ग के रूप में सम्मिलित करना सुविधाजनक हो जाता है। उन्हें एक विशेषक-चिह्न जोड़कर—अर्थात् कम्पनयुक्त प्रतीकों के ऊपर [¹] का चिह्न लगाकर—लिखा जा सकता है।

जिह्वान्तीय उत्क्षिप्त एवं जिह्वान्तीय स्पर्श ध्वनि [t] अथवा [d] में एक मुख्य

भेद यह है कि जिह्वान्तीय स्पर्श ध्वनि जिह्वाग्र के ऊपरी भाग (फलक) द्वारा मुख की छत को स्पर्श किए जाने पर निर्मित होता है जबकि [r¹] में जिह्वाग्र का निचला भाग संस्पर्श के समय दाँतों अथवा वर्त्स्य-श्रेणी को छूता है।

सारणी ३ सारणी २ का परिवर्द्धित रूप है किन्तु सिद्धान्ततः इनमें कोई भेद

| | ओष्ठ्य | | | जिह्वान्तीय | | | जिह्वोपाग्रीय | | | पश्चजिह्वीय | | | गलचापीय | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | बहिः-ओष्ठ | द्वयोष्ठ्य | दन्त्योष्ठ्य | दन्त्य | वर्त्स्य | प्रतिवेष्टित | अग्रतालव्य | मध्यतालव्य | पश्चतालव्य | पूर्वकण्ठ्य | मध्यकण्ठ्य | पश्च-मृदुतालव्य | ग्रसन्य | श्वासद्वारीय | काकलीय |
| स्पर्श.... | | | | | | | | | | | | | | | |
| संघर्षी.... | | | | | | | | | | | | | | | |
| नासिक्य.... | | | | | | | | | | | | | कोई नहीं | | |
| पार्श्विक... | | | | | | | | | | | | | | | |
| कम्पनयुक्त.. | | | | | | | कोई नहीं | | | | | | | | |
| उत्क्षिप्त... | | | | | | | | | | | | | | | |

KAUSHIK

सारणी ३

नहीं है। प्रत्येक आधारिक स्तम्भ को उच्चारण की विशिष्टताओं के अनुसार विभाजित करके उनकी संख्या बढ़ाकर पन्द्रह कर दी गई है और उत्क्षिप्त ध्वनियों की एक पृथक् पंक्ति को जोड़कर पंक्तियों की संख्या छः कर दी गई है। कण्ठ में उत्पन्न होने वाली समस्त ग्रसन्य, श्वासद्वारीय तथा काकलीय ध्वनियों (लैटिन *fauces*) के लिए 'गलचापीय' शब्द को एक आधार-शब्द के रूप में प्रयुक्त किया गया है। कक्षों को रिक्त ही छोड़ दिया गया है जिन्हें सारणी २ में दिए गए ३६ प्रतीकों से अकेले तथा यहाँ सुझाए गए विशेषक-चिह्नों का योग करके भरा जा सकता है।

**२.१२. आक्षरिक व्यंजन :**—जिस प्रकार स्वर सदैव अक्षर-शिखर नहीं होता (देखिए २.९) उसी प्रकार व्यंजन भी नहीं होता। जब यह अपने निकटवर्ती अन्य व्यंजनों से अधिक श्रुतिगम्य होता है अथवा जब इसके पूर्व अथवा पश्चात् में अनुच्चरित स्थिति हो तब यह आक्षरिक हो सकता है। *Apple, rhythm* एवं *button* के सामान्य उच्चारण में प्रत्येक शब्द के द्वितीय अक्षर स्वरविहीन हैं; इनमें

[l, m, n] व्यंजन पूर्ववर्ती स्पर्श अथवा संघर्षी से अधिक श्रुतिगम्य होने और स्वभावतः पश्चवर्ती अनुच्चरित स्थिति से अधिक श्रुतिगम्य होने के कारण अपने अक्षरों के शिखर हैं। 'आक्षरिक व्यंजन' अधिकांशतः नासिक्य, पार्श्विक अथवा कम्पनयुक्त होते हैं किन्तु लगभग कोई भी व्यंजन स्थिति के अनुसार आक्षरिक हो सकता है। विस्मयादिबोधक *pst* में [s] आक्षरिक है तथा *Howdy do* [hawd dUw] के सामान्य शिथिल उच्चारण में प्रथम [d] प्रायः पृथक् अक्षर को संघटित करता है। जहाँ आवश्यक होता है, आक्षरिक व्यंजन अक्षर-तल में एक सूक्ष्म वृत्ताकार चिह्न द्वारा प्रकट किए जाते हैं; जैसे कि [देखिए][४६]।

अनुभव एवं व्यवहार की दृष्टि से यह एक सुनिश्चित नियम माना जा सकता है कि यदि एक स्वर तथा एक व्यंजन एक ही अक्षर में आते हैं तो ऐसी स्थिति में सदैव स्वर ही आक्षरिक होता है, व्यंजन कभी नहीं। इस प्रकार यदि *beckon* शब्द में [k] और [n] के मध्य में कोई स्वर आता है तो—चाहे वह कितना ही ह्रस्व अथवा दुर्बल क्यों न हो—वह स्वर ही अक्षर-शिखर होगा, [n] नहीं।

२.१३. **व्यंजनों का अतिरिक्त विश्लेषण** :—स्वरों की भाँति ही व्यंजनों के आधारिक वर्गीकरण में भी इन ध्वनियों के आपरिवर्तनों की विधियाँ अत्यल्प हैं। सभी व्यंजनों का घोष और अघोष तथा मौखिक और अनुनासिक रूप में विभाजन पहले २.११ के अंतर्गत उल्लिखित किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त २.१० के अंतर्गत मांसपेशीय तनन के सम्बन्ध में की गई टिप्पणियाँ स्वरों के समान व्यंजनों पर भी लागू होती हैं। अपेक्षाकृत अधिक शक्ति तथा मांसपेशीय तनन के साथ उच्चरित किए गए व्यंजन 'दृढ़' तथा अपेक्षाकृत कम शक्ति तथा अल्प तनन से उच्चरित व्यंजन 'शिथिल' कहलाते हैं। लेखन में उन्हें दृढ़ तथा शिथिल स्वरों के लिए व्यवहृत विशेषक-चिह्नों द्वारा ही स्पष्ट किया जा सकता है।

प्रस्तुत अनुभाग के शेषांश में व्यंजनों के विश्लेषण के लिए चार और सिद्धांतों पर विचार किया जाएगा। तीसरा और चौथा विशेषतः स्पर्शों पर व्यवहृत होते हैं।

(१) सह-उच्चारण :—प्रचलन यह है कि किसी ध्वनि को स्पष्ट करने के लिए उसके उच्चारण में प्रत्यक्ष रूप से संबद्ध अवयवों की गति अथवा स्थिति का ही वर्णन किया जाता है तथा अन्य अवयवों की समवर्ती क्रिया को अनिर्दिष्ट रूप में छोड़ दिया जाता है। इस प्रकार हम *calm* एवं *crude* के [k] का विश्लेषण करते हुए केवल इतना ही कहते हैं कि पश्चजिह्वा छदन के मध्यभाग के सामने अवरोध उत्पन्न करती है, छदन ऊपर को उठता है तथा श्वासद्वार खुल जाता है। किन्तु जब पश्चजिह्वा इस रूप में क्रियाशील रहती है तो ओष्ठ, जिह्वाग्र एवं जिह्वोपाग्र जैसे अन्य अवयव नितान्त रूप से गतिशून्य नहीं हो जाते। उनमें से प्रत्येक

एक निश्चित स्थिति में अथवा किसी निश्चित गति के संपादन में संलग्न होता है। अतः [k] अथवा किसी अन्य ध्वनि के संपूर्ण विश्लेषण के लिए यह आवश्यक है कि सभी अवयवों का निर्देश किया जाए। अनेक वार, सुनिश्चितता के लिए, मुख्य उच्चारण से असंबद्ध अवयवों की स्थिति ध्वनिक परिणाम पर नगण्य-सा प्रभाव डालती है और उन्हें 'उदासीन' अथवा 'निष्क्रिय' कहकर सरलता से छोड़ा जा सकता है किन्तु कभी-कभी इनमें से एक अथवा अधिक अवयवों की क्रिया परिणामी होने वाली ध्वनि पर विशेष प्रभाव डालती है और उसके प्रकारों में भेदीकरण का कारण वनती है जो अन्यथा समरूप होते हैं।

इसे *calm* एवं *crude* में दो [k] के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है। प्राथमिक उच्चारण में दोनों समान रूप से संघटित होते हैं किन्तु अन्य अवयवों की सहकारी क्रिया—जिसे अप्रधान उच्चारण अथवा 'सह-उच्चारण' कह सकते हैं—विशेष रूप से भिन्न होती है। *Calm* के [k] के उच्चारण में ओष्ठ पृथक्-पृथक् होकर विस्तृत हो जाते हैं (किन्तु वर्तुलित नहीं), जिह्वाग्र मुख के अधोभाग के निकट सामने वाले नीचे के दाँतों के पीछे रहता है और जिह्वोपाग्र नीचे को दव जाता है। ये सव स्थितियाँ अगले स्वर के लिए अपेक्षित उच्चारण की प्रत्याशा-रूप हैं। *Crude* के [k] में ओष्ठ किंचित् वर्तुलित और बहिःसृत होते हैं, जिह्वाग्र उत्थित अथवा पीछे की ओर कुंचित हो जाता है तथा जिह्वोपाग्र कुछ सीमा तक ऊपर उठता है। ये स्थितियाँ भी आगे आने वाली ध्वनियों [ɹ] तथा स्वर के उच्चारण की प्रत्याशा-रूप हैं। अध्येता को सह-उच्चारण में केवल दोनों [k] के उच्चारण से इस भिन्नता के प्रभाव का परीक्षण करना चाहिए। यथासंभव स्वाभाविक रूप में प्रत्येक शब्द का उच्चारण प्रारम्भ करें किन्तु प्रारम्भिक व्यंजन का उच्चारण करते ही तुरंत कुछ समय के लिए रुक जाएँ।

सह-उच्चारण में भेद सदैव ही विभिन्न आगामी ध्वनियों की प्रत्याशा के कारण नहीं होते। लन्दन की अंगरेजी में (तथा अमेरिकन अंगरेजी की अधिकांश बोलियों में कुछ कम स्पष्ट रूप में) *lull* तथा *little* के दो l जिह्वोपाग्र तथा पश्चजिह्वा के सह-उच्चारण द्वारा सुस्पष्ट रूप से भिन्न हो जाते हैं यद्यपि दोनों का प्रारम्भिक उच्चारण वर्त्स्य-पार्श्विक है। स्वर के पूर्व [l] में जिह्वोपाग्र कठोर तालु की ओर थोड़ा-सा उठ जाता है तथा पश्चजिह्वा इसके पीछे नीचे की ओर ढल जाती है। जिह्वाग्र से मूल तक की जिह्वा की परिरेखा में निष्कोण घुमाव रहता है। किसी शब्द के अंत में स्थित [l] में जिह्वोपाग्र कुछ दवा रहता है तथा पश्चजिह्वा छदन की ओर उठती है; जिह्वा की 'परिरेखा' दो शिखरों के बीच सँकरी घाटी के सदृश हो जाती है। जर्मन भाषा का [l] प्रत्येक स्थिति में [जैसे कि *leben* (live), *voll* (full) में] अंगरेजी [l] के दोनों प्रकारों से भिन्न है क्योंकि उसमें जिह्वोपाग्र

कठोर तालु के और अधिक निकट तक उठता है ।

उपयोगिता की दृष्टि से सह-उच्चारण के छः मुख्य भेद किए जा सकते हैं। दो अथवा अधिक भेद एक-साथ आ सकते हैं। इस विशेषता को दिखाने का सरलतम मार्ग वर्ण के पश्चात् सम्बद्ध उच्चारण के भेद को स्पष्ट करने वाले छोटे अधोवर्ती प्रतीक को योजित करना है। उपयुक्त प्रतीक यहाँ आगे सूची में दिए गए हैं।

ओष्ठ्यरंजन :—ओष्ठ्य ध्वनि के अतिरिक्त कोई भी ध्वनि ओष्ठ-वर्तुलन अथवा ओष्ठ्यरंजन से युक्त हो सकती है। (तुलना करें, २.८)। [tw]=ओष्ठ्यरंजित [t]; इसी प्रकार [iw]=ओष्ठ्यरंजित [i], एक ऐसा स्वर जिसमें [i] से अधिक किन्तु [अंगरेजी u पर दो विन्दु][५०] से कम ओष्ठ-वर्तुलन हो। यदि किसी ध्वनि में ओष्ठ्य-वर्तुलन के अभाव (निरोष्ठ्यरंजन) को दिखाना आवश्यक हो जो प्रायः वर्तुलन के साथ उच्चरित होती हो तो अधोवर्ती [w] को विपर्यस्त किया जा सकता है।

मूर्धन्यीकरण :—जिह्वान्तीय ध्वनि के अतिरिक्त किसी भी ध्वनि का मूर्धन्यीकरण जिह्वाग्र को उठाकर अथवा उलटकर हो सकता है। (तुलना करें, २.१०)। [Kr]=मूर्धन्य [K]। (२.१० में अनुशंसित अधोलिखित बिन्दु के स्थान पर यही विशेषक-चिह्न मूर्धन्य स्वरों के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है।)

तालव्यरंजन :—अग्र (तालव्य) के अतिरिक्त कोई भी ध्वनि जिह्वोपाग्र को कठोर तालु की ओर उठाकर ऐसी हो सकती है तथा इस ऊँचाई की विभिन्न मात्राएँ स्पष्ट की जा सकती हैं। [PJ]= दृढ़ तालव्यरंजित [P], [Pi]=शिथिल तालव्यरंजित [P]. [li]=जर्मन [l], [le]=लंदन की अंगरेजी में *let* का [l]।

मृदुतालव्यरंजन :—पश्चजिह्वीय (मृदुतालव्य) के अतिरिक्त कोई भी ध्वनि पश्चजिह्वा को छदन की ओर उठाकर प्रस्तुत की जा सकती है व इसकी भी ऊँचाई की दृष्टि से विभिन्न मात्राएँ स्पष्ट की जा सकती हैं। [bx]=दृढ़ मृदुतालव्यरंजित [b], [bu]=शिथिल मृदुतालव्यरंजित [b], [lu] अथवा [l₀]=लन्दन की अंगरेजी के *tell* का [l]।

ग्रसनीरंजन :—ग्रसन्य-ध्वनि के अतिरिक्त कोई भी ध्वनि ग्रसनी-संकुचन से ऐसी हो सकती है। [ma]=ग्रसनीरंजित [m]।

काकल्यरंजन :—काकलीय ध्वनि के अतिरिक्त कोई भी ध्वनि घोषतंत्री के नीचे तथा चारों ओर के सम्पूर्ण पेशीविन्यास के कसाव से प्रभावित काकल के संकुचन से ऐसी हो सकती है। [th]=काकलरंजित [t]। सारणी ३ में काकलीय रूप में विवेचित ध्वनियाँ अधिक दृढ़तापूर्वक काकलरंजित श्वासद्वारीय ध्वनियों के रूप मे निर्दिष्ट की गई हैं।

(२) रंध्र की मात्रा :—संघर्षी ध्वनियों (देखें २.४) के लिए संकुचन अपेक्षाकृत कम या अधिक हो सकता है जिससे वायुप्रवाह के रंध्र से प्रभावित होने के मार्ग में उसी के अनुरूप कम या अधिक घर्षण होता है। अंगरेजी के [s] के उच्चारण में नलक-आकृति का रंध्र प्रायः सँकरा होता है और सामने के निचले दाँतों के किनारे से दो भागों में विभक्त होने के साथ-साथ निकलते हुए वायुप्रवाह में तीव्र घर्षण होता है जिससे इस [s] को विशिष्ट ऊष्मता प्राप्त होती है। दूसरी ओर, फलक की चपटी आकृति का रंध्र अंगरेजी के [देखिए][५१] के उच्चारण में प्रायः कुछ चौड़ा होता है जिससे कि इस ध्वनि में प्रायः श्रव्य घर्षण बहुत कम होता है। (इसके डेनिश रूप में तो और भी कम श्रव्य घर्षण होता है।) [l, ʎ, L] ध्वनियों के लिए पार्श्विक मार्ग भी कम या अधिक हो सकता है और कम्पनयुक्त ध्वनियाँ भी मुख की छत तथा करण (स्पंदनशील जिह्वाग्र अथवा कम्पित काकलक को झुलाती हुई पश्चजिह्वा) के मध्य से निःसृत होती हुई वायु की विभिन्न मात्राओं के आधार पर निर्मित की जा सकती हैं। घर्षणयुक्त पार्श्विक ध्वनियाँ अनेक भाषाओं में सामान्य होती हैं। चैक रचनाकार *Dvorak* (देखिए मूल रूप)[५२] के नाम में व्यवहृत होने वाली कम्पनयुक्त संघर्षी ध्वनि से हम में से अनेक व्यक्ति परिचित हैं। इसलिए संघर्षी, पार्श्विक और कम्पित ध्वनियों के ये सभी वर्ग उच्चारणावयव और उच्चारण-स्थान के मध्य की आपेक्षिक दूरी के आधार पर 'संकीर्ण' एवं 'विस्तृत' उपभेदों में विभाजित किए जा सकते हैं। निस्सन्देह यह ठीक है कि ऐसा कोई विभाजन वास्तव में यादृच्छिक ही है और दोनों भेदों के मध्य में कोई स्पष्ट विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती परन्तु हमारी विवेचन-प्रणाली के लिए इसकी व्यावहारिक उपयोगिता है।

दोनों भेदों को विशेषक-चिह्नों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। संकीर्ण भेद के लिए हम वर्ण के पश्चात् कुछ ऊपर की ओर उठे हुए धन-चिह्न [+] का तथा विस्तृत भेद के लिए उसी स्थिति में बराबर के चिह्न [=] के प्रयोग का सुझाव देते हैं। लिप्यंकन को अनावश्यक चिह्नों के कारण होने वाली अव्यवस्था से बचाने के लिए हमारा सुझाव यह है कि इन विशेषक-चिह्नों का प्रयोग तभी किया जाना चाहिए जबकि घर्षण की मात्रा कोई विशेष महत्त्व रखती हो अथवा जब यह मात्रा लिप्यंकित की जाने वाली भाषा से अविकृत प्रतीक की सामान्यतः विवक्षित मात्रा से भिन्न हो। इस प्रकार, अंगरेजी का संघर्षी [s] सामान्य रूप से प्रयुक्त होने वाले वर्ण के द्वारा अच्छी तरह स्पष्ट हो जाता है। [s+] को विशेष रूप से दृढ़ अथवा सुस्पष्ट घर्षण के लिए अथवा उन भाषाओं के लिप्यंकन के लिए जिनमें [s] प्रायः विस्तृत होता है, सुरक्षित रखना चाहिए।

जब किसी भाषा में पार्श्विक अथवा कम्पित ध्वनियों के विस्तृत एवं संकीर्ण

भेद—दोनों अधिकतर प्रयुक्त होते हैं और विशेषकर उस स्थिति में जबकि इन दोनों का भेद महत्त्वपूर्ण हो तो ऊपर निर्दिष्ट समुच्चयों की अपेक्षा संकीर्ण भेद के लिए विशेष प्रतीकों का प्रयोग सुविधाजनक रहेगा। किन्हीं भी प्रतीकों का प्रयोग किया जा सकता है, यदि वे किसी अन्य विषय के लिए प्रयुक्त नहीं किए गए हों तथा उनके संबंध में सावधानी से यह स्पष्ट कर दिया गया हो कि उन प्रतीकों में कौन से मान निहित हैं।

(३) आन्तर अवरोध :—स्पर्श वह ध्वनि है जिसकी उत्पत्ति के समय वायु की लहर क्षणिक रूप में (अथवा कुछ अधिक समय तक) काकल अथवा मुखमार्ग में होने वाले संरोध के पीछे रुक जाती है। एक महत्त्वपूर्ण तथ्य जिसे सामान्यतया स्वाभाविक मानकर अनदेखा कर दिया जाता है, यह है कि जिस गुहिका में वायु अवरुद्ध होती है उसमें बाह्य अवरोध के समान एक 'आन्तर अवरोध' भी होता है। स्पर्श ध्वनियों के सर्वाधिक सामान्य रूप में यह आन्तर अवरोध फेफड़ों के निचले भाग में होता है और वायु-गुहिका का विस्तार मध्य-पट से उस स्थल तक होता है जहाँ से बाह्य अवरोध उच्चरित होता है। परन्तु यह विस्तृत गुहिका ही एकमात्र संभव प्रकार नहीं है। मुख में किए जाने वाले अवरोध के साथ-ही-साथ श्वासद्वारीय स्पर्श के उच्चारण से हम वायु-गुहिका का विस्तार काकल तथा उच्चारण-स्थान के मध्य में सीमित कर देते हैं तथा एक ही साथ मुख में दो अवरोध—एक पश्चजिह्वा तथा दूसरा जिह्वोपाग्र, जिह्वाग्र अथवा ओष्ठों द्वारा—उत्पन्न करके वायुगुहिका का विस्तार और भी कम कर देते हैं।

फेफड़ों के नीचे आन्तर अवरोध से युक्त स्पर्श ध्वनियाँ 'फुफ्फुसीय' कहलाती हैं। श्वासद्वार पर होने वाले आन्तर अवरोध से युक्त स्पर्श ध्वनियाँ 'श्वासद्वारीय' तथा पश्चजिह्वा एवं कोमल तालु के मध्य में होने वाले आन्तर अवरोध से युक्त स्पर्श ध्वनियाँ 'कोमल तालव्य' कहलाती हैं।

बाह्य अवरोध को दबाव अथवा चूषणविधि से भंग किया जा सकता है। (उन्मोचन के प्रकारों का विवेचन आगे किया गया है)। आन्तर अवरोध के स्थल पर अवयव के ऊपर की ओर अथवा आगे की ओर के संचालन से अवरुद्ध वायु को संपीड़ित किया जा सकता है जिससे कि बाह्य अवरोध के भंग होने पर मुख से वायु का हलका बहिष्करण अथवा विस्फोट होता है अथवा आन्तर अवरोध के स्थान पर अवयव के नीचे अथवा पीछे के संचालन से वायु को विरलित किया जा सकता है जिससे कि बाह्य अवरोध के भंग होने पर मुख में वायु का हलका अन्तर्वाह होता है। तदनुसार हम 'दबाव-स्पर्शों' एवं 'चूषण-स्पर्शों' की ध्वनियों में भेद स्थापित करते हैं।

सामान्य रूप से बोलने में अंगरेजी की [p, t, k, b, d, g] ये सभी ध्वनियाँ

फुप्फुसीय दबाव-स्पर्शी ध्वनियाँ हैं। इनमें मध्य-पट के ऊपर की ओर के संचालन से अवरुद्ध वायु संपीड़ित होती है। फुप्फुसीय चूषण-स्पर्श ध्वनियां [p, t] के उच्चारण तथा वायु को अन्दर खींचते हुए निर्मित होती हैं; *O. K* के अवसरिक 'प्रश्वसित' उच्चारण में फुप्फुसीय चूषण [k] है। श्वासद्वारीय दबाव-स्पर्शी ध्वनियाँ (जिन्हें सामान्यतः 'श्वासद्वारीयरंजित स्पर्शी ध्वनियाँ' भी कहा जाता है) एक साथ ही श्वासद्वारीय एवं मौखिक अवरोध और फिर संपूर्ण काकल को तेजी से उस समय उठाने से बनती हैं जबकि दोनों अवरोध यथावत् अक्षत स्थिति में हों। श्वासद्वारीयरंजित स्पर्श ध्वनियाँ सघोष नहीं हो सकतीं। श्वासद्वारीय चूषण-स्पर्शी ध्वनियाँ (जिन्हें कभी-कभी 'अन्तःस्फोटक' नामक भ्रामक संज्ञा से भी अभिहित किया जाता है) भी इसी प्रकार निर्मित होती हैं किन्तु इनमें काकल को उठाने के स्थान पर नीचे किया जाता है और ये सघोष अथवा अघोष हो सकती हैं। (सघोष प्रकार में श्वासद्वारीय स्पर्श का स्थान श्वासद्वारीय संकुचन ले लेता है जो घोष के लिए अपेक्षित है। कम्पित घोषतंत्री के मध्य में फेफड़ों के ऊपर वायु का हलका प्रवाह होने पर भी, जिस गति से काकल नीचे होता है वह अधिश्वासद्वारीय गुहिका में वायु को विरल करने के लिए पर्याप्त है)। कोमल-तालव्य दबाव-स्पर्श बहुत कम ही प्राप्त होते हैं तथा इनका निर्माण पश्चजिह्वा को आगे बढ़ाने से होता है जबकि पश्चजिह्वीय एवं बाह्य अवरोध दोनों यथावत् बने रहते हैं। कोमल-तालव्य चूषण-स्पर्श 'क्लिक ध्वनियों' के रूप में सुपरिचित हैं जो पश्चजिह्वा को पीछे की ओर खींचने से बनते हैं और उस स्थिति में भी उक्त दोनों अवरोध यथा-वत् बने रहते हैं। दक्षिणी अफ्रीका की कतिपय उन भाषाओं के बोलने वालों के अतिरिक्त, जिनमें क्लिक ध्वनियाँ सामान्य रूप से व्यवहृत होती हैं, अन्य सबके लिए सुपरिचित क्लिक ध्वनि द्वयोष्ठ्य अथवा चुम्बन की है। अन्य क्लिक ध्वनियाँ कभी-कभी अंगरेजी भाषा-भाषियों द्वारा विस्मयाभिव्यक्ति के समय व्यवहृत होती हैं (जैसे *tsk tsk*; घोड़े को टिटकारने की ध्वनि)। यह ध्यातव्य है कि कोमल-तालव्य स्पर्श-ध्वनियों के उच्चरित होने के समय श्वसन अबाध रूप में जारी रह सकता है।

फुप्फुसीय दबाव-स्पर्श अविकृत वर्णों द्वारा लिखे जाते हैं; जैसे [p, b] आदि। अन्य सभी प्रकारों में वर्ण के ऊपर अथवा एकदम बाद में विशेषक-चिह्न लगाकर भेद दिखाया जा सकता है; जैसे [देखिए][५३]=फुप्फुसीय चूषण-स्पर्श, [देखिए][५४]=श्वासद्वारीय दबाव-स्पर्श अथवा श्वासद्वारीयरंजित स्पर्श, [देखिए][५५] =श्वासद्वारीय चूषण-स्पर्श अथवा अन्तःस्फोटक, [देखिए][५६]= कोमल-तालव्य दबाव-स्पर्श तथा [देखिए][५७]=कोमल-तालव्य चूषण-स्पर्श अथवा क्लिक।

यद्यपि यह वर्गीकरण स्पर्शों के विश्लेषण के लिए विशेष उपयोगी है तथापि

संघर्षी ध्वनियों पर भी यह समान रूप से तथा कम-से-कम सिद्धान्त-रूप में अन्य व्यंजनों पर भी लागू होता है।

(४) मोचन :—जब किसी स्पर्श का बाह्य अवरोध भग्न होता है तो उच्चारण-स्थान से उच्चारणावयव को क्षिप्रता एवं स्पष्टता से वापिस हटाया जा सकता है और अवरोध के मोचन के साथ ही उच्चरित होने वाली ध्वनि का प्रारंभ हो जाता है जैसाकि फ्रेंच में होता है। इसे अन्य प्रकारों के विपरीत, जो स्पर्श तथा अन्य बाद के स्वर अथवा व्यंजन की अन्तर्वर्ती विभिन्न संक्रमण-ध्वनियों के रूप में परिणत होते हैं, 'क्षिप्र मोचन' कहते हैं। मोचन के प्रकारों को निर्दिष्ट करने वाले विशेषक-चिह्न कुछ उठे हुए होते हैं जो स्पर्श-प्रतीक के एकदम पश्चात् लगाए जाते हैं।

महाप्राणत्व :—फुफ्फुसीय दवाव-स्पर्श के निर्माण में अवरुद्ध वायु का दवाव अत्यन्त क्षीण विस्फोट करने वाला, बहुत हलका अथवा यथेष्ट हो सकता है। दबाव की मात्रा निश्चय ही मध्यपट के द्वारा आयासित दवाव के परिमाण पर निर्भर करती है। जब दबाव अधिक होता है तो अवरोध के मोचन के पश्चात् वायु तीव्रता से निष्क्रमण करती है जिसे प्रायः 'फूत्कार' के रूप में अभिहित किया जाता है। यह 'महाप्राणत्व' है तथा इस विधि से निर्मित स्पर्श 'महाप्राण' होते हैं। महाप्राणत्व सघोष एवं अघोष दोनों प्रकार के स्पर्शों में हो सकता है यद्यपि यह अघोष स्पर्शों में अधिक देखा जाता है। इसका अनेक मात्राओं में विश्लेषण किया जा सकता है। [t'] = महाप्राण [t], [$t^h$] = [t] जिसमें दृढ़ महाप्राणत्व अपवादस्वरूप होता है, [t=] = अल्पप्राण [t] सुस्पष्ट रूप में इस प्रकार तभी चिह्नित किया जा सकता है जबकि सामान्यतः महाप्राण-रूप में प्रयुक्त होने वाली ध्वनि में महाप्राणत्व का अभाव दिखाया जाना आवश्यक हो। (पिछले एक अनुच्छेद में विशेषक-चिह्न [=] का प्रयोग संकीर्ण ध्वनियों से विस्तृत ध्वनियों का भेद स्पष्ट करने के लिए किया गया था। दोनों प्रयोगों में किसी प्रकार का भ्रम होने की संभावना नहीं है क्योंकि जिस प्रतीक से विशेषक-चिह्न सम्बद्ध है वही यह सदैव स्पष्ट कर देगा कि उसका अभिप्राय विस्तृत रंध्र से है अथवा अल्पप्राणत्व से)।

महाप्राणत्व की सरल पहचान के लिए हाथ के पृष्ठभाग को ओष्ठों से लगभग एक इंच आगे रखकर किसी शब्द को धीमी आवाज में उच्चरित करना चाहिए। यदि ध्वनि महाप्राण है तो हाथ की त्वचा पर स्पष्ट रूप से हवा का आघात या झोंका अनुभव होगा। यह परीक्षण अंगरेजी के ***pool, tool, cool*** स्पर्शों पर कीजिए और इनकी तुलना ***spool, stool*** तथा ***school*** के स्पर्शों से कीजिए।

स्पर्शसंघर्षण :—यदि उच्चारणावयव को उच्चारण-स्थान से धीरे से हटाया

जाए तो अवरोध तथा पूर्ण विमोचन के मध्य एक क्षणिक संकुचन होता है। अवरुद्ध वायु रंध्र से निःसृत होने पर स्पर्श के साथ एक सवर्ण (अर्थात् उसी उच्चारणावयव से उसी उच्चारण-स्थान पर निर्मित) संघर्षी ध्वनि को प्रस्तुत करती है। इस प्रकार का घर्षणयुक्त विमोचन 'स्पर्शसंघर्षण' कहलाता है। एक स्पर्श तथा बाद की सवर्ण संघर्षी ध्वनि का संयोग 'स्पर्शसंघर्षी' है। लेखन में स्पर्शसंघर्षण की सुस्पष्ट विशेषता उपयुक्त संघर्षी प्रतीक को विशेषक-चिह्न के रूप में प्रयुक्त करके प्रदर्शित की जा सकती है। जैसे [देखिए][५८]=स्पर्शसंघर्षी [p] के दो प्रकार; [देखिए][५६] आदि=विभिन्न स्पर्शसंघर्षी रूप। सभी प्रकार के स्पर्शसंघर्षी रूपों के लिए हम एक आधार प्रतीक के रूप में ऊपर की ओर उठे हुए घन-चिह्न का प्रयोग कर सकते हैं; जैसे, [$p^+$, $b^+$, $t^+$, $d^+$] आदि। (इस विशेषक-चिह्न के दोहरे प्रयोग के सम्बन्ध में [=] पर पूर्व निक्षिप्त टिप्पणी देखें)। इस तरह के संयुक्त प्रकारों को प्रतिस्थापित करने के लिए एकक प्रतीकों का प्रयोग प्रायः उपयोगी होता है। इसके लिए किसी भी ऐसे वर्ण का प्रयोग किया जा सकता है जो किसी एक विशिष्ट लिप्यंकन में अन्य प्रकार से प्रयुक्त न हुआ हो। इस प्रकार सारणी २ में अघोष अग्र स्पर्श के प्रतीक के रूप में दिया हुआ [c] प्रायः [$t^s$] अथवा [$t^+$] के मूल्यों के लिए प्रयुक्त होता है।

नासिक्य मोचन :—जब वायु बाह्य अवरोध तथा कोमल तालव्य के अतिरिक्त किसी आन्तर अवरोध के मध्य में रुक जाती है तो छदन अनिवार्य रूप से ऊपर उठ जाता है क्योंकि ऐसा न होने पर वायु नासिका से बाहर निकल सकती है। यदि फुफ्फुसीय अथवा श्वासद्वारीय दबाव-स्पर्श के निर्माण के समय छदन बाह्य अवरोध के मोचन से पूर्व ही झुक जाता है तो नासाद्वारों के ज़रिए नासाविवर में तथा बाहर भी स्फोटन होता है। इस 'नासिक्य मोचन' को [N] प्रतीक द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है : जैसे, [$t^N$]=नासिक्य [t]। अंगरेजी में सवर्ण नासिक्य से पूर्व के स्पर्शों का मोचन प्रायः नासिका से होता है, जैसेकि ***topmost*** [-pm-], ***button*** [-tn], ***madness*** [-dn-] ; किन्तु यहाँ नासिक्य मोचन को विशेष रूप से चिह्नित करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह परवर्ती व्यंजन से ही स्वयं संकेतित है।

इस बात से स्वयं को आश्वस्त करने के लिए कि इस स्थिति में मोचन वास्तव में ही नासिक्य है, अध्येता को ***Hottentot*** [देखिए][६०] शब्द का उच्चारण करते समय जिह्वा की स्थिति का अध्ययन करने के लिए दर्पण का प्रयोग करना चाहिए। प्रथम [t] के प्रारम्भ से लेकर द्वितीय के अन्त तक जिह्वाग्र वर्त्स्य श्रेणी के सम्पर्क में रहता है व प्रथम [t] का मोचन नासिका से होता है जैसाकि अध्येता अपने नासाद्वारों को बन्द किए हुए इस शब्द का उच्चारण करके स्वयं अनुभव कर सकता है।

पार्श्विक मोचन :—जब उच्चारणावयव मध्यरेखा पर मुख के ऊर्ध्व-पटल से

संयुक्त रहे तो वाह्य अवरोध का मोचन पार्श्विक विवृति के द्वारा किया जा सकता है। 'पार्श्विक मोचन' को ऊर्ध्व [$^{L}$] के द्वारा संकेतित किया जा सकता है; जैसेकि [$t^{L}$]=पार्श्विक रूप से मुक्त किया गया [t]। इस प्रकार का मोचन अंगरेजी के [l] से पूर्व [t, d] में सामान्य रूप से होता है, जैसेकि *atlas* तथा *oddly* में किन्तु यहाँ भी इसको विशेषतः चिह्नित करने की आवश्यकता नहीं है। अध्येता, *addled* [देखिए][६१] शब्द का उच्चारण करते समय अपनी जिह्वा का निरीक्षण करते हुए तथा यह देखते हुए कि प्रथम [d] के प्रारंभ से लेकर शब्द के अन्त तक जिह्वाग्र वर्त्स्य श्रेणी के सम्पर्क में रहता है, पार्श्विक मोचन की स्थिति को सिद्ध कर सकता है। ऐसी भाषाओं के विश्लेषण में, जिनमें [$t^{L}$, $d^{L}$] जैसी ध्वनियाँ परवर्ती पार्श्विक व्यंजन पर निर्भर नहीं करती हैं, इन्हें सामान्यतः पार्श्विक स्पर्शसंघर्षी कहा जाता है। [$d^{L}$] के स्थान पर एकक प्रतीक के रूप में प्रायः एक ग्रीक वर्ण लैमडा [देखिए][६२] का व्यवहार होता है।

मोचन के और भी प्रकार संभव हैं जो सदृश पद्धतियों के द्वारा संकेतित किए जा सकते हैं। कभी-कभी यह संकेत देना उपयोगी रहता है कि क्या दो अनुक्रमी स्पर्शों में प्रथम का 'मोचन पृथक् रूप से हुआ है', जैसे कि फ्रेंच *acte* (action) में [K]; अथवा वह 'अमुक्त' है, जैसे कि अंगरेजी के *act* के सामान्य उच्चारण में [K]। इन दोनों में पूर्ववर्ती प्रकार को [अंगरेजी K के दाईं ओर ऊपर शून्यचिह्न][६३] के रूप में तथा परवर्ती प्रकार को [K के दाईं ओर ऊपर सूक्ष्म अनुलम्ब रेखा][६४] के रूप में, जैसेकि [देखिए][६५], लिखा जा सकता है। अनुन्मुक्त स्पर्शों के लिए प्रयुक्त विशेषक-चिह्न अन्तिम स्पर्शों को स्पष्ट करने के लिए भी सुविधाजनक होते हैं जिनमें उच्चारण के अन्त तक अवरोध की स्थिति बनी रहती है जैसा कि प्रायः अंगरेजी में होता है। इस प्रकार *Help*! या तो [hElp और अन्त में दाईं ओर ऊपर शून्यचिह्न][६६] है अथवा [hElp और अन्त में दाईं ओर ऊपर सूक्ष्म अनुलम्ब रेखा][६७]।

जिस प्रकार हम स्पर्श व्यंजनों में विमोचन के विभिन्न प्रकारों को स्पष्ट करते हैं उसी प्रकार हम अवरोध के 'प्रारंभ' के विभिन्न प्रकारों अथवा अवरोध को प्रारंभ करने वाली विधियों को भी स्पष्ट करते हैं। सामान्यतः प्रारंभ के प्रकार विमोचन के उपर्युक्त प्रकारों से मेल खाते हैं अतः उनके विषय में अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें वर्ण के बाद की अपेक्षा पूर्व में उपयुक्त विशेषक-चिह्न लगाकर स्पष्ट किया जा सकता है। प्रारम्भ का एक आवश्यक विशिष्ट प्रकार 'पूर्व-महाप्राणता' है जिसमें अवरोध एकदम पहले श्वास का हलका निष्क्रमण होता है; जैसे [$^{c}$t]=पूर्व-महाप्राणित [t]।

**२.१४. स्वनगुणिमिक अभिलक्षण :**—अभी तक हम एकान्त रूप से ध्वनियों

पर विचार करते रहे हैं। तथापि वास्तविक वाक् में किसी उच्चार का महत्त्व मात्र निश्चित क्रम में एक-दूसरे के पश्चात् आने वाले अनुक्रमी स्वरों एवं व्यंजनों की अपेक्षा सदैव ही अधिक होता है। इन सब से ऊपर प्रत्येक ध्वनि की दीर्घता में, प्रवलता और घोषत्व में, विशिष्ट परिवर्तन होते हैं जो उच्चार के अंग-रूप में वैसे ही हैं जैसे कि खण्डात्मक ध्वनियाँ और अनेक भाषाओं में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये परिवर्तन 'मात्रा' (दीर्घता), 'बलाघात' (प्रवलता) एवं 'तान' (स्वराघात) के 'स्वनगुणिमिक अभिलक्षणों' का निर्माण करते हैं। इनमें अंतिम दो को प्रायः 'आघात' के लक्षणों के रूप में एक वर्ग में ही रखा जाता है। प्रस्तुत अनुभाग के अंत में हम संहिता के सम्बद्ध तथ्यों का विवेचन करेंगे।

(१) मात्रा :—स्वरों के अथवा (कुछ भाषाओं में) व्यंजनों के दीर्घ एवं ह्रस्व भेद परम्परागत रूप से कहे जाते हैं परन्तु इस प्रकार का विभाजन विशुद्ध ध्वन्यात्मक दृष्टि से न तो सम्भव ही है और न ही यथार्थ के अनुरूप है। ह्रस्व स्वर के ह्रस्वतम तथा दीर्घ स्वर के दीर्घतम रूप के मध्य में असंख्य अवश्रुतियों की अविच्छिन्न श्रेणियाँ विद्यमान होती हैं। कुछ समान स्थितियों में जिह्वा की ऊँचाई के आधार पर (देखें २.८) स्वरों का वर्गीकरण करने में यादृच्छिक रूप से संदर्भ के कुछ विशिष्ट बिन्दुओं को चुनकर किसी सातत्य को व्यावहारिक उपयोगी भागों में विभाजित करना संभव है किन्तु दीर्घता के विषय में वर्गीकरण की कोई सामान्य पद्धति नहीं खोजी गई है। फिर भी, स्वरों एवं व्यंजनों की दीर्घता अनेक भाषाओं की एक महत्त्वपूर्व विशेषता है और हमें इसके विश्लेषण के लिए कोई मार्ग अवश्य निकालना चाहिए। फिर भी जब हम दीर्घता के आधार पर ध्वनियों को वर्गीकृत करते हैं तो हमारे मन में सदैव एक सुनिश्चित उद्देश्य होता है जिससे कि वर्गीकरण की पद्धति मेल खाती है और यदि हमें ध्वन्यात्मक शुद्धता अथवा अपने समूहीकरण की सामान्यता के संबंध में कोई भ्रान्ति नहीं है तो हम स्वर-गुण अथवा किसी अन्य लक्षण के अपने विश्लेषण के समान ही यहाँ भी उतनी ही सार्थकता से आगे बढ़ सकते हैं।

क्योंकि कोई भी सामान्यतः उपयुक्त वर्गीकरण संभव नहीं है, अतः उसके लिए पारिभाषिक शब्दों एवं प्रतीकों की व्यवस्था करना व्यर्थ ही है। किसी एक उद्देश्य के लिए प्लुत, दीर्घ, अर्द्ध-दीर्घ, ह्रस्व एवं अर्द्ध-ह्रस्व को स्पष्ट करना भी आवश्यक हो सकता है। जहाँ किसी लिप्यंकन में केवल दो स्थितियों को अभिव्यक्त करने की आवश्यकता होती है वहाँ यह परम्परा है कि ह्रस्व ध्वनियों को अचिह्नित ही छोड़ दिया जाए तथा दीर्घ ध्वनियों को वर्ण के पश्चात् (दाएँ हाथ को) ऊपर की ओर उठे हुए बिन्दु से चिह्नित कर दिया जाए, जैसे [a˙, m˙] में।

(२) आघात :—दीर्घता की विभिन्न कोटियों को वर्गीकृत करने में होने वाली

कठिनाइयों के संबंध में हमने जो-कुछ कहा है वह बलाघात एवं तान के संबंध में भी उतना ही व्यवहार्य है। किसी भाषा-भाषी जन-समुदाय अथवा किसी अकेले वक्ता के उच्चारणों में प्रबलता तथा स्वराघात के स्तरों की अभिव्यक्त कोटियाँ अनेक अवश्रुतियों की अविच्छिन्न श्रेणियों का निर्माण करती हैं। अब, किस प्रकार इस सातत्य को भंग किया जाए तथा बलाघात अथवा तान की किन मात्राओं को लिप्यंकन में स्पष्ट किया जाए और चिह्नित किया जाए, यह प्रत्येक अवस्था में भाषा के आंतरिक लाघव तथा उस विशिष्ट उद्देश्य पर निर्भर करता है जो हमारे मन में है।

इस प्रकार अंगरेजी के एकल शब्दों के विवेचन में तान को चिह्नित करना आवश्यक नहीं है। परन्तु हमें बलाघात की विभिन्न कोटियों को अवश्य स्पष्ट करना चाहिए। प्रथम अक्षर पर प्रबल बलाघात से युक्त *import* शब्द का अर्थ द्वितीय अक्षर पर प्रबल बलाघात से युक्त *import* शब्द के अर्थ से भिन्न है किन्तु इनमें से किसी भी एक शब्द के अर्थ में आरोही या अवरोही तान से उच्चरित होने से कोई अन्तर नहीं पड़ता। जापानी भाषा के शब्दों का विवेचन करने में हमें केवल उच्चतर एवं निम्नतर तान को ही स्पष्ट करना पड़ता है, बलाघात के अंतर को नहीं। जैसे समतान में उच्चरित [hana] शब्द का अर्थ 'nose', प्रथम अक्षर पर उच्चतर तान के साथ उच्चरित होने पर 'beginning' तथा द्वितीय अक्षर पर उच्चतर तान के साथ उच्चरित होने पर 'flower' होता है। नार्वेजियन शब्दों का विवेचन करने में हमें बलाघात एवं तान—दोनों पर ध्यान देना होता है। 'Shoulder' एवं 'axle' अर्थों को निष्पन्न करने वाले दो *axel* शब्द दोनों ही रूपों में बलाघात की दृष्टि से समान हैं किन्तु स्वरतंत्री कम्पन की परिरेखा की दृष्टि से इनमें अंतर है। और अंत में, फ्रेंच के शब्दों का विवेचन करते समय हम आघात के दोनों ही प्रकारों की उपेक्षा कर सकते हैं।

बलाघात की कोटि मुख्यतः उस बल पर जिसके द्वारा फ़ेफड़ों से वायु का निर्गमन होता है, दूसरे उस शक्ति पर जिसके द्वारा उच्चारण-क्रिया सम्पन्न होती है, मांसपेशियों की दृढ़ता पर तथा कुछ अन्य लक्षणों पर—कभी-कभी आंशिक रूप से वाच्य के स्वराघात पर भी निर्भर करती है। विभिन्न श्रेणियाँ ('प्रबल', 'अर्द्ध-प्रबल', 'दृढ़', 'अशक्त' आदि) लेखन में सामान्यतः बलाघात-युक्त अक्षर के प्रारम्भ से पूर्व पंक्ति के ऊपर अथवा नीचे एक छोटा अनुलम्ब-चिह्न लगाकर संकेतित की जाती हैं किन्तु स्वरवर्णों के ऊपर आघात-चिह्नों का भी प्रयोग किया जाता है, जैसे : *elevate* [देखिए मूल रूप][६८], *discrimination* [देखिए मूल रूप][६९]।

जैसाकि २.५ (५) के अन्तर्गत पहले स्पष्ट किया जा चुका है, स्वराघात घोष-तंत्री की दृढ़ता तथा उसके अनुगामी कंपन की गति पर निर्भर करता है। यद्यपि

अंगरेजी के एकल शब्दों की संरचना में इसका कोई महत्त्व नहीं है तथापि अंगरेजी व्याकरण में मान अधिकाधिक महत्त्व रखता है। इन वाक्यों की तुलना कीजिए— अन्त में अवरोही स्वराघात से बोला गया *He's out !*, तीव्र आरोही स्वराघात से बोला गया *He's out ?* तथा *say* पर अवरोही स्वराघात एवं *out* पर कुछ उच्च, थोड़े अवरोही अथवा थोड़े आरोही स्वराघात से युक्त *He's out, They say* वाक्य। (उच्चतर एवं निम्नतर) समतान-व्यवस्थाएँ तथा (आरोही, सम, अवरोही आदि) परिरेखा मान व्यवस्थाएँ वर्णों के ऊपर आघात-चिह्नों, निर्धारित मान से युक्त ऊर्ध्वमुखी संख्याओं अथवा किन्हीं अन्य उपायों द्वारा संकेतित की जा सकती हैं।

(३) संहिता :—संयुक्त उच्चारण (वाक्) में ध्वनियाँ दो या अधिक के अनुक्रमों में होती हैं जिन्हें उनके घटक प्रभागों में स्पष्टता से खंडित करना प्रायः सरल नहीं होता। ध्वनियों के आपस में संयुक्त होने के प्रकार से संबंधित तथ्यों को 'संहिता' के अन्तर्गत समाहित किया जाता है। विभिन्न भाषाएँ, अन्य प्रकारों के ही समान, अपनी संहिता-पद्धतियों में भी भिन्न-भिन्न होती हैं। किसी एक भाषा में एक ध्वनि से दूसरी ध्वनि तक का संक्रमण प्रखर एवं सुस्पष्ट हो सकता है जबकि दूसरी भाषा में किसी स्पष्ट विभाजक रेखा की अनुपस्थिति में एक ध्वनि दूसरी ध्वनि मे प्रविष्ट हो सकती है तथा कुछ भाषाओं में संहिता-भेद महत्त्वपूर्ण लक्षणों के रूप में भी हो सकते हैं जिन्हें ध्वनि-वैज्ञानिकों को अवश्य जानना और विवेचित करना चाहिए।

क्योंकि संहिता-तत्त्वों का अध्ययन अभी तक कम ही हुआ है और किसी सामान्य सिद्धान्त अथवा वर्गीकरण की योजना भी निर्धारित नहीं की गई है, इसलिए अंगरेजी में विद्यमान कुछ संहिता-भेदों के उदाहरण देने के अतिरिक्त इस विषय में कुछ अधिक कह पाना हमारे लिए सम्भव नहीं है। इन तथ्यों की व्याख्या का प्रयत्न ३.७ के अंतर्गत किया जायगा। स्वरों एवं व्यंजनों का *a name* में वही अनुक्रम है जो *an aim* [ənEjm] में है परन्तु ये दोनों वाक्यांश [n] तथा परवर्ती स्वर के मध्य में संहिता की दृष्टि से भिन्न हैं। इसी प्रकार का अन्तर *I laid* को *I'll aid* [ajlEjd] से, *see the meat* को *see them eat* [देखिए][७०] से तथा *why choose* को *white shoes* [देखिए][७१] से पृथक् करता है। और भी, अधिकांश अमरीकी लोगों के उच्चारण में *minus* और *slyness*, दोनों शब्दों का अन्त [—ajnəs] इस अनुक्रम में होता है परन्तु सामान्यतः ये दोनों शब्द समान्त्य नहीं हैं क्योंकि दोनों प्रथम अक्षर की संधि तथा परवर्ती [n] के मध्य में संहिता की दृष्टि से पृथक्-पृथक् हैं। शब्द *minus* में संहिता संवृत है तथा *slyness* में (जैसा-कि संध्यक्षर की अधिक दीर्घता से परीक्षित है) विवृत है। ये तीन शब्द—*nitrate*, *night-rate* तथा *dye-trade* [-ajtɹ-] इस अनुक्रम में ध्वनि-संयोग के तीन प्रकार

के उदाहरण हैं।

**२.१५. ध्वन्यात्मक लिप्यंकन :**—'ध्वन्यात्मक लिप्यंकन' का उद्देश्य किसी उच्चारण अथवा उच्चारण-समुच्चय के सभी लक्षणों को यथासंभव शुद्ध रूप में अंकित करना है जिन्हें लेखक वाक्प्रवाह में सुन सके तथा पहचान सके। लेखक जितना ही अधिक प्रशिक्षित होगा उसके द्वारा प्रस्तुत लिप्यंकन उतना ही समस्त ध्वन्यात्मक तथ्यों के पूर्ण अंकन के अधिक निकट होगा किन्तु यह बिलकुल पूर्ण कभी नहीं हो सकता। योग्यतम जीवित ध्वनिविज्ञानी भी वस्तुगत दृष्टि से भिन्न सभी ध्वनियों में भेद नहीं कर सकता और अत्यंत परिश्रम से तैयार किए गए सूक्ष्म अंकन में भी प्रायः कुछ लक्षण—जैसे गति, विरामों की आपेक्षिक दीर्घता तथा व्यक्तिगत वाग्गुण—उपेक्षित रह जाते हैं। इसके अतिरिक्त, क्योंकि कोई भी उस अन्तर को नहीं सुन सकता है जिसे पहचानने के लिए उसे प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है (चाहे अपनी निजी भाषा की आवश्यकतावश अथवा ध्वनिविज्ञान के अध्ययन से), किसी भी लिप्यंकन की पूर्णता सर्वथा लेखक की पृष्ठभूमि के संयोग पर निर्भर करती है। कोई भी दो श्रोता, अपनी सामर्थ्य के प्रति असावधान रहते हुए, सभी उच्चारणों को ठीक एक ही प्रकार से कभी भी लिप्यंकित नहीं कर सकते। अपने श्रेष्ठतम रूप में, ध्वन्यात्मक लिप्यंकन 'प्रभाववादी' होता है। इसमें ध्वनियों को सुनने से बनने वाली लेखक की धारणा को अंकित करने से अधिक अपेक्षा नहीं की जाती है।

इस रूप में ध्वन्यात्मक लिप्यंकन की वैज्ञानिक उपयोगिता सीमित है। लगभग सभी उद्देश्यों के लिए 'ध्वनिमिक' लिप्यंकन का उपयोग अधिक उपयुक्त रहता है जोकि कुछ दर्जन सुस्पष्ट एककों में संगठित भाषा की ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करता है (देखें अध्याय ३)। किन्तु कुछ ऐसे निश्चित प्रयोजन भी हैं जिनके लिए ध्वन्यात्मक लिप्यंकन यथार्थतः उपयोगी है।

ऐसा एक प्रयोजन है निकट सम्बन्ध रखने वाली बोलियों की तुलना। बोलीविज्ञानी देखता है कि प्रायः एक स्थान या क्षेत्र का उच्चारण दूसरे स्थान या क्षेत्र से पृथक् है जबकि उन बोलियों की संरचना में तदनुरूप अन्तर (ध्वनिमिक अन्तर, देखें ३.१) नहीं होते और उच्चारण के विशिष्ट क्षेत्रीय अथवा स्थानीय लक्षणों को समुचित स्थान देने के लिए उसे विशुद्ध ध्वन्यात्मक लिप्यंकन का प्रयोग, और कभी-कभी बहुत सुन्दर क्रमबद्ध वर्णमाला के साथ, करना चाहिए। इसके उदाहरण न्यू इंग्लैंड की भाषा-एटलस के लगभग प्रत्येक मानचित्र अथवा शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली दक्षिणी अतलान्तिक राज्यों की भाषा-एटलस में प्राप्त हो सकते हैं। पश्चिमी न्यू इंग्लैंड में ***bird, worm*** जैसे शब्दों का स्वर

दृढ़तापूर्वक प्रतिवेष्टित है, मध्य न्यू इंग्लैंड के भागों में भी यह प्रतिवेष्टित है किन्तु पर्याप्त अशक्त है और यह अन्तर उस प्रदेश के अन्तर्गत बोली-क्षेत्रों का निर्णय करने के लिए सुनिश्चित आधारों में से एक है किन्तु दोनों उच्चारणों का ध्वनिमिक विश्लेषण एक-सा ही है। दक्षिण में, वर्जिनिया का पीडमॉन्ट प्रदेश तथा उत्तरी कैरोलिना *past, calf* जैसे शब्दों के स्वर के उच्चारण के आधार पर स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट भागों में विभक्त है परन्तु यहाँ भी उच्चारण-सम्बन्धी इस अन्तर के होते हुए भी उन बोलियों की संरचना में कोई विशेष अंतर नहीं है। फिर भी, ये तथा विशुद्ध ध्वन्यात्मक स्तर पर होने वाली अन्य भिन्नताएँ भाषा-भूगोल और बोलीविज्ञान के साथ-साथ ऐतिहासिक व्याकरण के लिए भी अत्यंत महत्त्व रखती हैं।

दूसरा प्रयोजन, जो केवल ध्वन्यात्मक लिप्यंकन द्वारा ही पूर्ण हो सकता है, वह है किसी व्यक्ति द्वारा यह जानने के लिए कि किसी विदेशी भाषा में उच्चारण के कौन-कौन से लक्षण व्यावर्तक हैं और इस सम्बन्ध में उसके द्वारा एकत्रित की गई पर्याप्त सामग्री को प्रयुक्त करने से ही पूर्व उसके द्वारा किए गए उस विदेशी भाषा के प्रथम श्रवण को अंकित करना (३.१)। प्रत्येक प्रथम अंकन और उसके कुछ दिन अथवा कुछ सप्ताह पश्चात् का प्रत्येक अंकन भी पूर्णतः ध्वन्यात्मक होना चाहिए। कोई भी ध्वनिमिक लिप्यंकन दीर्घकाल तक सतर्क अध्ययन के बाद और केवल प्रभावात्मकता से अंकित सामग्री के विशाल संग्रह के आधार पर ही तैयार किया जा सकता है। लगभग समस्त ध्वन्यात्मक कार्य का अंतिम उद्देश्य, किसी भी भाषा के ध्वनिमों के रूप में, उसके सरलतम चित्रण का अनुसंधान होना चाहिए; किन्तु जब तक भाषा के ध्वनिविज्ञान का सूक्ष्मता से निरीक्षण नहीं किया जाएगा और उसका सावधानी से अंकन न किया जाएगा तो ध्वनिमिक विवरण के परिणाम व्यर्थ ही सिद्ध होंगे।

## तृतीय अध्याय

# ध्वनिमविज्ञान

**३.१.ध्वनिमिक विश्लेषण** :—ध्वन्यात्मक दृष्टि से प्रशिक्षित अंगरेजी का एक विदेशी अध्येता किसी सूचक के उच्चारणों को अंकित करता हुआ ऐसी अनेक भिन्नताओं को देख सकता है जिनसे अंगरेजी का एक औसत वक्ता अपरिचित होता है। वह *pin* और *appear* में महाप्राण [p'], *spin* और *upper* में अल्प-प्राण [p=] तथा *napkin* व (कभी-कभी) *up* में अमुक्त [p तथा दाईं ओर ऊपर एक अनुलम्ब रेखा][७२] अंकित करेगा। वह इस बात पर ध्यान देगा कि *bid* का स्वर *bit* के स्वर की अपेक्षा दीर्घतर है और ऐसा ही अन्तर *bet*, *bat*, *but* तथा *bed*, *bad* एवं *bud* के स्वरों के मध्य में भी है। वह *goose* और *gone* के मध्यकंठ्य [g] से *geese* और *give* के पूर्वकंठ्य [g और उसके ठीक ऊपर बाण-मुख-चिह्न][७३] को, *tell* के मृदुतालव्यरंजित [lu] से *let* के अशक्त तालव्यरंजित या उदासीन [l] को तथा *hens* के दीर्घतर [n˙] से *hence* के ह्रस्व [n] को भेदित करेगा। और यदि उसकी श्रवणशक्ति पर्याप्त रूप से तीव्र है (अर्थात् यदि वह पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित है) तो वह *dog* के अनुक्रमी उच्चारणों में आधा दर्जन विभिन्न स्वरभेदों को अंकित कर सकता है। वास्तव में, अपने कार्य की प्रारंभिक अवस्थाओं में, वह यह नहीं जान पाएगा कि ये सभी उच्चारण एक और उसी शब्द से संबंध रखते हैं। वह यही कहेगा कि [dɒg], [dwg] एवं [dɔg] एक-दूसरे से वैसे ही भिन्न हैं जैसेकि वे [dʌg] से भिन्न हैं। यह अनिश्चितता मात्र सूचक से पूछकर ही दूर नहीं की जा सकती। यदि सूचक इस प्रकार के गूढ़ प्रश्नों को समझने में पर्याप्त विवेकी है तो संभवतः वह अपनी मूल भाषा पढ़ा हुआ है और इसीलिए यह संभावना है कि स्कूलों में परंपरागत रूप में शब्दों के लिखे जाने की पद्धति से तथा इसी प्रकार के अन्य समान दोषपूर्ण पथप्रदर्शनों से वह सही मार्ग से विचलित हो जाए और यदि शिक्षा ने उसे यथावत् स्थिति में बनाए

रखा है तो इस बात की आशंका है कि शब्दों की पहचान से संबंध रखने वाले प्रश्न उसे चक्कर में डाल देंगे।

किसी भाषा में अनेक अवलोकनीय ध्वन्यात्मक अंतरों में कौन-कौन से अन्तर अर्थों को स्पष्ट करने में सहायक होते हैं यह जानने का एकमात्र निरापद एवं विश्वसनीय मार्ग यह है कि यथासंभव अधिकाधिक सामग्री को एकत्रित कर लिया जाए और फिर उस सामग्री का सूक्ष्म परीक्षण किया जाय। यह कर चुकने के पश्चात् छात्र को ज्ञात होगा कि कुछ निश्चित ध्वनियाँ, जैसे कि [p'] एवं [b], समान स्थितियों में, अर्थात् उच्चारणों के प्रारंभ में आती हैं और इसलिए एक-दूसरे के विपरीत हैं परन्तु कुछ अन्य निश्चित ध्वनियाँ—जैसेकि ऊपर निर्दिष्ट [p] के तीन प्रकार—सामान्यतः समान स्थितियों में नहीं प्रयुक्त होतीं और इसलिए अंगरेजी में भिन्न-भिन्न अर्थों को प्रकट करने के लिए इनका प्रयोग नहीं हो सकता। वह देखेगा कि [g और उसके ठीक ऊपर बाणमुख-चिह्न][७४] केवल अग्रस्वरों के पूर्व आता है जहाँ कि [g] कभी भी नहीं आता और अन्यथा समान अथवा निकट सादृश्य वाले स्वरों के मध्य की दीर्घता में अन्तर परवर्ती व्यंजन के अन्तर (सघोष व्यंजनों से पूर्व दीर्घ स्वर और अघोष व्यंजनों से पूर्व ह्रस्व स्वर) के साथ सह-संबंधित है तथा इसी प्रकार आगे भी। इस तरह की खोज के आधार पर छात्र भाषा में अवलोकनीय समस्त ध्वन्यात्मक अन्तरों को दो प्रकारों में विभाजित कर सकता है—'परिच्छेदक अंतर' अथवा 'वैषम्य'; जिसमें एक अर्थ को दूसरे अर्थ से स्पष्ट रूप से पृथक् किया जा सकता है तथा 'अपरिच्छेदक अंतर'; जिसका इस उद्देश्य के लिए कभी प्रयोग नहीं होता।

परिच्छेदक अन्तरों को छाँटने के विचार से किए गए ध्वन्यात्मक सामग्री के इस परीक्षण को हम 'ध्वनिमिक विश्लेषण' कहते हैं। यह इसी प्रक्रिया की ही देन है कि हम किसी भाषा-भाषी जन-समुदाय के उच्चारणों में सुनी जाने वाली असंख्य ध्वनियों को वर्गों की, जिन्हें 'ध्वनिम' कहा जाता है, किसी एक सीमित संख्या में—जो भाषागत आधार पर पन्द्रह अथवा बीस से लेकर लगभग साठ तक हो सकती है—व्यवस्थित करने में समर्थ होते हैं। वे ध्वनियाँ जो किसी एक ध्वनिम का निर्माण करती हैं, वे अन्य समस्त ध्वनियों के सदस्यों में अप्राप्य (किसी विशिष्ट श्रव्य प्रभाव में परिणत होने वाले) उच्चारणगत अभिलक्षण अथवा अभि-लक्षणों के संयोग से कुछ-न-कुछ युक्त होने की दृष्टि से, ध्वन्यात्मक रूप में समान होती हैं। इस प्रकार के ध्वन्यात्मक अन्तर जो एक ध्वनिम के सदस्यों में उपलब्ध होते हैं अपरिच्छेदक होते हैं किन्तु अपने पूर्ण रूप में प्रत्येक ध्वनिम कम-से-कम कुछ स्थितियों में प्रत्येक अन्य ध्वनिम से भिन्न होता है।

जब किसी भाषा की सभी ध्वनियाँ—जिनमें स्वरों एवं व्यंजनों के साथ-साथ

संहिता के अभिलक्षण एवं आघात भी सम्मिलित हैं—ध्वनिमों के रूप में वर्गीकृत हो जाती हैं तो हमें संरचनात्मक एककों का एक समुच्चय प्राप्त हो जाता है जिसके आधार पर उस भाषा के सम्पूर्ण शब्द-समूह एवं व्याकरण का अत्यन्त सरलता और शुद्धता से विश्लेषण किया जा सकता है।

**३.२. ध्वनिमविज्ञान की उपयोगिता :**—परन्तु किसी भाषा को इन एककों के रूप में विश्लेषित करने की क्या उपयोगिता है ? क्या सभी अवलोकनीय अन्तरों के सूक्ष्म अंकन के आधार पर किया गया विशुद्ध ध्वन्यात्मक विश्लेषण युक्तियुक्त एवं और भी अधिक परिशुद्ध नहीं है ?

जैसाकि २.१५ के अन्तर्गत संकेतित किया जा चुका है, ध्वन्यात्मक लिप्यंकन के संबंध में परिशुद्धता का प्रतिपादन प्रायः एक भ्रान्ति है। जिस मात्रा तक यह ठोस ध्वन्यात्मक तथ्यों के निकट होता है वह सदैव लेखक के प्रशिक्षण के संयोग पर निर्भर करता है। हम कभी भी निश्चय के रूप में नहीं कह सकते कि प्रशिक्षण से लेखक को इस बात की पूरी जानकारी हो गई है कि किसी भाषा में महत्त्वपूर्ण भेदक तत्त्व कौन-कौन से हैं; और इसीलिए हम यह विश्वास भी नहीं कर सकते कि उसने सूचक से सुनते हुए उन पर पूरा-पूरा ध्यान दिया है। यदि वास्तव में उसने इनमें से किसी भेदक तत्त्व को अनदेखा कर दिया है तो यह भूल सुपरीक्षित ध्वन्यात्मक अन्तरों का अर्थ में आए अन्तरों के साथ सुचिन्तित सह-सम्बन्ध स्थापित करके ही प्रकाश में लाई जा सकती है।

परन्तु यह स्वीकार कर लेने पर भी कि वह इस प्रकार की भूलों के लिए दोषी नहीं है तथा यह मान लेने पर कि उसके द्वारा किया गया लिप्यंकन वास्तविक उच्चारणों के प्रत्येक रूप को पूर्ण शुद्धता के साथ व्यक्त करता है तो भी, यांत्रिक पुनःप्रस्तुतीकरण के अभाव में, भाषा का विशुद्ध ध्वन्यात्मक विश्लेषण ध्वनिम के रूप में किए गए विश्लेषण के समान प्रामाणिक नहीं है। बहुत कम अभिव्यक्ति में इसमें अशुद्धियाँ हों या न हों परन्तु बहुत अधिक अभिव्यक्ति में इसमें अशुद्धियाँ अवश्य होंगी। हमें भाषा की सही-सही जानकारी देने की अपेक्षा यह शब्द-समूह को जटिल तथा आनुषंगिक एवं असंबद्ध विवरण के आधिक्य से व्याकरण को दुरूह बनाता है जिसकी सार्थकता लेखक की कर्णेन्द्रिय की प्रखर श्रवण-शक्ति को दर्शित करने के अतिरिक्त कुछ और नहीं है। इससे हमें, उदाहरण के लिए, पता चलता है कि *geese, goose* और *base* ये शब्द तीन विभिन्न व्यंजनों [क्रमशः g और इसके ठीक ऊपर बाणमुख-चिह्न[७५], g, b] से प्रारंभ होते हैं, *telling* का [l] *tell* के [$l_u$] से भिन्न है यद्यपि *add* और *adding* के [d] समान होते हैं तथा *sit* और *sing* के भूतकालों का निर्माण पृथक् रीतियों से होता है क्योंकि *sat* में मौखिक स्वर तथा *sang* में कभी-कभी अनुनासिक स्वर होता है। संक्षेप में, विशुद्ध

ध्वन्यात्मक विश्लेषण शब्द-समूह एवं व्याकरण के वास्तविक रूप से महत्त्वपूर्ण लक्षणों का उन सांयोगिक तथा व्यक्तिगत लक्षणों से भेद स्थापित करना असंभव कर देता है जो अनिवार्य रूप से प्रत्येक उच्चारण का आंशिक निर्माण करते हैं। किन्तु एक वैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में यह लगभग उतना ही उपयोगी है जितना कि एक जीवविज्ञानी के द्वारा दो विल्लियों को इस आधार पर पृथक्-पृथक् जातियों के अन्तर्गत रखना कि उनमें से एक विल्ली की पूँछ में दूसरी विल्ली की पूँछ से अधिक वाल हैं। किसी उच्चारण के महत्त्वपूर्ण लक्षणों—असंवद्ध अस्थिर अंशों के समूह में स्थिर अंशों—के अन्वेषण द्वारा ही हम भाषावैज्ञानिक अध्ययन के आधार का निर्माण कर सकते हैं। भाषाविद् का कार्य (देखिए १.४) वाणी के तथ्यों का वर्गीकरण करना है तथा भाषा की व्यवस्था को वाह्य रूप से पृथक् किन्तु सामाजिक दृष्टि से समान अनेक परिणामों के संवंध में सामान्य वक्तव्यों के प्रतिपादन से उद्घाटित करना है। वह ध्वनिविज्ञानी जो अपनी सामग्री को ध्वनिमिक विश्लेषण का विषय वनाना अस्वीकृत करता है वह भाषाविज्ञानी तो है ही नहीं, भाषाविज्ञान के वास्तविक उद्देश्य को भी अस्वीकृत करता है।

इस प्रकार, शुद्ध ध्वन्यात्मक विवरण के स्थान पर ध्वनिमिक विवरण का पक्ष लेने का कारण नितान्त रूप से व्यावहारिक है। उच्चारण के असंख्य ब्यौरों को कुछ विभिन्न एककों में संगठित करके विद्यार्थी अध्ययन की पद्धति को सरल नहीं बना लेता वल्कि वास्तव में वह भाषा पर उससे कहीं अधिक व्यावहारिक अधिकार प्राप्त कर लेता है जितना कि वह उतने समय में किसी अन्य रीति से प्राप्त कर सकता है। यह वक्तव्य सिद्धान्त पर ही आवृत नहीं है वल्कि उन सभी विद्यार्थियों के अनुभवों से समर्थित है जिन्होंने विदेशी भाषा के अपने अध्ययन में ध्वनिमिक पद्धति का उपयोग किया है।

अब तक हमने ध्वनिमिक विवरण के सम्बन्ध में प्रायः कहे जाने वाले एक और लाभ के विषय में कुछ नहीं कहा है जो वास्तव में यह है कि इससे देशीय भाषा-भाषी की उसकी भाषा, स्प्रैश्गेफ़ुह[३६], के सम्बन्ध में अनुभूति व्यक्त होती है। अंगरेजी का सामान्य वक्ता, जैसा कि हम जानते हैं, 'यह अनुभव करता है' कि *pin* का [p‘] और *upper* का [p=] समान हैं और ये दोनों *bin* के [b] से पृथक् हैं तथा वह 'अनुभव' अथवा 'विचार करता है' कि *little* शब्द के दो [l] 'एक ही ध्वनि के हैं'। यह सत्य अथवा असत्य हो सकता है, और यदि सत्य है तो यह एक मनोरंजक तथ्य है किन्तु इसे एक भाषाविज्ञानी द्वारा एक मानदण्ड के रूप में अपने वर्गीकरणों के लिए अथवा इस प्रमाण के रूप में भी कि उसने शुद्ध रूप से वर्गीकरण किया है, प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। ध्वनियों के अथवा किसी अन्य वस्तु के विषय में देशीय भाषा-भाषी की अनुभूति भाषावैज्ञानिक पद्धतियों से परीक्षणों के

लिए अगम्य है तथा इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की छूट की माँग भाषाविद् के वास्तविक कार्य का परिहार मात्र है। भाषाविद् केवल वाणी के तथ्यों से सम्बन्ध रखता है। इन तथ्यों के मनोवैज्ञानिक सह-सम्बन्धों का निस्सन्देह महत्त्व है किन्तु भाषाविद् के पास—भाषाविद् होने के नाते—उनके विश्लेषण के साधन नहीं होते।

३.३. **विश्लेषण की प्रविधि :**—जैसाकि ३.१ के अन्तर्गत संकेतित किया जा चुका है, 'ध्वनिम' ध्वन्यात्मक दृष्टि से समान ध्वनियों का एक वर्ग होता है जो भाषा के उसी प्रकार के अन्य समस्त वर्गों से व्यतिरेकी एवं अन्यापवर्जी होता है। वे स्वतंत्र ध्वनियाँ जो किसी ध्वनिम का निर्माण करती हैं उसकी 'उपध्वनियाँ' कहलाती हैं। जैसाकि हम देख चुके हैं, विभिन्न स्थितियों में उपध्वनियों के मध्य पर्याप्त अनिश्चित अंतर हो सकते हैं। किसी भाषा के ध्वनिमों के अन्वेषण की प्रक्रिया अनिवार्य रूप से ध्वन्यात्मक लिप्यंतरण में अंकित रूपों (उच्चारणों एवं उच्चारण के अंशों) का विन्यास, तुलना एवं संयोजन है। प्रविधि के सम्बन्ध में निम्नलिखित उपाय प्रत्येक विवरण में व्यवहृत किए जाने वाले सिद्धान्तों की अपेक्षा एक सामान्य संदर्शिका के रूप में अभीष्ट हैं। सुगम मार्ग का अवलम्बन भी प्रायः संभव होता है तथा अनुभवी ध्वनिमविज्ञानी यहाँ वर्णित की गई संक्रियाओं को प्रत्यक्ष रूप से सम्पन्न करना सदैव आवश्यक नहीं समझते। फिर भी, विश्लेषण के सिद्धान्त प्रत्येक दशा में समान हैं, उस स्थिति में भी जबकि वास्तविक संक्रियाएँ भी अभ्यास एवं अनुभव से इतनी आसान हो जाती हैं कि लगभग सहजानुभूत प्रतीत होने लगती हैं।

(१) वे रूप जिन्हें हमने किसी ध्वन्यात्मक अंकन में अंकित किया हुआ होता है उन्हें प्रथमतः किसी भी सम्मत क्रम में वर्णानुक्रमित किया जाता है। इस संक्रिया द्वारा एक ही ध्वनि से प्रारंभ होने वाले सभी रूप एकत्रित ही नहीं हो जाते बल्कि तुरंत ही यह भी उद्घाटित हो जाता है कि क्या किसी विशिष्ट आद्य रूप की उपस्थिति बाद में आने वाली ध्वनियों से परिमित हो गई है? (उदाहरण के लिए, इससे ज्ञात होता है कि अंगरेजी में पूर्वकंठ्य [g और उसके ठीक ऊपर बाणमुख-चिह्न][७७] केवल अग्रस्वरों से पूर्व तथा मध्यकंठ्य [g] केवल केन्द्रीय एवं पश्चस्वरों तथा व्यंजनों से पूर्व ही आता है)। ध्वन्यात्मक दृष्टि से वे समान आद्य रूप जो परवर्ती समान ध्वनियों से पूर्व किसी भी स्थिति में नहीं आते एक ही स्थान पर समूहित किए जाते हैं क्योंकि उनके मध्य में विरोध की कोई भी संभावना नहीं होती। (इस प्रकार केवल [g और उसके ठीक ऊपर बाणमुख-चिह्न][७८] और [g] के मध्य के अंतर द्वारा प्रभेदित महत्त्वपूर्ण दृष्टि से विभिन्न अंगरेजी रूपों का कोई युग्म कभी भी नहीं हो सकता)।

आद्य गुच्छों—स्वरों अथवा व्यजनों के अनुक्रमों—को दो रीतियों में से एक रीति के द्वारा विवेचित किया जाता है। यदि विभिन्न गुच्छों में कोई सामान्य सदस्य है अथवा यदि किसी गुच्छ के समस्त अंगभूत केवल आद्यों के रूप में ही हैं तो उस गुच्छ को स्वतंत्र एककों के अनुक्रम के रूप में स्वीकार करना उत्तम है और इन स्थितियों का पूर्णतः पालन नहीं हुआ है तो उस गुच्छ को स्वयं में ही एक एकक के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। स्वतंत्र एककों से संघटित गुच्छ अंगरेजी आद्यों [Ej—, aj—; sp—, st—; pl—, kl—] के द्वारा उदाहृत किए जाते हैं। इसके दूसरी ओर, अंगरेजी [p'] के समान कोई आद्य किसी स्पर्श तथा अतिरिक्त परवर्ती महाप्राणत्व में विभाजित किया जा सकता है किन्तु चूंकि [p] महाप्राणत्व के विना किसी स्वर से पूर्व आद्य रूप में कभी भी नही आता इसलिए इस अनुक्रम का पृथक् एकक के रूप में ही विवेचन किया जाता है।

इस संक्रिया की अंतिम रचना है आद्य ध्वनियों की सूची जिसमें प्रत्येक ध्वनिम को उसकी उपध्वनियों के रूप में वर्णित कर दिया जाता है।

(२) हम इस संक्रिया को अन्य सभी स्थितियों—अक्षरों के विविध प्रकारों और बलाघात एवं तान की विविध मात्राओं के रूपों में क्रम से स्वरों तथा संध्यक्षरों के एवं उच्चारण के विविध भागों में स्वरों से पूर्व, उनके मध्य तथा बाद के एकशः एवं गुच्छगत व्यंजनों के सूचीकरण—के लिए पुनः घटित करते हैं। प्रत्येक स्थिति में हमें व्यतिरेकी ध्वनियों की और प्रत्येक ध्वनिम की उन उपध्वनियों की, जो उस स्थिति में घटित होती हैं, सूची प्राप्त होती है।

(३) बनाई गई सूचियों की तुलना तथा संयोजन करते हुए अब हम एक प्रधान सूची का निर्माण करते हैं। अनेक भाषाओं में ध्वनियों की कुल संख्या किसी भी एक स्थिति में प्राप्य संख्या से अधिक होती है किन्तु प्रधान सूची कभी अवर सूचियों का योग मात्र नहीं होती। इसका संकलन करते हुए हमें 'पूरक वितरण' के सिद्धान्त की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए जो यह अपेक्षा करता है कि ध्वन्यात्मक दृष्टि से वे समान ध्वनियाँ जो किसी भी स्थिति में परस्पर व्यतिरेकी नहीं हैं वे एक ही ध्वनिम की उपध्वनियों के रूप में एक स्थान पर भी समूहित कर दी जाएँ। इस सिद्धान्त के विवेचन के लिए देखिए ३.४।

इस स्थल तक हम खंडात्मक ध्वनियों की एक तालिका बना चुके होते हैं। 'खंडात्मक ध्वनिम' इसलिए कहा गया है क्योंकि वे उन ध्वनियों से संघटित होते हैं जो वाक्-प्रवाह में क्रमिक रूप से एक-दूसरे का अनुगमन करती हैं। इसलिए उन्हें उच्चारणों के खण्ड कहा जा सकता है। यह तालिका हमारे विश्लेषण की प्रथम स्थिति को पूर्ण कर देती है किन्तु कार्य अभी पूरा नहीं है।

(४) अब हम अपना ध्यान खंडात्मक ध्वनियों के उन आपरिवर्तनों की

ओर करते हैं जिन्हें हमने 'मात्रा', 'आघात' तथा 'संहिता' की संज्ञाओं से अभिहित किया है (देखिए २.१४)। यदि ये किसी भाषा में विविध रूपों को स्पष्टतया विशेषित करने में सहयोग करती हैं तो इन्हें खंडात्मक ध्वनियों के समान उतनी ही अधिक सावधानी से विश्लेषित एवं वर्गीकृत कर दिया जाना चाहिए और भाषा के वैज्ञानिक वर्णन में उन्हें समान महत्त्व प्राप्त होना चाहिए।

इन स्वनगुणिमिक अभिलक्षणों के विश्लेषण की पद्धतियाँ सिद्धान्त रूप में खण्डात्मक ध्वनिमों के ही समान हैं। यहाँ हम पुनः व्यतिरेकी अभिलक्षणों की उतनी स्थितियों में सूची बनाते हैं जितनी कि हम भेद-स्थापन के लिए आवश्यक समझते हैं, प्रत्येक आघात-ध्वनिम अथवा संहिता-ध्वनिम का उसकी उपध्वनियों के रूप में वर्णन करते हैं तथा पूरक वितरण में समान अभिलक्षणों को एक स्थान पर वर्गीकृत करते हैं। इस विश्लेषण का परिणाम 'स्वनगुणिमिक' अथवा 'अधिखण्डात्मक ध्वनिमों' की तालिका के रूप में होगा।

(५) अनेक भाषाओं में वाक्य को आघात के निश्चित अभिलक्षणों द्वारा विशेषित किया जाता है जो व्यक्तिगत शब्दों की संरचना को आक्रान्त नहीं करते। इस प्रकार अंगरेजी शब्दों में अन्तर्निहित तान का अभाव होता है। उदाहरण के लिए *man* शब्द का अर्थ वही रहेगा चाहे उसे उच्च अथवा निम्न व आरोही अथवा अवरोही स्वराघात से उच्चरित कर दिया जाए। किन्तु अंगरेजी के किसी वाक्य को उसकी अभिलाक्षणिक तान अभिरचना के उल्लेख के अभाव में पूर्णतः विवेचित नहीं किया जा सकता (तुलना करें २.१४)। व्यक्तिगत शब्दों की अपेक्षा वाक्य से संबद्ध आघात के अभिलक्षण 'अनुतान' कहे जाते हैं। उन्हें उच्चारण के अन्य अभिलक्षणों के समान ही विश्लेषित एवं वर्गीकृत किया जाता है, सिवाय इसके कि रूपों की व्यवस्था एवं तुलना करते समय हमें विविक्त शब्दों के स्थान पर पूर्ण वाक्यों का व्यवहार करना चाहिए।

ध्वनिशास्त्रियों एवं वैयाकरणों ने अतीत में अनुतान की प्रायः उपेक्षा की है किन्तु कोई भी ध्वनिमिक विवरण उस समय तक पूर्ण नहीं होता जब तक कि उसमें उच्चारण के प्रत्येक पक्ष का उल्लेख न हो जाए। अंगरेजी में तो यदि हम विविध शब्द-विन्यासों में शब्दों के सापेक्ष बलाघात को तथा विभिन्न प्रकार के उपवाक्यों तथा वाक्यों के अंत में आए हुए स्वराघात की विविध परिरेखाओं को अभिव्यक्त कर देते हैं तो अनुतान का वर्णन पर्याप्त मात्रा में हो जाता है। अन्य भाषाओं में कम अथवा अधिक का अन्तर्वेशन आवश्यक हो सकता है; उनमें, सदैव की ही भाँति, अन्तर्विष्ट किए जाने वाले अभिलक्षण उन व्यावर्तक व्यतिरेकों द्वारा निर्धारित होते हैं जो किसी भाषा में अर्थों में भेद-स्थापन करने में सहायक होते हैं।

(६) अब तक हमारा सम्बन्ध भाषा के विशिष्ट एककों की तालिकाओं के निर्माण से ही रहा है किन्तु ध्वनियों की सूची मात्र से हमें उस रीति के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं हो पाता जिसमें वे प्रयुक्त होते हैं। इसे अन्वेषित करने के लिए हमें ध्वनियों का समूहीकरण उनके व्यापार के आधार पर संरचना-समुच्चयों में करना चाहिए। इस पद्धति का विवेचन ३.५ के अन्तर्गत किया जाएगा।

**३.४. पूरक वितरण :**—पूर्ववर्ती अनुच्छेद में उल्लिखित पूरक वितरण के सिद्धान्त को निम्न प्रकार से निरूपित किया जा सकता है। यदि किसी भाषा के रूपों में दो अथवा अधिक ध्वनियाँ इस रूप में वितरित हैं कि उनमें से कोई भी ध्वनि ठीक उसी स्थिति में घटित नहीं होती जैसीकि अन्य ध्वनियों की होती है और यदि सभी विचाराधीन ध्वनियाँ अन्य सभी ध्वनियों में अनुपस्थित उच्चारण के किसी अभिलक्षण की सहभागी होने के रूप में ध्वन्यात्मक दृष्टि से समान हैं तो उन्हें एक ही ध्वनिम की उपध्वनियों के रूप में एक ही स्थान पर वर्गीकृत किया जाता है। स्थिति की समानता का अर्थ (आद्य, मध्य एवं अन्त्य) रूपों के प्रारंभ एवं अंत से संबद्ध स्थान की समानता ही नहीं है बल्कि पूर्ववर्ती एवं परवर्ती ध्वनियों, संहिता-संबंधी अव्यवस्थाओं और आघात द्वारा निर्धारित परिसर की समानता भी है।

इस विवक्षित नियम का कि एक ही ध्वनिम की ध्वन्यात्मक दृष्टि से विभिन्न उपध्वनियाँ एक ही स्थिति में कभी घटित नहीं होतीं, एक अपवाद भी है। कुछ विशिष्ट स्थितियों में दो अथवा अधिक उपध्वनियों के मध्य 'स्वतंत्र परिवर्तन' हो सकता है, अर्थात् एक ही शब्द के आनुक्रमिक रूप कभी-कभी उपध्वनियों में से किसी एक को तथा कभी-कभी किसी अन्य को बिना किसी अर्थभेद के व्यक्त कर सकते हैं। इस प्रकार अंगरेजी में अन्त्य अघोष स्पर्श-ध्वनियाँ कभी महाप्राण, कभी अल्पप्राण तथा कभी अमुक्त होती हैं किन्तु ये तीनों प्रकार कभी भी अर्थों में भेद-स्थापन का कार्य नहीं करते तथा कोई भी रूप जो इन तीन प्रकारों में किसी भी एक में पूर्ण होता है वह अन्य दो में पूर्ण होने वाले तुल्यमान रूपों द्वारा उसी वक्ता के उच्चारणों के अनुरूप होगा। इसी प्रकार *law, caught, ball* जैसे शब्दों का स्वर किसी अकेले वक्ता अथवा अकेले समुदाय के उच्चारण में निम्न-पश्च [ɒ] से निम्न-मध्य-पश्च [ɔ] तक भिन्न-भिन्न प्रकार का हो सकता है।

पूरक वितरण के सिद्धान्त को स्पष्ट करने के लिए हम यहाँ एक अमेरिकन अंगरेजी बोली (मोटे तौर पर उत्तरी केन्द्रीय राज्यों में व्यवहार में आने वाली बोली) के उच्चारणों में प्राप्य कुछ ध्वनियों की सूची प्रस्तुत करेंगे और प्रत्येक ध्वनि के सम्बन्ध में उन स्थितियों को संकेतित करेंगे जिनमें वह पाई जाती है।

आद्यतः स्वर से पूर्व महाप्राण [t'] (जैसे *tin, tomorrow* में); मध्यतः स्वरों

के बीच में, यदि परवर्ती स्वर में प्रबलतर बलाघात है (जैसे *attack* में); मध्यत: [s] के अतिरिक्त किसी भी व्यंजन के पश्चात् व बलाघातित स्वर से पूर्व (जैसे *captivity, dictation, entire, particular* आदि में); अंत में, स्वर तथा किसी भी व्यंजन के पश्चात् किन्तु प्रस्तुत स्थिति में [t'] और [t के दाईं ओर ऊपर एक सूक्ष्म अनुलम्ब][७६] के स्वतन्त्र विकल्पन सहित (जैसे *at, apt, act, cast, raft, wished, melt, ant* आदि में)।

आद्यत: अल्पप्राण [t⁼] [s तथा ठीक ऊपर बलाघात-चिह्न][८०] एवं अघोष [ɹ] से पूर्व (जैसे *chew, true* में), आद्य [s] के पश्चात् व स्वर से पूर्व (*stone*); आद्य [s] के पश्चात् व अघोष [ɹ] से पूर्व (*strong*); मध्यत: किसी भी अघोष व्यंजन के पश्चात् व अल्प रूप से बलाघातित स्वर से पूर्व (*captive, active, casting, after, Ashton*); मध्यत: [s] के पश्चात् व प्रबल रूप से बलाघातित स्वर से पूर्व (*astonish*); मध्यत: किसी भी व्यंजन के पश्चात् व अघोष [ɹ] से पूर्व (*gastric, destroy, actress, paltry, poltroon, entry, intrigue, portray* आदि); मध्यत: [ɹ, l, n] के पश्चात् व [बलाघातित s][८१] से पूर्व (*parching, filching, punching*); स्वर के पश्चात् व अन्तिम [s] तथा [बलाघातित s][८२] एवं [st—प्रथम वर्ण बलाघातित][८३] से पूर्व (*cats, catch, matched*); किसी भी व्यंजन के पश्चात् व अन्तिम [s] से पूर्व (*acts, casts, rafts, melts, ants* आदि); [ɹ, l, n] के पश्चात् व [बलाघातित s][८४] तथा [st—प्रथम वर्ण बलाघातित][८५] से पूर्व (*parch, filch, punch, parched, filched, punched*); अन्तिम रूप से स्वर अथवा किसी व्यंजन के पश्चात्, किन्तु इस स्थिति में [t'] और [t के दाईं ओर सूक्ष्म अनुलम्ब][८६] के स्वतन्त्र विकल्पन सहित (*at, apt* आदि व पूर्ववत्)।

अमुक्त [t के दाईं ओर सूक्ष्म अनुलम्ब][८७] मध्यत: अन्य स्पर्श ध्वनि एवं [m] से पूर्व (*hatpin, Atkins, shotgun, apartment*); अन्तिम रूप से स्वर अथवा किसी भी व्यंजन के पश्चात्, किन्तु प्रस्तुत स्थिति में [t'] एवं [t⁼] के स्वतन्त्र विकल्पन सहित (*at, apt* आदि व पूर्ववत्)।

ओष्ठ्यरंजित अल्पप्राण [$t_w$] आद्यत: घोष अथवा अघोष [w] से पूर्व (*twice*); मध्यत: स्वर के पश्चात् व घोष अथवा अघोष [w] से पूर्व (*between*); मध्यत: [n] के पश्चात् व घोष अथवा अघोष [w] से पूर्व (*Antwerp, untwine*)।

क्षीण तालव्यरंजित अल्पप्राण [$t_j$] आद्यत: घोष अथवा अघोष [j] से पूर्व (*tune*); मध्यत: स्वर के पश्चात् व घोष अथवा अघोष [j] से पूर्व (*mature*); मध्यत: [ɹ, n] के पश्चात् व घोष अथवा अघोष [j] से पूर्व (*parturient,*

*parturition, contusion, contumely*); मध्यत: [s] के पश्चात् व घोष अथवा अघोष [j] से पूर्व (*postulate*)। किन्तु इस बोली के अनेक प्रयोक्ता [t] के पश्चात् [j] का उच्चारण कभी नहीं करते। इसलिए यहाँ उद्धृत प्रकार के उनके शब्दों में तालव्यरंजित स्पर्श ध्वनियों का प्रयोग नहीं होता।

नासिक्य रूप से मुक्त किया गया [$t^N$] मध्यत: स्वर के पश्चात् व [n] तथा आक्षरिक [n और ठीक नीचे सूक्ष्म वृत्तचिह्न][८८] से पूर्व (*Aetna, button*); मध्यत: [ɹ, l, n] के पश्चात् व [n] तथा आक्षरिक [n और ठीक नीचे सूक्ष्म वृत्तचिह्न][८९] से पूर्व (*partner, carton, Fulton, mountain*)।

पार्श्विक रूप से मुक्त किया गया [$t^L$] मध्यत: स्वर के पश्चात् व [l] से पूर्व (*atlas*); मध्यत: [ɹ, l, n] के पश्चात् व [l] से पूर्व (*artless, faultless, gently*)।

(ह्रस्वतर होने एवं अत्यधिक मांसपेशीय तनन से उच्चरित, अर्थात् शिथिल की अपेक्षा दृढ़, होने के कारण अंगरेजी [d] से भिन्न) घोष [$t_v$] मध्यत: स्वरों के बीच में, यदि परवर्ती स्वर अल्प-बलाघातित है तो (*Betty, matter, barometer*); मध्यत: [ɹ, l, n] के पश्चात् व किसी अल्प-बलाघातित स्वर से पूर्व (*artist, alter, center*); मध्यत: किसी स्वर के पश्चात् और [ɹ] के पश्चात् व आक्षरिक [l और ठीक नीचे सूक्ष्म वृत्तचिह्न][९०] से पूर्व (*bottle, Aristotle, mortal*)।

पूर्ववर्ती आठ अनुच्छेदों के परीक्षण से यह ज्ञात हो जाएगा कि उनमें उन सभी स्थितियों का अन्तर्वेश किया गया है जिनमें [t] के किसी भी प्रकार का परिनिष्ठित अंगरेजी के एकल शब्दों में आना संभव है और, इसके अतिरिक्त, केवल एक अपवाद को छोड़कर कोई भी स्थिति ऐसी नहीं है जिसमें [t] के एक प्रकार से अधिक का प्रयोग हुआ हो। अपवाद के रूप में वह अन्तिम स्थिति है जहाँ तीन प्रकार [t', t= t और दाईं ओर ऊपर सूक्ष्म अनुलम्ब][९१] एक-दूसरे के प्रति स्वतन्त्र विकल्पन के रूप में प्रस्तुत होते हैं किन्तु, जैसाकि हम पहले उल्लेख कर चुके हैं, यहाँ जो अन्तर है वह अपरिच्छेदक है। तब, इस उपलब्धि के पश्चात् कि ऊपर सूचीबद्ध [t] के समस्त आठ प्रकार पूरक वितरण में हैं तथा वे ('दृढ़ जिह्वान्तीय स्पर्श' नामक पारिभाषिक शब्द द्वारा निरूपित) उच्चारण के उस अभिलक्षण के सहभागी हैं जो भाषा की अन्य समस्त ध्वनियों में अनुपस्थित हैं, हम उन्हें एक स्थान पर एक अकेले ध्वनिम की उपध्वनियों के रूप में वर्गबद्ध करते हैं। तथापि, एक विवरण के रूप में, इस विषय में हमारी कार्यप्रणाली सैद्धान्तिक आपत्ति से रहित नहीं है।

यदि हम शिथिल जिह्वान्तीय स्पर्श [d] के प्रकारों की ध्वनियों और स्थितियों की इसी प्रकार की एक तालिका बनाएँ तो हमें यह ज्ञात होगा कि कुछ विशिष्ट स्थितियों में [t] और [d] प्रत्यक्ष विरोध में हैं (उदाहरणार्थ *tin, din ; butting, budding ; bite, bide*) तथा अन्य स्थितियों में वैषम्यात्मक गुच्छों के सदस्य हैं (उदाहरणार्थ *chain, Jane ; true, drew ; carts, cards*) किन्तु स्थितियों के एक समुच्चय में, अर्थात् [s] के पश्चात्, उनमें से एक को ही स्थान प्राप्त होता है। (विद्यार्थी को ध्वन्यात्मक दृष्टि से निम्नलिखित शब्दों की प्रतिलिपि द्वारा और उनमें अन्तर्विष्ट [d] के प्रकार के अनुसार उनका समूहीकरण करके इन वक्तव्यों की स्वयं पुष्टि कर लेनी चाहिए : ***abdomen, add, addle, adjust, admire, ardent, barges, bedraggle, bends, bilge, bulging, caldron, cedric, coldly, delay, dew, din, draw, dwarf, ebbed, Edgar, Edna, Edwin, elder, fardel, foundry, friendly, fudge, golden, hand, handbag, handle, hardly, held, hidden, hinge, hoarding, holds, induce, join, ladder, large, loads, London, loved, Magda, Mazda, nagged, oddly, ordure, pardon, pungent, raised, ready, redeem, reduce, ridges, Saturday, under, undress***)।

शब्द *Stool* में गुच्छ [st=] का *spool* और *school* के क्रमशः [sp=] और [sk=] गुच्छों से वैषम्य है। किन्तु इससे आगे कोई भी [sd=] आद्य गुच्छ प्राप्य नहीं है। इससे अधिक, मांसपेशीय तनन की मात्रा, जो ठीक-ठीक अनुमिति के लिए किसी भी स्थिति में सरल अभिलक्षण नहीं है, [s] के पश्चात् स्पर्श ध्वनि में विशेषकर संदिग्ध होती है। हमने इसे दृढ़ रूप में गृहीत किया है किन्तु अनेक वक्ताओं के उच्चारण में यह शिथिल हो सकता है। [s] के पश्चात् [t] और [d] के मध्य इस वैषम्य के अभाव को तथा इस निर्णय की दुःसाध्यता को ध्यान में रखते हुए कि इस स्थिति में स्पर्श असंदिग्ध रूप में दृढ़ है अथवा शिथिल, स्पर्श को दो में से किसी भी एक संभव ध्वनिम से संयुक्त करना यादृच्छिक प्रतीत हो सकता है। कुछ ध्वनिमविज्ञानी विकल्प को अस्वीकृत करते हैं और इसकी अपेक्षा किसी भी ध्वनि के लिए जोकि अन्य दो अथवा अधिक ध्वनियों के साथ पूरक वितरण में है और ध्वन्यात्मक दृष्टि से उन दोनों अथवा उन सभी ध्वनियों के समान है एक स्वतन्त्र ध्वनिम की स्थापना करते हैं।

जब वर्गीकरण का उद्देश्य विस्तृत रूप में केवल ध्वनिमों के मध्य वैषम्य की संभावनाओं को ही नहीं बल्कि उन स्थितियों को भी प्रदर्शित करना हो जिनमें विशिष्ट वैषम्य आस्थगित होते हों तो इस प्रकार की सतर्कता विवेकपूर्ण होती है। हमारा उद्देश्य यह नहीं बल्कि भाषा की ध्वनियों को वैषम्यात्मक एककों के लघुतम समुच्चय में व्यवस्थित करना है जो प्रयोगात्मक तो है किन्तु पूर्णतः वैज्ञानिक

भी है और जिसके सम्बन्ध से भाषा के उच्चारण, शब्दसमूह तथा व्याकरण को सर्वाधिक दक्षता से वर्णित किया जा सकता है। [s] के पश्चात् अस्पष्ट जिह्वान्तीय स्पर्श को समायोजित करने के लिए एक विशेष वर्ग का निर्माण करने के स्थान पर हम इसे—संभवतः यादृच्छिक रूप से—*tin* के स्पर्श के समान उसी ध्वनिम के लिए केवल इसीलिए निश्चित कर देते हैं क्योंकि हम पृथक् ध्वनिमों की संख्या यथासंभव छोटी बनाए रखना लाभप्रद समझते हैं। यदि किसी कारण से यह और अधिक सुविधाजनक हो तो हम ठीक ऐसे ही इस स्पर्श को *din* के [d] के वर्ग में रख सकते हैं क्योंकि हमारा चुनाव परम्परा से उतना ही निदेशित है जितना कि किसी अन्य वस्तु से। जो भी चुनाव हम करें, [s] के पश्चात् [t] और [d] के मध्यवर्ती वैषम्य का आस्थगन हमारे वर्णन से इतने स्पष्ट रूप में प्रकट होगा मानो हमने उपर्युद्धृत अधिक सतर्क पद्धति का अनुगमन किया हो।

पूरक वितरण के कुछ अन्य उदाहरणों को हम प्रस्तुत करते हैं। [p] अथवा [k] तथा प्रबल-बलाघातित स्वर के मध्य का [l] प्रायः अघोष होता है, जैसेकि *play, clay* में। अन्य सभी स्थितियों में [l] घोष होता है। क्योंकि घोषीकरण का अन्तर सदैव ध्वन्यात्मक परिसर के अन्तर के साथ संलग्न रहता है इसलिए हम दोनों प्रकारों को एकत्र एक ही ध्वनिम के अन्तर्गत रखते हैं। अनेक वक्ता *milk* व *vulgar* जैसे शब्दों में जिह्वान्तीय [l] की अपेक्षा पश्चजिह्वीय [l] का उच्चारण करते हैं। इस बोली में क्योंकि [l] कभी भी [k, g] से पूर्व तथा [L] कहीं भी नहीं आता इसलिए दोनों प्रकार फिर एकत्र ही रखे जाने चाहिए। इस ध्वनिम का विशेषतासूचक ध्वन्यात्मक अभिलक्षण [l] और [L] में वर्तमान किन्तु अन्य सभी अंगरेजी ध्वनियों में अनुपस्थित पार्श्विक विवृति है। *Yes, You* के पूर्वस्वरात्मक अर्द्धस्वर [j] की उत्पत्ति जिह्वा का संचालन अपेक्षाकृत उच्चतर तथा अधिक अग्रवर्ती स्थिति से परवर्ती स्वर के उच्चारण के लिए आवश्यक स्थिति तक करने से होती है। *Day, high, boy* आदि के पश्चस्वरात्मक अर्द्धस्वर [j] का निर्माण इसके विपरीत संचालन से होता है। (देखिए २.९)। ये दो प्रकार पूरक वितरण में हैं और सन्निहित स्वर से संबद्ध जिह्वा की स्थिति की विशेषता के सहभागी हैं—दोनों एक ही ध्वनिम के सदस्य हैं। *Above* [देखिए मूल रूप][६१] शब्द में दो स्वर कभी भी एक-सी आघातीय स्थिति में नहीं होते। [ə] सदैव अल्प रूप से तथा [ʌ] सदैव अधिक प्रबल रूप से बलाघातित स्थिति में होता है। यद्यपि गुण की दृष्टि से इन स्वरों के मध्य स्पष्ट अन्तर है किन्तु ये अनग्र-अवर्तुलित-मध्य-स्वर होने से एक ही अभिलक्षण के सहभागी हैं व तदनुसार एक ही स्थान पर रखे जाने योग्य हैं।

**३.५. ध्वनिमिक संरचना** :—किसी भाषा के खण्डात्मक ध्वनिम उनकी उप-

ध्वनियों के ध्वन्यात्मक विवरण के अनुसार समूहित किए जा सकते हैं। इस प्रकार हम अंगरेजी व्यंजन ध्वनिमों को घोष एवं अघोष अथवा स्पर्शियों, संघर्षियों, नासिक्यों तथा पार्श्विक अथवा द्वयोष्ठ्य, दंतोष्ठ्य, वर्त्स्य आदि रूपों में समूहित कर सकते हैं। किन्तु समूहीकरण की एक अन्य पद्धति और है जो पूर्णरूपेण एक अन्य सिद्धान्त का अनुसरण करती है और उस व्यवहार को प्रदर्शित करने में कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है जिसमें अनेक ध्वनिम भाषा के आभ्यंतर लाघव में प्रस्तुत किए जाते हैं। यह ध्वनिमों का विशिष्ट स्थितियों अथवा संयोगों में उनकी उपस्थिति के आधार पर संरचनात्मक समुच्चयों में समूहीकरण है। 'संरचनात्मक समुच्चय' समस्त ध्वनिमों का समूह होता है जो किसी निश्चित ध्वन्यात्मक परिसर में घटित होते हैं और इसलिए, उस स्थिति में एक-दूसरे से सीधा विरोध रखते हैं। आद्य, मध्य अथवा अन्तिम स्थिति; स्वरों अथवा व्यंजनों अथवा स्वर एवं व्यंजन के मध्य उपस्थिति; गुच्छों के विविध प्रकारों में सहभागिता; आघातीय एवं संहितीय विशिष्ट अवस्थाएँ आदि—किसी भी परिसर का संरचनात्मक समुच्चय के निर्धारण के लिए उपयोग किया जा सकता है। इस प्रकार के समुच्चयों की सर्वांगपूर्ण तालिका का, जिसमें प्रत्येक समुच्चय उसके सदस्यों के सामान्य व्यापार द्वारा निरूपित होता है, भाषा की 'ध्वनिमिक संरचना' के वर्णन में प्रतिफलन होता है।

अंगरेजी में, उदाहरणार्थ, बहुत से संरचनात्मक समुच्चय आद्य गुच्छों के विविध प्रकारों में व्यंजनों की उपस्थिति द्वारा निर्धारित होते हैं। घोष अथवा अघोष [l] से पूर्व आद्यतः छः व्यंजन आते हैं, जैसेकि *play*, *clay*, *blame*, *glade*, *flame*, *slay*; घोष अथवा अघोष [ɪ] से पूर्व, पूर्ववर्ती समुच्चय के पाँच व्यंजनों को अन्तर्विष्ट करते हुए, नौ व्यंजन आते हैं, जैसेकि *pry*, *try*, *cry*, *bribe*, *dry*, *grime*, *fry*, *thrive*, *shrive*; घोष अथवा अघोष [w] से पूर्व सात व्यंजन, जिनमें से तीन प्रथम समुच्चय में भी आते हैं तथा पाँच दूसरे समुच्चय में, घटित होते हैं, जैसेकि *twin*, *quit*, *dwarf*, *Gwen*, *thwart*, *swing*, *white* एवं आठ, अथवा कुछ बोलियों में तेरह, व्यंजन घोष अथवा अघोष [j] से पूर्व घटित होते हैं—तेरह व्यंजनों में पहले से ही संकेतित एक को छोड़कर सभी व्यंजन आ जाते हैं—उदाहरण के लिए—*pure*, *cure*, *beauty*, *gules*, *few*, *view*, *muse*, *hue*, (*tune*, *dew*, *thews*, *suit*, *new*)। एक अन्य समुच्चय उन व्यंजनों से संघटित होता है जो आद्य [s] के पश्चात् आते हैं, जैसेकि *spill*, *still*, *skill*, *sphere*, *sthenic*, *smile*, *snow* तथा एक अन्य और अकेले व्यंजन [s] से संघटित होता है जो एकमात्र ऐसा है जो आद्यतः इन व्यंजनों से पूर्व आता है।

इन उदाहरणों से यह सुस्पष्ट है कि किसी भी प्रदत्त भाषा में संरचनात्मक

समुच्चय व्यापक रूप में अंशपाती होते हैं। प्रत्येक ध्वनिम उतने ही समुच्चयों का सदस्य होता है जितनी कि उसकी घटित होने की परिभाष्य स्थितियाँ होती हैं तथा उसके संगी-सदस्य एक समुच्चय से दूसरे समुच्चय में परिवर्तित हो सकते हैं। इस प्रकार ध्वनिम *k* पूर्ववर्ती अनुच्छेद में वर्णित छः समुच्चयों में से पाँच समुच्चयों का सदस्य है किन्तु ध्वनिम *p* का, जो इन पाँच समुच्चयों के अधिकांश में ध्वनिम *k* का संगी-सदस्य है, [w] से पूर्व के व्यंजनों के समुच्चय में अभाव है तथा ध्वनिम *s* (बलाघातित)[६३] उनमें से केवल एक ही समुच्चय में आता है।

कभी-कभी कोई संरचनात्मक समुच्चय ध्वन्यात्मक निकष पर आधारित समूहीकरण के साथ लगभग अथवा पूर्णतः समरूप हो जाता है। इस प्रकार (l) तथा (ɪ)के पूर्ववर्ती अंगरेजी आद्य व्यंजनों से संघटित समुच्चय समस्त स्पर्शों तथा (h) के अतिरिक्त समस्त अघोष संघर्षियों को अन्तर्विष्ट कर लेता है और यदि हम[s] अथवा [z] में समाप्त होने वाले अंगरेजी अन्त्य गुच्छों (उदाहरणार्थ *cups, lamps, cats, rafts, roofs, cubs, hands, leaves, rims* आदि संज्ञा-बहुवचनों) के संघटन का विश्लेषण करें तो हमें ज्ञात होता है कि [s] के पूर्ववर्ती सभी व्यंजन अघोष तथा [z] के पूर्ववर्ती सभी व्यंजन सघोष हैं। किन्तु अन्य दशाओं में संरचना एवं ध्वनिविज्ञान के मध्य ऐसा कोई सह-सम्बन्ध नहीं है। इस प्रकार मध्य एवं अन्त्य स्थिति तक सीमित अंगरेजी व्यंजनों के समुच्चय में दो सदस्य (*rouge* एवं *sing* में अन्त्य व्यंजन) होते हैं जिनमें से एक घोष संघर्षी तथा अन्य नासिक्य होता है।

**३.६. ध्वनिमिक प्रतीक** : —'ध्वन्यात्मक' प्रतीक का सारतत्त्व इस बात में है कि उसका एक निश्चित मान होना चाहिए जो कि यथातथ्य रूप में ध्वन्यात्मक (अर्थात् उच्चारणात्मक) शब्दावली में परिभाषित हो। जैसाकि २.७ के अन्तर्गत हमने देखा, कोई भी प्रतीक तात्त्विक रूप में उतना ही समुचित होता है जितना कि कोई अन्य, किन्तु जब एक बार हम किसी विशिष्ट प्रतीक को ध्वनियों के एक प्रदत्त संवर्ग का प्रतिनिधित्व करने के लिए एकमति हो जाते हैं तो हम उसे उस मान में अविरोधी रूप से प्रयुक्त करके विवेकपूर्ण कार्य करेंगे। क्योंकि एक शुद्ध रूप से ध्वन्यात्मक लिप्यंकन के अन्तर्गत हम किसी उच्चारण के अपने ऊपर पड़े हुए प्रभाव को यथासंभव सूक्ष्म रूप में अंकित करने का प्रयास करते हैं (२.१५) अतः ध्वन्यात्मक वर्णमाला में हमारे श्रवण की प्रखरता से मेल खाने के लिए पर्याप्त वर्ण और विशेषक-चिह्न अवश्य होने चाहिए। परिणाम के रूप में, इस प्रकार का लिप्यंकन अनिवार्य रूप से 'संदिग्ध प्रतीकों' तथा जटिल संयुक्त शब्दों से आपूर्ण होता है, उसकी सामान्य प्रतीति सामान्य रूप में अप्रीतिकर होती है।

इसके दूसरी ओर, 'ध्वनिमिक लिप्यंतरण' में, एक ही ध्वनिम की उपध्वनियों

के बीच के ध्वन्यात्मक भेद उपेक्षित होते हैं, उपयुक्त उपध्वनि सदैव या तो परिसर द्वारा विवक्षित होती है अथवा इसके अतिरिक्त स्वतन्त्र परिवर्त द्वारा तथा दोनों स्थितियों में अपरिच्छेदक रहती है (देखिए ३.४)। हमें यहाँ लिप्यंकन करने के लिए भाषा के प्रत्येक ध्वनिम के एक प्रतीक की ही आवश्यकता होती है। क्योंकि प्रत्येक भाषा की संपूर्णतः अपनी ही ध्वनिमिक व्यवस्था होती है इसलिए उन प्रभेदों की चिन्ता किए वगैर जो अन्य भाषाओं में महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं, एक समय में केवल एक ही भाषा के किसी प्रतीक का ध्वनिमिक मूल्य परिभाषित किया जा सकता है तथा उसी प्रतीक का बिना किसी असुविधा अथवा अस्पष्टता के दो अथवा अधिक भाषाओं के पर्याप्त रूप से असदृश ध्वनिमों का प्रतिनिधित्व करने के लिए व्यवहार किया जा सकता है।

ध्वनिमिक लिप्यंकन भाषा-संरचना का केवल आलेखी निरूपण ही नहीं होता बल्कि किसी भाषा में अर्थों में भेद-स्थापन करने वाली प्रत्येक वस्तु के द्योतक वर्णों की अल्पतम संभव संख्या का 'व्यावहारिक शुद्ध-लेखन' भी होता है। इस कारण उन वर्णों का व्यवहार करना लाभप्रद होता है जो लिखने, मुद्रित करने तथा पढ़ने में सुगम होते हैं तथा ध्वनिमिक लिप्यंकन में वे ध्वन्यात्मक मूल्य जो उन्हें अभ्यर्पित किए गए हो सकते हैं उनके प्रयोग की दृष्टि से पूर्णतया असंबद्ध होते हैं। इस प्रकार, यदि किसी भाषा में केवल पाँच स्वर ध्वनिम हैं तो ध्वनिमिक रूप से— उनकी ध्वन्यात्मक प्रकृति को ध्यान में रखे बिना—उन्हें प्रस्तुत करने की सर्वोत्तम विधि *a, e, i, o, u* वर्णों के द्वारा है। यदि किसी भाषा में [ɹ] तो है किन्तु कम्पित ध्वनियाँ नहीं हैं तो [ɹ] को सर्वाधिक सुविधाजनक रूप में साधारण *r* के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। अथवा यदि महाप्राणत्व अपरिच्छेदक है—सभी स्पर्शों के महाप्राण होने के कारण अथवा इस अभिलक्षण के सद्भाव या अभाव में उपध्वनियों के मध्य कोई वैषम्य न होने के कारण—तो उसकी उपस्थिति संकेतित करने की कोई आवश्यकता नहीं होती है; [p‘] अथवा [p‘] एवं [p=] दोनों को प्रस्तुत करने के लिए साधारण *p* ही पर्याप्त है। संक्षेप में, प्रतीक जितना ही अधिक सामान्य और सरल होता है उतना ही वह ध्वनिमिक लिप्यंकन में उपयोगी होता है।

ध्वन्यात्मक प्रतीकों से ध्वनिमिक प्रतीकों में भेद स्थापित करने के उद्देश्य से हम ध्वनिमिक प्रतीकों को कर्ण-कोष्ठकों में परिबद्ध करते हैं: [p]= अघोष अल्पप्राण द्वयोष्ठ्य स्पर्श; /p/=किसी विशिष्ट भाषा में कोई भी ध्वनिम जिसे हम इस रूप में लिखना स्वीकार कर चुके हैं।

**३.७. अंगरेजी के ध्वनिम :**—प्रस्तुत अनुभाग में ध्वनिमों में अंगरेजी की ध्वनियों के वर्गीकरण द्वारा ध्वनिमिक विश्लेषण के सिद्धान्तों का विवेचन है। यहाँ

केवल परिष्कृत वर्गीकरण ही प्रस्तुत किया गया है जो प्रायः उस ध्वन्यात्मक सामग्री के संदर्भ से विहीन है जिस पर यह वर्गीकरण आधृत है। अध्येता को हमारे वर्गीकरण के प्रत्येक अंश का प्रमाण के पुनःकल्पन द्वारा उस प्रविधि के सम्बन्ध में अपने ज्ञान का परीक्षण कर लेना चाहिए। यहाँ वर्णित अंगरेजी की बोली मेरीलैंन्ड से पूर्वी पेन्सिलवेनिया होते हुए न्यू जर्सी तक के केन्द्रीय अतलान्तिक राज्यों के शिक्षित व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त भाषा-रूप का साधारणीकृत रूपान्तर है। बोली में आए हुए गौण अन्तरों को साधारण रूप से उपेक्षित कर दिया जाएगा किन्तु अन्य बोलियों के सम्बन्ध में विभिन्न स्थलों पर विश्लेषण में किंचित् परिवर्तन अवश्य कर देना चाहिए जिससे कि वह प्रत्येक बोली के क्षेत्र की विशिष्ट अपेक्षाओं के अनुरूप हो सके।

(१) **संहिता :**—यदि हम उच्चारणों में प्रारम्भिक, आन्तरिक तथा अन्तिम रूप से घटित होने वाली ध्वनियों की तुलना करें तो हमें ज्ञात होगा कि इन तीनों स्थितियों में कुछ ध्वनिमों की उपध्वनियाँ असाधारण रूप से असमान होती हैं। विराम के पश्चात्, प्रथम अक्षर पर प्रबल बलाघात प्रथम खण्डात्मक ध्वनि के प्रारंभ के साथ ही युगपत् रूप में आरम्भ हो जाता है और अपनी प्रबलता में द्रुत गति से विकास करता है; आद्य स्वर (घोष के लिए पहले से ही उद्यत श्वासद्वार के साथ) निर्बाध रूप से अथवा अपरिच्छेदक श्वासद्वारीय स्पर्श के साथ प्रारम्भ हो सकते हैं; अल्प रूप से बलाघातित स्वर से पूर्व होने पर भी अघोष स्पर्श महाप्राण होते हैं तथा सामान्यतः सभी व्यंजन अवधारण के लिए यद्यपि सहज रूप से दीर्घीकृत होने पर भी सामान्यतः ह्रस्व होते हैं। विराम से पूर्व, अन्तिम अक्षर पर प्रबल बलाघात मंथर गति से समाप्त होता है और खण्डात्मक ध्वनियों का 'लंबित मंदोच्चारण' साथ-साथ चलता है; दुर्बल बलाघात प्रायः अब भी अन्य स्थितियों की अपेक्षा दुर्बलतर होता है तथा अक्षर के अन्त की ओर चलते हुए प्रबलता में क्षीयमाण हो सकता है; अन्त्य स्वर एवं द्विस्वरसंध्यक्षर, अन्त्य नासिक्यों तथा पार्श्विकों के समान, अपवादस्वरूप दीर्घ एवं लंबित-मन्द होते हैं; स्पर्श प्रायः अमुक्त होते हैं तथा अन्त में सघोष स्पर्श तथा संघर्षी अघोष होते हैं। विरामोत्तरी एवं विरामपूर्वी उपध्वनियों से संयुक्त इन सभी तथा कुछ अन्य तथ्यों को हम संक्षिप्त रूप में 'विप्रकृष्ट संहिता' के अभिलक्षण कहते हैं। विराम से लेकर किसी उच्चारण के प्रथम खण्डात्मक ध्वनिम तक के अथवा अन्तिम खण्डात्मक ध्वनिम से लेकर परवर्ती विराम तक के संक्रमण को हम 'बाह्य विप्रकृष्ट संहिता' के रूप में परिभाषित करते हैं; एक ध्वनि से दूसरी ध्वनि तक का संक्रमण जिसे हमारे द्वारा उल्लिखित अभिलक्षणों में किसी में भी सुस्पष्ट नहीं किया गया है 'संन्निकृष्ट संहिता' कहलाता है।

और अधिक अवलोकन से ज्ञात होता है कि विप्रकृष्ट संहिता के अभिलक्षण विराम से पूर्व तथा पश्चात् में ही नहीं बल्कि कुछ उच्चारणों में भी आभ्यन्तर रूप से वर्तमान होते हैं (तुलना कीजिए २.१४)। 'आभ्यन्तर विप्रकृष्ट संहिता' का सन्निकृष्ट संहिता से *tin-tax* ('टिन पर टैक्स') और *syntax*; *slyness* और *minus*; *an aim* तथा *a name*; *night-rate* अथवा *dye-trade* एवं *nitrate* जैसे शब्दों में वैषम्य होता है। ध्वनिमिक लिप्यंतरण में बाह्य विप्रकृष्ट संहिता को प्रतीकों के मध्य में स्थान छोड़कर, आभ्यन्तर विप्रकृष्ट संहिता को योजक-चिह्न द्वारा तथा सन्निकृष्ट संहिता को प्रतीकों को बिलकुल सटाकर लिखने से निर्दिष्ट किया जाता है।

(२) **बलाघात** :—महत्त्वपूर्ण रूप से असदृश रूपों की वैसे ही अथवा सदृश किन्तु असदृश कोटियों अथवा प्रबलता के असदृश वितरणों वाले खण्डात्मक ध्वनिमों की तुलना से ज्ञात होता है कि अंगरेजी का बलाघात पूर्ण रूप से चार वैषम्यात्मक कोटियों में वर्णित किया जा सकता है। इन्हें १ (प्रबलतम) से लेकर ४ (दुर्बलतम) तक संख्यांकित किया जा सकता है अथवा इन्हें **'प्रबल'**, **'लघुकृत प्रबल'** **'मध्य** और **'दुर्बल'** जैसे विवरणात्मक नामों से अभिहित किया जा सकता है। इनमें प्रथम तीन का एकत्र वर्गीकरण **'सशक्त'** के रूप में करना उपयोगी है। ध्वनिमिक लिप्यंकन में सशक्त बलाघातों को स्वर-वर्णों के ऊपर आघात-चिह्नों, जैसेकि [देखिए[६४]] तथा दुर्बल बलाघात को चिह्न के अभाव में, जैसेकि /a/, उत्तम रीति से निर्दिष्ट किया जाता है।

परम्परागत वर्णविन्यास में उद्धृत किन्तु संहिताओं तथा बलाघात-चिह्नों से चिह्नित निम्नलिखित शब्द एवं पदबन्ध चार कोटियों को निर्दशित करते हैं तथा तुलना की उस प्रक्रिया को अभिव्यंजित करते हैं जिसके द्वारा हमें इस संख्या की प्राप्ति होती है :

cát, ánd, yés
béllow, cúrrent
belów, corréct
énemy, pólitics
anémic, politely

cóntènts, rótàte
ùntíe, ròmánce
réctifỳ, démocràt
rèferée, dèmocrátic

ásk-fòrit, nòt-atáll.

bláck-bîrd, réd-câp
ôld-mán, rêd-bárn
téll(h)im-sô, stóp-thât
câtan(d)-dóg, sêe(h)im-rún
móvie-àuditôrium, —
élevàtor-ôperàtor

अन्य ध्वनिमों की भाँति चार बलाघात ध्वनिमों में से प्रत्येक में अपरिच्छेदक रूप से असदृश उपध्वनियों की एक संख्या होती है; एक अक्षर की नितान्त प्रबलता नहीं बल्कि एक ही उच्चारण में अन्य अक्षरों की सापेक्ष प्रबलता महत्त्वपूर्ण होती है। अकेले उच्चारण में भी एक ही बलाघात ध्वनिम वाले दो अथवा अधिक अक्षर, उच्चारण में अपनी स्थिति तथा विप्रकृष्ट संहिता के बिन्दुओं एवं परिच्छेदक रूप से प्रबलतर बलाघात वाले अक्षरों से अपनी दूरी पर निर्भर करते हुए, प्रबलता की अवगम्य रूप से असदृश कोटियों वाले हो सकते हैं। *A language is a system of arbitrary vocal symbols* [देखिए[६५]] वाक्य में तीन प्रबल, दो लघुकृत प्रबल, एक मध्य और दस दुर्बल बलाघात हैं। किन्तु प्रबलता (तीव्रता) का मापन करने वाले यांत्रिक साधन से संभवतः केवल चार के स्थान पर एक दर्जन अथवा अधिक असदृश कोटियों का ज्ञान होगा। सदैव की ही भाँति, वे ध्वनिम, जिन्हें हम प्रतिपादित करते हैं, भाषा-संरचना को वर्णित करने के विशेष उद्देश्य के लिए निर्मित वस्तुगत दृष्टि से असदृश ध्वनियों के वर्ग होते हैं। बलाघात ध्वनिम तीव्रता के अभिलक्षणों के वर्ग होते हैं।

(३) **व्यंजन** :—अंगरेजी की सभी परिनिष्ठित बोलियों में व्यंजन ध्वनिमों की एक ही संख्या को प्रभेदित करने की समानता है यद्यपि उन सभी में इन्हें तथ्यतः समान स्थितियों तथा संयोजनों में प्रदर्शित नहीं किया जाता। निम्नलिखित सूची इन ध्वनिमों की एक तालिका है जिसमें प्रत्येक ध्वनिम को कुछ अभिलक्षक शब्दों में उदाहृत किया गया है—

| | |
|---|---|
| /p/ pin, upper, lip | /ð/ then, other, bathe |
| /t/ tin, better, bit | /z/ zink, fuzzy, his |
| /k/ kin, lucky, back | /ž/ azure, rouge |
| /b/ bin, rubber, cub | /m/ mat, simmer, dim |
| /d/ din, rudder, sad | /n/ gnat, sinner, din |
| /g/ give, beggar, fig | /ŋ/ singer, thing |
| /f/ fin, coffer, cough | /l/ lip, follow, call |
| /θ/ thin, Matthew, bath | /r/ rip, arrow, car |
| /s/ sin, fussy, miss | /j/ yet, high (§§2.9, 3.4) |
| /š/ shin, fashion, rash | /w/ wet, how (§§2.9, 3.4) |
| /v/ vine, cover, give | /h/ hat, behave |

व्यंजन गुच्छ अधिकांश रूप में सुमेद्य होते हैं। घटित होने वाले प्रकारों को निर्दशित करने के लिए हम जिह्वान्तीय व्यंजन+/j/ के संयोजनों (जो यहाँ वर्णित वोली के कुछ प्रकारों में विरल होते हैं) तथा केवल विदेशी अभिधानों में सुनाई देने वाले कुछ गुच्छों के अतिरिक्त आद्य गुच्छों की एक संपूर्ण सूची प्रस्तुत करते हैं। मध्य एवं अन्त्य गुच्छ और अधिक संख्या वाले होते हैं किन्तु उनसे कोई विशेष समस्या उत्पन्न नहीं होती—

| | | | |
|---|---|---|---|
| /pl/ play | /fr/ fry | /kw/ quit | /sθ/ sthenic |
| /kl/ clay | /θr/ thrive | /dw/ dwarf | /sm/ smile |
| /bl/ blame | /šr/ shrine | /gw/ Gwen | /sn/ snow |
| /gl/ glade | /pj/ pure | /θw/ thwart | /spl/ splash |
| /fl/ flame | /kj/ cure | /sw/ sweet | /skl/ sclerotic |
| /sl/ slay | /bj/ beauty | /hw/ white | /spr/ spring |
| /pr/ pry | /gj/ gules | /tš/ chain | /str/ string |
| /tr/ try | /fj/ few | /dž/ Jane | /skr/ scream |
| /kr/ cry | /vj/ view | /sp/ spill | /spj/ spew |
| /br/ bribe | /mj/ muse | /st/ still | /skj/ skew |
| /dr/ dry | /hj/ hue | /sk/ skill | /smj/ smew |
| /gr/ grime | /tw/ twin | /sf/ sphere | /skw/ squeal |

इन गुच्छों में केवल चार ही व्याख्यापेक्षित हैं। /hj/ एवं /hw/ उन बोलियों में आते हैं जिनमें *hue* तथा *Hughes* का क्रमशः *you* एवं *use* से और *whale* तथा *whine* का *wail* एवं *wine* से उच्चारण-पार्थक्य है। सर्वाधिक साधारण रूप से *hue* एवं *whale* में आद्य ध्वनि अघोष अर्द्धस्वर होती है जो स्वर के प्रारम्भ से ठीक पूर्व सघोष हो जाती है किन्तु इन ध्वनियों का विश्लेषण दो अतिरिक्त ध्वनिमों को रखने की अपेक्षा /h/+/j, w/ के गुच्छों के रूप में करना अधिक सुविधाजनक है। हमें यह देखकर आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि /h/ की उपध्वनियाँ अघोष [j] तथा [w] को अन्तर्विष्ट करती हैं। यदि हम ध्यानपूर्वक *he, ham, hoe, who* की आद्य ध्वनियों का निरीक्षण करते हैं तो हमें ज्ञात होता है

कि प्रत्येक शब्द में /h/ की उपध्वनि जिह्वा एवं ओष्ठों द्वारा परवर्ती स्वर के लिए आवश्यक सुनिश्चित अथवा समीपवर्ती स्थिति में उच्चरित होती है; तुलना करें २.१० (४)। हम इन तथ्यों को सार रूप में इस प्रकार कहकर प्रस्तुत करते हैं कि किसी भी सघोष x ध्वनि से पूर्व, /h/ की उपध्वनि x की अघोष प्रतिरूप होती है और हम उच्चारण के उस अभिलक्षण को विवेचित करते हैं जो /h/ को परवर्ती सघोष ध्वनि की आंशिक अथवा पूर्ण अघोष पूर्वेक्षा के रूप में चित्रित करता है।

प्रायः [देखिए[६१]] के रूप में लिखित *chain* और *jane* के स्पर्श-संघर्षियों का निरूपण अनेक ध्वनिमविज्ञानियों ने एकक ध्वनिमों के रूप में किया है। इस प्रकार के निरूपण के कुछ लाभ हैं किन्तु निम्नलिखित तर्क हमें इन्हें गुच्छों के रूप में स्वीकार करने के लिए प्रस्तुत करते हैं। यदि ये ध्वनियाँ एकक ध्वनिम हैं तो ये अघोष एवं सघोष ध्वनिमों के केवल ध्वन्यात्मक दृष्टि से सहसंबद्ध युग्म हैं (जैसे /p, b; t, d; f, v/ आदि) जिनमें से कोई भी सदस्य किन्हीं भी आद्य गुच्छों में सहभागिता नहीं करता; अर्थात् अंगरेजी की किसी भी परिनिष्ठित बोली में [देखिए[६७]] जैसा अथवा ऐसा ही कोई अन्य संयुक्त शब्द नही होता। मध्य एवं अन्त्य रूप से विचाराधीन ध्वनियाँ तथ्यतः इस प्रकार के सुस्पष्ट गुच्छों की भाँति घटित होती हैं – /ts, dz/ और /tr, dr/; तुलना करें *Patsy* और *hatchet*, *Betsy* और *wretched*, *buttress* और *duchess*, *sudsy* और *pudgy*, *sundry* और *spongy*, *cats* और *catch*, *parts* और *parch*, *rids* और *ridge*, *builds* और *bilge*। इसके अतिरिक्त, वे वक्ता जो *fence*, *rents*, *hens*, *bends* जैसे शब्दों को जैसे-तैसे [-nts, -ndz] अथवा [-ns, -nz] के साथ उच्चरित करते हैं (और उनकी संख्या पर्याप्त है) समान रूप से *bench*, *hinge* जैसे शब्दों का जैसे-तैसे [देखिए[६८]] अथवा [देखिए[६६]] के साथ उच्चारण करते हैं। इन स्पर्श-संघर्षियों के एकक ध्वनिमों की अपेक्षा [देखिए[१००]] के रूप में विश्लेषण द्वारा हम संपूर्ण संरचना के वर्णन को सरलीकृत करते हैं जिसका महत्त्व स्वतन्त्र ध्वनिमों के अतिरिक्त वितरणों के लिए भी होता है। (*white shoes* विलोम *why choose* जैसे वैषम्य, जो यदा-कदा एकक ध्वनिम /c/ [बलाघातित[१०१]] के लिए प्रमाण-रूप में व्यवहृत होते हैं संहिता के अन्तर्गत एक वैशिष्ट्य के रूप में भली प्रकार से व्याख्यायित किए जाते हैं।)

(४) **स्वर :**—स्वर एवं सन्ध्यक्षर आक्षरिक ध्वनिमों को संघटित करते हैं जिन्हें ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि ये जिन अक्षरों में घटित होते हैं उनमें उनके शिखरों के रूप में कार्य करते हैं। (तुलना करें २.६)। अंगरेजी अक्षरविज्ञान को पूर्णतः एवं यथार्थतः छः स्वर ध्वनिमों के रूप में विवेचित किया जा सकता है जो अक्षरशिखरों के रूप में या तो अकेले अथवा परवर्ती अर्द्धस्वर के साथ संयुक्त रूप में घटित होते हैं। इन स्वरों तथा संध्यक्षरों के वितरण में अंगरेजी बोलियाँ

किसी अन्य अभिलक्षण की अपेक्षा कहीं अधिक भिन्न होती हैं। यहाँ विश्लेषित बोली के सम्बन्ध में तथ्यों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया गया है :—

प्रबल बलाघात वाले मूल स्वर केवल व्यंजनान्त अक्षरों (अर्थात् व्यंजन से समाप्त होने वाले अक्षरों) में ही घटित होते हैं : तीव्र बलाघात वाले [देखिए[१०२]] में; लघुकृत तीव्र बलाघात वाले [देखिए[१०३]] में; मध्यम बलाघात वाले [देखिए][१०४] में।

दुर्बल बलाघात वाले मूल स्वरों के अपने स्वतन्त्र नियम हैं। /i/ तथा /ə/ व्यंजनान्त तथा स्वतन्त्र अक्षरों (अर्थात् व्यंजन में समाप्त होने न वाले अक्षरों)—दोनों में ही घटित होते हैं, उदाहरणार्थ *habit, hélping* [देखिए[१०५]] एवं *cautious, condémn* तथा *sófa* में। /u/ भी अक्षरों के दोनों प्रकारों में घटित होता है, जैसे *careful* और *éducate* में किन्तु साधारणतः /ə/ द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है। अनेक वक्ता *handed* एवं *roses* के दुर्बल-बलाघातित स्वर का उच्चारण या तो /i/ (*candid* के स्वर) के रूप में या /ə/ (*Rosa's* के स्वर) के रूप में करते हैं किन्तु कुछ वक्ता *handed* एवं *roses* को इन दोनों से पृथक् दुर्बल-बलाघातित स्वर, ध्वनिमिक रूप से /e/, के साथ उच्चरित करते हैं। दुर्बल-बलाघातित /a/ एवं /o/ इस बोली के कुछ ही प्रकारों में तथा तीव्र बलाघात वाले अक्षर के ठीक पूर्ववर्ती केवल व्यंजनान्त अक्षरों में घटित होते हैं, उदाहरणार्थ *palpation,* [देखिए[१०६]] और *Octóber, postérior* में।

आक्षरिक व्यंजन [देखिए[१०७]], जैसेकि *gambling, fathoming* और *ẹvening* (अर्थ-'समकारी') में, (जो *gambling, rhythmic* और *évening*—अर्थ-'झुटपुटा'—में अनाक्षरिक व्यंजनों से विरोध रखते हैं), सुगम रीति से /ə/+सामान्य /l, m, n/ के रूप में विश्लेषित किए जाते हैं; *father* तथा *pertain* में दुर्बल-बलाघातित प्रतिवेष्टित स्वर /ər/ के रूप में अनुरूपतः विश्लेषित किया जाता है।

संध्यक्षर व्यंजनान्त तथा स्वतन्त्र दोनों ही प्रकार के अक्षरों में आते हैं; /ej/ तीव्र-बलाघातित *bay, bait* में, दुर्बल *vacation* के अक्षर में; /aj/ तीव्र-बलाघातित *búy, bite* में, दुर्बल *I know, my son* जैसे पदबन्धों में; /oj/ तीव्र-बलाघातित *bóy, bóil* में; /aw/ तीव्र-बलाघातित *ców, bóut* में; /ow/ तीव्र-बलाघातित *gó, bóat* में; दुर्बल *window* में। इनमें, यहाँ विवेचित बोली तथा परिनिष्ठित अंगरेजी के अधिकांश अन्य प्रकारों में, *sée, béat* के तीव्र-बलाघातित तथा *carry, candied* (तुलना करें *candid*) के दुर्बल /ij/ तथा *tóo, bóot* के तीव्र-बलाघातित तथा *value* के दुर्बल /uw/ का योग अवश्य कर लेना चाहिए।

दीर्घ स्वर व्यंजनान्त तथा स्वतन्त्र दोनों ही अक्षरों में आते हैं : *calm, father* में /a·/; *caught, law* में /o·/। उन बोलियों में जहाँ *see* और *too* के आक्षरिक

असंध्यक्षरीय स्वर हों, वे /iˑ, uˑ/ होते हैं। *yeah* में [Eə] अथवा [देखिए[१०८]] एकाक्षरिक सम्बन्ध [eˑ] के रूप में विश्लेषित किया जा सकता है क्योंकि इसके अतिरिक्त इसका विरोधी कोई अन्य [eˑ] नहीं है। यह आक्षरिक इस बोली के कुछ प्रकारों के *bad, adds, jazz, (tin) can* जैसे शब्दों में भी घटित होता है जबकि ये शब्द *bade, adz, has, (he) can* जैसे शब्दों से, मध्य-केन्द्रीय स्थिति की ओर परवर्ती श्रुति के सद्भाव अथवा अभाव में, दीर्घतर तथा उच्चतर स्वर से युक्त होने के कारण भिन्न होते हैं। सर्वाधिक फलोत्पादक विश्लेषण है उत्थित बिन्दु से युक्त तत्त्व को, जिसे हमने यहाँ प्रस्तुत किया है, एक स्वतन्त्र ध्वनिमिक एकक के रूप में स्वीकार करना जो परवर्ती स्वर ध्वनिम की विशेष उपध्वनि—जो अन्य स्थितियों की उपध्वनियों से दीर्घतर तथा गुणात्मक रूप में भिन्न होती है—की आवश्यक रूप से अपेक्षा करता है। कुछ निश्चित स्वरों के पश्चात् तत्त्व /ˑ/ अनाक्षरिक[ə] के रूप में प्रकट होता है।

यह एकक [h] के साथ परिपूरक वितरण में होता है: [h] दुर्बल-बलाघातित स्वर अथवा कुछ निश्चित व्यंजनों के पश्चात् केवल आद्य एवं मध्य रूप से घटित होता है जबकि अन्य इन स्थितियों में कभी भी नहीं होता। ध्वन्यात्मक रूप से, /ˑ/ तत्त्व पूर्ववर्ती स्वर का, वैसी ही अथवा उत्तरोत्तर केन्द्रीकृत जिह्वा की स्थिति के साथ, सघोष सातत्य है। इस प्रकार यह, घोषीकरण की स्थिति के अतिरिक्त, /h/ का विपर्याय है जो परवर्ती सघोष ध्वनि की आंशिक अथवा पूर्ण अघोष पूर्वेक्षा के रूप में ऊपर विवेचित किया गया है। वितरण एवं ध्वन्यात्मक समरूपता के आधार पर हम [h] तथा 'दीर्घीकरण तत्त्व' दोनों को /h/ के रूप में लिखित एक ही ध्वनिम में वर्गीकृत करके अपने लिप्यंकन को सरल बना सकते हैं एवं तदनुसार पूर्ववर्ती अनुच्छेद में विवेचित सम्बन्धों को /ih, eh, ah, oh, uh/ के रूप में लिख सकते हैं। क्योंकि यहाँ /h/ पूर्ववर्ती स्वर के साथ समास आक्षरिकों का निर्माण करने में /j/ तथा /w/ की भाँति कार्य करता है अतः हम /h, j, w/ को एकत्र एक संरचनात्मक समुच्चय में समूहित करते हैं (३.५) तथा उन्हें अर्द्धस्वरों का अभिधान देते हैं; यद्यपि इस शब्द की ध्वन्यात्मक परिभाषा (२.९) [h] पर व्यवहृत नहीं होती।

/r/ से पूर्व, मूल स्वर केवल प्रबल बलाघात के साथ घटित होते हैं यदि दुर्बल-बलाघातित स्वर व्यंजन के ठीक पश्चात् हो, जैसेकि *mirror, merry, marry, sorry, hurry, jury* में। अन्तिम /r/ से पूर्व, जैसेकि *beer, bear, bar, bore, burr, boor* में, हमें छः वैषम्यात्मक आक्षरिक प्राप्त होते हैं जो *dearer, Mary, starry, story, furry, Jewry* जैसे शब्दों में भी घटित होते हैं। इस अन्तिम श्रेणी

का कोई भी शब्द *mirror* से *jury* तक की श्रेणी के किसी भी शब्द से लय-सामंजस्य नहीं रखता। *beer-boor* तथा *dearer-Jewry* श्रेणियों के कुछ आक्षरिकों की ऊपर विश्लेषित स्वर+/h/ से निर्मित रूपों से समरूपता को ध्यान में रखते हुए हम *beer-boor* श्रेणी को /*bi'hr, béhr, báhr, bóhr, bə'hr, búhr*/ के रूप में लिखते हैं।

*pat, bite, cow, calm* (अथवा *pot, boil, boat, law* या *cut, burr*) के आक्षरिकों को ध्वनिमिक दृष्टि से संवद्ध मानकर निश्चय ही हमारा मंतव्य यह उपलक्षित करना नहीं होता है कि उन सब में ध्वन्यात्मक दृष्टि से समरूप स्वर होते हैं। जो विश्लेषण हमने किया है उसका अभिप्राय केवल यही है कि हमने भाषा के अपने विवरण को सरलीकृत तथा व्यवस्थित करने के उद्देश्य से ध्वनिगों के कुछ वस्तुगत रूप से भिन्न वर्गों को एकत्र ही वर्गीकृत किया है; यह न तो उनके बीच के अन्तर का निषेध करता है और न ही उसे अनावश्यक समझता है। एक ही ध्वनिम की उपध्वनियों में ध्वन्यात्मक असमानता अन्ततः असामान्य नहीं होती है, हम केवल यही चाहते हैं कि ऐसी उपध्वनियाँ परिपूरक रूप में वितरित हों तथा अन्य सब ध्वनियों के सदस्यों में अनुपस्थित किसी ध्वन्यात्मक अभिलक्षण अथवा अभिलक्षणों के संयोजन द्वारा चिन्हित हों। इन छः स्वर ध्वनिमों में से प्रत्येक के लिए हम निम्नलिखित वर्णन के आधार पर जिह्वा की स्थितियों की एक निश्चित परास की विशेषतासूचक अभिलक्षण के रूप में स्थापना करते हैं : /i/ उच्च अपश्च; /u/ उच्च अनग्र; /e/ मध्य अग्र; /a/ निम्न अपश्च; /o/ अनुच्च पश्च; /ə/ मध्य केन्द्रीय, अथवा कदाचित् सभी स्वर विशेषताएँ जिनमें आक्षरिक व्यंजनों की आक्षरिकता भी अन्तर्विष्ट है। यह ध्यान रहे कि हमारा विवेचन जिह्वा की यथार्थ स्थिति को तथा इसके समान ओष्ठों की स्थिति को अनिर्दिष्ट ही छोड़ देता है; ये एक उपध्वनि से दूसरी उपध्वनि में भिन्न होती हैं किन्तु सदैव उस परास की सीमाओं के भीतर ही जिसका विवेचन हम कर चुके हैं।

निम्नांकित सारणीयन में हमारे विश्लेषण का संक्षेपण है तथा इससे छः ध्वनिमों में से प्रत्येक की उपध्वनियों के वितरण का ज्ञान होता है। प्रस्तुत सारणीयन का अभीष्ट यहाँ विवेचित बोली पर ही प्रयुक्त होना है; अंगरेजी के अन्य प्रकारों के लिए पृथक्, यद्यपि मूलतः समरूप, व्यवस्थाओं की आवश्यकता है। इस बोली के लिए भी, हम यह दावा नहीं करते हैं कि हमारा यह प्रतिपादन अन्तिम वाक्य है। (सारणी में, V=छः स्वर ध्वनिमों में से कोई भी एक।)

| | /V/ | /Vj/ | /Vw/ | /Vh/ | /Vr/ | /Vhr/ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /i/ | *pit* | *beat* | — | — | *mirror* | *beer* |
| /e/ | *pet* | *bait* | — | *yeah* | *merry* | *bear* |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /a/ | *pat* | *bite* | *bout* | *calm* | *marry* | *bar* |
| /o/ | *pot* | *boil* | *boat* | *law* | *sorry* | *bore* |
| /ə/ | *cut* | — | — | — | *hurry* | *burr* |
| /u/ | *put* | — | *boot* | — | *jury* | *boor* |

(५) **अनुतान** :—अमेरिकी अगरेजी में वाक्य के आघातीय अभिलक्षण अद्यापि व्यावहारिक दृष्टि से अज्ञात हैं; यहाँ अनुतान के केवल मुख्य भेदों को ही संकेतित किया जा सकता है। चार मुख्य उच्चारण-अन्त्य अनुतान प्रतीत होते हैं :—**उक्ति** /./, **हाँ—अथवा—न में प्रश्न** /?/, **विशिष्ट प्रश्न** (विशेष प्रश्नात्मक शब्द से युक्त प्रश्न /¿/ एवं **विस्मयादिबोधक** /!/ ; उदाहरणार्थ *John is going away* /·/, *John is going away* /?/ अथवा *Is John going away* /?/, *Where is John going* /¿/ अथवा *Who is going away* /¿/, *John going away* /!/ । अनंतिम अनुतानें **अप्रतिहत** /,/ तथा **स्थगनक** /../ होती हैं; जैसे *unless I can stop him* /,/ *John is going away* तथा *Well* /../ *perhaps*.

सामान्य वाक्य-अनुतान के विकार तथा अतिरिक्त-तीव्र बलाघात, दोनों को आवेष्टित करने वाली **व्यतिरेकी** अनुतान वाक्य में किसी भी शब्द अथवा अक्षर पर तथा उस अक्षर पर भी पड़ सकती है जिसे सामान्यतः दुर्बल बलाघात से उच्चरित किया जाता है, उदाहरणार्थ (*Is Bill going away?*) *No* /,/ *John* /¡/ *is going away*, (*John is not going away, is he?*) *Yes* /,/ *John is* /¡/ *going away*, *I said il*/¡/*lusion* /,/ *not al*/¡/*lusion*. अन्य प्रभेदक अनुतानों तथा विभिन्न वाक्य-रचनाओं में शब्दों के आपेक्षिक बलाघात के सम्बन्ध में वक्तव्य और अधिक अध्ययन के पश्चात् ही दिए जा सकते हैं।

## चतुर्थ अध्याय

# रूपप्रक्रिया

**४.१. व्याकरणिक विश्लेषण की प्रकृति :**—वह प्रक्रिया जिसके द्वारा हम किसी भाषा के व्याकरण का विश्लेषण करते हैं, सिद्धान्ततः वैसी ही है जिसका व्यवहार ध्वनिमविज्ञान के अन्तर्गत किया गया है। यहाँ पुनः हम उच्चारणों के एक संग्रह की परीक्षा करते हैं, आवर्तक प्रभागों की तालिका बनाते हैं तथा उन विभिन्न उच्चारणों के अंशों के, जो रूप एवं कार्य में समान हैं, एक समूहीकरण द्वारा वर्गों की स्थापना करते हैं। ध्वनिमिक विश्लेषण का स्थान निश्चय ही सबसे पहले आता है (तुलना करें ३.२) क्योंकि व्याकरणिक विश्लेषण में सूचीबद्ध एवं तुलना किए गए उच्चारण प्रभाग ध्वनियाँ न होकर ध्वनिमिक रूप से अंकित सार्थक रूप होते हैं।

प्रविधि के अन्तर्गत इस मूलभूत समरूपता को अनुचित्रित करने के लिए विषयवस्तु के दो प्रकारों के मध्य एक महत्त्वपूर्ण अन्तर होता है। ध्वनिम निरर्थक होता है; उदाहरणार्थ *see, slope* एवं *solitude* में [*s*] के अर्थ का अन्वेषण व्यर्थ ही होगा। किन्तु किसी भाषा के व्याकरण में प्रत्येक तत्त्व का—शब्द, अन्त प्रत्यय, वाक्य अथवा वह जो कुछ भी हो उसका—ध्वनिमों के विशिष्ट सम्बन्ध के संदर्भ में व्यक्त केवल रूप ही नहीं होता बल्कि अर्थ भी होता है। यह सत्य है कि अर्थ से संबद्ध कुछ संभावनाएँ ध्वनिमविज्ञान के क्षेत्र में भी होनी चाहिए—ऐसा होने पर ही हमें यह ज्ञात होता है कि [p‘] और [p⁼] का संबंध एक ही ध्वनिम से है क्योंकि [rIp‘] और [rIb⁼] एक ही अर्थ के वाहक हैं जबकि [p‘] और [b] पृथक् ध्वनिमों से संबद्ध हैं क्योंकि [rIp‘] और [rIb] के अर्थ भिन्न होते हैं। इस प्रकार के प्रश्नों पर विचार करने के लिए हमें केवल इतना ही जानने की आवश्यकता होती है कि क्या दो उच्चारण प्रभाग अर्थ की दृष्टि से एक हैं अथवा पृथक्-पृथक्; किन्तु व्याकरण के अन्तर्गत कड़ा रुख अपनाने की आवश्यकता होती

है। *Prince, boy, princeling, boiling* इन चारों शब्दों के अर्थ भिन्न-भिन्न हैं; प्रत्येक शब्द के अर्थ का सूक्ष्मतर परीक्षण ही हमें *prince* : *princeling*=*boy* : *boiling* जैसे असंगत अनुपात की स्थापना करने से रोकता है।

अर्थों की ओर ध्यान देने की इस आवश्यकता से एक प्रायोगिक कठिनाई उत्पन्न होती है। जैसाकि हम १.२ के अन्तर्गत देख चुके हैं, अर्थों का अधिकाधिक निरूपण करना कठिन होता है : *prince, boy, boil* जैसे शब्दों के प्रत्यक्ष अर्थों का प्रतिपादन भी इतना सरल नहीं होता कि इन शब्दों के समस्त प्रयोगों को अन्तर्विष्ट कर ले (तुलना करें, *a prince of a fellow, oh boy, a boiled shirt*); जबकि *-ling* एवं *-ing* जैसे अंशों के अर्थ और भी अधिक दुर्ग्राह्य होते हैं। तथापि, किसी शब्द अथवा किसी अन्य व्याकरणिक तत्त्व की चलती हुई व्यवहार्य परिभाषाएँ प्रतिपादित करना संभव होता है। बशर्ते कि हम यह स्मरण रखें कि वे केवल कामचलाऊ हैं तथा कोई भी परिभाषा एक भाषा अथवा बोली से अधिक पर लागू नहीं होती हैं, अर्थपूर्ण रूपों के सम्बन्ध में कार्य करने में हमें कोई भी कठिनाई अनुभव नहीं होगी।

किसी भाषा के व्याकरण को हम दो मुख्य भागों में विभाजित करते हैं। **रूपप्रक्रिया** में शब्दों की संरचना का अध्ययन होता है तथा **वाक्यविचार** में पदबंधों एवं वाक्यों में शब्दों के संबंधों का विचार होता है। प्रस्तुत अध्याय में इन विभाजनों में से प्रथम पर विचार किया गया है। वाक्यविचार पाँचवें अध्याय में किया जाएगा।

(वाचन की सुविधा के लिए हम इन दो अध्यायों में अधिकांश अंगरेजी उदाहरणों को रूढ़ वर्णविन्यास में उद्धृत करेंगे, ध्वनिमिक लिप्यंतरण का व्यवहार केवल वहीं किया जाएगा जहाँ सामान्य वर्णविन्यास से विषय में अस्पष्टता उत्पन्न होगी। यह प्रयोग करने का हमारा औचित्य यह है कि पाठक को पहले से ही अंगरेजी का पर्याप्त ज्ञान है। यदि यह भाषा उसके लिए विदेशी हो तो रूढ़ वर्णविन्यास प्रांजल व्याकरणिक निरूपण की आवश्यकताओं के लिए नितान्त रूप से अपर्याप्त होगा।)

**४.२. शब्द एवं रूपिम :—**जैसे ही हम किसी सूचक अथवा किसी वाक्-समुदाय के अंकित उच्चारणों का परीक्षण करते हैं तो हम देखते हैं कि वही अथवा वैसे ही रूप उसी अथवा वैसे ही अर्थों के साथ-साथ बार-बार आवर्तित होते हैं। इस रूप में, किसी अंगरेजी-वक्ता सूचक के उच्चारणों में *yes, person, I think so, out of town* जैसे रूपों के, प्रत्येक बार लगभग उन्हीं अर्थों के साथ, अनेक दृष्टान्त होंगे तथा *play, plays, played, playing* अथवा *ride, rides, rode, ridden, riding* अथवा *man, manly, mannish* अथवा *conceive, perceive, conception, perception, perceptive* जैसे भिन्न किन्तु ध्वनिमिक दृष्टि से संबद्ध, पृथक् किन्तु संबद्ध अर्थों वाले रूपों के भी अनेक उदाहरण होंगे।

इस प्रकार के आवर्तन के आधार पर हम उच्चारणों का विभिन्न मात्राओं वाले प्रभागों में अध्ययन करते हैं जिनमें प्रत्येक का न्यूनाधिक रूप में अपरिवर्तनीय अर्थ होता है। कोई भी प्रभाग जिसे अर्थ के साथ सामान्य वाणी में अकेले उच्चरित किया जा सकता है, **स्वतन्त्र रूप** होता है तथा वह प्रभाग जो अर्थ के साथ स्वयं कभी भी प्रकट नहीं होता, **बद्ध रूप** कहलाता है। पूर्ववर्ती अनुच्छेद में सभी उदाहरण स्वतन्त्र रूपों के हैं और *per-, con-, -ing, -ly, -ish, -ceive, -tion* बद्ध रूपों के।

वह स्वतन्त्र रूप जिसे समग्र रूप में लघुतर स्वतन्त्र रूपों में विभाजित नहीं किया जा सकता उसे **न्यूनतम स्वतन्त्र रूप** अथवा **शब्द** कहते हैं। अधिकांश भाषाओं में, कुछ शब्द लघुतर अंशों में—बद्ध रूप अथवा स्वतन्त्र रूप बद्ध रूपों के संयोग में—विश्लेषित किए जा सकते हैं तथा कभी-कभी पारिभाषिक शब्द **शब्द** को न्यूनकल्प स्वतन्त्र रूपों—संरचना, आघात अथवा पदवंधों के अर्थ के कुछ विशिष्ट अभिलक्षणों में असदृश लघुतर शब्दों के संयोजनों—के लिए प्रयुक्त करना भी सुविधाजनक होता है। एक अथवा एक से अथिक बद्ध रूपों वाले शब्द को **मिश्र** तथा पूर्णतया लघुतर शब्दों से निर्मित शब्द को **समस्त** कहते हैं। (निम्न-लिखित ४.३-८ अनुभागों में मात्र मिश्र शब्दों का तथा समस्त शब्दों का विवेचन ४.९ के अन्तर्गत किया जाएगा।)

कोई भी रूप, चाहे स्वतन्त्र हो अथवा बद्ध, जिसे लघुतर अर्थपूर्ण अंशों में विभाजित नहीं किया जा सकता **रूपिम** कहलाता है। इस प्रकार *man, play, person* शब्दों में प्रत्येक में केवल एक-एक रूपिम हैं ; *manly, played, personal* मिश्र शब्द हैं क्योंकि प्रत्येक में (*-ly, -ed, -al*) बद्ध रूपिम हैं तथा *man-child, playmate, salesperson* समस्त शब्द हैं।

मिश्र अथवा समस्त शब्द के अन्तर्गत जिस रीति से रूपिमों को एकत्र न्यस्त किया जाता है उसे **रूपप्रक्रियात्मक रचना** कहते हैं

४.३. **व्युत्पत्ति एवं विभक्ति :**—कुछ भाषाओं के लिए मिश्र शब्दों की रूप-प्रक्रियात्मक रचनाओं को परिणामी रूप के व्याकरणिक प्रकार्य के अनुसार **व्युत्पत्तिमूलक** एवं **विभक्तिमूलक** दो भेदों में विभाजित करना उपयोगी रहता है। यदि कोई मिश्र शब्द व्याकरणिक दृष्टि से सामान्य (एक-रूपिम) शब्द के तुल्यमान है, अर्थात् यदि वह पदबन्धों की रचना तथा और आगे रूपप्रक्रियात्मक रचनाओं में तुल्य रूप से कार्य करता है तो हम कहते हैं कि मिश्र शब्द किसी मूलाधार शब्द अथवा रूपिम से **व्युत्पन्न** है। यदि कोई मिश्र शब्द समस्त रचनाओं में जिनमें कि वह घटित होता है व्याकरणिक दृष्टि से किसी सामान्य शब्द के तुल्यमान नहीं है, अर्थात् यदि कोई सामान्य शब्द प्रत्येक स्थान पर तथ्यतः उसी

रूप में कार्य नहीं कर सकता, तो हम कहते हैं कि मिश्र शब्द **विभक्तियुक्त** है।

मिश्र शब्द *manly, perceptive* व्याकरणिक दृष्टि से *good, bad, wide* जैसे सामान्य शब्दों के तुल्यमान इस अर्थ में हैं कि *a manly deed, a perceptive child* जैसे पदबंधों की वाक्यात्मक रचना *a good deed, a bad habit, a wide river* (देखें अध्याय ५) जैसी ही है तथा (*manly* पर आधारित) *manlier* की रूप-प्रक्रियात्मक रचना (*wide* पर आधारित) *wider* जैसे शब्द-सी ही है। इसी प्रकार मिश्र शब्द *manhood, perception* व्याकरणिक दृष्टि से *house, book* जैसे सामान्य शब्दों के तुल्यमान हैं (*his perception was acute* की *his house was old* से तुलना करें)। इसके दूसरी ओर, *He was playing the piano* जैसे वाक्य में *playing* मिश्र शब्द व्याकरणिक दृष्टि से किसी भी सामान्य शब्द के तुल्यमान नहीं है: एक ही वाक्यात्मक रचना में कोई भी सामान्य शब्द उसी स्थान पर घटित नहीं हो सकता। मिश्र शब्द *cats* (*cat*+-*s*) *fond of cats* जैसे पदबन्ध में *wine* अथवा *fun* जैसे किसी सामान्य शब्द द्वारा प्रतिस्थाप्य है (*fond of wine* आदि) किन्तु कई रचनाओं में इसे इस प्रकार प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता। उदाहरणार्थ *these cats* (*this wine*), *there are cats here* (*this is wine here*)।

व्युत्पत्ति एवं विभक्ति के अंतर को स्पष्ट करने में लैटिन के कुछ अतिरिक्त उदाहरणों से सहायता प्राप्त होगी। *vēnā*—'hunt'(*vēnārī* 'to hunt' में भी दृष्ट) तथा—*tōr*—(ह्रस्वीकृत स्वरसहित जबकि यह शब्द-अन्त्य स्थिति में घटित होता हो) बद्ध रूपिमों से संघटित *vēnātor* 'hunter' शब्द व्याकरणिक दृष्टि से *vir* 'man' अथवा *passer* 'sparrow' जैसे एक-रूपिम शब्दों के तुल्यमान है क्योंकि *vēnātor ursum occīdit* 'the hunter killed the bear' और *vir ursum occīdit* 'the man killed the bear' दो वाक्यों में रचना के अन्तर्गत *vēnātor* तथा *vir* एक ही प्रकार का कार्य करते हैं तथा रूपप्रक्रियात्मक रचना *vēnātōr-is* 'the hunter's, of the hunter' तथ्यतः *passer-is* 'the sparrow's, of the sparrow' के ही समानान्तर है। इसलिए हम कह सकते हैं कि *vēnātor* शब्द मूलाधार रूपिम *vēnā-* से **व्युत्पन्न** है। दूसरी ओर, *passeris* शब्द, जो *passer* 'sparrow' स्वतन्त्र रूपिम तथा *-is* 'सम्बन्धकारक एकवचन' बद्ध रूपिम से बना है, **विभक्ति-युक्त** है क्योंकि लैटिन में कोई भी ऐसा एक-रूपिम शब्द नहीं है जो *caput passeris* 'the sparrow's head' जैसे पदबन्ध में *passeris* जैसा ही व्याकरणिक व्यापार कर सके।

यह बात अवश्य ही स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए तथा इस अध्याय में आद्योपान्त मस्तिष्क में धारण कर लेनी चाहिए कि यहाँ पारिभाषिक शब्द **व्युत्पत्ति**

का प्रयोग वर्णनात्मक अर्थ में हुआ है, ऐतिहासिक अर्थ में नहीं। जब हम, उदाहरणार्थ, यह कहते हैं कि *song* की व्युत्पत्ति *sing* से हुई है (४.७) तो हमारा अभिप्राय यह कहना होता है कि वर्तमान अंगरेजी व्याकरण में एक शब्द का दूसरे शब्द से सम्बन्ध वर्णित करने का सर्वाधिक सुगम उपाय इस प्रकार का विवरण है। हमारा अभिप्राय यह कहना नहीं है कि अंगरेजी के कालानुक्रमिक विकास में इनमें से एक शब्द दूसरे की अपेक्षा बाद में अस्तित्व में आया तथा प्राचीन शब्द के आपरिवर्तन के रूप में मूलतः भाषा के अन्तर्गत सन्निविष्ट हुआ। यह सत्य अथवा असत्य हो सकता है किन्तु हमारे उद्देश्य के लिए—जो केवल वर्तमान रूप में व्यवहृत भाषा की संरचना को यथासंभव कौशल से वर्णित करना है—समस्त ऐतिहासिक विचार अप्रासंगिक है।

४.४. **रूपावलियाँ :**—किसी भी भाषा में, जिसमें रूपप्रक्रियात्मक रचनाएँ पूर्ववर्ती अनुभाग में वर्णित दो भेदों वाली होती हैं, मिश्र शब्दों के संघटक रूपिम प्रायः अपेक्षाकृत स्वच्छ रूप से परिभाषित तीन वर्गों में आते हैं। **वर्ग १ :** रूपिमों का दुर्दमनीय बहुलांश व्युत्पत्तिमूलक एवं विभक्तिमूलक दोनों ही रचनाओं में प्रकट होता है। अंगरेजी में वे अभिभावी रूप से स्वतन्त्र रूपिम तथा लैटिन में अभिभावी रूप से बद्ध रूपिम होते हैं। उदाहरणार्थ *man, play, cat, =ceive*, लैटिन *vēnā-, vir*. **वर्ग २ :** कुछ रूपिम वर्ग १ के रूपिमों की संगति व्युत्पत्तिमूलक रचनाओं (व्युत्पादी शब्दों) का निर्माण करने के लिए करते हैं। वे सदैव बद्ध होते हैं। उदाहरणार्थ *manly* में *-ly*, *goodness* में *-ness*, *renew* एवं *receive* में *re-*, लैटिन *-tōr-*. **वर्ग ३ :** रूपिमों की एक सीमित संख्या—अंगरेजी में एक दर्जन से कुछ कम तथा लैटिन में लगभग २००—वर्ग १ के रूपिमों की संगति विभक्तिमूलक रचनाओं (विभक्तियुक्त शब्दों) का निर्माण करने के लिए करती हैं। ये रूपिम भी सदैव बद्ध होते हैं। उदाहरणार्थ *cats* में *-s*, *helps* में एक पृथक् *-s* (अर्थ के कारण पृथक् : 'बहुवचन' तथा 'अन्यपुरुष एकवचन'), *played* में *-ed*, *playing* में *-ing*, लैटिन *passeris* में *-is*.

मिश्र शब्द की रचना का वर्णन करने के लिए हमें चार बातें अवश्य बतलानी चाहिए : वह वर्ग जिससे प्रत्येक संघटक रूपिम संबद्ध है, वह क्रम जिसमें रूपिमों की व्यवस्था की गई है, संहिता एवं आघात के वे अभिलक्षण जो शब्द को विशेषित करते हैं तथा वे ध्वनिमिक आपरिवर्तन, यदि कोई हों तो, संयोजन की प्रक्रिया में रूपिम जिनके अधीन होते हैं। प्रत्येक मिश्र शब्द में वर्ग १ के रूपिम को **आधार** के रूप में मानना सुविधाजनक रहता है जिसके साथ अन्य रूपिम **प्रत्ययों** के रूप में जोड़े जाते हैं। क्योंकि वर्ग १ के रूपिमों की संख्या अन्य दो वर्गों के रूपिमों की संख्या से सदैव अधिक होती है इसलिए प्रस्तुत प्रतिपादन विभिन्न रचनाओं की

अल्पतम संख्या में फलित होता है।

संबद्ध शब्दों का एक समुच्चय जो एक सामान्य आधार वाला होता है तथा उन सभी प्रत्ययों को अन्तर्विष्ट करता है जो उससे संयुक्त किए जा सकते हैं, **रूपावली** का निर्माण करता है। उन भाषाओं में जिनमें व्युत्पत्ति एवं विभक्ति में भेद-स्थापन करना उपयोगी होता है हम व्युत्पत्तिमूलक रूपावलियों (वर्ग २ के प्रत्ययों सहित) तथा (वर्ग ३ के प्रत्ययों सहित) विभक्तिमूलक रूपावलियों का उल्लेख कर सकते हैं। इस प्रकार अंगरेजी में *man, manly, mannish, manful, manhood, manikin, unman* शब्द—आधार *man* तथा इसके समस्त व्युत्पादी—व्युत्पत्ति की रूपावली का संघटन करते हैं; *cat, cat's, cats* शब्द (इनमें अन्तिम दो रूप की दृष्टि से समरूप किन्तु अर्थ में भिन्न) तथा *play, plays, played, playing* शब्द विभक्ति की रूपावलियों का संघटन करते हैं। हममें से अधिकांश अंगरेजी की अपेक्षा लैटिन रूपावलियों से, *amīcus, amīcī, amīcō, amīcum* आदि तथा *amō, amās, amat amāmus* आदि मानक रूपावलियों को कण्ठाग्र कर लेने के कारण, अधिक सुपरिचित हैं।

आपरिवर्तन के किसी भी प्रकार में एक-दूसरे से पृथक् एक सामान्य आधार वाले (और इसलिए एक सामान्य अर्थतत्त्व वाले) शब्दों के किसी भी समुच्चय को अंतर्विष्ट करने के लिए शब्द रूपावली का अर्थविस्तार करना उपयोगी रहता है। पृथक् आधारों वाले किन्तु सामान्य अर्थतत्त्व से युक्त शब्दों का समुच्चय भी किसी रूपावली का संघटन कर सकता है यदि वह उसी भाषा में अन्य रूपावलियों के समानान्तर हो।

४.५. **शब्दरूपात्मक प्रक्रियाएँ** :—वे युक्तियाँ जिनके द्वारा किसी रूपावली के संघटक शब्द एक-दूसरे से पृथक् किए जाते हैं **शब्दरूपात्मक प्रक्रियाएँ** कहलाती हैं। इनके पाँच प्रकार स्थापित किए जा सकते हैं जिनमें से प्रथम का विवेचन पहले ही पूर्ववर्ती अनुभाग में किया जा चुका है।

(१) **प्रत्यययोजन** :—प्रत्ययों की परिभाषा हमने वर्ग २ तथा वर्ग ३ के रूपिमों के रूप में की है जो व्युत्पादी एवं विभक्तियुक्त शब्दों में वर्ग १ के रूपिमों की संगति करते हैं। उन भाषाओं में जिनमें मिश्र शब्दों को इन दो प्रकारों में विभाजित करने की आवश्यकता नहीं है अथवा जिन्हें इनमें विभाजित नहीं किया जा सकता, प्रत्ययों को बद्ध रूपिमों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो संबद्ध अर्थों सहित शब्दों के संवृत समुच्चयों का निर्माण करने के लिए (भाषा की प्रकृतियों के अनुसार स्वतन्त्र अथवा बद्ध) अन्य अधिकाधिक रूपिमों के साथ इस प्रकार से संयुक्त होते हैं कि एक समुच्चय से दूसरे समुच्चय में अर्थ के भेद समानान्तर हों।

अपनी-अपनी स्थितियों के अनुसार प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं : **पूर्वप्रत्यय**, जो आधार से पूर्व जुड़ते हैं; **परप्रत्यय**, जो आधार के पश्चात् जुड़ते हैं तथा **मध्य-प्रत्यय**, जो आधार में सन्निविष्ट होते हैं। अंगरेजी में *de-*, *re-*, *un-*, *ex-* जैसे पूर्वप्रत्यय व्युत्पत्ति में व्यवहृत होते हैं किन्तु विभक्ति में नहीं; परप्रत्यय दोनों रचनाओं में आते हैं : *-ly*, *-ness*, *-tion* व्युत्पत्ति में तथा *-s*, *-ed*, *-ing* विभक्ति में। लैटिन में ऐसा ही है किन्तु अन्य भाषाओं की स्वतंत्र प्रकृतियाँ हैं। मध्य अफ्रीका की बान्तू भाषा चिचेवा में आधार /-nthu/ 'individual' में /muunthu/ 'person' और /bhaanthu/ 'persons' विभक्तियाँ हैं तथा /tsiinthu/ (s पर बलाघात-चिह्न)[१०८] 'thing', /kaanthu/ 'something', /tuunthu/ 'serious trouble' व्युत्पाद हैं। लूजों की फिलिप्पीनी भाषा इलोकानो में /ki'ta/ 'a sight', /k-in-i'ta/ 'thing seen' विभक्तिमूलक मध्यप्रत्यय हैं। (प्रतीक से आशय है 'से सम्बद्ध' अथवा 'से तुलना किया हुआ'। प्रस्तुत अध्याय के उदाहरणों के योजक-चिह्न का व्यवहार रूपप्रक्रियात्मक विभागों को लक्षित करने के लिए किया गया है, जब तक कि अन्य अर्थ में स्पष्टतया व्यक्त न किया गया हो)

(२) **आभ्यन्तर परिवर्तन** :—रूप एवं अर्थ में संबद्ध दो अथवा अधिक शब्द स्वयं आधार के ही किसी ध्वनिम अथवा ध्वनिमों में एक-दूसरे से पृथक् हो सकते हैं। उस स्थिति में एक आधार को आंतरिक परिवर्तन के द्वारा उसी रूपावली में अन्य आधार से व्युत्पन्न अथवा रूपांतरित रूप में व्याख्यायित किया जाता है। अंगरेजी में *sing* : *song* शब्द *fly* /fláj/ : *flight* /fláj·t/ के समानांतर व्युत्पति की रूपावली का निर्माण करते हैं; *sing* : *sang* : *sung* *play* : *played* : *played* के समानांतर विभक्ति की रूपावली के सदस्य हैं। ये उदाहरण स्वरात्मक परिवर्तन को चित्रित करते हैं।

संज्ञा शब्द *house* /háws/ तथा क्रियाशब्द *house* /háwz/ व्यंजनात्मक परिवर्तन को प्रकट करते हैं; *belief* : *believe*, *sheath* : *sheathe*, *advice* : *advise* समनुरूप रूपावलियों में आते हैं। शब्द *breath* (देखिए)[१०९]ए : *breathe* (देखिए)[११०] आधार के आक्षरिक एवं अंत्य व्यंजन दोनों को प्रभावित करने वाले आभ्यंतर परिवर्तन को प्रकट करते हैं।

स्वरात्मक तथा व्यंजनात्मक परिवर्तन से संलग्न अथवा असंलग्न होता हुआ आभ्यंतर परिवर्तन आधार अथवा सम्पूर्ण शब्द के आघात को भी प्रभावित कर सकता है। (संज्ञाशब्द) *transfer*[१११] : (क्रियाशब्द) *transfer*[११२] एवं *import*[११३] : *import*[११४] केवल आघातीय परिवर्तन को ही प्रकट करते हैं तथा *conflict*[११५] /konflikt[११६]/ *confli'ct* /kənfli'kt/, *fréquent* (विशेषण) /fri'jkwənt/ :

*frequént* (क्रिया) /fri(j)kwént/ स्वरात्मक परिवर्तन से युक्त आघातीय परिवर्तन को प्रकट करते हैं।

आभ्यंतर परिवर्तन आधारों के अतिरिक्त प्रत्ययों को भी विशेषित कर सकते हैं। बहुवचन का निर्माण करने के लिए अंगरेजी संज्ञाओं में योजित किया गया नियमित परप्रत्यय आधार के अंतिम ध्वनिम के अनुसार तीन विभिन्न आकारों में प्रकट होता है : /-ez/ (अथवा कुछ बोलियों में /-iz, -əz/) यदि आधार /s z,s,z/ (अंतिम s व z पर बलाघात-चिह्न)[११७] में समाप्त हो; /-z/ यदि इसकी समाप्ति /z,z/ (अंतिम z पर बलाघात-चिह्न)[११८] के अतिरिक्त किसी घोष ध्वनि में हो तथा /-s/ यदि /s,s/ (अंतिम s पर बलाघात-चिह्न)[११९] के अतिरिक्त इसकी परिणति किसी अघोष ध्वनि में हो। हम /-ez, -z, -s/ इन तीन रूपों को एक ही रूपिम के **परिवर्त** कहते हैं। क्रियाशब्दों *rises, plays, helps* में अन्य पुरुष एक-वचन वर्तमान काल का निर्माण करने वाले परप्रत्यय में ये ही तीन परिवर्त हैं; *handed, played, helped* जैसे क्रियाशब्दों में पूर्णकाल (भूतकाल) का निर्माण करने वाले परप्रत्यय में /-ed, -d, -t/ परिवर्त हैं जो आधार के अंतिम ध्वनिम द्वारा अपने-आप ही निर्धारित हैं।

आधारस्थित आभ्यंतर परिवर्तन अधिकांशतः प्रत्यययोजन के साथ संलग्न रहता है। क्रियाशब्द *flee, say, tell* आधार के आक्षरिक के परिवर्तन तथा /-d/ के योग से अपने पूर्णकालों का निर्माण करते हैं (*fled, said, told*) ; *creep, keep, weep* तथा अन्य अनेक आक्षरिक का परिवर्तन तथा /-t/ का योग करते हैं (*crept* आदि) ; *leave* और *lose* परप्रत्यय /-t/ से पूर्व आक्षरिक तथा आधार के अंतिम व्यंजन दोनों को परिवर्तित करते हैं (*left, lost*)। अनेक अतिरिक्त उदाहरण ४.८ के अंतर्गत प्राप्य हैं।

आभ्यंतर परिवर्तन के द्वारा एक-दूसरे से संबद्ध ध्वनिमों एवं रूपिमों के मध्य के प्रत्यावर्तन के अध्ययन को **रूपध्वनिमविज्ञान** कहते हैं।

(३) **अभ्यास :**—आभ्यंतर परिवर्तन के सद्भाव अथवा अभाव में, स्वयं आधार के ही पूर्व अथवा पश्चात्, सम्पूर्ण आधार अथवा उसके अंश की पुनरावृत्ति को **अभ्यास** कहते हैं। क्रियाओं के नियमित पूर्णकाल के एक अभिलक्षण के रूप में यह प्रक्रिया ग्रीक भाषा के विद्यार्थियों को सुविदित है, जैसेकि (देखिए)[१२०] 'I leave', पूर्णकालिक (देखिए)[१२१] 'I have left'। यहाँ पर आधार /leip/ /loip/ के रूप में आभ्यंतर परिवर्तन के साथ पूर्णकालिक के रूप में प्रकट होता है तथा आभ्यंतर परिवर्तन के साथ ही आधार का अंश पूर्वप्रत्यय के रूप में जोड़ा गया है। लैटिन में, *can-ō* 'I sing' का पूर्णकाल है *ce-cin-ī* 'I sang' जिसमें आधार *can-*

आभ्यंतर परिवर्तन सहित *cin-* के रूप में आता है तथा आंशिक अभ्यास *ca-*, एक भिन्न प्रकार के आभ्यंतर परिवर्तन सहित *ce-* के रूप में प्रकट होता है; लैटिन *caed-ō* 'I kill' : *ce-cīd-ī* 'I killed', *tang-ō* 'I touch' : *te-tig-ī* 'I touched' की भी तुलना करें। (अंतिम उदाहरण में आधार *tang-* से *tig-* में आभ्यंतर परिवर्तन के अंतर्गत *-n-* मध्यप्रत्यय का अभाव है।)

आधार के उत्तरवर्ती अभ्यास के उदाहरण न्यू मैक्सिको की इंडियन भाषा ताओस में प्राप्य हैं। इसमें कुछ आधार किसी संज्ञा परप्रत्यय को जोड़ने से पूर्व अंतिम स्वर को अभ्यस्त कर देते हैं; उदाहरणार्थ (देखिए)[१२२] 'knot' (इसमें '=गौण सामान्य बलाघात', =प्रधान सामान्य बलाघात, c=अंगरेजी *ch* हैं) में आधार है /ci'/ 'he tied', दो स्वरों को पृथक् करने वाले श्वासद्वारीय स्पर्श सहित /i/ का अभ्यास तथा /-ne/ परप्रत्यय।

अंगरेजी में अभ्यास का विभक्ति के अंतर्गत कोई महत्त्व नहीं होता तथा व्युत्पत्ति में केवल परिमित महत्त्व होता है; *papa, choochoo* जैसे शिशुशब्दों तथा *wigwag, crisscross, razzle-dazzle* जैसी रचनाओं की तुलना करें जिनमें अभ्यास आभ्यंतर परिवर्तन के साथ संयुक्त है।

(४) **सर्वादेश** :—सर्वादेश को आभ्यंतर परिवर्तन के उस चरम प्रकार के रूप में लिया जा सकता है जिसमें सम्पूर्ण आधार—उसका एक अंश मात्र ही नहीं—किसी अन्य रूप के द्वारा प्रतिस्थापित हो जाता है। अंगरेजी रूपावली *go : goes : went : gone : going* पर्याप्त अंश में अनियमित है—इसकी अनेक अनियमितताओं में से एक इस प्रकार है कि पूर्णकाल के रूप में आधार *go* एक सर्वथा पृथक् आधार *went* के द्वारा प्रतिस्थापित होता है। (पूर्णकाल के आधार के रूप में *wen-* को स्वीकार करना एक विकल्प है तथा संभवतः अधिक उपयोगी सूत्र है जिसके साथ /-d/ के स्थान पर /-t/ परप्रत्यय का योग किया जाता है जो नियमित रूप से अंत्य घोष व्यंजन सहित आधार का अनुगमन करता है।) और भी अधिक अनियमित रूपावली है *be : am : is : are : was : were : been : being* जिसमें *be, am* तथा *are* ये तीन रूप अकेले रूप *play* के अनुरूप हैं तथा *was* और *were* ये दो रूप नियमित रूपावली *play : plays : played : playing* में अकेले रूप *played* के अनुरूप हैं। पुनः अंगरेजी एकाक्षरिक विशेषण नियमित रूप से आधार में परप्रत्यय /-ər/ का योग करके तुलनावाची का निर्माण करते हैं, उदाहरणार्थ *tall : taller;* किन्तु विशेषण *good* में इस अंत प्रत्यय से पूर्व *bet-* सर्वादेशी आधार होता है तथा *bad* शब्द किसी परप्रत्यय के बिना केवल सर्वादेश के ही द्वारा अपने तुलनावाची (*worse*) का निर्माण करता है। सर्वादेश के लैटिन उदाहरण हैं *fer-ō* 'I carry' : *tul-ī* 'I carried' (*am-ō* 'I love' :

*amā-vī* 'I loved' के समानांतर), *bon-us* 'good' : *mel-ior* 'better' : *opt-imus* '*best*' (*alt-us* 'tall' : *alt ior* : *alt-issimus* के समानांतर)।

पृथक् आधारों वाले शब्दों का प्रत्येक समुच्चय नहीं बल्कि सामान्य अर्थतत्त्व सर्वादेशी रूपावली कहलाता है। क्रियाशब्द *laugh* और *smile* सुस्पष्ट रूप से अर्थ की दृष्टि में संबद्ध हैं किन्तु यह संबंध (जिसे हम किसी विशिष्ट कार्यव्यापार की मात्रा अथवा तीव्रता से संबद्ध कह सकते हैं) अंगरेजी में किसी व्याकरणिक संवर्ग द्वारा अभिव्यक्त नहीं है। उसमें तो, उदाहरण के लिए, कोई भी परप्रत्यय ऐसा नही है जिसे किसी आधार के साथ इस विधि मात्र में उसके अर्थ को किंचित् परिवर्तित करने के लिए जोड़ा जा सके। एक रूपावली के रूप में *laugh* : *smile* को स्वीकार करने से कोई महत्त्वपूर्ण उद्देश्य सिद्ध नहीं होगा। सर्वादेशी रूपावली की बात तभी की जा सकती है जबकि भाषा के अंतर्गत उसके समानांतर असर्वादेशी अथवा 'नियमित' रूपावलियां हों जिनमें अर्थ की दृष्टि से उनके घटक सदस्यों के मध्य तुल्य संबंध हों।

ऐसा होने पर भी, दो अथवा अधिक संबद्ध शब्दों की रूपावली के रूप में स्थापना सदैव ही उपयोगी नहीं होती। विशेषण *lofty* तथा क्रिया *elevate* के मध्य अर्थ की दृष्टि से लगभग वैसा ही संबंध है जैसाकि *deep, dark, fat* विशेषणों तथा अनुरूप व्युत्पन्न क्रियाओं *deepen, darken, fatten* में है; किन्तु *elevate* को *lofty* से सर्वादेश द्वारा व्युत्पन्न रूप में व्याख्यायित करने से कोई भी लाभ नहीं होगा। जब विभिन्न आधारों किन्तु संबद्ध अर्थों वाले शब्द भाषा की व्याकरणिक व्यवस्था में अंतराल की पूर्त्ति करते हैं केवल तभी हम उन्हें सर्वादेशी रूपावली में संयुक्त करते हैं। इस प्रकार, आधुनिक बोलचाल की अंगरेजी में *go* तथा *be* के अतिरिक्त (*am, is, are* के सहित) प्रत्येक क्रिया का पूर्णकाल रूप होता है जोकि ध्वनिमिक रूप से वर्तमान काल के आधार के सदृश होता है तथा *went* तथा *was/were* के अतिरिक्त प्रत्येक पूर्णकाल रूप ध्वनिमिक दृष्टि से सदृश वर्तमान काल के आधार के अनुरूप होता है। यह सुस्पष्ट है कि अंगरेजी क्रिया विभक्ति की व्यवस्था सर्वाधिक सुगम रूप में *went* को *go* तथा *was/were* को *be* के साथ युग्मित करने से वर्णित होती है। इसी प्रकार, अंगरेजी में *good, well, bad, ill* तथा कुछ अन्यों के अतिरिक्त प्रत्येक एकाक्षरिक वर्णनात्मक विशेषण का (*dead, round, square* जैसे विशेषणों के अविकारीत्व के संबंध में पोंगापंडितों द्वारा उपज्ञात निरर्थक 'कसौटियों' के होते हुए भी) ध्वनिमिक दृष्टि से सदृश तुलनात्मक रूप होता है तथा *better, worse* एवं कुछ अन्यों के अतिरिक्त लगभग प्रत्येक तुलनात्मक रूप ध्वनिमिक दृष्टि से सदृश सामान्य आधार के अनुरूप होता है। पुनः, विभक्ति की व्यवस्था सर्वाधिक सफल रूप में *good* (तथा *well*) को *better, bad*

(तथा *ill*) को *worse* तथा इसी प्रकार से एकत्र समूहित करने से वर्णित होती है।

सर्वादेशी आधारों के समान सर्वादेशी प्रत्यय भी होते हैं। परप्रत्यय /-ez,-z, -s/ अंगरेजी में अधिकांश संज्ञाओं के बहुवचन का निर्माण करते हैं किन्तु *ox* का बहुवचन परप्रत्यय /-ən/ से बनता है तथा *child* का बहुवचन (आधार के आभ्यंतर परिवर्तन से संयुक्त) परप्रत्यय /-rən/ से। परप्रत्यय /-ən, -rən/ नियमित परप्रत्यय /-ez,-z,-s/ के लिए सर्वादेशी है।

(५) **शून्य आपरिवर्तन :**—किसी भाषा की रूपप्रक्रिया के वर्णन में शून्य आपरिवर्तन (शून्य प्रत्यय, शून्य परिवर्तन आदि) का उल्लेख प्राय: उपयोगी होता है। यदि किसी विशिष्ट संवर्ग (उदाहरणार्थ एकवचन : बहुवचन अथवा वर्तमान काल : पूर्णकाल अथवा संज्ञा : व्युत्पन्न क्रिया) की अधिकांश रूपावलियों में किसी विशिष्ट परप्रत्यय अथवा परप्रत्ययों के समुच्चय द्वारा विभेदीकृत घटक शब्दों की समान रूप से स्थिति है किन्तु उसी संवर्ग में कुछ रूपावलियों के अंतर्गत इस अभिलक्षण का अभाव है तथा वे अन्यथा रूप से अपने घटक शब्दों को विभेदीकृत नहीं करतीं तो, यह कहने के लिए कि विसामान्य रूपावलियों में शून्य परप्रत्यय—अर्थात् किसी भी वस्तु से विहीन परप्रत्यय—है, समग्र संरचना के हमारे विवरण को यह स्थिति सरलीकृत कर सकती है। उदाहरण के लिए, अंगरेजी संज्ञाओं की बहुत अधिक संख्या आधार में परप्रत्यय के योग से अपने बहुवचन का निर्माण करती है (प्राय: / -ez, -z, -s / किन्तु कभी-कभी अन्य परप्रत्यय द्वारा भी, देखिए ऊपर)। कुछ संज्ञाएँ केवल आभ्यन्तर परिवर्तन द्वारा बहुवचन निर्मित करती हैं (*man, woman, goose, mouse* आदि) तथा कुछ संज्ञाओं का बहुवचन एकवचन से रूप की दृष्टि से अभिन्न होता है (*sheep, deer* आदि)। क्योंकि अन्तिम समूह की संज्ञाएँ वाक्यात्मक रूप से ठीक नियमित एकवचनों तथा बहुवचनों के सदृश प्रयुक्त होती हैं (तुलना करें—*The dog is running* : *The dogs are running* के ठीक सदृश *The sheep is running* : *The sheep are running*) तो हमें यह ज्ञात हो सकता है कि भाषा का वाक्यविन्यास सर्वाधिक सुगम रूप में वर्णित किया जा सकता है यदि हम रूपप्रक्रिया के अपने विवेचन में यह कहें कि *sleep, deer* आदि अपने बहुवचनों का निर्माण सर्वादेशी संबंध में शून्य परप्रत्यय का नियमित परप्रत्यय /-ez, -z, -s/ से योग करके करते हैं। तुलना करें ५.७(१)।

विद्यार्थी के लिए यह एक उपयोगी अभ्यास होगा कि वह अंगरेजी की अपनी बोली की क्रियाओं का उन रूपप्रक्रियात्मक पद्धतियों के अनुसार वर्गीकरण करे जो उनकी रूपावलियों को विशेषित करती हैं। निम्नांकित सूची में ८५ आधार दिए

गए हैं। प्रत्येक आधार के लिए विद्यार्थी को विभक्तिसूचक रूपों के सम्पूर्ण समुच्चय का निर्माण, ध्वनिमिक अंकन (अध्याय ३) में समस्त रूपों का लिप्यंतरण तथा प्रक्रियाओं—प्रत्यययोजन, आभ्यंतर परिवर्तन, सर्वादेश, शून्य आपरिवर्तन अथवा इन सबके संबंध—का निर्धारण कर लेना चाहिए जिनसे रूपावली के घटक सदस्य विभेदीकृत किए जाते हैं। ध्वनिमिक दृष्टि से भिन्न रूपों की सर्वाधिक संख्या वाली रूपावलियों की मानक रूप में स्थापना (उदाहरणार्थ *sing* : *sings* : *sang* : *sung* : *singing*) तथा इनके निकट लघुतर रूपावलियों के रूपों का मापन सुविधाजनक रहेगा (उदाहरणार्थ *play* : *plays* : *played* : *playing* समुच्चय में रूप *played sang* तथा *sung* दोनों के सदृश है)। कुछ रूपावलियाँ एक अथवा अधिक सदस्यों में त्रुटिपूर्ण होंगी (जैसे *shall* : *should* समुच्चय में *singing* अथवा *playing* के सदृश कोई रूप नहीं है। ध्यानपूर्वक सभी अनियमितताओं तथा उन सभी स्थितियों को देखिए जहाँ तुल्यमान रूपों के मध्य विकल्प सम्भव है (जैसेकि *throve* अथवा *thrived*, *thriven* अथवा *thrived* ; *spelt* या *spelled*)। जब सभी रूपावलियाँ विश्लेषित हो चुकें तो विद्यार्थी को अपनी रूपावलियों को उनमें निहित ध्वनिमिक दृष्टि से भिन्न रूपों की संख्या तथा उनके सदस्यों की रूपप्रक्रियात्मक रचना के अनुसार समूहित कर लेना चाहिए।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| bear | catch | drive | hate | mean | see | speak |
| beat | choose | eat | have | meet | seek | spill |
| bend | climb | fall | hear | must | sell | stand |
| bid | come | feel | heave | need | shed | stride |
| bite | cut | find | help | ought | shoe | strike |
| blow | deal | fight | hit | pass | shoot | swell |
| break | dig | flee | hold | praise | show | take |
| bring | dive | fly | leave | preach | shrink | teach |
| build | do | get | lose | ride | sit | think |
| burn | draw | give | love | ring | slay | urge |
| buy | dream | go | make | run | sleep | will |
| can | drink | hang | may | say | slide | work |
| cast | | | | | | |

४.६. **शब्द-भेद** :—किसी भाषा के शब्द अपनी रूपप्रक्रियात्मक रचना अथवा अपने वाक्यात्मक प्रकार्य के अनुसार प्रायः दो अथवा अधिक वर्गों के अन्तर्गत आते हैं। ये वर्ग 'शब्द-भेदों' के अनुरूप हैं जिनसे हमारी परम्परागत स्कूल व्याकरणों ने हमें अभिज्ञ कर दिया है। विद्यालय में सामान्यतः अध्ययन की हुई भाषाओं में वर्गीकरण मुख्यतः विभक्ति पर आधारित होता है किन्तु अनेक भाषाओं में

उपयोगी वर्गीकरण को संभाव्य करने के लिए कोई भी, अथवा पर्याप्त, विभक्ति नहीं होती। इस प्रकार की भाषाओं में शब्दों को पदबन्धों एवं वाक्यों की रचना में केवल उनके प्रकार्य के आधार पर ही वर्गीकृत किया जा सकता है; देखिए अध्याय पाँचवाँ।

जहाँ विभक्ति होती है वहाँ प्रामाणिक वर्गीकरण की दिशा में पहला कदम है उन शब्दों को छाँटना जो विभक्तिपरक रूपावलियों में कभी प्रकट नहीं होते (अंगरेजी में, *but*, *what*, *from*, *five*, *gosh* जैसे शब्द); इन्हें वाक्यात्मक प्रकार्य के द्वारा वर्गीकृत करना पड़ेगा। यदि भाषा में विभक्ति का केवल एक ही संवर्ग है—अर्थात्, यदि समस्त रूपावलियाँ अर्थ की दृष्टि से अपने घटक सदस्यों के मध्य एक ही सम्बन्ध को अभिव्यक्त करती हैं (तुलना करें ४.११)—तो भाषा में, हमारे विश्लेषण में इस स्थल तक, दो शब्द-भेद होते हैं—विभक्तिमूलक तथा विभक्ति रहित शब्द। यदि विभक्ति के दो संवर्ग हों—अर्थात् यदि रूपावलियाँ अपने घटक सदस्यों के मध्य अर्थ की दृष्टि से सम्बन्ध के दो विभिन्न प्रकारों को अभिव्यक्त करें—तो हम एक अतिरिक्त शब्द-भेद की स्थापना करते हैं; तथा इसी प्रकार आगे भी।

इन वर्गों को हमारे दिए हुए नामों का महत्त्व नहीं है। प्रायः हम रूढ़ शब्दों को यथावत् बनाए रखते हैं तथा **संज्ञा, क्रिया, विशेषण** जैसे अभिधानों को विदेशी भाषा में उन वर्गों के लिए प्रयुक्त करते हैं जो प्रकार्य में अधिकांश रूप में अंगरेजी अथवा किसी अन्य सुपरिचित भाषा की संज्ञाओं, क्रियाओं तथा विशेषणों के सदृश होते हैं। प्रत्येक नई भाषा के लिए नई पारिभाषिक शब्दावली को आविष्कृत करना श्रेयस्कर है किन्तु हमें सदैव यह ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि कोई एक वर्ग जिसे हमने संज्ञाओं से अभिहित किया है विदेशी भाषा में अंगरेजी अथवा लैटिन संज्ञाओं से लगभग प्रत्येक अंश में मूलतः भिन्न हो सकता है तथा संपूर्णतः विभिन्न प्रकार के व्याकरणिक अर्थ के लिए (यदि किंचित् रूप में हो तो) विभक्तियुक्त किया जा सकता है (४.११)। किसी एक भाषा पर अन्य भाषा की व्याकरणिक प्रकृतियों तथा संवर्गों का, केवल इस कारण से कि हम दोनों भाषाओं के कुछ शब्दों को एक ही अभिधान से व्यवहृत करने का निश्चय कर चुके हैं, आरोपण करने के तर्कदोष से हमारे विश्लेषण के संदूषित होने की किसी अन्य साधारण अशुद्धि की अपेक्षा अधिक सम्भावना है। इस आशंका को समझने के लिए हमें केवल यह स्मरण करने की आवश्यकता है कि किस प्रकार अंगरेजी व्याकरण का—केवल स्कूल की पुस्तकों में ही नहीं बल्कि कुछ वैज्ञानिक भाषाशास्त्र-सम्बन्धी पुस्तकों में भी—लैटिन पारिभाषिक शब्दावली के ढाँचे में बलात् प्रविष्टीकरण द्वारा मिथ्या वर्णन किया गया है। हममें से अनेक व्यक्तियों ने ऐसी पुस्तकें देखी हैं जिनमें,

उदाहरणार्थ, अंगरेजी संज्ञाओं के लिए कहा गया है कि उनमें वे ही (अथवा उनमें से कुछ) कारक होते हैं जो लैटिन संज्ञाओं को वर्णित करने के लिए आवश्यक हैं। इस प्रकार के वर्णनों में *John* जैसी संज्ञा कभी-कभी कर्त्ता (*John ran away*), कभी-कभी कर्म (*I saw John*), कभी-कभी संप्रदान (*I gave John an apple*) तथा कभी-कभी संबोधन (*John, come here*) होती है। इस प्रकार के व्याकरणों के द्वारा की गई क्षति संभवतः अधिक बड़ी नहीं है क्योंकि जो उनका अध्ययन करते हैं वे पहले से ही अंगरेजी बोलने में समर्थ होते हैं किन्तु जब वही पूर्वग्रह उस भाषा के वर्णन को भ्रष्ट करता है जिसे हम नहीं जानते तो इससे केवल प्रतिपादन ही जटिल नहीं होता बल्कि लगभग सदैव उन महत्त्वपूर्ण व्याकरणिक लक्षणों को भी उपेक्षित करने में यह प्रेरित करता है जिनका अधिक सुपरिचित भाषाओं में कोई प्रतिरूप नहीं होता।

रूपप्रक्रियात्मक वर्गीकरण को लैटिन में कुछ शब्द-भेदों द्वारा चित्रित किया जा सकता है। वचन एवं कारक के लिए विभक्तियुक्त शब्द संज्ञाएँ कहलाते हैं। इनमें से, जिन शब्दों में अन्य कोई विभक्तियाँ नहीं होतीं वे **विशेष्य** कहे जाते हैं जबकि वे शब्द जो लिंग तथा तर-तम भाव के लिए भी विभक्तियुक्त होते हैं **विशेषण** कहलाते हैं। विशेष्यों के विशेष उपवर्ग **सर्वनाम** होते हैं जिन्हें पुरुष के लिए वर्गीकृत किया जाता है तथा जो कुछ अन्य परिच्छेदक विशेषताएँ प्रदर्शित करते हैं। पुरुष, वचन, काल, वृत्ति तथा वाच्य के लिए विभक्तियुक्त शब्द क्रियाएँ कहलाते हैं। शब्दों के कुछ प्रकार दो वर्गों के मध्य पड़ते हैं; इस प्रकार **कृदन्त विशेषण** अनिवार्य रूप से विशेषण होते हैं किन्तु क्रिया की कुछ विशेषताएँ भी समान रूप से उनमें होती हैं।

विभक्तिहीन शब्दों का वाक्यात्मक वर्गीकरण (उदाहरण के लिए, लैटिन में क्रियाविशेषणों, पूर्वसर्गों, समुच्चयबोधकों तथा विस्मयादिबोधकों के अन्तर्गत) पूर्णरूपेण एक अन्य प्रकार की ही प्रक्रिया है (देखिए अध्याय ५)। दोनों पद्धतियों को ध्यानपूर्वक अवश्य ही पृथक् रखना चाहिए यद्यपि हमारी स्कूल व्याकरणों में स्वभावतः उन्हें उलझा दिया जाता है।

**४.७. व्युत्पादों का विवेचन :**—किसी भाषा की उस व्याकरण में जिसमें मिश्र शब्दों को सुविधाजनक दृष्टि से व्युत्पादों एवं विभक्तियुक्त शब्दों में बाँट दिया जाता है तथा जिसमें समस्त शब्द औपचारिक रूप से पदबन्धों से भिन्न होते हैं (तुलना करें ४.२,३), व्युत्पत्ति एवं समासन को प्रायः एकत्र **शब्द-रचना** के दो पक्षों के रूप में विवेचित किया जाता है। रूपप्रक्रिया का यह एक महत्त्वपूर्ण अंग है यद्यपि अनेक व्याकरणिक पुस्तकों में विभक्तिपरक रूपावलियों के सम्बन्ध में वैयाकरणों के पूर्वग्रह के द्वारा उसे धूमिल कर दिया गया है। व्युत्पत्ति एवं

समासन दोनों विभक्ति के समान ही सुव्यवस्थित रूप से विवेचित किए जाने चाहिए और किए जा सकते हैं। प्रस्तुत तथा आगामी तीन अनुच्छेदों में हमारे लिए वर्णनात्मक अभिगम के रूप में कुछ प्रसंगों से अधिक का निदर्शन संभव नहीं है।

व्युत्पत्तिमूलक रूपावली के सदस्यों की व्याख्या करते समय हम प्रायः प्रतिपादित करते हैं कि उनमें से एक **मूलाधार शब्द** होता है जिससे अन्यों की व्युत्पत्ति होती है। इस प्रकार आंशिक रूपावली *man* : *manly* : *manhood* में (आंशिक इसलिए क्योंकि यहाँ समस्त सदस्यों की सूची प्रस्तुत नहीं की गई है; तुलना करें ४.४), अन्तिम दो शब्द *-ly* तथा *-hood* परप्रत्ययों के साधन से मूलाधार शब्द *man* से व्युत्पन्न हुए हैं। तथापि, कभी-कभी, स्थिति इतनी स्पष्ट नहीं होती। रूपावली *sing* : *song* में मूलाधार शब्द कौन-सा है तथा व्युत्पादी कौन-सा है? यदि इस प्रकार की रूपावली के सदस्यों में से एक अपनी विभक्ति में अनियमित हो तो हमें ज्ञात होता है कि अनियमित सदस्य को मूलाधार शब्द के रूप में ग्रहण करने से सम्पूर्ण सूत्रीकरण में महत्तर सरलता उत्पन्न हो जाती है। (लाभ इस तथ्य में सन्निहित है कि तब हम व्युत्पत्ति की प्रक्रिया का वर्णन अनियमितताओं को विवेचित करने के लिए विशेष नियमों से अपने विवरण को व्यवहित किए बिना कर सकते हैं।) क्योंकि संज्ञा *song* नियमित रूप से (*song* : *song's* : *songs*, अंगरेजी संज्ञाओं के अत्यधिकांश के समान) विभक्तियुक्त है जबकि क्रिया *sing* अनियमित रूप से (*sing* : *sings* : *sang* : *sung* : *singing*, अधिक सामान्य अभिरचना *play* : *plays* : *played* : *played* : *playing* से हटकर) विभक्तियुक्त है, अतः वर्णनात्मक स्पष्टीकरण में हमारे लिए यह प्रतिपादित करना अधिक सुगम होता है कि यहाँ क्रिया से संज्ञा व्युत्पन्न हुई है। आंशिक रूपावली *man* (संज्ञा) : *man* (क्रिया) में, जिसमें कि दो सदस्य शून्य आपरिवर्तन द्वारा विभेदित किए गए हैं, संज्ञा अपनी विभक्ति में अनियमित है (*man* : *man's* : *men* : *men's*) जबकि क्रिया नियमित है (*man* : *mans* : *manned* : *manned* : *manning*) जिससे कि यहाँ हम संज्ञा से क्रिया को व्युत्पन्न कर लेते हैं। कुछ रूपावलियों में, अन्तिम रूप से, विकल्प के लिए हमारे पास किञ्चित् भी रूपप्रक्रियात्मक मापदण्ड नहीं होते। इस प्रकार, संज्ञा *hand* तथा क्रिया *hand* दोनों नियमित रूप से विभक्तियुक्त हैं और उनमें से किसी को भी दूसरे का व्युत्पादी वर्णित किया जा सकता है। इस प्रकार की रूपावलियों में मूलाधार शब्द के विकल्प का निर्धारण पूर्णतः सुविधा के आधार पर किया जाता है। जो भी सूत्र अंततोगत्वा सरलतम सिद्ध होता है उसी का अधिमान किया जाता है।

(इस प्रसग में हमें पाठक को यह ध्यान दिलाना है कि पारिभाषिक शब्द

व्युत्पत्ति का हमारा प्रयोग वर्णनात्मक है, ऐतिहासिक नहीं। तुलना करें ४.३ तथा अन्तिम अंश। इतिहासज्ञ जानते हैं कि *hand* शब्द क्रिया के रूप में प्रथमतः व्यवहृत होने से पूर्व अनेक शताब्दियों तक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता रहा किन्तु आजकल बोली जाने वाली भाषा का वर्णन करने के हमारे कार्य में यह जानकारी अप्रासंगिक है।)

किसी भाषा के व्युत्पादों का व्यवस्थापन दो रीतियों से किया जा सकता है: आवेष्टित रूपप्रक्रियात्मक प्रक्रमों के अनुसार तथा उन शब्द-भेदों के अनुसार जिनसे रूपावली के सदस्य संबद्ध हैं। हम इन दो उपागमों को अंगरेजी से कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट कर सकते हैं।

(१) अंगरेजी व्युत्पादों की रचना में **प्रत्यययोजन** कहीं अधिक सामान्य प्रक्रिया है। इसके अतिरिक्त अनेक प्रत्यय उत्पादक होते हैं, इस अर्थ में कि अंगरेजी का वक्ता उन नवीन व्युत्पादों की रचना कर सकता है जिन्हें उसने उपयुक्त आधारों में इन प्रत्ययों का योग करके कभी नहीं सुना है। निम्नलिखित सूची केवल एक प्रतिदर्श है, अनेक अन्य प्रत्यय पाठक को प्राप्त होंगे। यह ध्यान रहे कि कुछ प्रत्यय नियमित रूप से प्रबल बलाघात को, कुछ अन्य नियमित रूप से क्षीण बलाघात को तथा इतने पर भी कुछ अन्य आधार के किसी विशिष्ट अक्षर पर निश्चित करने के लिए प्रबल बलाघात की अपेक्षा करते हैं। आधार

**पूर्वप्रत्यय :** *afóot, ánte-rôom, ânti-clímàx, befriend, , bí-plâne, contend, debáse, dè-fróst, dìs-believe, êx-king (अथवा éx-kîng), extend, forgive, ìnhúman, inténd, mìs-cónduct, mís-dêed, nónsènse (अथवा nónsense), nôn-téchnical, pretend, prê-wár (अथवा pré-wâr), ùn-kind, ùn-cóver.*

**परप्रत्यय :** *láudable, betráyal, históriann, drúnkard, èleméntary, kíngdom, pròfitéer, wóoden, dríver, cóuntess, ártful, béautifỳ, bóy-hood, chíldish, humánity, réstless, prínce-ling (अथवा prínceling), mán-ly, státement, slý-ness, pómpous, hárd-ship, tíresome, gángster, stóny.*

एवं प्रत्यय के मध्य संहिता के प्रकार में भी अन्तर होते हैं जिन्हें अंगरेजी व्याकरण के वैज्ञानिक वर्णन में अन्तर्विष्ट कर लेना चाहिए। (इन उदाहरणों में योजक-चिह्न विप्रकृष्ट संहिता को संकेतित करते हैं। एक बोली से दूसरी बोली में बलाघात अभिरचना तथा संहिता में विचारणीय विकल्पन का ध्यान रखें।)

*Contend, extend, intend, pretend* शब्दों से प्रतीत होता है कि सभी मिश्र शब्द स्वतन्त्र मूलाधार शब्द से व्युत्पन्न नहीं होते। बद्ध रूपिम *-tend* की उन व्युत्पादों से पृथक् कोई सत्ता नहीं होती जिनमें यह घटित होता है। स्वतन्त्र शब्द *tend* एक भिन्न रूपिम है जैसाकि हम दोनों के अर्थों की तुलना द्वारा जानते हैं। (यह ४.१ के अन्तर्गत निर्दिष्ट समस्या का एक उदाहरण है: अनुप्रयुक्त स्थलों को विश्लेषित करने की कोई प्रविधि हमारे पास नहीं है, किन्तु फिर भी हम भाषा के व्याकरण की व्याख्या में ध्वनिमिक दृष्टि से सदृश रूपों को उनके अर्थों के आधार पर संयुक्त अथवा वियुक्त करने के लिए विवश हैं। प्रस्तुत प्रसंग में, क्योंकि क्रिया *tend* की विशुद्ध तथा सम्पूर्ण भाव का अन्तर्वेशन करने वाली परिभाषा करने में हम भाषाविदों के रूप में असमर्थ हैं तथा उपर्युक्त चार पर्याप्त मात्रा में पृथक् शब्दों में बद्ध रूपिम *-tend* की परिभाषा भी अभी तक अपूर्ण है, इस कारण एक प्रथा के रूप में हम अर्थ के सम्बन्ध में कामचलाऊ मोटे अनुमान के आधार पर कार्य करते हैं। जो *tend* तथा *-tend* को समानार्थकों के रूप में स्वीकार करना अधिक संतोषप्रद अनुभव करते हैं वे तथ्यों का भिन्न किन्तु उतना ही प्रयोज्य वर्णन प्रस्तुत करेंगे।) बद्ध रूपिम आधार वाले व्युत्पादों को **कृदन्त** कहा जाता है; *contend, extend, intend, pretend* मे पूर्वप्रत्यय *con-, ex-, in-, pre-* कृत्प्रत्ययों के रूप में कार्य करते हैं।

अंगरेजी में **आभ्यंतर परिवर्तन** भी व्युत्पत्ति की अनेक रूपावलियों को विशेषित करने में सहायता करता है किन्तु इस सम्बन्ध में उदाहरण अधिक नहीं हैं तथा केवल आघातीय परिवर्तन ही उत्पादक हैं। यहाँ हम पुनः केवल कुछ संभावनाओं को उद्धृत करते हैं। स्वरात्मक परिवर्तन :—*feed : food, sing : song shoot : shot, bite : bit, fill : full, heal : hale.* व्यंजनात्मक परिवर्तन :—*calf: calve, sheath : sheathe, advice : advise, rent : rend*; स्वरात्मक परिवर्तन से युक्त :—*grass : graze, breath : breathe*. आघातीय परिवर्तन :—*import*[123]: *import*[124], *transfer*[125]: *transfer*[126]; स्वरात्मक परिवर्तन से युक्त: *conduct*[127] (संज्ञा): *conduct*[128] (क्रिया), *fréquent* (विशेषण): *frequént* (क्रिया)।

ऊपर दिए गए उदाहरणों में से अनेक में आघातीय परिवर्तन प्रत्यययोजन से

संयुक्त है, इस रूप में *historian* (तुलना करें *history*), *profiteer*[129] (तुलना करें *profit*), *elementary*[130] (तुलना करें *element*), *humanity* (तुलना करें *human*)। इनमें से कुछ शब्द स्वरात्मक परिवर्तन भी प्रदर्शित करते हैं। परप्रत्यय *-th* पर भी ध्यान दें जिसके साथ लगभग सदैव स्वरात्मक परिवर्तन संलग्न रहता है तथा जिसके द्वारा विशेषणों एवं क्रियाओं से संज्ञाएँ व्युत्पन्न होती हैं (*wide* : *width*, *long* : *length*, *steal* : *stealth*)।

अंगरेजी में **शून्य आपरिवर्तन** लगभग उतना ही सामान्य है जितना प्रत्यययोजन तथा संभवतः और भी अधिक उत्पादक। निम्नलिखित पदबंध इकहरी रूपावली के सदस्यों द्वारा प्रक्रिया को चित्रित करते हैं : *my back* : *a back vowel* : *back up* : *go back*.

(२) जब हम अन्तर्विष्ट शब्द-भेदों के अनुसार अंगरेजी व्युत्पादों का वर्गीकरण करें तो हमें उन रूपावलियों में अवश्य प्रभेद करना चाहिए जिनमें एक सदस्य सुस्पष्ट रूप से मूलाधार शब्द हो, जिनमें मूलाधार शब्द रूपप्रक्रियात्मक दृष्टि से अनिर्देशित हो तथा जो कृदन्तों से निर्मित हों। निम्नलिखित प्रतिदर्श प्रक्रिया को चित्रित करते हैं।

यदि मूलाधार शब्द संज्ञा है तो व्युत्पादी शब्द अन्य संज्ञा (*king* : *kingdom*), विशेषण (*child* : *childish*), क्रिया (*man* : *unman*, *beauty* : *beautify*) अथवा क्रियाविशेषण (*head* : *headlong*, *clock* : *clockwise*) हो सकता है। यदि मूलाधार शब्द विशेषण है तो व्युत्पादी शब्द संज्ञा (*red* : *redness*, *long* : *length*), अन्य विशेषण (*red* : *reddish*, *good* : *goodly*), क्रिया (*deep* : *deepen*) अथवा क्रियाविशेषण (*deep* : *deeply*) हो सकता है। यदि मूलाधार शब्द क्रिया है तो व्युत्पादी शब्द संज्ञा (*ride* : *rider*, *grow* : *growth*), विशेषण (*drink* : *drunken*, *tire* : *tiresome*) अथवा अन्य क्रिया (*gain* : *regain*, *fasten* : *unfasten*) हो सकता है तथा यदि मूलाधार शब्द क्रियाविशेषण है तो व्युत्पादी शब्द विशेषण (*up* : *uppish*) अथवा अन्य क्रियाविशेषण (*up* : *upward*) हो सकता है।

निम्नलिखित शब्द-युग्मों में मूलाधार शब्द आकारीय रूप से अभिज्ञात नहीं होता—संज्ञा एवं संज्ञा, *youth* (early life) : *youth* (young man); संज्ञा एवं विशेषण, *iron* (*is heavy*) : *iron* (*bar*); संज्ञा एवं क्रिया, *food* : *feed*, *success* : *succeed*, *play* : *play*; संज्ञा और क्रियाविशेषण, *back* : (go)*back*; विशेषण एवं विशेषण, *whole* : *hale*, *tiny* : *teeny*; विशेषण और क्रिया, *hale* : *heal*, *dry* (*toast*) : *dry* (*the dishes*); विशेषण तथा क्रियाविशेषण, *fast* (*movement*) : (*walk*) *fast*; क्रियाविशेषण व पूर्वसर्ग, (*come*) *in* : *in* (*the room*)।

निम्नलिखित रूपावलियाँ कृदंतों से बनी हैं —*perception* : *conception* ; *nation* : *native* ; *stupor* : *stupid* ; *famine* : *famish* ; *civil* : *civic* ; *regular* : *regulate* ; *persuade* : *dissuade*.

**४.८. प्रत्ययों का विवेचन** :—पूर्ववर्ती अनुभाग में हमने शब्दों तथा आधारों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया था तथा रूपप्रक्रियात्मक प्रक्रमों पर केवल उस प्रकार से विचार किया था जिस रूप में वे विशिष्ट रूपावलियों में घटित होते हैं। तथापि, ये प्रक्रम किसी भाषा के व्याकरण में आधारों के समान ही महत्त्वपूर्ण हैं जिन्हें ये विभेदन के लिए सहायता पहुँचाते हैं। इसके अतिरिक्त, क्योंकि रूप-प्रक्रियात्मक प्रक्रम सदैव आधारों की अपेक्षा अल्प संख्या में होते हैं (४.४) अतः आधारों को उन आपरिवर्तनों के रूप में वर्गीकृत करना प्रायः सुविधाजनक होता है जिनके वे अधीन होते हैं। जब हम उस प्रयोग की व्याख्या करते हैं जिससे किसी विशिष्ट प्रक्रिया को संबद्ध किया जाता है—उदाहरणार्थ, वे आधार जिनसे किसी विशिष्ट व्युत्पत्तिमूलक परप्रत्यय को संलग्न किया जाता है—तो हमें ऐसा प्रतीत हो सकता है कि तथ्यों के परिपूर्ण एवं विशुद्ध विवरण को प्रस्तुत करने के उद्देश्य से हमें व्युत्पादों की एक बहुत बड़ी संख्या का विश्लेषण करना चाहिए तथा संबंध एवं आपरिवर्तन के अत्यन्त यथातथ्य नियमों का प्रतिपादन करना चाहिए। अंगरेजी परप्रत्यय *-ous*/-əs/ के कुछ प्रयोगों के वर्णन के द्वारा हम इस सिद्धान्त का विवेचन करेंगे।

यह परप्रत्यय विशेषणों का निर्माण करता है जो मुख्यतः संज्ञाओं से व्युत्पन्न होते हैं (*pomp* : *pompous*)। प्रथमतः, यह परप्रत्यय सभी सज्ञाओं में योजित नहीं किया जाता—उदाहरणतः *man, house, apple, table, object* में—बल्कि उनकी एक सीमित संख्या में ही योजित किया जाता है जिसे अगरेजी शब्द-समूह के विदेशायातित अंश से संबद्ध कहा जा सकता है। भाषा के संपूर्ण व्याकरण में वे संज्ञाएँ जो परप्रत्यय *-ous* द्वारा संलग्न की जा सकती हैं पूर्ण रूप से सूचीबद्ध की जाएंगी।

(१) अपने सामान्य रूप में, इस परप्रत्यय को उन संज्ञाओं से योजित किया जाता है जिनका अंत /t, s, z, s, z/ (अंतिम s, z बलाघात चिह्न से युक्त)[131] में नहीं होता; उदाहरणार्थ *cavern* : *cavernous* ; ऐसे ही *beauty, murder, libel* तथा अन्य अनेक। /d/ में यह केवल एक ही संज्ञा *hazard* में जोड़ा जाता है। यदि संज्ञा शब्द पर्याप्त दीर्घ है तो हम देखते हैं कि प्रबल बलाघात परप्रत्यय से पूर्व द्वितीय अक्षर पर होता है : (देखिए)[132]।

(२) अत्यल्प क्रियाशब्दों में ही इसे जोड़ा जाता है : *prosper* : *prosperous*, *continue* : *continuous*.

(३) यह परप्रत्यय कुछ विशेषणों में प्रकट होता है जहाँ किसी अंगरेजी शब्द में इसकी योजना नहीं की जाती। उदाहरण के लिए *jealous, pious, raucous, viscous, incongruous*. ये कृदंत हैं (४.७) तथा परप्रत्यय *-ous* यहाँ कृत्प्रत्यय के रूप में कार्य करता है। वे अंश जिनमें कृत्प्रत्यय योजित किया जाता है **धातु** कहे जा सकते हैं : *jeal-, pi-, rauc-*, आदि।

(४) /t/ में समाप्त होने वाले दो क्रियाशब्दों *covet, solicit* में यह जोड़ा जाता है। *Solicitous* शब्द का अर्थ मूलाधार शब्द के अर्थ से पर्याप्त रूप में विसामान्य हो जाता है किन्तु यहाँ हम इस प्रकार के समस्त दृष्टांतों की चर्चा नहीं करेंगे।

(५) कुछ उदाहरणों में यह परप्रत्यय आधार में स्वरात्मक परिवर्तन के द्वारा संलग्न होता है : *vein* /ej/ : *venous* /ij/ ; *zeal* /ij/ : *zealous* /e/ ; *omen* /ow/ : *ominous* /o/.

(६) स्वरात्मक परिवर्तन के अतिरिक्त, अनुवर्ती शब्द /b/ के लोप से ध्वनि के क्षय को प्राप्त होता है : *number* /ə/ : *numerous* /uw/.

(७) *miracle* : *miraculous* में /əl/ प्रतिस्थापित है /jul/ द्वारा; ऐसे ही *scruple* में।

(८) यही प्रतिस्थापन *fable* /ej/ : *fabulous* /a/ ; *people* /ij/ : *populous* /o/ में स्वरात्मक परिवर्तन द्वारा संलग्न किया जाता है।

(९) *fiber* : *fibrous* में /ər/ प्रतिस्थापित है /r/ द्वारा; ऐसे ही *leper, lustre, monster, wonder* में भी; वैकल्पिक रूप से *thunder* में जो *thunderous* तथा *thundrous* दोनों के मूल में है।

(१०) सज्ञा शब्द *circuit* के /t/ में यह प्रत्यय योजित है तथा उसका /i/ *circuitous* में /juwi/ के द्वारा प्रतिस्थापित हो जाता है।

(११) *harmony* : *harmonious* में /ə/ प्रतिस्थापित होता है /ow/ द्वारा; इसी प्रकार *melody, euphony, felony* में भी।

(१२) *victory* : *victorious* में /ər/ प्रतिस्थापित है /ohr/ द्वारा;

(१३) /ihr/ द्वारा प्रतिस्थापित है *mystery* : *mysterious* में तथा

(१४) /ur/ अथवा /uhr/ द्वारा प्रतिस्थापित है *injury* : *injurious* में; ऐसे ही *penury* तथा *usury* में भी।

(१५) यही परिवर्तन *luxury* : *luxurious* में, वैकल्पिक रूप से, व्यंजनात्मक परिवर्तन द्वारा संलग्न किया जाता है जिसमें मूलाधार शब्द की ध्वनि /ks/ (s बलाघातित)[133] होती है किन्तु विशेषण की कभी-कभी /ks/ (s बलाघातित)[134] तथा कभी-कभी /gz/ (z बलाघातित)[135]।

(१६) *grief* : *grievous* में /f/ प्रतिस्थापित है /v/ द्वारा; ऐसे ही *mischief* भी।

(१७) *mutiny* : *mutinous* में मूलाधार संज्ञा का अंतिम -y छूटा हुआ है; ऐसे ही *treachery, infamy, bigamy* तथा कई अन्य भी।

(१८) *caution* : *cautious* में अंतिम /ən/ छूटा हुआ है; ऐसे ही *oblivion, citron, faction, amphibian* में भी।

(१९) *mucus* : *mucous, callous, phosphorus* में अंतिम /əs/ छूटा हुआ है जिससे कि संज्ञा तथा विशेषण **समनामी** (ध्वनिमिक रूप से समान) हैं।

(२०) *odium* : *odious* में अंतिम /əm/ छूटा हुआ है; ऐसे ही *vacuum, decorum* भी (किन्तु आगे देखें संख्या २६)।

(२१) *scrofula, nebula, nausea* में अंतिम /ə/ छूटा हुआ है।

(२२) *barbarian* : *barbarous* में अंतिम /ijən/ छूटा हुआ है तथा प्रबल बलाघातित आक्षरिक /ə/ द्वारा प्रतिस्थापित है।

(२३) /t, d, s, z, s, z (अंतिम s व z बलाघातित)[136]/ ध्वनिमों में परिसमाप्त होने वाले आधारों से व्युत्पन्न विशेषणों में परप्रत्यय (**पूर्वपरप्रत्ययी बलाघात**) के एकदम पूर्ववर्ती अक्षर पर प्रबल बलाघात होता है किन्तु केवल कुछ ही रूप ऐसे हैं जिनके लिए प्रस्तुत विवरण पर्याप्त है; उदाहरणार्थ (देखिए)[137]।

(२४) कुछ में आघातीय परिवर्तन के अतिरिक्त स्वर परिवर्तन होता है: *cóurage* /i/ : *coura'geous* /ej/ ; *móment* /ə/ : *moméntous* /e/ ; *sácrilege* /i/ : (देखिए)[138] /ij/.

(२५) /sən (s बलाघातित)[139]/ अथवा /dzən (z बलाघातित)[140]/ में परिसमाप्त होने वाली कुछ संज्ञाओं में, जो /ən/ का त्याग कर देती हैं, परप्रत्यय का प्रस्तुत रूप बाद में प्रयुक्त किया जाता है : *ambition* : *ambitious*, *religion* : *religious* ; इसी प्रकार *flirtation, suspicion, contagion* तथा अन्य।

(२६) कुछ अन्य व्युत्पादों में भी यह रूप पूर्वपरप्रत्ययी बलाघात सहित प्रयुक्त होता है। इस रूप में, /ər/ के साथ /r/ के द्वारा प्रतिस्थापित, *disaster* : *disastrous* ; अंतिम -*y* के क्षय के साथ, *polyandry* : *polyandrous* ; अंतिम /əm/ के क्षय के साथ, *decórum* : *decórous*, संख्या २० के अंतर्गत *décorous* रूप की तुलना में।

इस परप्रत्यय के कुछ विस्तृत रूपों का, जिनमें -*ous* से पूर्व अन्य ध्वनियाँ आती हैं, हम केवल उल्लेख ही कर सकते हैं : *uproarious* में /ijəs/, *sensuous* में /uwəs/ अथवा /juwəs/, *bumptious* में /səs (प्रथम s बलाघातित)[141]/,

*meritorious* में /ohrijəs/ आदि।

यह विस्तृत रूपरेखा अपूर्ण है। असावधानी से प्रस्तुत किए गए विवरण में, जैसाकि हमारी पाठ्यपुस्तकों तथा गुटकों में अनपेक्षित रूप से सामान्य है, केवल यही कहा जाएगा कि विशेषणों को *-ous, -ious, -eous* तथा समान अन्त्याक्षरों द्वारा निर्मित किया जाता है। सरसरी तौर से किए गए हमारे प्रस्तुत विवरण से भी यह स्पष्ट हो जाएगा कि इस प्रकार का वक्तव्य देना कितना अधिक अपर्याप्त होगा।

४.६. **समस्त शब्द :**—४.२ के अन्तर्गत की गई परिभाषा के अनुसार, पूर्णतः लघुतर शब्दों से निर्मित शब्द **समस्त** कहा जाता है। समस्त शब्द एवं पदबंध (दो अथवा अधिक स्वतंत्र रूपों को अन्तर्विष्ट करने वाली वाक्यात्मक रचना) के अंतर को प्रत्येक भाषा के लिए पृथक् रूप से निर्धारित करना चाहिए; यदि उनके मध्य प्रभेद स्थापित करने के लिए कोई आकारिक संलक्षण प्राप्त न हो सकें, तो भाषा में समस्त शब्दों का अभाव होता है।

अंगरेजी में, समस्त शब्द पदबंधों से अपने घटकों के ध्वनिमिक आपरिवर्तन में, दोनों के मध्य संहिता के प्रकार में, बलाघात अभिरचना में अथवा इन अभिलक्षणों के संयोग में पृथक् होते हैं। इस प्रकार समस्त शब्द *blackbird*/blákbəhrd (ə पर बाणमुख)[१४२]/पदबंध *black bird*/blak-bə'hrd (a पर बाणमुख)[१४३]/से केवल बलाघात में, समस्त शब्द *altogether*/(देखिए)[१४४]/पदबंध *all together*/(देखिए)[१४५]/से बलाघात एवं संहिता दोनों में तथा समस्त शब्द *gentleman*/(देखिए)[१४६]/पदबंध *gentle man*/(देखिए)[१४७]/से बलाघात, संहिता एवं द्वितीय सदस्य/man/से/mən/के आपरिवर्तन में भिन्न है। (पूर्वगामी उदाहरणों में योजक-चिह्न विप्रकृष्ट संहिता को संकेतित करते हैं।) फ्रांसीसी में, समस्त शब्द *pied a-terre* (देखिए)[१४८]/(देखिए)[१४९]/ 'temporary lodging' [यथार्थतः 'foot-on-ground'] सदृश संरचना के पदबंध से अपने प्रथम सदस्य के आपरिवर्तन में भिन्न है जिसका रूप /pje/ एक स्वतंत्र शब्द के रूप में है। लैटिन तथा अन्य भाषाओं में, अनेक शब्दों का विशेष **संयोजक रूप** होता है जो केवल समस्त शब्दों (अथवा केवल समस्त शब्दों तथा व्युत्पादों) में ही प्रकट होता है। इस प्रकार, लैटिन *corni·pēs* 'horn-footed, hoofed' दो शब्दों *corn·u* 'horn' और *pēs* 'foot' से निर्मित है; यह समस्त शब्द के रूप में रूपप्रक्रियात्मक दृष्टि से संयोजक रूप *corni-* की उपस्थिति के द्वारा सुस्पष्ट है जो स्वयं शब्द के किसी विभक्त्यात्मक रूप में घटित नहीं होता। (अंगरेजी शब्द-समूह का विदेशायातित अंश भी विशेष संयोजक रूपों की एक संख्या को प्रकट करता है। तुलना करें, *electromagnet*

जैसे समस्त शब्दों में *electro-*, *electric* का संयोजक रूप।)

एक अन्य अभिलक्षण जिसमें समस्त शब्द पदबंधों से प्रायः पृथक् होते हैं उनकी अविभाज्यता है। पदबंध के घटक शब्दों को अन्य शब्दों के अन्तर्निवेशन द्वारा पृथक्कृत किया जा सकता है; उदाहरणार्थ *a black bird* : *a black or bluish-black bird*, *a gentle man* : *a gentle old man*, भेद दिखलाएँ *a blackbird*, *a gentleman* से। *He sailed on a Cuban steamship* वाक्य में समस्त शब्द *steamship* के स्थान का भी पदबंध *old ship* के विखंडित स्थान से सदृश वाक्य *He sailed on an old Cuban ship* में भेद दिखलाएँ *on a Cuban old ship* में कदापि नहीं।

समस्त शब्द की रचना का वर्णन करने के लिए हमें केवल उस वर्ग (शब्द-भेद आदि) की ही पहचान नहीं करनी चाहिए जिससे इसका संबंध है बल्कि प्रत्येक घटक सदस्य के वर्ग की भी पहचान करनी चाहिए तथा हमें उस क्रम को प्रकाशित करते हुए जिनमें वे उच्चरित किए जाते है यह अवश्य बताना चाहिए कि इन्हें एकत्र रूप में किस प्रकार किया जाता है, संहिता तथा बलाघात के वे अभिलक्षण कौन-से हैं जो उन्हें विशेषित करते हैं तथा वे ध्वनिमिक आपरिवर्तन कौन-से हैं, यदि कोई हैं तो, जिनके अधीन घटक शब्द समस्तीकरण की प्रक्रिया में होते हैं (तुलना करें ४.४)। कुछ उदाहरण :—संज्ञाशब्द *steamship* विप्रकृष्ट संहिता में दो संज्ञाशब्दों *steam* एवं *ship* से निर्मित है, प्रथम सदस्य पर प्रबल तथा द्वितीय पर लघुकृत प्रबल बलाघात है; संज्ञाशब्द *tryout* सन्निकृष्ट संहिता में क्रिया *try* तथा क्रियाविशेषण *out* से निर्मित है, प्रथम सदस्य पर प्रबल तथा द्वितीय पर मध्य बलाघात है; संज्ञाशब्द *gentleman* सन्निकृष्ट सहिता में विशेषण *gentle* तथा संज्ञाशब्द *man* से निर्मित है, प्रथम सदस्य पर प्रबल तथा द्वितीय पर दुर्बल बलाघात है तथा /man/ से /mən/ तक आपरिवर्तन है; विशेषणशब्द *serio-comic* विप्रकृष्ट संहिता में संयोजक रूप *serio-* में विशेषणशब्द *serious* से तथा विशेषण-शब्द *comic* से निर्मित है, प्रथम सदस्य पर लघुकृत प्रबल बलाघात तथा द्वितीय पर प्रबल बलाघात है; संज्ञाशब्द *wild animal trainer* (इस रूप में वर्णविन्यस्त मानो तीन शब्द हों किन्तु व्याकरणिक रूप से एक समस्त शब्द) विप्रकृष्ट संहिता में पदबंध *wild animal* तथा व्युत्पादी संज्ञाशब्द *trainer* से निर्मित, प्रथम सदस्य (अर्थात् *animal* के प्रथम अक्षर) पर प्रबल तथा द्वितीय पर लघुकृत प्रबल बलाघात है।

४.१०. **सन्निहित घटक** :—पूर्ववर्ती अनुभाग में अन्तिम उदाहरण विश्लेषण के एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत को चित्रित करता है जो समस्त तथा मिश्र दोनों ही प्रकार

के शब्दों तथा, जैसाकि हम आगे चलकर देखेंगे (५.४), पदबंधों के लिए भी प्रयोज्य है। जब किसी शब्द में तीन अथवा अधिक रूपिम होते हैं तो उसे दो और केवल दो **सन्निहित घटकों** में विश्लेषित करना प्राय: अनिवार्य होता है जिनमें से किसी भी एक अथवा दोनों में अतिरिक्त विश्लेषण की गुंजाइश हो सकती है। केवल इस रीति से ही शब्द की रूपप्रक्रियात्मक संरचना का उद्घाटन संभव है। रूपिमों की उनके **अनुक्रम** के सर्वथा अभाव में सूची मात्र प्रस्तुत कर देने से अन्तर्विष्ट रचनाओं के संबध में हमें कुछ भी ज्ञात नहीं होगा।

इस प्रकार विशेषणशब्द *unmanly* मात्र तीन रूपिमों *un-*, *man* तथा *-ly* से ही निर्मित नहीं है; इसके सन्निहित घटक हैं मिश्र शब्द *manly* तथा पूर्वप्रत्यय *un-*. विशेषणशब्द *gentlemanly* प्रथम दृष्टि में *gentle* तथा *manly* का समस्त प्रतीत हो सकता है किन्तु सूक्ष्म अवलोकन से ज्ञात होगा कि यह समस्त नहीं बल्कि मिश्र शब्द है क्योंकि इसके सन्निहित घटक हैं समस्त शब्द *gentleman* (पूर्ववर्ती अनुभाग में विवेचित) तथा परप्रत्यय *-ly*. समस्त शब्द *wild animal trainer* में पाँच रूपिम हैं :—*wild*, *anim-* (यह *animate* में भी आता है), *-al*, *train* और *-er*; किन्तु इस प्रकार की सूची इस शब्द में फलित होने वाले रचना के क्रमिक स्तरों का उद्घाटन करने में असफल सिद्ध होती है। जैसाकि हम पहले कह चुके हैं, सन्निहित घटक हैं पदबंध *wild animal* तथा मिश्र शब्द *trainer*. प्रथम सदस्य का विश्लेषण अध्याय ५ में हमारा विवेच्य विषय बनेगा; द्वितीय सदस्य मूलाधार क्रियाशब्द *train* से कर्त्ता परप्रत्यय *-er* द्वारा व्युत्पन्न है।

जैसाकि प्रस्तुत उदाहरण से स्पष्ट है, शब्द के सन्निहित घटकों में से एक पदबंध हो सकता है; अन्य निदर्शन है मूलाधार पदबंध *old maid* से परप्रत्यय *-ish* द्वारा व्युत्पन्न विशेषणशब्द *old maidish*. एक ऐसा ही विशेषण तथाकथित पदबंध-संबंधवाचक के लिए प्रयोज्य है। *She is the king's daughter* वाक्य में विभक्त्यात्मक शब्द *king's* आधार *king* तथा नियमित संबंधवाचक परप्रत्यय /-ez, -z, -s/ [तुलना करें, ४.५(२)] के एक विकल्प परप्रत्यय /-z/ से बना है। *She is the king of England's daughter* वाक्य में परप्रत्यय /-z/ मात्र शब्द *England* के साथ ही नहीं बल्कि संपूर्ण पदबंध *king of England* के साथ संलग्न होता है। अत: रूप *king of England's* में इसके सन्निहित घटकों में से एक के रूप में बद्ध रूपिम है तथा इसी कारण इसे एक मिश्र शब्द के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए; तुलना करें ५.३, अन्तिम। (*He is the true king of England's people* वाक्य का भेद दिखलाएँ जिसमें परप्रत्यय /-z/ केवल एक ही शब्द *England* के साथ संलग्न होता है।)

यदा-कदा कोई एक अभिव्यक्ति उन सन्निहित घटकों के अनुसार जिनसे उसका निर्माण हुआ है दो विभिन्न रचनाओं को द्योतित करती है। इस रूप में *old book dealer* विशेषणशब्द *old* तथा समस्त शब्द *book dealer* से निर्मित पदबंध हो सकता है ('a book dealer who is old') अथवा पदबंध *old book* तथा व्युत्पादी संज्ञाशब्द *dealer* से निर्मित समस्त शब्द हो सकता है ('a dealer in old books')।

प्रस्तुत सिद्धांत के आलोक में अब हम ४.२ के अन्तर्गत की गई मिश्र एवं समस्त शब्दों की परिभाषा को स्पष्ट कर सकते हैं। एक अथवा अधिक बद्ध रूपों को अन्तर्विष्ट करने वाला शब्द मिश्र कहा जाता है; सम्पूर्ण रूप से लघुतर शब्दों से निर्मित शब्द समस्त शब्द कहलाता है। निम्नलिखित परिभाषा और भी अधिक विशुद्ध है। यदि किसी शब्द के सन्निहित घटकों में कम-से-कम एक बद्ध रूप है तो वह शब्द मिश्र होता है तथा यदि दोनों ही सन्निहित घटक स्वतंत्र रूप हों तो शब्द समस्त होता है। (इस प्रकार *book dealer* बद्ध रूप *-er* के होते हुए भी समस्त है।)

**४.११. अर्थ एवं रूप** :—जैसाकि ४.६ के अन्तर्गत विवेचित हुआ है, किसी भाषा में विभक्ति के, इसके अनुसार कि क्या विभक्त्यात्मक रूपावली के घटक सदस्यों के मध्य अर्थ में संबंध भाषा में सभी रूपावलियों के समान है अथवा नहीं, एक अथवा अधिक संवर्ग हो सकते हैं। जापानी में अधिकांश शब्द विभक्तिविहीन होते हैं; विभक्त्यात्मक शब्दों में, एक रूपावली के सदस्य अर्थ के तथ्यत: सदृश अभिलक्षणों में एक-दूसरे से सदैव भिन्न होते हैं। इस प्रकार रूपावली /ageru/ '(I) raise' : /agéyo'o/ '(I) shall probably raise' अथवा 'let's raise' : /agéréba/ 'if or when (I) raise' : /ageta/ '(I) have raised' आदि उन सभी अर्थभेदों को चित्रित करती है जिन्हें विभक्ति द्वारा अभिव्यक्त किया जा सकता है। तदनुसार जापानी में विभक्ति का केवल एक संवर्ग होता है यद्यपि समस्त आधारों के लिए प्रत्यय तथा आभ्यन्तर परिवर्तन एक ही नहीं होते। इसके दूसरी ओर, लैटिन में *dux* 'a leader' : *ducis* 'of a leader' : *ducēs* 'leaders': *ducum* 'of leaders' आदि के मध्य के अर्थभेद *amō* 'I love' : *amās* 'thou lovest' : *amat* 'he (she) loves' आदि अथवा *amō* 'I love' : *amābam* 'I was loving' : *amābō* 'I shall love' आदि अथवा *altus* 'tall' : *altior* 'taller' : *altissimus* 'tallest' के मध्य के अर्थभेदों के समानान्तर नहीं होते। अतएव लैटिन में विभक्ति के अनेक प्रभिन्न संवर्ग होते हैं तथा अंगरेजी रूपों के सदृश परीक्षण से ज्ञात होगा कि इसमें भी भिन्न प्रकार के संवर्गों की विभक्तियाँ

होती हैं।

वह अर्थतत्त्व जो रूपावली के एक सदस्य से दूसरे सदस्य में पृथक् होता है **व्याकरणिक अर्थ** कहलाता है। उदाहरण के लिए, लैटिन *dux* में 'कर्त्ता एकवचन', *ducum* में 'संबंधकारक बहुवचन', *amō* में 'उत्तम पुरुष एकवचन वर्तमान काल निश्चयार्थक कर्तृवाच्य'। स्वयं आधार का अर्थ, जो साधारणतः रूपावली के समस्त सदस्यों में स्थिर रहता है, **शाब्दिक अर्थ** कहलाता है। उदाहरणार्थ *dux, ducis, duces* आदि में 'leader'; *amō, amās* आदि में 'love'.

यद्यपि व्याकरणिक तथा शाब्दिक अर्थ में भेद करना आवश्यक है तथा भाषा के सुव्यवस्थित वर्णन में कम-से-कम व्याकरणिक अर्थों का यथासंभव रूप में ध्यानपूर्वक निरूपण अनिवार्य है, हमारे समस्त वर्गीकरण एकांतिकतः रूप—आधारों एवं प्रत्ययों की ध्वनिमिक संरचना में भेदों तथा समानताओं अथवा विशिष्ट प्रकार के पदबंधों एवं वाक्यों में शब्दों की उपस्थिति पर अवश्य ही आधृत होने चाहिए। वर्गीकरणों के हमारे निर्माण में अर्थ, गूढ़ तर्क अथवा दर्शन के लिए कोई आग्रह नहीं होना चाहिए।

जैसाकि हम देख चुके हैं (४.६), शब्द-भेदों को या तो उनकी विभक्ति अन्यथा, विभक्ति के अभाव में, उनके वाक्यात्मक प्रकार्य के द्वारा निरूपित किया जाना चाहिए; उन वास्तविक अथवा कल्पित अर्थों के द्वारा जिन्हें वे अभिव्यक्त करते हैं अथवा 'सर्वभाषा व्याकरण' की किसी पूर्वावधारित परियोजना के द्वारा कभी नहीं। इस प्रकार अंगरेजी क्रियाओं के वर्ग को उन अंतर्वेशी शब्दों के रूप में परिभाषित किया जाता है जिनका आधार कुछ प्रत्ययों द्वारा संलग्न किया जा सकना है अथवा 'वर्तमान काल' तथा 'पूर्णकाल' के मध्य वैषम्य स्थापित करने के लिए (सर्वादेश तथा शून्य परिवर्तन सहित) कुछ अन्य रूपों में आपरिवर्तित किया जा सकता है। अंगरेजी क्रियाओं के सुविस्तृत वर्णन में व्युत्पत्त्यात्मक रूपावलियों के उन विविध प्रकारों, जिनमें वे प्रकट होती हैं तथा समस्त शब्दों में उनके योग-दान के अतिरिक्त अन्य विभक्तियों का भी उल्लेख होगा; किन्तु इस प्रकार का अंतर्वेशीभाव आनिवार्य नहीं है। हमारी परिभाषा यदि मात्र एक अथवा दो उन विभक्तियों का विशेष रूप से उल्लेख करती है जिनके अधीन केवल क्रियाएँ हैं तथा इस प्रकार संपूर्ण वर्ग के लिए एक स्पष्ट विधिवत् मानदण्ड प्रस्तुत करती है तो उपयुक्त है। चूँकि अंगरेजी में पूर्वसर्ग विभक्त्यात्मक नहीं होते (जैसेकि, उदाहरण के लिए, आयरिश भाषा में सदृश शब्द होते हैं) अतः उन्हें एक वर्ग के रूप में मात्र उनके वाक्यात्मक प्रकार्य के अनुसार परिभाषित किया जाना चाहिए : अर्थात् उन रचनाओं के द्वारा जिनमें वे घटित होते हैं तथा शब्दों के उन प्रकारों के द्वारा

जो उनके साथ संलग्न होते हैं।

विद्यार्थी-काल से ही हमें ज्ञात हुए शब्द-भेदों की पारम्परिक परिभाषाएँ अधिकांशत: अर्थ की दार्शनिक धारणाओं पर आधृत होती हैं। 'जीवित प्राणी अथवा निर्जीव वस्तु के अभिधान के रूप में प्रयुक्त शब्द संज्ञा है'। इस प्रकार की परिभाषा व्यर्थ है: इससे अगरेजी की संरचना के संबंध में हमें कुछ भी ज्ञात नहीं होता तथा अवसर आने पर यह संज्ञा को पहचानने की योग्यता हमें प्रदान नहीं करती। 'क्रिया वह शब्द-भेद है जिसके साधन से हम दृढ़कथन करते हैं अथवा प्रश्न पूछते हैं।' यहाँ एक वर्ग को जिसे दृढ़तापूर्वक उसकी विभक्तियों के द्वारा परिभाषित किया जा सकता है उसकी अपेक्षा उसके कुछ वाक्यात्मक प्रकार्यों के अर्थ के अनुसार अनिश्चित रूप से वर्णित किया गया है—अनिश्चित रूप से इस कारण क्योंकि यह वर्णन संज्ञाओं तथा सर्वनामों के लिए समान रूप से घटित होता है।

ऐसी ही युक्तियुक्त पद्धति को, जो कि शब्द-वर्गों की परिभाषा के लिए अपेक्षित है, वचन, कारक, लिंग, काल एवं वृत्ति जैसे विभक्तिपरक संवर्गों को परिभाषित करने के लिए भी हमें निर्देशित करना चाहिए। अंगरेजी में शब्द *man* तथा *wheat* व्याकरणिक रूप से *men* तथा *oats* (एकवचन बनाम बहुवचन) से अपने अर्थ के कारण भिन्न नहीं हैं—जिसे यथातथ्य रूप में निरूपित करने के लिए हमें निश्चित रूप से श्रम करना चाहिए—बल्कि इस कारण से कि शब्दों का द्वितीय युग्म कुछ उन रूपप्रक्रियात्मक प्रक्रमों (आभ्यन्तर परिवर्तन, परप्रत्यय *-s*) द्वारा विशेषित है जो एक विभक्तिपरक रूपावली के सदस्यों को पृथक् करने में सहायता करते हैं तथा इस कारण से कि *man* एवं *wheat* शब्द *This man is tall, This wheat is tall* वाक्यों में *this* तथा *is* द्वारा संलग्न किए गए हैं जबकि *men* एवं *oats* शब्द *These men are tall, These oats are tall* वाक्यों में *these* तथा *are* द्वारा। लैटिन में, संज्ञाएँ *dux* 'leader' तथा *amnis* 'river' पुल्लिंग हैं तथा संज्ञाएँ *mulier* 'woman' तथा *mēnsa* 'table' स्त्रीलिंग हैं—किन्तु इस कारण से नहीं कि नेता प्रायः पुरुष होता है तथा स्त्री सदैव मादा अथवा रोमनों ने नदी को मेज की अपेक्षा किसी प्रकार से अधिक शक्तिशाली 'अभिकल्पित किया' बल्कि इसलिए कि वे विभिन्न विशिष्ट परप्रत्ययों सहित विशेषणों से संलग्न किए गए हैं : *dux bonus* 'a good leader' किन्तु *mulier bona, amnis lātus* 'a broad river' किन्तु *mēnsa lāta.*

अतएव शब्द-वर्गों (शब्द-भेदों) तथा किसी भाषा के विभक्त्यात्मक संवर्गों को मात्र रूपप्रक्रियात्मक प्रक्रमों तथा स्वयं भाषा की वाक्यात्मक प्रकृतियों के द्वारा

निर्धारित किया जाता है। इससे यह परिणाम निकलता है कि इस प्रकार के वर्गों तथा संवर्गों की संख्या, उनके प्रविभाजन तथा उनके प्रकार्य एक भाषा से दूसरी भाषा में भिन्न होंगे। हम आश्वस्त हो सकते हैं कि समस्त भाषा-भाषी जनसमुदायों के पास 'एक प्राणी अथवा निर्जीव वस्तु' तथा 'दृढ़कथन करने अथवा प्रश्न पूछने' को उल्लिखित करने के साधन होते हैं; किन्तु संज्ञाओं तथा क्रियाओं के मध्य व्याकरणिक प्रभेद का अनेक भाषाओं में, अंगरेजी और लैटिन में, सर्वथा अभाव है।

प्रस्तुत सिद्धान्त को स्पष्ट करने के लिए एक अकेला उदाहरण पर्याप्त है। अंगरेजी में विशेषणों का, जो अपनी विभक्ति और अपने वाक्यात्मक प्रकार्यों—दोनों में समस्त अन्य शब्द-भेदों से पृथक् होते हैं, एक सुपरिभाषित वर्ग होता है। किन्तु (विस्कान्सिन में इस समय बोली जाने वाली एक एलगोन्कियन भाषा) मेनोमिनी में हम देखते हैं कि शब्द /kehkaatesew/ 'he is powerful' विभक्ति में /pemaatesew/ 'he lives' के तथ्यतः समानान्तर है; अर्थात् मेनोमिनी में कुछ क्रियाओं के अर्थ हमारे विशेषणों के अर्थों के समान होते हैं। मेनोमिनी भाषा की व्याख्या करते समय हमें यह नहीं कहना चाहिए कि इसके विशेषण क्रियाओं के समान विभक्त्यात्मक होते हैं। इसमें विशेषण बिलकुल नहीं होते तथा इस शब्द का प्रयोग करना तथ्यों का मिथ्यावर्णन होगा।

इस सिद्धान्त में कि केवल तात्त्विक मानदण्ड व्याकरणिक संवर्गों को संस्थापित कर सकता है हमें ४.६ के अंतिमांश में पहले ही से विवेचित एक अन्तिम नियम को योजित कर लेना चाहिए। रूपप्रक्रियात्मक तथा वाक्यात्मक वर्गीकरणों को सदैव ही पृथक् रखना चाहिए; विश्लेषण के किसी एक प्रकार पर आधृत कोई संवर्ग केवल दूसरे प्रकार द्वारा निर्धारित रूपों को अन्तर्विष्ट नहीं कर सकता। इस प्रकार हम अंगरेजी के लिए *boy : boy's, cat : cat's, men : men's* जैसी आंशिक रूपावलियों के आधार पर दो कारक स्थापित करते हैं—एक कर्त्ता तथा एक सम्बन्धवाचक, फिर हम शब्द संबंधवाचक का प्रयोग *of the boy, of a cat, of men* जैसे पदबन्धों के लिए चाहे न भी करें। वाक्य *This is the boy's father* का अर्थ तथ्यतः *This is the father of the boy* जैसा हो सकता है; किन्तु यदि हम शाब्दिक समानार्थकता को व्याकरणिक समानार्थकता के लिए एक निकष के रूप में स्वीकार कर रहे हों तो हम अभी-अभी उद्धृत किए गए युग्मों तथा *What time is it ?* तथा *Please tell me the time* जैसी पर्याप्त मात्रा में विसदृश किन्तु इतने पर भी समानार्थी अभिव्यक्तियों के मध्य विभाजक रेखा खींचने में असमर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त, यदि हम *play* तथा *played* अथवा *sing* तथा

*sang* के बीच के अन्तर को काल का अन्तर कहने का निश्चय कर चुके हैं तो हम अन्तर से सम्बद्ध उसी शब्द को *play* तथा *have played* अथवा *will play* या *might play* के मध्य में प्रयुक्त नहीं कर सकते। पारिभाषिक शब्दों का इस प्रकार का दुहरा प्रयोग, यद्यपि ऐसा सामान्य रूप में देखा जाता है, हमारे सिद्धान्त के विवरण को केवल अस्तव्यस्त करेगा और हमारी बोधगम्यता को बाधित करेगा।

## पंचम अध्याय

# वाक्यविचार

५.१. **वाक्यात्मक रचनाएँ** :—केवल स्वतन्त्र रूपों को अन्तर्विष्ट करने वाली रचनाओं के विश्लेषण को **वाक्यविचार** कहा जाता है। प्रथम प्रश्न जिसका उत्तर प्रस्तुत करना है वह यह है कि किस प्रकार हम एक रचना की **सीमाओं** का निर्धारण करते हैं : कहाँ एक वाक्यात्मक रूप प्रारंभ तथा समाप्त होता है ?

विदेशी भाषा का अध्ययन करते हुए, उसकी रचनाओं के व्यवस्थित विश्लेषण को प्रारंभ करने से बहुत पूर्व, हमें ज्ञात होता है कि वे उच्चारण जो स्वयं में पूर्ण होते हैं विविध प्रकार के होते हैं। कुछ अल्पतम स्वतन्त्र रूप, शब्द (४.२) होते हैं; अन्य दो अथवा अधिक स्वतन्त्र रूपों के अनुक्रम होते हैं। संहिता तथा अनुतान (तुलना करें २.१४, ३.७) के अधिखंडात्मक ध्वनिमों को ध्यान मे रखते हुए हम उनका वर्गीकरण प्रारंभ कर सकते हैं।

यदि हम अंगरेजी के वाक्यविन्यास का विश्लेषण कर रहे हों तो हमें उन उक्तियों से जिन्हें हम ध्वनिमिक अंकन में अंकित कर चुके हों, ३.७ (५) में विवेचित चार अन्तिम अनुतानों में से एक में समाप्त होने वाले समस्त सम्पूर्ण उच्चारणों को पहले तालिका-बद्ध कर लेना चाहिए। इन्हें हमें **वाक्य** कहना चाहिए। कुछ वाक्य केवल एक अकेला शब्द अन्तर्विष्ट किए हुए दिखाई देंगे (*Go ! Yes*), अन्य एक से अधिक। परवर्ती प्रकार में कुछ मध्यत: एक अथवा अनेक अनन्तिम अनुतानों सहित होंगे; इन अनुतानों से आबद्ध एक वाक्य के प्रत्येक खण्ड को इस प्रकार हम एक **उपवाक्य** के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। पुनः उपवाक्य, हम देखेंगे कि, एक अकेले शब्द अथवा अनेक शब्दों से निर्मित हो सकते हैं तथा घटक शब्दों के मध्य संहिता विप्रकृष्ट अथवा सन्निकृष्ट हो सकती है : ***the man***/ (देखिए)[१५०]/, ***no indeed***/ (देखिए)[१५१]/.

दो अथवा अधिक शब्दों की कोई भी वाक्यात्मक रचना **पदबंध** है; और

समस्त वाक्यात्मक विश्लेषण का आधार ध्वनिमिक मानदण्ड—मुख्यत: संहिता एवं अनुतान—द्वारा निर्धारित पदबंधों का परीक्षण होना चाहिए। अधिकांश भाषाओं में एक से अधिक पदबंधों के वाक्य तथा उपवाक्य वैसी ही रचनाओं को व्यक्त करते हैं जैसीकि एक पदबन्ध की होती हैं।

इस रूप में जब हम अपने वाक्यात्मक एककों का सीमा-निर्धारण कर लेते हैं तो हम इस स्थिति के लिए तैयार होते हैं कि उन शब्द-वर्गों (शब्द-भेदों, ४.६) की शब्दावली में, जो उनमें घटित होते हैं, उनके ढाँचे की व्याख्या करें। यदि भाषा में विभक्त्यात्मक शब्द हैं तो ये उपक्रम की एक सुगम स्थिति को प्रस्तुत करेंगे। इस प्रकार अंगरेजी में हम संज्ञाओं, विशेषणों, सर्वनामों, क्रियाओं अथवा इन वर्गों की विविध संहनियों को अन्तर्विष्ट करने वाली रचनाओं का उल्लेख कर सकते हैं। इस प्रकार का विवरण, अन्ततः, प्रत्येक शब्द-वर्ग के वाक्यात्मक प्रकार्य के निर्धारण को संभाव्य करता है।

प्रस्तुत अध्याय के शेषांश में हम अंगरेजी पदबंधों तथा वाक्यों में स्वतन्त्र रूपों के कुछ अनुक्रमों के परीक्षण द्वारा वाक्यात्मक विश्लेषण को स्पष्ट करेंगे। अर्थात् हम कुछ अंगरेजी रचनाओं को अंकित एवं परिभाषित करेंगे। क्योंकि अंगरेजी अनुतान को समुचित रूप में कभी भी वर्णित नहीं किया गया है (तुलना करें ३.७), अत: हम अपने विवेचन में इस महत्त्वपूर्ण अभिलक्षण का संक्षिप्त उल्लेख करेंगे; किन्तु भाषा के सर्वांग विश्लेषण में इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

**५.२. अंगरेजी कर्तृ-क्रिया रचना** :—हम अपना विवेचन इन पदबंधों से प्रारम्भ करते हैं : *John stumbled. John ran away. Our horses stumbled. Our horses ran away*. इनमें प्रथम एवं चतुर्थ (तथा अनुरूपतः, द्वितीय एवं तृतीय) पदबंधों में कोई भी अंश सामान्य नहीं है, किन्तु सम्पूर्ण समुच्चय एक ही विन्यास को व्यक्त करता है; हम इन पदबंधों में से किसी भी एक पदबंध से किसी भी अन्य पदबंध की ओर एक अथवा दो प्रतिस्थापन करते हुए आगे बढ़ सकते हैं। इन उदाहरणों द्वारा चित्रित अंगरेजी रचना को **कर्तृ-क्रिया रचना** कहा जा सकता है; वे पदबंध जो इस रचना में विन्यस्त हैं **कर्तृ-क्रिया पदबन्ध** हैं। भाषा के प्रयोग को सीखने में हम **विन्यास के अभिलक्षणों** को पहचानना सीखते हैं जो किसी निश्चित रचना को संघटित करते हैं; भाषा का वर्णन करते समय हमें इन अभिलक्षणों का उल्लेख अवश्य करना चाहिए।

हमारे स्कूल व्याकरण, निश्चय ही, इस सम्बन्ध में कुछ नहीं करते, बल्कि रचनाओं (तथा अन्य अधिकांश विषयों) को उनके अर्थ के सम्बन्ध में अस्पष्ट संदर्भों द्वारा परिभाषित मात्र करने का प्रयास भर करते हैं, तुलना करें ४.११। इससे

कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता क्योंकि छात्र परिभाषाओं के परिचय से ही पूर्व अंगरेजी बोलने में समर्थ होते हैं; किन्तु जब कोई विदेशी भाषा के अध्ययन में रत हो तो इस प्रकार के उपगम से लक्ष्यसिद्धि नहीं हो सकती। इसलिए, उदाहरण के तौर पर, हमें अंगरेजी वाक्यविन्यास के कुछ अभिलक्षणों का, इस रूप में उपगम करते हुए कि मानो भाषा हमारे लिए पूर्णतः अपरिचित हो, संक्षिप्ततः उल्लेख करना चाहिए।

**५.३. विन्यास के अभिलक्षण :**—अंगरेजी कर्तृ-क्रिया पदबंध दो अंशों अथवा **घटकों** से निर्मित होता है। प्रत्येक घटक एक शब्द अथवा एक पदबंध होता है; वाक्यविचार में शब्द **अभिव्यक्ति** को शब्दों तथा पदबंधों—दोनों को अंतर्विष्ट करने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। कर्तृ-क्रिया पदबंध को संघटित करने के लिए घटक अभिव्यक्तियों को जिस रीति से एकत्र रूप में रखा जाता है वह **विन्यास के उन अभिलक्षणों** के संदर्भ द्वारा वर्णित की जाती है जो रचना को विशेषित करते हैं।

(१) प्रथमतः घटकों का **चयन** होता है। उदाहरणार्थ, *never stumbled* तथा *John Brown* कर्तृ-कार्य पदबंध नहीं हैं। विशेष रूप से, घटक विनिमेय नहीं होते : *John our horses* तथा *stumbled ran away* किञ्चित् भी अंगरेजी पदबंध नहीं हैं; और यदि, बलाघात तथा स्वराघात के परिवर्तनों द्वारा, हम इन्हीं शब्दों के पदबंध बना सकते हों (उदाहरणतः *John, our horses !*) तो ये कर्तृ-क्रिया पदबन्ध नहीं होंगे। इस प्रकार घटक अ (*John; our horses*) तथा घटक ब (*stumbled; ran away*) अभिव्यक्ति के दो विभिन्न प्रकारों से लिए जाते हैं। हम मान लेते हैं कि अधिकांश भाषाओं में अधिकतम वाक्यात्मक रचनाओं के समान अंगरेजी कर्तृ-क्रिया रचना में दो **स्थान** होते हैं जिन्हें विविध अभिव्यक्तियों से **संपूरित** किया जा सकता है। सभी अभिव्यक्तियाँ जो एक प्रदत्त रचना में प्रदत्त स्थान को संपूरित कर सकती हैं उसके द्वारा **रूपवर्ग** का निर्माण करती हैं।

विवेचन में सुविधा की दृष्टि से हम रूप-वर्गों को अभिधान प्रदान करते हैं। ये अभिधान पूर्णरूपेण यादृच्छिक हो सकते हैं, जैसेकि अ-अभिव्यक्तियाँ तथा ब-अभिव्यक्तियाँ, किन्तु उस ज्ञान को पूर्वानुमित करने के लिए जिसे रूप-वर्गों के वर्गार्थों के सम्बन्ध में प्राप्त किया जा सकता है और उन्हें इन वर्गार्थों पर आवृत अभिधान प्रदान करने के विषय में कोई गंभीर आपत्ति नहीं है। तदनुसार, अंगरेजी कर्तृ-क्रिया रचना में जो अभिव्यक्तियाँ कर्तृ स्थान को संपूरित करती हैं हम उन्हें **कर्त्ता सत्त्ववाचक अभिव्यक्तियाँ** तथा जो क्रिया स्थान को संपूरित करती है उन्हें **विधेय क्रिया अभिव्यक्तियाँ** कहते हैं। फिर भी, ध्यान रखिए कि ये

अंकितक हैं, परिभाषाएँ नहीं; हम रूप-वर्गों को उनके अर्थ के सम्बन्ध में अस्पष्ट संदर्भों द्वारा परिभाषित नहीं करते बल्कि जहाँ वे घटित होते हैं उस सम्बन्ध में निश्चित विवरणों द्वारा करते हैं।

किसी विशिष्ट स्थान को संपूरित करने की सुविधा प्रदान करना रूप का **प्रकार्य** है। कर्त्ता विशेष्य अभिव्यक्ति कोई भी वह अंगरेजी अभिव्यक्ति है जिसे विधेय क्रिया अभिव्यक्ति से इस उद्देश्य से संयुक्त किया जा सके कि परिणामी पदबन्ध कर्तृ-क्रिया पदबन्ध हो। विलोमतः, विधेय क्रिया अभिव्यक्ति कोई भी वह अंगरेजी अभिव्यक्ति है जिसे समान परिणाम के साथ कर्त्ता विशेष्य अभिव्यक्ति से संयुक्त किया जा सके।

विधेय क्रिया अभिव्यक्तियों का अन्य कोई प्रकार्य नहीं होता किन्तु कर्त्ता सत्त्ववाचक अभिव्यक्तियों के कुछ अन्य प्रकार्य भी होते हैं। वे विधेय पूरकों के रूप में (*That's John*) तथा नामपट्ट के ऊपर नामकरण मात्र (*John Smith, Pharmacist*) में प्रकट होती हैं। इन प्रयोगों में प्रत्येक प्रयोग अंगरेजी कर्त्ता सत्त्ववाचक अभिव्यक्तियों का प्रकार्य है; ये समस्त प्रकार्य एकत्र रूप में कर्त्ता सत्त्ववाचक अभिव्यक्तियों के प्रकार्य कहे जाते हैं। इस चयन के अन्य पक्षों का विवेचन बाद में होगा।

(२) अंगरेजी कर्तृ-क्रिया रचना का द्वितीय अभिलक्षण है **क्रम**। हमारे उदाहरणों में कर्तृ अभिव्यक्ति क्रिया अभिव्यक्ति से पूर्व आती है तथा बोलचाल की अंगरेजी भाषा में इस प्रकार के पदबन्धों में क्रम कभी भी विपर्यस्त नहीं होता।

इसे हमारी रचना का **सामान्य** प्ररूप कहा जा सकता है। भिन्न क्रम के अनेक अन्य प्ररूप हैं किन्तु इनमें भी क्रम निश्चित होता है। उदाहरणार्थ, **हाँ-अथवा-न प्रश्नों** में विधेय क्रिया (जो, जैसाकि हम देखेंगे, विधेय क्रिया अभिव्यक्ति का केन्द्रीय अंश है) कर्तृ से पूर्व आता है : *Did John run away* ? इसके अतिरिक्त, जैसाकि इस उदाहरण से स्पष्ट है, हमें ज्ञात होता है कि कर्तृ-क्रिया रचना के इस प्ररूप में केवल कुछ ही विधेय क्रियाएँ प्रयुक्त होती हैं : *is, has, does, can, dare, may, must, need, ought, shall, will*. इस प्रकार, विधेय क्रियाओं के रूप-वर्ग में (जिसे हमने अभी तक परिभाषित नहीं किया है) **सहायकों** का एक उपवर्ग होगा जिनका अन्य प्रकार्यों में से एक प्रकार्य हाँ-अथवा-न प्रश्न में कर्तृ से पूर्व आना होता है। आगे बढ़ते हुए, हम देखते हैं कि कर्तृ-क्रिया रचना के दो अन्य विशेष प्ररूप, **निषेधात्मक** (क्रियाविशेषण *not* सहित ; *John didn't run away*) तथा **अवधारक** (व्यतिरेकी अनुतान सहित : *John did /¡/ run away*) एक तुलनीय

प्रतिबंध को प्रकट करते हैं : इन प्ररूपों में भी विधेय क्रिया सदैव ही सहायक होती है।

अंगरेजी कर्तृ-क्रिया रचना में क्रम का अन्य विशेष प्ररूप **विशिष्ट प्रश्न, प्रश्न-वाचक अभिव्यक्ति** जैसेकि *who, when, with whom* में प्रकट होता है जो सदैव विशेष रूप-वर्ग के एक रूप के साथ प्रारंभ होती है (सिवाय इसके कि इसे कुछ क्रियाविशेषणों, समुच्चयबोधकों तथा रचना के लिए अनत्यावश्यक शब्दों के द्वारा पीछे लाया जा सकता है)। यदि प्रश्नवाचक अभिव्यक्ति कर्तृ है तो क्रम सामान्य होता है : *Who ran away ? Whose horses ran away ? Which horses ran away ?* किन्तु यदि ऐसा नहीं हो तो प्रश्नवाचक अभिव्यक्ति कर्तृ से पूर्व आती है तथा विधेय क्रिया, पुनः, सहायक होती है : *Why did John run away ? For what reason did John run away ?*

क्रम का अन्य प्ररूप इस तथ्य के आधार पर निर्मित होता है कि कुछ क्रिया-विशेषणात्मक अभिव्यक्तियाँ कर्तृ से पूर्व आ सकती हैं। (क) एक प्ररूप ऐसा है जिसमें बलाघातहीन *there* तथा विधेय क्रिया (बोलचाल की अंगरेजी में प्रायः *is, are, was, were*) दोनों कर्तृ से पहले आते हैं : *There are some apples in the pantry.* (औपचारिक रूप से प्रयोग की जाने वाली अंगरेजी में यह प्ररूप और अधिक विविध प्रकार का होता है : *There came a day when...; There has recently come to my notice...*) इसके अतिरिक्त (ख) क्रियाविशेषणात्मक अभिव्यक्तियों का एक विस्तृत उपवर्ग है जो कर्तृ तथा *there is* पदबंध—दोनों के पूर्व आ सकता है : *Then John stumbled ; Then there were some apples.* (ग) क्रियाविशेषणात्मक अभिव्यक्तियों का अन्य उपवर्ग कर्तृ से पूर्व आ सकता है किन्तु पदबंध *there is* से पूर्व नहीं : *Away ran John.* (घ) इतने पर भी क्रिया-विशेषणात्मक अभिव्यक्तियों का एक अन्य प्ररूप क्रम के मुख्य अभिलक्षण को अस्त-व्यस्त नहीं करता, किन्तु विधेय क्रिया से पूर्व आने में विशिष्ट रहता है : *John always stumbled.*

अर्थ के नगण्य भेदों के साथ सदृश क्रियाविशेषणात्मक अभिव्यक्तियाँ (*there is* प्ररूप के अतिरिक्त) विभिन्न स्थानों में आती हैं : *Yesterday our horses ran away : Our horses ran away yesterday ; Then John stumbled : John then stumbled.*

(३) एक तृतीय अभिलक्षण जो रचनाओं को प्रायः विशेषित करता है **आपरि-वर्तन** है : अभिव्यक्ति को तब आपरिवर्तित कहा जाता है जब किसी विशिष्ट रचना के अन्तर्गत उसका ध्वनिमिक रूप उस रूप से पृथक् हो जो उसमें विविक्त

रूप में होता है। अंगरेजी में, यह अभिलक्षण सदैव एक चतुर्थ अभिलक्षण **बलाघात परिवर्तन** के साथ संयुक्त हुआ प्रतीत होता है जो रूप की संहितात्मक एवं आघातात्मक विशिष्ट संरचना है। पदवंध *John's run away* में *has* /*haz*/ प्रतिस्थापित है /*z*/ द्वारा (आपरिवर्तन) तथा उसमें उस प्रबल बलाघात का अभाव है जो प्रत्येक स्वतन्त्र शब्द से संबद्ध होता है (बलाघात परिवर्तन)। आगे बढ़ते हुए ध्यान दीजिए कि आपरिवर्तन एवं बलाघात परिवर्तन का यह अभिलक्षण हमारी रचना के एक विशेष उपप्ररूप को पृथक् करता है: जब *has* कृदन्त से संयुक्त नहीं होता (अर्थात्, जब यह सहायक नहीं होता) तो यह दुर्बल नहीं होता: *John has the basket*. समानान्तर रूप, जो अर्थ में लगभग किंचित् अस्वाभाविक होते हैं, बिना आपरिवर्तन के होते हैं: *John has run away*; इसी प्रकार *don't* /dȯwnt/ की तुलना में *do not* /duw-not (देखिए)[१५२]/.

विन्यास के ये चार अभिलक्षण—चयन, क्रम, आपरिवर्तन एवं बलाघात परिवर्तन—किसी भी रचना के प्रधान अभिलक्षण हैं यद्यपि भिन्न भाषाओं में इनका प्रयोग भिन्न होता है तथा कुछ भाषाओं में अतिरिक्त अभिलक्षणों की नियोजना होती है जैसे कि वाक्यात्मक रचना के सदस्यों के रूप में विशेषक शब्द तथा प्रत्यय। हमारा सम्बन्धवाचक प्रत्यय /-ez, -z, -s/, जैसेकि *John's house* में, इस लक्षण के सदृश है किन्तु एक विशिष्ट रचना के अन्तर्गत पूर्ववर्ती रूप से निश्चिततः संयुक्त होने में भिन्न है। इस प्रकार एक प्रश्न के उत्तर में कोई इतना मात्र सुन सकता है *John's*, —*'s house* कदापि नहीं (तुलना करें, ४.१०)।

**५.४ वाक्यात्मक अर्थ :**—जिस प्रकार रूपप्रक्रियात्मक वर्गों (शब्द-भेदों) और संवर्गों को मात्र रूप के आधार पर समुचित रीति से वर्णित नहीं किया जा सकता (४.११) उसी प्रकार रचनाओं, स्थानों तथा वाक्यविन्यास के रूप-वर्गों को उनके अर्थ पर विचार-विमर्श अथवा किसी अन्य भाषा (जैसेकि लैटिन) के संदर्भ द्वारा नहीं बल्कि केवल उनके अभिज्ञेय अभिलक्षणों—अर्थात् उनके रूप तथा प्रकार्य के उल्लेख द्वारा ही परिभाषित किया जा सकता है।

तथापि, उनके अर्थ के विषय में हम कुछ जानना चाहते हैं। वास्तव में, जब हम किसी प्रकार पदबंधों के अर्थों को समरूप संहितात्मक तथा अनुतानात्मक अभिलक्षणों से प्रभेदित कर लेते हैं केवल तभी हम विभिन्न वाक्यात्मक प्ररूपों तथा रचनाओं का अभिज्ञान कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि हम पहले से ही अंगरेजी के विषय में कुछ नहीं जानते तो हमें यह समझने में कुछ देर लगेगी कि *John ran* तथा *John stumbled* पदबंध *John Brown* एवं *John Smith* पदबंधों से भिन्न प्ररूप तथा रचना के हैं। इसी प्रकार, हम एक ओर *fresh milk*, *hot*

*milk, sour milk* तथा दूसरी ओर *drink milk, fetch milk, heat milk* जैसे पदबंधों को प्रभेदित अथवा व्याख्यायित नहीं कर सकते जब तक कि हम, मान लीजिए कि अधीत लोग, यह न कहें कि पूर्ववर्ती प्ररूप में दूध के केवल भिन्न प्रकारों अथवा उसकी अवस्थाओं का नाम लिया गया है तथा परवर्ती प्ररूप में श्रोता को दूध के सम्वन्ध में कोई क्रिया करने के लिए कहा गया है। फिर भी, अर्थों को अवितथ अथवा सुविस्तृत रूप में निरूपित करना आवश्यक नहीं है; विभिन्न प्ररूपों को प्रभेदित करने के लिए उनके विषय में केवल पर्याप्त ज्ञान की ही हमें आवश्यकता है (तुलना करें, १.२, ४.१)। विभिन्न रचनाओं के अर्थ, स्थान एवं रूप-वर्ग कोई विशिष्ट वस्तुएँ नहीं हैं जिन्हें खुर्दबीन के नीचे रखकर जाँचा जा सके और वर्णित किया जा सके; वे रचना, स्थान अथवा रूप-वर्ग में घटित होने वाली सभी वास्तविक अभिव्यक्तियों के लिए सामान्य अर्थ के अभिलक्षण मात्र हैं। इस प्रकार के अभिलक्षण अनिवार्य रूप से अस्पष्ट होते हैं तथा सूक्ष्म रूप से एक भाषा से दूसरी भाषा में पृथक् होते हैं।

आइए, हम संक्षिप्ततः अंगरेजी कर्तृ-क्रिया रचना के अर्थ पर विचार करें। इसके सम्वन्ध में सबसे अधिक असाधारण वात इसकी सर्वसामान्यता है : यह है अंगरेजी का **बहुप्रचलित वाक्य प्ररूप**। किसी निश्चित उच्चार में, वह अभिव्यक्ति जो उच्चारण के किसी अन्य अंश के साथ रचना में नहीं होती **वाक्य** है। कुछ उच्चार केवल एक ही वाक्य के होते हैं : *Fire* ! अथवा *John ran away*; अन्य एक से अधिक वाक्य के होते हैं : *There was a fire last night. Our horses ran away*. अधिक सामान्य रूप में, वह अभिव्यक्ति जो एक उच्चार में एक वाक्य के रूप में प्रकट होती है अन्य उच्चारों में दीर्घतर वाक्यों के अंश रूप में प्रकट होगी : *When John ran away, I followed him*; *We are late because our horses stumbled* क्योंकि, अंगरेजी में, वह वाक्य जो एक कर्तृ-क्रिया पद-बंध (अथवा समन्वय में अनेक पदवंधों, देखिए ५.५) से निर्मित होता है उसका अर्थ का एक अभिलक्षण होता है जिसे हम मोटे हिसाब से 'पूर्ण उच्चार' के रूप में अभिव्यक्त कर सकते हैं : यह **पूर्ण वाक्य** के प्ररूपों में से एक होता है। इसकी **असंपूर्ण वाक्यों** से तुलना कीजिए जिनमें यह अर्थ नहीं होता : विस्मयादिबोधक, जैसेकि *Fire* ! तथा उत्तर, इंगित एवं नामकरण, जैसेकि क्रमशः *Four o'clock, If I can, Mr. Smith—Mr. Jones*. अंगरेजी में पूर्ण वाक्य के केवल दो अन्य प्ररूप हैं : **आदेश,** जैसेकि *Drink some milk* अथवा *Don't run away* तथा **अन्वित विन्यासों** का आर्ष प्ररूप, जैसेकि *The more the merrier*.

अंगरेजी कर्तृ-क्रिया पदवंधों के अर्थ का अन्य अभिलक्षण वह है जिसके लिए

हमने रचना को नामोद्दिष्ट किया है : कोई पात्र किसी कार्य को सम्पन्न करता है (अथवा किसी कार्य को भोगता है अथवा किसी स्थिति में है या उसमें पड़ता है आदि): *John ran away, got chased away, was scared, got scared, is tired; Pike's Peak is high.* इस सम्बन्ध में भाषाएँ अधिकतया भिन्न होती हैं; उदाहरण के लिए, लैटिन में कर्तृ-क्रिया रचना (*pater amat 'the father loves'*) तथा भोक्तृ-क्रिया रचना (*pater amātur 'the father is loved'*) दोनों होती हैं। ये दो रचनाएँ **विषेयन** कही जा सकती हैं जो या तो **कर्तृवाचक** होती हैं या **कर्मणि**। अर्थ में, लैटिन कर्मणियों के निकटतम अंगरेजी समानार्थी कुछ विशेष प्ररूपों की कर्तृ-क्रिया अभिव्यक्तियाँ हैं (*John got chased away, was loved, was being beaten up* आदि)। ध्यान रखिए कि प्रत्येक भाषा के रूपों को उनकी अपनी योग्यताओं, सदैव मूर्त्त (प्रकार्यात्मक अभिलक्षणों को अन्तर्विष्ट करते हुए) रूपात्मक अभिलक्षणों के आधार पर वर्गीकृत किया जाना है। इस प्रकार हम भूतकालिक कृदन्त द्वारा संलग्न क्रिया *be* की अंगरेजी रचना को चुन सकते हैं (*is built, was built, is being built, has been built* आदि) और उसे कर्मणि रचना कह सकते हैं किन्तु हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि यह अंगरेजी कर्मणि वाक्यविचार की विषयवस्तु है, लैटिन कर्मणि के समान एक रूपप्रक्रियात्मक संवर्ग नहीं है तथा *is built* अथवा कोई अन्य सजातीय पदबन्ध क्रिया-धन-भूतकालिक कृदन्त (*has built, got built*) से निर्मित पदबंधों के अनेक प्ररूपों में से केवल एक है। औपचारिक रूप से, अंगरेजी *is* (*loved*) को, ठीक-ठीक *is* (*lazy*) के समान, *builds* (*a house*) अथवा *has* (*built a house*) के साथ वर्गीकृत किया जाना चाहिए।

अर्थ से घनिष्ठ रूप से संबद्ध है घटकों का **क्रम**। यदि कोई विदेशी पर्यवेक्षक *Our horses ran away* पदबंध को विश्लेषित करने का प्रयास करता हुआ इसे *our* तथा *horses ran away* घटकों में विघटित करता है तो वह अंगरेजी व्याकरण के सुव्यवस्थित वर्णन की दिशा में अधिक प्रगति नहीं करेगा। उसे यह सीखना पड़ेगा कि अभिव्यक्ति के आवर्तक प्ररूप हैं *our horses* एवं *ran away* तथा पदबंध के विभाजन की यह रीति *Our horses stumbled, John ran away, John stumbled* जैसे पदबंधों से समानान्तरित है। संक्षेप में, हमें पदबंध का विश्लेषण सदैव उसके **सन्निहित घटकों** में करना चाहिए (देखिए, ४.१०)।

यदि पदबंध के सन्निहित घटकों में से एक घटक आनुक्रमिक रूप में पदबंध हो तो निश्चय ही उसकी अपनी रचना होगी तथा उसे सदृश रूप में उसके अपने सन्निहित घटकों में विश्लेषित किया जाएगा तथा इसी प्रकार आगे भी जब तक कि अंतिम रूप से सूक्ष्मतम घटक पदबंध को शब्दों में विघटित न कर दिया जाए। इस स्थान

पर हमें वाक्यात्मक विश्लेषण के लक्ष्य तक पहुँच जाना चाहिए; अन्य कोई भी अतिरिक्त विश्लेषण (जैसेकि *stumbled* का *stumble* एवं *-d* में) रूपप्रक्रिया से सम्बद्ध होगा। इस प्रकार, वाक्यविन्यास में, शब्द किसी भी पदबंध के **चरम घटक** होते हैं।

**५ ५. पदबंधों का प्रकार्य :**—अंगरेजी कर्तृ-क्रिया पदबंधों की संरचना से हट कर अब हम संक्षेप में उनके प्रकार्य पर विचार कर सकते हैं। यह सुस्पष्ट है कि किसी भी वाक्यात्मक रचना के दो पक्ष होते हैं : एक ओर, पदबंध एक निश्चित रीति में गढ़े हुए होते हैं तथा दूसरी ओर वे दीर्घतर पदबंधों में निश्चित स्थानों को पूरित कर सकते हैं।

यदि किसी पदबंध का प्रकार्य वही है जैसाकि उसके सन्निहित घटकों में से एक अथवा अधिक का तो वह **अंतःकेन्द्रिक पदबंध** है तथा उसकी **रचना अंतःकेन्द्रिक** होती है। इस प्रकार, *fresh milk* के वैसे ही प्रकार्य हैं जैसे *milk* के, जैसेकि हम *Bring me some milk, Drink this milk, Boil it in milk* कह सकते हैं उसी प्रकार हम *Bring me some fresh milk, Drink this fresh milk, Boil it in fresh milk* आदि भी कह सकते हैं। वह घटक (यहाँ पर *milk*) जिसका प्रकार्य वैसा ही होता है जैसाकि पदबंध (यहाँ *fresh milk*) का तो वह **शीर्ष** होता है तथा अन्य घटक (यहाँ *fresh*) **गुणवाचक** है। इस प्रकार की अंतःकेन्द्रिक रचना, जिसका शीर्ष केवल एक ही हो, **गुणवाचक** अथवा **अधीन** रचना होती है।

अन्य अंतःकेन्द्रिक रचनाओं में दो अथवा अधिक शीर्ष होते हैं किन्तु गुणवाचक कोई भी नहीं : *bread and butter*; *coffee, tea or milk*. ये **समानाधिकृत** रचनाएँ हैं; ये अनेक शीर्षों तथा प्रायः एक अथवा अधिक **समन्वयकारियों**, जैसेकि *and, or* से निर्मित होती हैं।

यदि एक दीर्घतर पदबंध में अंतःकेन्द्रिक रचना के अनेक स्तर हैं तो संरचना के ठीक अंत में एक अथवा अधिक शीर्ष होंगे। इस प्रकार *some very nice fresh milk* में पहले (सन्निहित घटकों के सिद्धान्त के अनुसार) गुणवाचक *some* तथा शीर्ष *very nice fresh milk* आता है; फिर हम गुणवाचक *very nice* (जिसकी संरचना से यहाँ हमारा सम्बन्ध नहीं है, किन्तु जो शीर्ष के रूप में *nice* के साथ सुस्पष्ट रूप से गुणवाचक है) तथा शीर्ष *fresh milk* को पाते हैं; और फिर इसमें गुणवाचक *fresh* तथा समस्त शीर्षों के शीर्ष *milk* को देखते हैं। यह चरम शीर्ष, जिसका प्रकार्य वैसा ही है जैसाकि संपूर्ण पदबंध का, पदबंध का **केन्द्र** कहा जा सकता है। इसी प्रकार, *wholesome bread and fresh butter* में केन्द्र हैं *bread* और *butter*.

पदबंध *this milk* पुनः अंतःकेन्द्रिक एवं गुणवाचक है क्योंकि, कुल मिलाकर, इसका वही प्रकार्य है जो घटक *milk* का। इस स्थिति में, फिर भी, एक अंतर है। शब्द *milk* (तथा समान रूप से पदबंध *fresh milk*) से पूर्व हम अनेक विविध विशेषण विशेषकों को रख सकते हैं, जैसेकि *nice* अथवा *the* या *some*, किन्तु हम पदबंध *this milk* (अथवा पदबंध *this fresh milk*) के साथ ऐसा नहीं कर सकते। हम मान लेते हैं कि एक गुणवाचक के रूप में शब्द *this* रचना को संवृत करता है: यह परिणामी पदबंध के प्रकार्य को प्रतिबंधित करता है, क्योंकि यह पदबंध उसी प्रकार की, नामतः गुणवाचक *all* (*all this milk, all this fresh-milk*) के साथ, केवल एक और रचना के अन्तर्गत आ सकता है। परवर्ती गुण-वाचक रचना को पूर्णतः संवृत कर देता है। फिर भी, अवरोधों की स्थिति में भी, जब प्रधान प्रकार्य अपरिवर्तित रहते हैं, हम रचना का उल्लेख अंतःकेन्द्रिक के रूप में करते हैं; इस प्रकार *this milk* इतने पर भी *milk* के समान एक सत्त्व-वाचक अभिव्यक्ति है।

यदि किसी पदबंध का प्रकार्य वैसा ही नहीं है जैसाकि उसके किसी सन्निहित घटक का होता है तो वह **बहिःकेन्द्रिक पदबंध** होता है तथा उसकी **रचना बहिःकेन्द्रिक** होती है। उदाहरण के लिए पूर्वसर्ग-घन-कर्म की अंगरेजी रचना, जैसेकि *for John, of our horses, in fresh milk,* बहिःकेन्द्रिक है: ये पदबंध पूर्वसर्ग नहीं हैं तथा सत्त्ववाचक अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं; ये उलटे संज्ञाओं के (*a present for John*), क्रियाओं के (*wait for John*) तथा विशेषणों के (*good for John*) गुणवाचकों के रूप में कार्य करते हैं। बहिःकेन्द्रिक रचना में न तो शीर्ष ही होता है न ही गुणवाचक।

इससे हमें अपने कर्तृ-क्रिया पदबंधों का ध्यान आता है। ये सुस्पष्ट रूप से बहिःकेन्द्रिक हैं क्योंकि अपने सन्निहित घटकों से भिन्न ये बहुप्रचलित पूर्ण वाक्य प्ररूप के रूप में कार्य करते हैं और अधीनतासूचक समुच्चयबोधकों (*when John ran away*) तथा अधीन उपवाक्यों (*Just as we reached the hill, our horses ran away*) के साथ रचना में आते हैं।

**५.६. वाक्यगत रूप-वर्ग :**—जब हम भाषा की समस्त अभिलक्षक रचनाओं को विश्लेषित कर चुके होते हैं तथा अनेक अभिलक्षक पदबंधों के चरम घटकों तक पहुँच चुके होते हैं तो हमें शब्दों के अनेक रूप-वर्गों की प्राप्ति होती है। इस प्रकार हमारी सत्त्ववाचक अभिव्यक्तियों के केन्द्र विविध प्ररूपों के **सत्त्ववाचकों** (*John, horses, she*) के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं, हमारी विधेय क्रिया अभिव्यक्तियों की केन्द्र **विधेय क्रियाएँ** (*ran, stumbled, is*) होती हैं; अपनी समानाधिकृत

अभिव्यक्तियों से हमें **समन्वयकारियों** (*and, or*) की प्राप्ति होती है तथा अपने बहि:केन्द्रिक पदबंधों से हम **पूर्वसर्गों** (*for, of, in*) तथा **अधीनतासूचक समुच्चय-बोधकों** (*when, if, as*) को प्राप्त करते हैं।

शब्दों के ये दीर्घतर रूप-वर्ग **शब्द-भेद** कहलाते हैं; तुलना करें, ४.६.। शब्द-भेदों की संख्या तथा परिभाषा, जिसे हम किसी भाषा के लिए स्थापित करते हैं उन रचनाओं पर निर्भर करेगी जिन्हें हम चुनते हैं। यदि हम अंगरेजी में कर्तृ-क्रिया रचना से प्रारंभ करते हैं तो हमें विधेय क्रियाएँ शब्दों के एक दीर्घ एवं महत्त्वपूर्ण रूप-वर्ग के रूप में प्राप्त होती हैं। अंगरेजी व्याकरण की पारंपरिक पद्धति में व्यक्ति अन्य रचनाओं तथा विशेषकर विभक्तिपरक रूपावलियों पर भी विचार करता है तथा उस पद्धति में उसे **क्रियाओं** की एक शब्द-भेद के रूप में प्राप्ति होती है। इसमें केवल विधेय क्रियाएँ (*ran, as, are, was*) ही नहीं बल्कि तुमर्थ तथा कृदन्त (*running, be, been*) भी अन्तर्विष्ट होते हैं जो कार्य स्थिति में केन्द्र का कार्य नहीं करते। हम देखेंगे कि सत्त्ववाचक, जो कर्तृ स्थिति में केन्द्रों के रूप में कार्य करते हैं, लघुतर रूपवर्गों (संज्ञाओं, सर्वनामों) में विभाजित किए जा सकते हैं।

**५.७. रूप-वर्ग का विश्लेषण :—** अंगरेजी वाक्य-विन्यास के अपने प्रतिदर्श को हम उन अभिव्यक्तियों के, जो कर्तृ-क्रिया रचना में कर्तृों के—अर्थात् कर्ता सत्त्व-वाचक अभिव्यक्तियों के—रूप में कार्य करती हैं, संक्षिप्त परीक्षण द्वारा पूर्ण करेंगे।

**(१) सर्वसमता :—** हम देखते हैं कि चयन का एक अभिलक्षण है जिसके द्वारा विधेय क्रियाओं के कुछ प्ररूप कुछ कर्तृों को अभ्यर्पित किए जाते हैं : ***I am; he (John, the house) is; we (you, they, John and Bill, the houses) are.*** यहाँ घटकों में से एक, विधेय क्रिया, अन्य घटक के वर्ग, कर्तृ अभिव्यक्ति के अनुसार परिवर्तित हो जाती है। चयन के इस प्रकार को **सर्वसमता** कहते हैं।

इस प्रकार कर्त्ता सत्त्ववाचक अभिव्यक्तियों में स्थापित किए गए वर्ग हैं, प्रथमत: शब्द *I*, जो अकेले ही *am* के साथ प्रयुक्त होता है; द्वितीयत: शब्द *he, she, it*, कुछ अन्य सर्वनाम तथा वे समस्त संज्ञाएँ जो अपने विभक्तिपरक रूप में एकवचन हैं; तथा तृतीयत: शब्द *we, you, they*, कुछ अन्य सर्वनाम तथा वे समस्त संज्ञाएँ जो अपने विभक्तिपरक रूप में बहुवचन हैं व इनके अतिरिक्त समन्वय-कारी *and* सहित एकवचन संज्ञाओं के समानाधिकृत पदबंध। ध्यान दीजिए कि यह वर्गीकरण उन संज्ञाओं में एकवचन तथा बहुवचन के भेद-स्थापन के लिए हमें समर्थ करता है जिनका आधार केवल शून्य आपरिवर्तन का विषय है (४.५) :

*The sheep is running : The sheep are running.*

(२) **उपवर्ग :** – कर्त्ता सत्त्ववाचक अभिव्यक्तियाँ, एक शीर्ष तथा एक अथवा अधिक गुणवाचकों सहित, प्रायः अधीन पदबंध होती हैं (*our horses, poor old John, rats in the cellar, milk which is no longer fresh*)। इनमें से एक उस प्ररूप का परीक्षण करते हुए जिसमें गुणवाचक शीर्ष से पूर्व आते हैं (*our horses, poor old John*), हम देखते हैं कि कुछ शब्दों से पूर्व विशेषक कभी नहीं आते : *I, we, you, he, she, it, they, who, what, somebody, something* आदि)। ये सत्त्ववाचकों के एक उपवर्ग से संबद्ध होते हैं जिन्हें **सर्वनाम** कहा जाता है। (सर्वनाम रचना की किन्हीं अन्य विशेषताओं के द्वारा भी परिभाषित किए जा सकते हैं तथा इसके अतिरिक्त उनमें से कुछ में अनियमित विभक्ति भी होती है।)

*To* के पश्चात् आने वाले सर्वनामों तथा **भावार्थक अभिव्यक्तियों** (*to scold them would be useless*) से पृथक्, हमारी कर्त्ता सत्त्ववाचक अभिव्यक्तियों के केन्द्र **संज्ञाओं** के रूप-वर्ग को संघटित करते हैं। कुछ एकवचन संज्ञाओं से पूर्व सदैव ही कम-से-कम एक गुणवाचक आता है : *house, apple, boy*; तथा गुणवाचक अथवा उनमें से एक सदैव निम्नलिखित में से एक होगा :—

(क) *the, this, that; any, no, some, what, which, whatever, whichever*; अथवा एक सम्बन्धवाचक अभिव्यक्ति (*John's, my, our*);

(ख) *a* अथवा *an, each, either, every, neither, one.*

ये गुणवाचक उसी रचना में अधिकांश अन्यों से पूर्व आते हैं (*the big house, any fresh milk, John's old mother, a good boy*).

इस प्रकार हमें उन **विशेषणों**, जो संज्ञाओं से पूर्व गुणवाचकों के रूप में आते हैं, के एक वर्ग तथा उनमें **निर्धारकों** के एक उपवर्ग, ऊपर दिए गए (क) तथा (ख) की अभिव्यक्तियों, की प्राप्ति होती है। संज्ञाओं के साथ विशेषणों के व्यवहार को देखते हुए हम संज्ञाओं में **बद्ध संज्ञाओं** के एक उपवर्ग की स्थापना में समर्थ हैं जिनके एकवचन रूप में उनसे पूर्व सदैव ही निर्धारक की स्थिति होती है। संज्ञाओं का एक अन्य उपवर्ग इस तथ्य के आधार पर निरूपित किया जाता है कि एकवचन में वे या तो किसी निर्धारक के अभाव में या वर्ग क के किसी निर्धारक के सद्भाव में घटित होती हैं : *milk, fresh milk, the milk* (किन्तु *a milk* कभी नहीं); ये **संहतिवाचक संज्ञाएँ** हैं। अन्य संज्ञाएँ वर्ग क एवं वर्ग ख— दोनों के निर्धारकों का ग्रहण करती हैं किन्तु एकवचन में निर्धारकों के अभाव में भी घटित होती हैं : *kindness, this kindness, a kindness*; ये **भाववाचक संज्ञाएँ** हैं। कुछ और भी अन्य संज्ञाएँ साधारणतः किसी भी निर्धारक का किंचित् ग्रहण नहीं करतीं :

*John, Chicago, December*; ये **व्यक्तिवाचक संज्ञाएं** हैं। (यह ध्यान दें कि बद्ध संज्ञाओं, संहतिवाचक संज्ञाओं, भाववाचक संज्ञाओं तथा व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के चार उपवर्ग किस प्रकार से उनके अर्थों के किसी भी संदर्भ के अभाव में निरूपित किए गए हैं।)

(३) **नियमन :—क्रिया-कर्म** रचना में क्रियाओं के कर्मों (*hit John, drink this milk*) तथा पूर्वसर्गों के कर्मों (*for John, in milk*) के समान कुछ सर्वनामों का एक विशिष्ट विभक्तिपरक रूप होता है : *They saw me, us, him, her, them; Whom did they see* ? यह कसौटी **कर्मकारक सत्त्ववाचक अभिव्यक्तियों** के रूप-वर्ग को निरूपित करती है। कर्त्ता एवं कर्मकारक सत्त्ववाचक अभिव्यक्तियाँ एकत्र रूप में **सत्त्ववाचक अभिव्यक्तियों** के वर्ग को संघटित करती हैं। देखें कि दोनों के मध्य का अन्तर पुनः चयन की एक सामग्री है : चुनाव उस स्थान के अनुसार किया जाता है जिसमें कि रूप प्रकट होते हैं (कर्तृ-क्रिया रचना में तथा कुछ अन्यों में कर्त्ता कर्तृ स्थान के लिए तथा क्रिया-कर्म रचना में कर्मकारक कर्म स्थान के लिए)। इस प्रकार के चुनाव को **नियमन** कहा जाता है : किसी रचना में कुछ घटक अन्य घटकों के रूप का नियमन करने वाले कहे जाते हैं। (अंगरेजी में, सर्वनामों में से केवल कुछ, किन्तु संज्ञाओं में से कोई भी नहीं, कर्त्ता एवं कर्मकारक अभिव्यक्तियों के मध्य औपचारिक रूप से भेद-स्थापन करते हैं।)

**विधेय पूरक** के स्थान में परिनिष्ठित अंगरेजी के अनेक वक्ता सर्वनाम *I* के दोनों में से प्रत्येक रूप का *It's I* अथवा *It's me* कहते हुए समान स्वाभाविक रूप में प्रयोग करते हैं; बहुवचन में *It's us* रूप इनमें से अधिकांश वक्ताओं को *It's we* की अपेक्षा प्रकृत प्रतीत होगा। अन्य सर्वनामों के विषय में, इन्हीं वक्ताओं में से अनेक *It's he* (*she, they*) कहते हुए, अथवा कम-से-कम *It's him* (*her, them*) रूप की उपेक्षा करते हुए, विधेय पूरक के स्थान में कर्त्ता रूप का प्रयोग करेंगे।

परिनिष्ठित अमेरिकी अंगरेजी के कुछ वक्ताओं को अन्तर्विष्ट न करते हुए, अन्य अंगरेजी बोलियों के वक्ता *who* के अतिरिक्त समस्त सर्वनामो के कर्मकारक रूपों का व्यवहार विधेय पूरक के रूप में करते हैं।

ये अन्तिम उदाहरण एक जटिल भाषाशास्त्रीय स्थिति के दृष्टान्त हैं जो प्रायः रूढ़ व्याकरणिक प्रशिक्षण-प्राप्त लोगों को व्यथित करते हैं। क्योंकि इस प्रकार का प्रशिक्षण 'युक्तियुक्त' विचारों को अन्तर्विष्ट करता है, अतः लोग जानना चाहते हैं कि 'यथातथ्य' क्या है तथा परिशुद्धता के निर्धारणों को समर्थित करने के लिए 'युक्तियुक्त' अथवा 'बुद्धिसंगत' स्पष्टीकरण चाहते हैं। यह अधिक दृढ़ रूप से बल

देकर प्रतिपादित नहीं किया जा सकता कि प्रत्येक भाषा में जटिलताएँ एवं अनियमितताएँ होती हैं तथा तार्किक युक्तियाँ—किसी विशिष्ट प्रयोग को चाहे समर्थित अथवा निराकृत करने के लिए—भाषाविज्ञान-सम्बन्धी तथ्यों के अध्ययन में कुछ भी संगति नहीं रखती हैं। व्यावहारिक उद्देश्यों तथा वैज्ञानिक विश्लेषण—दोनों के लिए, भाषा वह विधि है जिसमें लोग परस्पर बातचीत करते हैं, वह विधि नहीं है जिसमें कोई यह सोचे कि उन्हें बातचीत करनी चाहिए।

जब पर्यवेक्षक एक भाषा की ध्वनिमिक संरचना का निर्धारण तथा उसकी रूपप्रक्रियात्मक तथा वाक्यात्मक दोनों प्रकार की समस्त रचनाओं का वर्गीकरण कर चुका हो तो परिणामी विवरण, सरलतम संभव रीति में वाक्-समुदाय के समस्त उच्चारों का लेखा-जोखा करने वाले तथा विद्यार्थियों एवं निपुण भाषाविदों के प्रयोग के लिए समानरूप से स्पष्टतम सम्भव संक्षेप प्रस्तुत करने वाले, भाषा के एक परिशुद्ध तथा व्यवहार्य व्याकरण के रूप में होगा।

# पाठ्य सामग्री

पुस्तकों एवं लेखों की निम्नलिखित तालिका से भाषाशास्त्र की ग्रन्थ-सूची का अभिप्राय नहीं है। यह उस सामग्री का चयन है जो उस व्यक्ति के लिए प्रामाणिक एवं तात्कालिक रूप से प्रयोज्य होगी जो इस पुस्तिका में विवेचित विषयों के सम्बन्ध में और अधिक जानने की आकांक्षा करता है तथा अवधानपूर्वक अध्ययन करने का इच्छुक है। पाठक को उसके पुस्तक के चुनाव में निर्देश करने के लिए वर्ग-कोष्ठकों में विवरणात्मक टिप्पणियाँ प्रस्तुत कर दी गई हैं।

## अध्याय १. भाषा और भाषाशास्त्र

Leonard Bloomfield, *Language*, अध्याय १-४, ६, २८ (न्यूयॉर्क, १९३३)। [भाषाविज्ञान का उत्कृष्ट परिचय; स्वच्छ, सम्यक् एवं विश्वस्त किन्तु जटिल।]

Leonard Bloomfield, *Linguistic Aspects of Science* (इंटरनेशनल एंसाइक्लोपीडिया ऑव यूनीफ़ाइड् साइंस 14); शिकागो, १९३९। [भाषाशास्त्रीय व्यवहार के विशेष रूप की दृष्टि में विज्ञान की व्याख्या; वैज्ञानिक समस्याओं के सम्बन्ध में सन्तुलित उपागम।]

Leonard Bloomfield, 'Philosophical Aspects of Language,' *Studies in the History of Culture* 178-84 (Menasha, Wis, 1942). [मानव-समाज में भाषा की भूमिका की प्राथमिक विवृति।]

Franz Boas, *Handbook of American Indian Languages*, भाग १ (Smithsonian Institution, Bureau of American Ethnology, Bull. 40); वाशिंगटन, १९११। [अलिखित भाषाओं के विश्लेषण के संदर्भ में भाषाशास्त्रीय पद्धति का परिचय।]

Edward Sapir, *Language*, अध्याय १, १०, ११ (न्यूयॉर्क, १९२१ व १९३९)। [शिक्षित सामान्य व्यक्ति के लिए अनेक अन्य भाषाओं के ज्ञान पर आधृत सप्रतिभ अप्राविधिक विवेचन ।]

Edward Sapir, 'The Status of Linguistics as a Science,' *Language* ५.२०७-१४ (१९२९) । [अन्य विज्ञानों से भाषाविज्ञान के सम्बन्ध तथा साधारण रूप से मानव-व्यवहार की व्याख्या के लिए इसके महत्त्व पर विचार ।]

Albert P. Weiss, 'Linguistics and Psychology', *Language* १.५२-७ (१९२५) । [भाषा का यथार्थवादी मनोविज्ञान; इसी लेखक की पुस्तक *A Theoretical Basis of Human Behavior* (१९२९) में विस्तार से विवेचित ।]

Benjamin Lee Whorf, 'Science and Linguistics,' *The Technology Review* (Massachusetts Institute of Technology), Vol. 42 (1940); 'Linguistics as an Exact Science,' वही, Vol. 43 (1940) ; 'Language and Logic,' वही, Vol. 43 (1941) । [भाषाविज्ञान की कुछ पद्धतियों एवं परिणामों का सुस्पष्ट तथा प्रेरक सामान्यीकरण ।]

## अध्याय २. ध्वनिविज्ञान

Otto Jespersen, *Lehrbuch der Phonetik*, द्वितीय संस्करण, लीप्जिग एवं बर्लिन, १९१३ व पश्चात् । [सामान्य ध्वनिविज्ञान का उत्कृष्ट वैज्ञानिक अभिगम; स्वच्छ तथा सुव्यवस्थित; स्पष्ट आरेख ।]

Daniel Jones, *An Outline of English Phonetics*, छठा संस्करण, न्यूयॉर्क, १९४० । [ब्रिटिश अंगरेजी का विवरण, किन्तु सामान्य ध्वनिविज्ञान के लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री के प्राचुर्य तथा अनेक श्रेष्ठ आरेखों सहित ।]

H. Klinghardt, *Artikulations- und Horubungen*,[५३] द्वितीय संस्करण, Cöthen, १९१४ । [विषय-प्रवेश करने वाले व्यक्ति के लिए उत्तम परिचायक पुस्तिका; उच्चारणावयवों का सुविस्तृत एवं सुबोध ज्ञापन, उपयोगी अभ्यासों सहित ।]

Hans Kurath तथा अन्य लेखकगण, *Handbook of the Linguistic Geography of New England*, अध्याय ४ (Providence, 1939) । [बोलीविज्ञान के क्षेत्र में प्रभाववादी अंकन के लिए प्रतिवेदन तथा न्यू इंग्लैंड की भाषा-एटलस की ध्वन्यात्मक वर्णमाला का विवरण ।]

G. Noel-Armfield,[१५४] *General Phonetics*, चतुर्थ संस्करण, कैम्ब्रिज, १६३१। [एक निचले दर्जे की पुस्तक, किन्तु सम्पूर्ण क्षेत्र के प्रतिपादन का प्रयास करने वाली अंगरेजी भाषा में एक अकेली।]

Henry Sweet, *The Sounds of English*, द्वितीय संस्करण, ऑक्सफ़ोर्ड, १६१०। [प्रांजल एवं विवेकपूर्ण उत्कृष्ट कृति; संक्षिप्त किन्तु उत्तम। इसी लेखक की *A Primer of Phonetics* (तृतीय संस्करण, १६०६) पुस्तक भी अनुशंसित है।]

D. Westermann तथा Ida C. Ward, *Practical Phonetics for Students of African Languages*, लन्दन, १६३३। [सामान्य क्षेत्र का अपवादस्वरूप उपयोगी सर्वेक्षण; विदेशागत ध्वनियों के उत्तम विवरण तथा महत्त्वपूर्ण आरेखों सहित।]

## अध्याय ३. ध्वनिमविज्ञान

Leonard Bloomfield, *Language*, अध्याय ५-८ (न्यूयॉर्क, १६३३)। [विषय का पुनः उत्कृष्ट परिचय; अभिगम, परिभाषा तथा पारिभाषिक शब्दावली के कुछ ब्यौरों में प्रस्तुत पुस्तिका से भिन्न।]

Edward Sapir, 'Sound Patterns in Language,' *Language* १.३७-५१ (१६२५)। [अप्राविधिक शब्दावली में ध्वनिमिक सिद्धान्त का शास्त्रीय विवरण; ध्वनिमिक अध्ययन की उपयोगिता के ज्ञान के लिए आधार-ग्रन्थ।]

Morris Swadesh, 'The Phonemic Principle,' *Language*, १०.११७-२६ (१६३४)। [सामान्य व्याख्या; यद्यपि प्रस्तुत पुस्तिका के प्रतिपादन से अनेक सम्बन्धों में भिन्न किन्तु अपनी स्पष्टता के लिए अनुशंसित।]

Morris Swadesh, 'The Phonemic Interpretation of Long Consonants,' *Language* १३.१-१० (१६३७)। [ध्वनिमिक वर्गीकरण में अन्तर्विष्ट मूल सिद्धान्तों के उद्घाटन के रूप में विशिष्ट समस्या का विवेचन।]

George L. Trager तथा Bernard Bloch, 'The Syllabic Phonemes of English,' *Language* १७.२२३-४६ (१६४१)। [प्रस्तुत पुस्तिका में ३.७ के अन्तर्गत किए गए अंगरेजी के ध्वनिमिक विश्लेषण के सम्बन्ध में तर्क-वितर्क; निबंध की प्रथम एवं चतुर्थ पादटिप्पणियों में अतिरिक्त ग्रन्थ-सूची।]

W.F. Twaddell, 'Phonemics,' *Monatshefte fur deutschen Unterricht*[१५५] (Madison, Wis.) ३४.२६२-८ (१६४२)। [सरलीकृत व्याख्या; यथार्थ पद्धतियों पर अपने आग्रह के कारण महत्त्वपूर्ण।]

## अध्याय ४. रूपप्रक्रिया अध्याय ५. वाक्यविचार

Leonard Bloomfield, *Language*, अध्याय १०-१६ (न्यूयॉर्क, १९३३)। [व्याकरणिक विश्लेषण की प्रविधियों का सम्यक् परिचय; पाठ यद्यपि कठिन किन्तु किसी अन्य विवेचन से कहीं अधिक लाभप्रद।]

Charles Carpenter Fries, *American English Grammar*; न्यूयॉर्क तथा लन्दन, १९४०। [परम्परागत दृष्टिकोण के पूर्वग्रह से मुक्त सुपरिचित भाषा के व्याकरण का वाक्-तथ्यों के वस्तुनिष्ठ वर्गीकरण के रूप में प्रस्तुतीकरण करने वाला आदर्श निरूपण; एक चित्ताकर्षक ग्रन्थ।]

Zellig S. Harris, 'Morpheme Alternants in Linguistic Analysis,' *Language* १८.१६९-८० (१९४२)। [भाषा की रूपप्रक्रिया का उसके स्वनिमविज्ञान के ही समान सुव्यवस्थित एवं सुगम रीति से प्रतिपादन करने की प्रविधि; विचारोत्तेजक किन्तु जटिल।]

Otto Jespersen, *Analytic Syntax*; कोपेनहेगेन, १९३७। [वाक्यविन्यास का योजनाबद्ध प्रतिपादन, समस्त प्रकार की रचनाओं के सरलीकृत सूत्रों सहित; स्पष्ट किन्तु कुछ सतही एवं अंगरेजी से मूलतः भिन्न संरचना वाली भाषाओं के लिए कठिनता से प्रयोज्य।]

Otto Jespersen, *The Philosophy of Grammar*; लन्दन तथा न्यूयॉर्क, १९२४ तथा पश्चात्। [निरपवाद रूप से प्रेरणादायक लेखक द्वारा अनेक भाषाओं में किया गया व्याकरणिक संवर्गों का सर्वेक्षण।]

Edward Sapir, *Language*, अध्याय ४-६ (न्यूयॉर्क, १९२१ तथा १९३९)। [समस्त भाषाविदों में महानतम कोटि के एक लेखक द्वारा व्याकरणिक प्रक्रमों तथा संवर्गों की सुस्पष्ट विवृति।]

# [एक आवश्यक टिप्पणी]

[‘आउटलाइन्स ऑफ़ लिंग्विस्टिक एनेलिसिस’ के मूल पाठ का हिन्दी अनुवाद यहाँ समाप्त हो जाता है। आगे के चार पृष्ठों (१२५-१२८) पर सन्दर्भ-संकेत दिए गए हैं जो मूल पाठ में निर्दिष्ट की गई सन्दर्भ-संख्याओं के क्रम के अनुसार हैं और इनमें उन विभिन्न अक्षरों, शब्दों अथवा वाक्यों को उनके मूल स्वरूप में अंकित किया गया है जिन्हें हिन्दी में उपयुक्त टाइप के उपलब्ध न रहने के कारण हिन्दी अनुवाद में अविकल रूप से प्रस्तुत नहीं किया जा सका था। पृष्ठ-संख्या १२९ से प्रारंभ ‘परिशिष्ट’ के अन्तर्गत ‘पारिभाषिक शब्दावली’, जैसाकि इस पुस्तक का कोई भी पाठक समझ ही लेगा, मूल पुस्तक का अंग नहीं है और इसके प्रस्तुतीकरण के मूल में दृष्टिकोण यही है कि हिन्दी के पाठक को यह सूचना पहुँच सके कि उसकी अपनी भाषा में भाषाविज्ञान से संबद्ध किस प्रकार की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग और मानकीकरण हो रहा है। किन्तु यहाँ केवल वही पारिभाषिक शब्दावली प्रस्तुत की गई है जिसका इस पुस्तक में व्यवहार हुआ है। शब्दावली का चुनाव मुख्यतः भारत सरकार के शिक्षा-मंत्रालय के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के स्थायी आयोग द्वारा प्रकाशित ‘मानविकी-शब्दावली—V, भाषाविज्ञान’ (संस्करण १९६९) से किया गया है। किन्तु कुछ स्थल असहमति के भी हैं और वहाँ डॉ॰ कामिल बुल्के तथा डॉ॰ हरदेव बाहरी के अंगरेजी-हिन्दी कोशों का आश्रय लिया गया है। इन सभी के प्रति कृतज्ञ।—संपादक]

# सन्दर्भ-संकेत

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | bête | २३. | [ɨ, ɛ] |
| २. | [ɛ] | २४. | [ɪ^] |
| ३. | été | २५. | aérer |
| ४. | [i, e, ɛ, a] | २६. | [ɛɪ̯, aʊ̯, ae̯] |
| ५. | kühl | २७. | [gʊæt] |
| ६. | [ü] | २८. | [æ] |
| ७. | böse | २९. | [ɥ] |
| ८. | [ö] | ३०. | [jö.fje] |
| ९. | [ɔ̇] | ३१. | [ɥ] |
| १०. | [ä] | ३२. | [ɥit, lɥi, tɥe] |
| ११. | [ï] | ३३. | [ɷɥlė, bɷɥtėl] |
| १२. | [ë] | ३४. | [ʍ] |
| १३. | [ï] | ३५. | [ʍaj. ʍɛjl] |
| १४. | [ü] | ३६. | [tʍajs, kʍɪk] |
| १५. | [ɛ] | ३७. | [i̯, u̯] |
| १६. | [ä] | ३८. | [ạ] |
| १७. | [ü] | ३९. | [ə] |
| १८. | [ï] | ४०. | [ɬ] |
| १९. | [ë] | ४१. | [ɸ β] |
| २०. | [ė] | ४२. | [θ ð] |
| २१. | [ö] | ४३. | [ɬ̯ ɮ] |
| २२. | [ȯ] | ४४. | [̯] |

KAUSHIK

४५. [t̪]
४६. [ɸβ]
४७. [ʔ]
४८. [ɦ ɦ]
४९. [ŋ̊]
५०. [ü]
५१. [ɣ]
५२. Dvořák
५३. [p˃]
५४. [p’]
५५. [p”]
५६. [pˇ]
५७. [p^]
५८. [pɸ, $p^{f}$]
५९. [$b^{\beta}$, $b^{v}$, $t^{\theta}$, $t^{s}$, $t^{\check{s}}$, $d^{z}$, $k^{x}$]
६०. [-tŋ̊t-]
६१. [dl̥d]
६२. [λ]
६३. [k°]
६४. [k']
६५. [ak°t, æk't]
६६. [hɛlp°]
६७. [hɛlp']
६८. ['ɛlə,vɛjt] या [éləvèjt]
६९. [dɪs,kɹɪmɪ'nɛjšŋ̊] या [dɪskɹìmɪnéjšŋ̊]
७०. [sɪjðəmɪjt]
७१. [ʍajtšʊwz]
७२. [p']
७३. [ĝ]
७४. [ĝ]
७५. [ĝ, g, b]
७६. Sprachgefühl
७७. [ĝ]
७८. [ĝ]
७९. [t']
८०. [š]
८१. [š]
८२. [š]
८३. [št]
८४. [š]
८५. [št]
८६. [t']
८७. [t']
८८. [ŋ̊]
८९. [ŋ̊]
९०. [l̥]
९१. [t', t=, t']
९२. [ə'bʌv]
९३. š
९४. /á, â, à/
९५. *A lánguage is a sýstem of ârbitràry vôcal sýmbols*
९६. /č, ǰ/
९७. /sč-, čl-/

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९८. | [-ntš, ndž] | ११७. | /s, z, š, ž/ |
| ९९. | [-nš, -nž] | ११८. | /z, ž/ |
| १००. | /tš, dž/ | ११९. | /s, š/ |
| १०१. | /č/ | १२०. | λείπω /léip-o/ |
| १०२. | pít/i/, pét/e/, pát/a/, pót/o/, cút/ə/, pút/u/ | १२१. | λέλοιπα /lé-loip-a/ |
| | | १२२. | /cì-ʔí-ne/ |
| १०३. | (háir)-pîn, (púp)-tênts, (dóor)-mât, (ármy)-côt, (téar)-dûct, (hánd)-bôok | १२३. | ímpòrt |
| | | १२४. | ìmpórt |
| | | १२५. | tránsfèr |
| | | १२६. | trànsfér |
| १०४. | (cón)vìct, (cón)tènts, (áuto)màt, (ápri)còt, (cón)dùct, (spóon)fùl | १२७. | cóndùct |
| | | १२८. | condúct |
| | | १२९. | pròfitéer |
| १०५. | hábitàt | १३०. | èleméntary |
| १०६. | àdvantágeous | १३१. | /t, s, z, š, ž/ |
| १०७. | [l̥, m̥, n̥] | १३२. | rídicùle : ridículous, pársimony : pàrsimónious |
| १०८. | [æ^ə] | | |
| १०९. | /tšiinthu/(ऋ)/bréθ/ | १३३. | /kš/ |
| ११०. | /bríjð/ | १३४. | /kš/ |
| १११. | tránsfèr | १३५. | /gž/ |
| ११२. | trànsfér | १३६. | /t, d, s, z, š, ž/ |
| ११३. | ímpòrt | १३७. | óutràge : òutrágeous |
| ११४. | ìmpórt | १३८. | sàcrilégious |
| ११५. | cónflict | १३९. | /šən/ |
| ११६. | /kónflìkt | १४०. | /džən/ |

KAUSHIK

| | | | |
|---|---|---|---|
| १४१. | /šəs/ | १४९. | /pjetatɛ·r/ |
| १४२. | /blák- bêhrd/ | १५०. | /ðəmán/ |
| १४३. | /blâk- báhrd/ | १५१. | /nôw- indíjd/ |
| १४४. | /òhltəgéðər/ | १५२. | /dúw-nôt/ |
| १४५. | /ôhl-təgéðər/ | १५३. | Artikulations-und Hörübungen |
| १४६. | /džéntəlmən/ | १५४. | G.NOËL-ARMFIELD |
| १४७. | /džêntəl-man/ | १५५. | Monatshefte für deutschen Unterricht |
| १४८. | pied-à-terre | | |

KAUSHIK

परिशिष्ट

# [पारिभाषिक शब्दावली]

अ

| | |
|---|---|
| अंकन | notation |
| अंगभूत | component |
| अंत:केन्द्रिक | endocentric |
| —पदबंध | —phrase |
| —रचना | —construction |
| अंत:स्फोटक | implosive |
| —उच्चारण | —articulation |
| अंत:स्फोटन | implosion |
| अंत | 1. ending |
| | 2. final |
| अंत-प्रत्यय | ending |
| अंतर्दन्त्य | inter-dental |
| अंतर्निवेशन | insertion |
| अंतर्निहित | inherent |
| अंत्य | final |
| —स्वराघात | —pitch |
| अंशपाती | overlapping |
| अक्षर | syllable |
| अग्र | frontal |
| अग्रतालव्य | prepalatal |
| अग्र स्वर | front vowel |

| | |
|---|---|
| अघोष | unvoiced/voiceless |
| अणु | molecule |
| अतिव्यापन | overlapping |
| अधर/अधरोष्ठ | lower lip |
| अधिखण्डात्मक | suprasegmental |
| —अभिलक्षण | —feature |
| —ध्वनिम | —phoneme |
| अधिश्वासद्वारीय | supraglottal |
| अधीन | subordinate |
| —उपवाक्य | — clause |
| —परिवर्त | — variant |
| अधीनता | subordination |
| अधीनतासूचक समुच्चयबोधक | subordinating conjunction |
| अधोवर्ती | inferior |
| अनंतिम | non-final |
| अनाक्षरिक | non-syllabic |
| अनियमित | irregular |
| —क्रिया | —verb |
| —परिवर्त | —alternant |
| —रूपवर्ग | —form class |
| अनुकरणात्मक | onomatopoeic |
| अनुक्रम | 1. sequence<br>2. succession<br>3. ordering |
| अनुक्रमी | successive |
| अनुचित्रण | offset |
| अनुच्च-पश्च | non-high back |
| अनुच्छेद | paragraph |
| अनुतान | intonation |
| अनुतानात्मक | intonational |
| अनुनाद | resonance |
| —विवर | —chamber |

| | |
|---|---|
| अनुनासिक | nasal |
| अनुपात | proportion |
| अनुप्रस्थ | horizontal/transverse |
| अनुभाग | section |
| अनुमिति | inference |
| अनुरणनात्मक | onomatopoeic |
| अनुरूप | corresponding |
| अनुलंब चिह्न | vertical tick |
| अन्य पुरुष | third person |
| —एकवचन | —singular |
| अन्योन्याश्रित | correlative |
| अन्वित विन्यास | collocation |
| अपरिच्छेदक | non-distinctive |
| अपवर्जी | exclusive |
| अपूर्ण वाक्य | minor sentence |
| अप्रतिहत | continuing |
| अभिगम | approach |
| अभिरचना | pattern |
| अभिलक्षक | typical |
| अभिलक्षण | feature |
| अभिव्यक्ति | expression |
| अभ्यास | reduplication |
| अमुक्त | unreleased |
| अर्थ | meaning/sense |
| —तत्त्व | —element of meaning/sense |
| अर्धस्वर | semi-vowel |
| अलिजिह्व | uvular |
| —कंपन | —trill |
| अलिजिह्वा | uvula |
| अलिजिह्वीय | uvular |
| अल्पतम | minimal |

| | |
|---|---|
| —स्वतन्त्र रूप | —free form |
| अल्पप्राण | unaspirated |
| अल्प बलाघात | weak stress |
| अवधारक | emphatic |
| अवयव | constituent |
| अवरोध | closure/occlusion |
| अवरोही | falling |
| —-आरोही तान | — -rising tone |
| — - —स्वराघात | — - —pitch |
| अवर्तुलन | unrounding |
| अवर्तुलित | unrounded |
| —स्वर | —vowel |
| अवश्रुति | gradation/apophony |
| अविभाज्यता | indivisibility |
| असर्वादेशी | non-suppletive |

**आ**

| | |
|---|---|
| आंतर अवरोध | inner closure |
| आंशिक | partial |
| आक्षरिक | syllabic |
| आक्षरिकता | syllabicity |
| आघात | accent |
| —चिह्न | —mark |
| आघातित | accented |
| आघातीय परिवर्तन | accentual change |
| आदेश | command |
| आद्य | initial |
| आधार | base |
| आनुक्रमिक | successive |
| आपरिवर्तन | modification |
| आभ्यन्तर | internal |
| —परिवर्तन | —change |
| —विप्रकृष्ट संहिता | —open juncture |

| | |
|---|---|
| आरेख | diagram |
| आरोही | rising |
| —-अवरोही स्वराघात | —-falling pitch |
| —तान | —tone |
| —स्वराघात | —pitch |
| आर्ष | archaic |
| आवर्तक | recurrent |
| **इ** | |
| इंगित | hint |
| इष्टार्थ | intention/intentional meaning/connotation |
| **ई** | |
| ईषद् विवृत संघर्षी | slit spirant |
| **उ** | |
| उक्ति | 1. utterance<br>2. text/statement |
| उच्च | high |
| —-अनग्र | — non-front |
| —-अपश्च | —non-back |
| —स्वर | —vowel |
| उच्चतर-निम्न | higher-low |
| —-मध्य | —-mid |
| उच्चार | utterance |
| उच्चारण | articulation/utterance/pronunciation/phonation |
| —-स्थान | points of articulation/basis of articulation/articulatory region |
| उच्चारणावयव | vocal organ |
| उच्छ्वास | inspiration |
| उत्क्षिप्त | flapped |

| | |
|---|---|
| उत्क्षेप | flap |
| उत्तम पुरुष | first person |
| उत्थापित | elevated |
| उदासीन स्वर | neutral vowel |
| उपगम/उपागम | approach |
| उपध्वनि | allophone |
| उपप्ररूप | sub-type |
| उपवर्ग | sub-class |
| उपवाक्य | clause |
| उपसंवर्ग | sub-category |
| उपास्थि | cartilage |
| उभयोष्ठ्य | bilabial |
| —संघर्षी | —spirant |
| —स्पर्श | —stop |
| उरोस्थि | sternum |

ऊ

| | |
|---|---|
| ऊर्ध्व ओष्ठ | upper lip |
| ऊष्म | sibilant |
| —ध्वनि | hissing sound |
| ऊष्मता | sibilance |

ए

| | |
|---|---|
| एकक | unit |
| एकरूपता | identity |
| एकरूपात्मक | monomorphous |
| एकवचन | singular (number) |
| एकाक्षर | monosyllable |
| एकाक्षरिक | monosyllabic |

ऐ

| | |
|---|---|
| ऐतिहासिक | historical |
| —व्याकरण | —grammar |
| —ध्वनिविज्ञान | —phonetics |

ओ

| | |
|---|---|
| ओष्ठ | lip (lips) |

| | |
|---|---|
| ओष्ठ-वर्तुलन | lip rounding |
| ओष्ठ्य | labial |
| ओष्ठ्यरंजन | labialization |
| ओष्ठ्यरंजित | labialized |
| ओष्ठ्य संघर्षी | labial spirant |

**औ**

| | |
|---|---|
| औसत-मध्य | mean-mid |

**क**

| | |
|---|---|
| कंठ | throat |
| —मणि | adam's apple |
| कंठ्य | guttural/velar |
| कंपन | vibration/trill |
| कपनयुक्त/कंपित | trilled |
| कठोर तालु | hard palate |
| करण | articulator |
| कर्ण | ear |
| कर्णकोष्ठक | diagonal |
| कर्त्ता | 1. subject<br>2. nominative |
| —एकवचन | nominative singular |
| —सत्त्ववाचक अभिव्यक्ति | —substantive expression |
| कर्तृ | actor |
| — -क्रिया पदबंध | — -action phrase |
| — - — रचना | — - —construction |
| —वाचक | active |
| —वाच्य | —voice |
| कर्म | object |
| —कारक | accusative |
| ——सत्त्ववाचक अभिव्यक्ति | ——substantive expression |
| कर्मणि | passive |
| काकल | larynx |

| | |
|---|---|
| काकलक | uvula |
| काकलरंजित स्वर | laryngealized vowel |
| काकलीय | laryngal |
| काकलीरंजन/काकल्यरंजन | laryngealization |
| कान | ear |
| कान का पर्दा | tympanum |
| कारक | 1. case<br>2. case form |
| काल | tense |
| कालानुक्रमिक | chronological |
| कृत्प्रत्यय | primary affix/primary suffix |
| कृत्रिम | artificial |
| कृदन्त | primary derivative/ primary formation |
| —विशेषण | participle |
| केन्द्र | centre |
| केन्द्रीय स्वर | central vowel |
| कोटि | 1. grade<br>2. degree |
| कोमल | lenis |
| —तालव्य | velar/velaric |
| —तालु | soft palate |
| क्रम | order/ordering |
| क्रिया | verb |
| —-कर्मरचना | —-object construction |
| क्रियाविशेषण | adverb |
| क्रियाविशेषणात्मक | adverbial |
| क्लिक | click |
| क्षेत्र | field/region |

ख

| | |
|---|---|
| खंड | segment/fraction |

| | |
|---|---|
| खंडात्मक | segmental |
| —ध्वनिम | --phoneme |
| —ध्वनिमविज्ञान | —phonemics |

**ग**

| | |
|---|---|
| गलचापीय | faucal |
| गलचापीयकरण | faucalization |
| गुच्छ | cluster |
| गुणवाचक | attribute/attributive |
| गुहिका | cavity/chamber |
| ग्रसनी | pharynx |
| —रंजन | pharyngealization |
| ग्रसन्य | pharyngal |

**घ**

| | |
|---|---|
| घटक | 1. constituent |
| | 2. component |
| | 3. member |
| घर्षण | friction |
| घोष | voice |
| —तंत्री | vocal cords |
| घोषत्व | voicing/voice pitch |

**च**

| | |
|---|---|
| चतुर्भुज | square |
| चयन | selection |
| चरम अवयव/घटक | ultimate constituent |
| —शीर्ष | —head |
| चूषण | suction |
| —व्यंजन | —stop |
| —स्पर्श | —— |

**छ**

| | |
|---|---|
| छदन | velum |
| छिद्र | aperture |

**ज**

| | |
|---|---|
| जटिल | complex |

| | |
|---|---|
| जिह्वा | tongue |
| जिह्वाग्र | apex |
| जिह्वानोक | tip of the tongue |
| जिह्वान्तीय | apical |
| जिह्वापश्च | dorsal/dorsum |
| जिह्वोपाग्र | front (of the tongue) |
| जिह्वोपाग्रीय | laminal/frontal |

त

| | |
|---|---|
| तत्त्व | element |
| तनन | tension |
| तर-तम भाव | degree of comparison |
| तान | tone |
| तालव्य | palatal |
| ——रंजन | palatalization |
| ——रंजित | palatalized |
| तालिका | inventory/list/catalogue |
| तालु | palate |
| तीव्रता | intensity |
| तुमर्थ | infinitive |
| तुलना | comparison |
| तुलनात्मक/तुलनावाची | comparative |
| तुल्यमान | equivalent |
| तुल्यरूप | analogue |

द

| | |
|---|---|
| दंत | tooth |
| ——पृष्ठीय | post-dental |
| दंतोष्ठ्य | labio-dental |
| दंत्य | dental |
| दबाव | pressure |
| दरार | slit |
| दीप्त | bright |
| दीर्घ स्वर | long vowel |

| | |
|---|---|
| दीर्घीकरण | lengthening |
| दुर्ग्राह्य | elusive |
| दुर्दमनीय | overwhelming |
| दुर्बल | weak |
| —बलाघात | —stress |
| दृढ़ | tense/fortis |
| —कथन | assertion/asseveration |
| देशीय भाषा | native language |
| — — -भाषी | — —speaker |
| द्विस्वर संध्यक्षर | diphthong |
| द्व्यक्षर | dissyllable |
| द्व्यक्षरिक | dissyllabic |
| द्व्योष्ठ्य | bilabial |

### ध

| | |
|---|---|
| धनचिह्न | plus sign |
| धातु | root |
| ध्वनि | sound |
| ध्वनिक | acoustic |
| ध्वनि प्रतीक | phonetic symbol |
| ध्वनिम | phoneme |
| ध्वनिमिक | phonemic |
| ध्वनिमी/ध्वनिमविज्ञान | phonemics |
| ध्वनिमविज्ञानी/-शास्त्री | phonemicist |
| ध्वनिमिक विश्लेषण | phonemic analysis |
| ध्वनिविज्ञान | acoustics/phonetics |
| ध्वनिविज्ञानी/-शास्त्री | phonetician |
| ध्वन्यात्मक | phonetic |
| —अभिरचना | —pattern |
| —आपरिवर्तन | —modification |
| —तत्त्व | —element |
| —परिवर्त | —alternant |
| —परिवर्तन | —change |

| | |
|---|---|
| —वर्णमाला | —alphabet |
| —विकल्प | —alternant |
| —विश्लेषण | —analysis |
| —लिप्यंकन | —transcription |
| —लिप्यंतरण | —transliteration |
| ध्वानिकी | acoustics |

न

| | |
|---|---|
| नलक संघर्षी | groove spirant |
| नामकरण | naming |
| नासा गुहिका | nasal cavity |
| नासाद्वार/-रन्ध्र | nostril |
| नासा विवर | nasal cavity |
| नासिक्य | nasal |
| —प्रभाव | —twang |
| —रंजन | nasalization |
| निःश्वसन | expiration/exhalation |
| निक्षिप्त | parenthetical |
| निम्न | low |
| —अपश्च | —non-back |
| —पश्च | —back |
| —स्वर | —vowel |
| नियमन | government |
| नियमित | regular |
| —परप्रत्यय | —suffix |
| —पूर्णकाल | —perfect |
| —रूपावली | —paradigm |
| निरोष्ठ्यरंजन | delabialization |
| निर्धारक | determiner |
| निश्चयार्थक | indicative |
| —वृत्ति | —mood |
| निषेधात्मक | negative |
| निष्क्रिय | passive |

| | |
|---|---|
| न्यूनकल्प वैषम्य | non-minimal contrast |
| —स्वतंत्र रूप | —free form |
| न्यूनतम | minimal/minimum |
| —वैषम्य | minimal contrast |
| —स्वतंत्र रूप | —free form |

प

| | |
|---|---|
| पदबंध | phrase |
| — -संबंधवाचक | — - possessive |
| परप्रत्यय | suffix |
| परसर्ग | post-position/post-positive preposition |
| परास | range |
| परिच्छेदक | distinctive |
| परिणामी | resultant |
| परिभाषा | definition |
| परिरेखा | contour |
| —तान व्यवस्था | —tone system |
| परिवर्त | alternant/variant |
| परिवर्तन | change/alternation |
| परिसर | environment |
| पर्याय | synonym/synonymous |
| पश्च | back/posterior |
| —जिह्वा | dorsum |
| —जिह्वीय | dorsal |
| —तालव्य | post-palatal |
| —दंत्य | post-dental |
| —मृदु तालव्य | — - velar |
| —स्वर | back vowel |
| पारिभाषिक शब्द | technical term |
| —शब्दावली | terminology |
| पार्थक्य | isolation |
| पार्श्विक | lateral |

| | |
|---|---|
| पुच्छ | pendant |
| पुरागत | archaic. |
| पुरुष | person |
| पुल्लिंग | masculine gender |
| पूरक | compliment |
| —वितरण | —complimentary distribution |
| पूर्ण काल | preterit |
| —वाक्य | whole sentence |
| —विधेय | complete predicate |
| पूर्वकंठ्य | prevelar |
| पूर्व-परप्रत्ययी बलाघात | pre-suffixial stress |
| पूर्वप्रत्यय | prefix |
| पूर्वमहाप्राणता | preaspiration |
| पूर्वसर्ग | preposition |
| पूर्वस्वरात्मक | prevocalic |
| पूर्वेक्षा | anticipation |
| प्रकार | aspect/variety/type |
| प्रकार्य | function |
| प्रक्रम | process |
| प्रक्रिया | procedure |
| प्रतिदर्श | sample |
| प्रतिरूप | counterpart |
| प्रतिवेष्टन | retroflexion |
| प्रतिवेष्टित | retroflex/cacuminal/cerebral/domal |
| प्रतिस्थापन | substitution/replacement |
| प्रतिस्थापित | substituted/replaced |
| प्रतिस्थाप्य | replaceable |
| प्रतीक | symbol |
| प्रत्यक्ष | perceptible/concrete |
| प्रत्यय | 1. affix 2. formative |

| | |
|---|---|
| —योजन | affixation |
| प्रत्याकर्षण | retraction |
| प्रत्याकर्षित | retracted |
| प्रत्यावर्तन | alternation |
| प्रबल | loud |
| प्रबलता | loudness |
| प्रबल बलाघात | strong stress/loud stress |
| प्रभाग | fraction |
| प्रभावात्मक (प्रभाववादी) लिप्यंकन | impressionistic transcription |
| प्ररूप | type |
| प्रविभाजन | sub-division |
| प्रविधि | technique |
| प्रवेशिका | primer |
| प्रश्न | interrogation |
| —वाचक | interrogative |
| ——अभिव्यक्ति | interrogative expression |
| प्रश्वसित | inspirated |
| प्रारंभ | onset |

फ

| | |
|---|---|
| फलक | blade |
| —संघर्षी | slit spirant |
| फुप्फुसावरण | pelura |
| फुप्फुसीय | pulmonic |
| फुसफुसाहट | whisper/whispering |
| फूत्कार | puff of breath |
| फेफड़े | lungs |

ब

| | |
|---|---|
| बद्ध | bound |
| —रूप | —form |
| —संज्ञा | —noun |
| बलाघात | stress |

| | |
|---|---|
| —परिवर्तन | modulation |
| —हीन | unstressed |
| बलाघातित | stressed |
| बहिःकेन्द्रिक | exocentric |
| —पदरचना | —phrase |
| —रचना | —construction |
| बहिःस्फोटक | explosive |
| बहिःसृत | protruded |
| बहुप्रचलित वाक्य-प्ररूप | favourite sentence type |
| — — - रूप | — —form |
| बहुभाषाविद् | polyglot |
| बहुवचन | plural |
| बाणमुख | cuneiform/arrow-head |
| बाह्य विप्रकृष्ट संहिता | external open juncture |
| बिन्दु | dot |
| बोलचाल की भाषा | colloquial (language) |
| बोली | dialect |
| बोलीविज्ञान | dialectology |
| —विज्ञानी | dialectician/dialectologist |

भ

| | |
|---|---|
| भाववाचक संज्ञा | abstract noun |
| भावार्थक अभिव्यक्ति | infinitive expression |
| भाषा | language |
| भाषाई | linguistic |
| भाषा-एटलस | linguistic atlas |
| — - भाषी जनसमुदाय | speech community |
| — - भूगोल | linguistic geography |
| भाषाविज्ञान | linguistics (linguistic science) |
| —संबंधी | linguistic |
| भाषाविज्ञानी/भाषाविद् | linguist/linguistician |
| भाषा-विश्लेषण | linguistic analysis |

| | |
|---|---|
| भाषावैज्ञानिक अध्ययन | linguistic study |
| भूतकाल | past tense |
| भूतकालिक कृदन्त विशेषण | past participle |
| भेदक | distinctive |
| भोक्तृ-क्रिया रचना | undergoer-action construction |
| भौतिकी | physics |

म

| | |
|---|---|
| मंद | dull |
| मध्य | centre/mid/medial |
| —अग्र | mid-front |
| —कण्ठ्य | medio-velar |
| —केन्द्रीय | — -central |
| —तालव्य | — -palatal |
| —पट | diaphragm |
| —प्रत्यय | infix |
| —मार्ग/-रेखा | median line |
| मर्मर | murmur |
| मसूड़े | gums |
| महाप्राण | aspirate/aspirated |
| महाप्राणत्व | aspiration |
| मात्रा | quantity |
| मादा | female |
| मार्ग | passage |
| मिश्र | complex |
| मुख-गुहिका/-विवर | vocal cavity/oral cavity/oral chamber |
| मूर्धन्य | domal/cerebral/retroflex/cacuminal |
| मूर्धन्यीकरण | retroflexion |
| मूल | root |
| —भाषा-भाषी | native speaker |

| | |
|---|---|
| —स्वर | simple vowel |
| मूलाधार | underlying |
| —रूप | —form |
| —शब्द | —word |
| मृदु तालव्य | velar/velaric |
| —रंजन | velarization |
| मोचन | release |
| मौखिक | oral |

य

| | |
|---|---|
| यादृच्छिक | arbitrary |
| युक्ति | device |
| युग्म | pair/doublets |
| योजक-चिह्न | hyphen/additive maker |

र

| | |
|---|---|
| रंध्र | aperture |
| रचना | construction |
| रूढ़ | conventional |
| रूप | form/morph |
| रूपध्वनिमविज्ञान | morphophonemics |
| रूपप्रक्रिया | morphology |
| रूपप्रक्रियात्मक रचना | morphological construction |
| —संरचना | —structure |
| रूपरेखा | outline |
| रूपवर्ग | form class |
| रूपात्मक | formal |
| रूपावली | paradigm |
| —प्रतिरूप | —model |
| रूपिम | morpheme |
| —अनुक्रम | —sequence |
| —एकक | — unit |
| —वर्ग | —class |

## ल

लंबित मंदोच्चारण drawling
लक्षण feature/characteristic
लघुकृत प्रबल reduced loud
लिंग gender
लिप्यंकन/प्रतिलेखन transcription
लिप्यंतरण transliteration
लोड़ित rolled

## व

वक्र रेखा curve
वक्ता speaker
वचन number
वर्ग class
वर्गीकरण classification
वर्ण letter
वर्णनात्मक descriptive
वर्णमाला alphabet
वर्णविन्यास spelling
वर्णानुक्रमित alphabetized
वर्तनी spelling/orthography
वर्तमान काल present (tense)
वर्तुलन rounding
वर्तुलित स्वर rounded vowel
वर्त्स्य alveolar
—श्रेणी —ridge
—स्पर्श —stop
वाक् speech
वाक्य sentence
—क्रम syntactic order
—विचार syntax
—विन्यास syntax/syntactic construction
वाक्यांश phrase

| | |
|---|---|
| वाक्यात्मक | syntactic |
| —रचना | —construction |
| —संवर्ग | —category |
| विकल्प | 1. alternate |
| | 2. option |
| विकल्पन | variation/alternation |
| विकार | mutation/distortion |
| वितरण | distribution |
| विदेशायातित | foreign-learned |
| विधेय | predicate |
| —क्रिया | finite verb/predicate verb |
| —रूप | finite form |
| विधेयन | predication |
| विधेय पूरक | predicate complement |
| विनिमेय | interchangeable |
| विन्यास | arrangement |
| विपर्यस्त | inverted |
| विप्रकृष्ट संहिता | open juncture |
| विभक्ति | inflection |
| —मूलक (विभक्त्यात्मक) | inflectional |
| —युक्त | inflected |
| —रहित | uninflected |
| विरल | rare |
| विराम | pause |
| —पूर्वी | pre-pausal |
| विरामोत्तरी | post-pausal |
| विवक्षित | implied |
| विवर | cavity/chamber |
| विवृत | open |
| विवृति | opening |
| विशिष्ट प्रश्न | specific interrogation |

| | |
|---|---|
| विशेषक | modifier/adjunct |
| --चिह्न | diacritic mark |
| विशेषण | adjective/attribute |
| विशेष्य | substantive |
| विश्लेषण | analysis |
| विश्लेषणात्मक | analytical |
| —उपगम | —approach |
| विषय-वस्तु | subject-matter |
| विसंधि | hiatus |
| विसदृश | dissimilar |
| विसामान्य | deviant |
| विस्तृत | broad |
| विस्फोट | explosion |
| विस्मयादिबोधक | interjection/exclamation |
| वैकल्पिक | alternative/optional |
| —परिवर्त | optional varient |
| —वर्ग | alternative class |
| वैयाकरण | grammarian |
| वैषम्य | contrast |
| व्यंजन | consonant |
| व्यंजनात्मक परिवर्तन | consonantal change |
| व्यंजनान्त | checked |
| —अक्षर | —syllable |
| व्यक्ति संज्ञा | proper noun |
| व्यतिरेकी | contrastive/contrasting |
| —भाषाविज्ञान | contrastive linguistics |
| व्यवच्छेदक | distinctive |
| व्यवस्था | system |
| व्यवहित | non-contiguous |
| व्याकरण | grammar |
| व्याकरणिक | grammatical |
| —अर्थ | —meaning |

| | |
|---|---|
| —क्रम | —order |
| —संवर्ग | —category |
| व्यावर्तक | distinctive |
| व्युत्पत्ति | derivation |
| —मूलक (व्युत्पत्त्या-त्मक) | derivational |
| व्युत्पन्न | derived |
| व्युत्पाद | derivative |
| व्युत्पादी | derivative |

श

| | |
|---|---|
| शब्द | word/term |
| —भेद | parts of speech |
| —रचना | word-formation |
| शब्दरूपात्मक प्रक्रिया | morphological process |
| शब्द-समूह | vocabulary |
| शाब्दिक अर्थ | lexical meaning |
| शिखर | peak/point |
| शिथिल | lax/lenis/relaxed |
| शिशु शब्द | nursery words |
| शीर्ष | head |
| शुद्धलेखन | orthography |
| शून्य आपरिवर्तन | zero modification |
| —परिवर्तन | —change |
| —प्रत्यय | — -affix |
| श्रवण-संबंधी | auditory |
| श्रव्य | audible |
| श्रुतिगम्यता | sonority |
| श्रेणी | series |
| श्रौत | audible |
| श्वसन | breathing/respiration |
| श्वास | breath |
| —द्वार | glottis |

| | |
|---|---|
| —द्वारीय | glottal |
| श्वासद्वारीय कंपन | glottal trill |
| —रंजन | glottalization |
| —रंजित | glottalized |
| —स्पर्श | glottal stop |
| श्वास नली | trachea |
| —प्रणाल | wind pipe |

स

| | |
|---|---|
| संक्रमण | transition |
| संक्रिया | operation |
| संकीर्णन/संकुचन | constriction |
| संकुचित | constricted |
| संख्यावाचक | numeral |
| संग्रह | collection |
| संघर्षण | affrication |
| संघर्षी | fricative/spirant |
| संज्ञा | noun/primary word |
| संध्यक्षर | diphthong |
| संप्रदान | dative |
| संबंध | combination |
| —कारक | genitive |
| ——एकवचन | genetive singular |
| संबंधवाचक | possessive |
| संबोधन | vocative |
| संयोजक रूप | combining form |
| संरचना | structure |
| संरचनात्मक | structural |
| संवर्ग | category |
| संवृत | close |
| —समुच्चय | —set |
| संहतिवाचक शब्द | mass word |
| —संज्ञा | —noun |

| | |
|---|---|
| संहिता | juncture |
| संहितीय | junctural |
| सघोष | voiced |
| सत्त्ववाचक | substantive |
| सदस्य | member |
| सदृश | analogous/similar |
| सन्निकृष्ट संहिता | close juncture |
| सन्निहित | contiguous |
| —अवयव/घटक | immediate constituent |
| सम | flat/level/equivalent/congruent |
| समतान व्यवस्था | level tone system |
| समनामी | homonymous |
| समन्वय | coordination |
| —कारी | coordinator |
| समरूप | identical |
| समरूपता | resemblance |
| समस्त | compound |
| —क्रिया | —verb |
| —शब्द | —word |
| समानाधिकृत | coordinative |
| समानान्तर | parallel |
| —रूप | —form |
| समानार्थी | synonymous/equivalent |
| समासन | compounding |
| समुच्चय | set/combination |
| —बोधक | conjunction |
| समूह | group |
| सर्वनाम | pronoun |
| सर्वभाषा-व्याकरण | universal grammar |
| सर्वसमता | congruence |
| सर्वसामान्यता | universality |

| | |
|---|---|
| सर्वादेश | suppletion |
| सर्वादेशी आधार | suppletive base |
| —रूप | —form |
| —रूपावली | —paradigm |
| सर्वेक्षण | survey |
| सवर्ण | homorganic |
| सशक्त | strong |
| सह-उच्चारण | coarticulation |
| सहजानुभूत | intuitive |
| सहसंबंध | collocation/correlation |
| सहसंबंधी | correlative |
| सहसंबद्ध | correlated |
| सहायक | auxiliary |
| —क्रिया | —verb |
| सांतत्यक | continuum |
| सादृश्य | analogy |
| सामग्री | material |
| सामान्य | common/general/normal |
| —आधार | common base |
| सारणी | table |
| सारणीयन | tabulation |
| सीमा | limit |
| सुनम्य | flexible |
| सुभेद्य | transparent |
| सूक्ष्म | thin |
| सूचक | informant |
| सूची | list |
| स्तंभ | column |
| स्तर | layer |
| स्त्रीलिंग | feminine gender |
| स्थगनक | suspensive |
| स्थान | place/position |

| | |
|---|---|
| स्पंदन | vibration |
| स्पंदनशील | vibrating |
| स्पर्श | stop |
| —संघर्षी | affricate |
| स्पृश्य | tactile |
| स्वतंत्र | free |
| —रूप | —form |
| —रूपिम | —morpheme |
| स्वनगुणिमिक अभिलक्षण | prosodic feature |
| स्वर | vowel |
| स्वरतंत्रीकंपन | voice pitch |
| स्वरयंत्र | larynx |
| स्वराघात | pitch |
| स्वरात्मक | vocalic |
| —परिवर्तन | —change |
| स्वरित | circumflex accent |
| स्वार | vocalic |
| स्वीकृत शब्द | borrowed word |

ह

| | |
|---|---|
| हकलाना | stammering/stuttering |
| ह्रस्व स्वर | short vowel |
| ह्रस्वाभास | pseudo-diminutivisation |
| ह्रस्वीकरण | shortening |
| ह्रस्वीकृत | shortened |

## पुस्तक परिचय



सन् १९४२ में मूल रूप से अंगरेजी में लिखी गई इस पुस्तक के लेखकों ने यह अनुमान भी नहीं किया था कि यह पुस्तक प्रकाशित होते ही संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में आधुनिक भाषाविज्ञान और विश्वस्तर पर संरचनात्मक भाषाविज्ञान पर व्यावहारिक रूप से पर्याप्त व्यापक प्रभाव डालेगी। यह इसके प्रभाव का ही परिणाम था कि इसमें प्रस्तुत की गई प्रविधियों के आधार पर विश्व की अनेकानेक भाषाओं का विश्लेषण और व्याख्यान किया गया। एक विशेष समय में तो यह सामान्य-सा ही हो गया कि इस पुस्तक में अंगरेजी भाषा के लिए वर्णित कोटियों के समनुरूप ही अन्य सभी प्रकार की भाषाओं का [illegible] तुत किया जाता रहा—और वे भाषाएँ चाहे भारोपीय परिवार की [illegible] किसी भी परिवार की। पिछली पीढ़ी के अनेक भारतीय भाष[illegible] स्तक में प्रस्तुत की गई प्रविधियों में दक्षता भी प्राप्त की।

चाहे कुछ विलम्ब से ही सही किन्तु आज भी ऐसी इस पु[illegible] कसी भी भाषा में अनुवाद स्वागत और हर्ष का विषय होगा। इस पु[illegible] ऐतिहासिक महत्त्व ही इस अनुवाद की महती सार्थकता सिद्ध करता है। यह हिन्दी अनुवाद विशद भी है और विशुद्ध भी। मूल पाठ का अनुगमन यथार्थतः निष्ठापूर्वक और सुसंगत रूप से किया गया है। कुछ जानी-बूझी और कुछ नवनिर्मित हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली के माध्यम से अनुवादकों ने अत्यन्त प्रभावी रूप में मूल पाठ के तात्त्विक मंतव्य को अधिकृत रूप से प्रस्तुत कर दिया है।

I.S.B.N. 81–217–0061–2

संस्करण 1991

भारतीय विद्या प्रकाशन

1-यू० बी०, जवाहर नगर
बंगलो रोड
दिल्ली-110007

(भारत)

पोस्ट बाक्स नं० 1108
कचौड़ी गली
वाराणसी-221001